Published by Nathuram Premi, Hindi Granth Ratna
Karyalaya, Hirabag, Girgaon-Bombay.

Printed by M. N. Kulkarni, Karnatak Press,
434 Thakurdwar, Bombay.

समर्पण।

अपने
कई करोड़
हिन्दी-भाषाभाषी
भाइयोंके करकमलोंमें
यह ग्रंथ लेखकद्वारा
सादर समर्पित
हुआ।

भूमिका।

इंग्लैण्डके सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर सेमुएल स्माइल्स अनेक उपयोगी ग्रन्थ लिख गये हैं। उनके ग्रन्थोंका बड़ा आदर है। यूरुप और भारतवर्षकी अनेक भाषाओंमें उनके अनुवाद हो चुके हैं। डाक्टर स्माइल्सका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ सेल्फ-हेल्प (Self-Help) है। यह ग्रन्थ पहले पहल सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ और लोगोंको इतना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी बीस हजार प्रतियाँ बिक गईं। उसके बाद आजतक तो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ खप चुकी होंगी। इतने अच्छे और लोकोपकारी ग्रन्थका हिन्दीमें अभाव देखकर मैं आज अपने पाठकोंके सन्मुख सेल्फ-हेल्पका यह हिन्दी रूपान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ।

इस ग्रन्थके बननेका कारण

डाक्टर स्माइलसने अपनी भूमिकामें इस प्रकार वर्णन किया है:—

"इंग्लेण्डके उत्तरीय प्रान्तके एक कसबेमें दो तीन नवयुवकोंने मिलकर विचार किया कि हम लोग शामको एक जगह एकट्ठे हुआ करें और एक दूसरेकी सहायतासे पढ़ने लिखनेका अभ्यास बढ़ावें। ये लोग बहुत ही गरीब थे, इस लिए इन्हें कोई अच्छा स्थान इस कार्यके लिए नहीं मिल सका। इनका एक मित्र एक छोटेसे घरमें रहता था। उसमें एक छोटीसी कोटरी थी। बस, ये लोग उसीमें एकत्र होने लगे और अपना कार्य उत्साहके साथ करने लगे। इनकी देखादेखी और भी कई लोगोंकी इच्छा हुई और वे भी इस मण्डलीमें आने लगे। फल यह हुआ कि जगह ओछी पड़ने लगी। गर्मीका मौसम आ चुका था, इस लिए कोटरीके बाहर जो छोटासा बगीचा था, ये लोग उसीमें खुली हवामें बैठकर अपना काम चलाने लगे। परन्तु कभी कभी आँधीपानी आजानेके कारण इनके पढ़ने लिखनेमें व्याघात पड़ने लगा और इन्हें कष्ट होने लगा।

इतनेमें ही जाड़ेके दिन आ गये। रातको खूब ठण्ड पड़ने लगी। थोड़े आदमी होते, तो कोई छोटी मोटी कोटरी देख ली जाती; परन्तु तब तक एकत्र होनेवालोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। यद्यपि इस पाठशालामें आनेवाले प्रायः मजदूर लोग थे और उनकी आर्थिक अवस्था बहुत ही शोचनीय थी, तो भी इस समय अपने आन्तरिक प्रेमके कारण उन्होंने हिम्मत बाँधी और एक बड़ा कमरा किरायेपर ले लेनेका संकल्प कर लिया। तलाश करनेसे एक ऐसा कमरा

परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मौके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उन्नति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके बल पर अपनी अच्छी उन्नति कर ली जो एक कारखानेका मालिक बन गया था। उसने कहा "मैं इस समय बहुत सुखी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सच्चे शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये थे, उन्हें मैं आज भी कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ। आपने जो मार्ग बतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयत्न करके मैं अबतक उसीपर चल रहा हूँ और मुझे पक्का विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह सुखसमृद्धिकी प्राप्ति हुई है।"

इस घटनासे "स्वावलम्बनके विषयकी ओर मेरा ध्यान विशेषरूपसे आकर्षित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयुवकोंकी सभाके व्याख्यानोंमें जो बातें कही थीं, उनकी वृद्धि करना शुरू किया। मैं जो कुछ बाँचता, निरीक्षण करता अथवा संसारी कामकाजोंमें पड़कर अनुभव प्राप्त करता था, अवकाश मिलनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जो इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विषयका एक अच्छा संग्रह हो गया और वही संग्रह आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है।"

यह ग्रन्थ सन् १८५९ मे पहले पहल प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्माइल्स साहबने इसमें अनेक नये नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताको और भी बढ़ा दिया है।

इस ग्रन्थकी शिक्षायें।

इस ग्रन्थसे क्या शिक्षा मिलेगी, यह डाक्टर स्माइल्सके शब्दोंमें ही बतलाना अच्छा होगा। वे कहते हैं:–"संक्षेपमें इस पुस्तकका उद्देश्य निम्नलिखित प्राचीन किन्तु लाभदायक उपदेशोंको बार बार दोहराना है। इन बातोंको जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोड़ा है,—

१ सुखी बननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवश्य करना चाहिए।

२ उद्योग और परिश्रमके बिना कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है।

३ कठिनाइयोंसे डरना न चाहिए, किन्तु सन्तोष और धैर्यके साथ उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

इसमें अनेक देशी उदाहरण शामिल कर दिये हैं, जिनका प्रभाव हमारे देश-वासियों पर विदेशी उदाहरणोंसे अधिक पड़ेगा; परन्तु इसके साथ ही मूल पुस्तकमें जितने महत्त्वपूर्ण विदेशी उदाहरण हैं वे भी इस रूपान्तरमें रक्खे गये हैं। अध्यायोंके प्रारंभ और बीचमें कुछ हिन्दी और संस्कृतके सुभाषित बढ़ा दिये गये हैं। इँग्लैण्डकी समाजसंबंधी बातोंमें परिवर्तन करके उनको भारतवर्षके समाजके अनुकूल बनाया गया है। मूल ग्रंथका सातवाँ अध्याय जो सर्वथा इँग्लैण्डके समाज—वहाँके खानदानी रईसोंसे संबंध रखता है इस पुस्तकमें नहीं रक्खा गया। इतना हेर फेर करनेके साथ ही मूल ग्रंथके भावोंकी भी पूर्णतया रक्षा करनेकी चेष्टा की गई है। इस कार्यमें मुझको बहुत परिश्रम करना पड़ा। देशी उदाहरणोंकी खोज और चुनावमें बहुत समय खर्च हुआ है। कहीं कहीं तो छोटे छोटे उदाहरणोंकी खोज करनेमें मुझे बड़ी बड़ी पुस्तकें आद्योपान्त पढ़नी पड़ी हैं। इस पुस्तकके लिखनेमें मैंने अनेक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओंसे सहायता ली है जिनमेंसे मुख्य मुख्य ये हैं:—

(१) ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका जीवनचरित।
(२) सरस्वती (मासिक पत्रिका)के फाइल।
(३) मिश्रबंधु-विनोद (हिन्दी-ग्रन्थप्रसारक मंडली द्वारा प्रकाशित)।
(४) जावजीकीर्तिप्रकाश (मराठी)।
(५) बालबोध (मराठी मासिकपत्र) के फाइल।
(६) अस्तोदय तथा स्वाश्रय (मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठीकृत, गुजराती)।
(7) Biographies of Eminent Indians. (G. A. Natesan & Co., Madras.)
(8) The Indian Nation Builders, in three volumes (Ganesh & Co., Madras.)
(9) The Annals and Antiquities of Rajasthan (James Tod.)
(10) The 'Leader.'

उपर्युक्त पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओंके लेखकों तथा संपादकोंका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मराठी पुस्तकोंके पढ़नेमें मुझे एक मराठा सज्जनसे सहायता मिली है। अतएव मैं उनका भी आभारी हूँ। अंतमें मैं श्रीयुत पण्डित नाथूरामजी प्रेमीके प्रति कृतज्ञता प्रगट किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इस पुस्तकका संशोधन

किया है और अपनी बहुमूल्य सम्मतियोंसे मुझे बहुत ही सहायता दी उन्हींकी कृपासे मुझे आज इस पुस्तकको आपके सामने रखनेका सौभाग्य हुआ है ।

यदि इस पुस्तकसे हमारे भाइयोंमें उत्साहका कुछ भी संचार हुआ, तो अपने परिश्रमको सफल समझूँगा ।

ड्योढ़ी बेगम, आगरा, 1-2-15 — विनीत- मोतीलाल ।

दूसरे संस्करणकी भूमिका ।

इस पुस्तकका प्रथम संस्करण बहुत शीघ्र समाप्त हो गया । यह हिन्दीप्रेमियोंके अनुग्रहका ही फल है । कई कारणोंसे इसका दूसरा संस्करण अब तक न निकल सका ।

प्रथम संस्करणमें आरंभके ५-६ अध्यायोंका अनुवाद कुछ संक्षिप्त हो गया था । इस बार इस कमीको पूरा कर दिया गया है । इसके अतिरिक्त इस संस्करणमें कई देशी उदाहरण और बढ़ा दिये गये हैं और भाषामें यत्र तत्र संशोधन भी कर दिया गया है । आशा है कि यह काम पाठकोंको अरुचिकर न होगा ।

ड्योढ़ी बेगम, आगरा, 1-6-15 — मोतीलाल ।

विषय-सूची।

पहला अध्याय।

जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन।

दूसरा अध्याय।

औद्योगिक नेतागण।

सातवाँ अध्याय ।

उत्साह और साहस ।

आठवाँ अध्याय ।

कार्यकुशल मनुष्य ।

नावाँ अध्याय।

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग।

दशवाँ अध्याय।

अपना सुधार-सुविधायें और कठिनाइयाँ।

ग्यारहवाँ अध्याय।

उदाहरण—आदर्श।

ग्यारहवाँ अध्याय।

सदाचार और सुजनता।

मनुष्यके अधिकारकी चीजोंमें चरित्र सबसे बढ़कर है--फ्रेंक्लिनका चरित्र--सदाचार शक्ति है--लार्ड इर्सकीनके चारित्रिक नियम--जीवनका उद्देश ऊँचा होना चाहिए--सचाई--मुंशी गंगाप्रसादके चरित्रके विषयमें मिस्टर डीलाफोसका विचार--तुम दूसरोंको जैसे मालूम होते हो वास्तवमें भी वैसे ही बनो--कामकाजमें ईमानदारी--आदतोंका असर--आदतोंसे ही चरित्र बनता है--आचरण-शिष्टाचार और दयालुता--सची नम्रता--विलियम और चार्ल्स ग्रांट--सेठ राणूरा-वजी--सचा सज्जन--सज्जनका एक गुण आत्मसम्मान--रानडेकी स्वाभाविक न-म्रता--एडवर्ड फिजजिरल्ड--सज्जनोंके अन्यान्य गुण--ईमानदार जोन्स हानवे--ड्यूक आफ वेलिंगटन और निजामका मंत्री--उदारचरित वैलेजलीका १५ लाखकी भेंट अस्वीकार करना--धन और सुजनता--निर्धनोंमें भी वीर और सज्जन होते हैं--एक उदाहरण--पालीतानाके जैनबोर्डिंग हौसके मंत्री कुँवरजीका सौजन्य और स्वार्थत्याग--सम्राट् फ्रांसिसकी सुजनताका उदाहरण--सज्जन मनुष्य सचा होता है--फेल्टनहार्वे--पाण्डवोंका वीरव्यवहार--बरकिन्हैड और टाइटैनिक जहाजोंका डूबना और वीरता सुजनताके उदाहरण--सज्जनोंकी एक सची परीक्षा; वे अपने आधीनोंके साथ कैसा व्यवहार करते हैं--अन्धा ला मोट्टी और एक युवक--एक ऐब्र कोम्बीका गुण आत्मत्याग--सच्चे सज्जन और कार्यकुशल मनुष्यका चरित्र कैसा होता है.............................. पृष्ठ २२३ से २४८ तक।

देशी उदाहरणोंकी वर्णानुक्रमणिका।

" सबसे बढ़कर यह बात है—जिस तरह दिनके बाद रात अवश्य आती है
तरह जो मनुष्य अपने अंतःकरणके साथ सचाईका बर्ताव करता है वह
ोंके साथ कभी खोटा बर्ताव नहीं करता।"

—शेक्सपियर।

*
* *

यदि मुझे किसी नवयुवकको उपदेश देना हो तो मैं उससे यह कहूँगा—
अच्छे मनुष्योंकी संगति करो। तुमको पुस्तकोंमें और अपने जीवनमें
मनुष्योंकी सत्संगति करनी चाहिए; क्योंकि तुम्हारा सबसे अधिक
इसीमें है। अच्छी बातोंकी कदर करना सीखो; जीवनका सारा सुख
तपर निर्भर है। यह देखो कि महात्माओंने किन बातोंकी कदर की थी।
महत्वपूर्ण बातोंकी कदर की थी। जो मनुष्य संकीर्णविचारोंके होते हैं वे
तोंकी प्रशंसा और भक्ति करते हैं।"

—थैकरे।

स्वावलम्बन ।

पहला अध्याय ।

जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

CARVA

" अपने सहायक आप हो, होगा सहायक प्रभु तभी,
बस चाहनेसे ही किसीको सुख नहीं मिलता कभी ।

—मैथिलीशरण गुप्त ।

" किसी देशकी तुलना अंतमें उसके व्यक्तियोंकी योग्यतासे होती है । "

—जे. एस. मिल ।

" हम व्यवस्थाओंसे—कायदे-कानूनोंसे बहुत कुछ लाभकी आशा करते हैं; परन्तु मनुष्यसे बहुत कम । "

—डी. डिजरेली ।

एक छोटी सी कहावत है कि " ईश्वर उनकी सहायता करता है जो स्वयं अपने भरोसे पर काम करते हैं । " इसमें मानवी अनुभवका सार भरा हुआ है । स्वावलम्बनका भाव प्रत्येक मनुष्यकी उन्नतिका कारण है । यदि बहुतसे मनुष्योंमें यह भाव पैदा हो जाता है, तो इससे जातीय बलकी उत्पत्ति होती है । दूसरोंकी सहायतासे बहुधा हानि होती है, परन्तु अपने भरोसे पर काम करनेसे अवश्यमेव लाभका संचार होता है । यदि किसी जातिके काम सरकार कर दिया करे अथवा उसे सहायता दिया करे; तो उस जातिके मनुष्योंमें स्वयं काम करनेका उत्साह कम हो जायगा और

उनको काम करनेकी उतनी आवश्यकता भी न रहेगी। ऐसा करनेसे वे शिथिल और निराश्रय हो जायँगे।

उत्तमसे उत्तम कायदे-कानून और उत्तमसे उत्तम संस्थायें भी मनुष्यको कर्मयुक्त सहायता नहीं दे सकतीं। वे मनुष्यको अपनी उन्नति करनेमें स्वतंत्र बना सकती हैं—इससे अधिक वे कुछ नहीं कर सकतीं। परन्तु बहुत का हम यह मानते आये हैं कि सुख संस्थाओंसे मिलता है न कि हमारे चरित्रसे। अतएव हम अपनी उन्नतिके लिए सरकारी नियमोंको इतना आ श्यक समझते हैं जितना वे वास्तवमें नहीं हैं। परन्तु लोग अब सम जाते हैं कि सरकारका कर्तव्य हमारे लिए काम कर देना नहीं है, कि हमारी—जान, माल और स्वतंत्रताकी—रक्षा करना है। यदि नियमें बुद्धिमानीके साथ प्रयोग किया जाय, तो हम थोड़े ही स्वार्थत्यागसे म सिक अथवा शारीरिक परिश्रमके फलोंको भोग सकते हैं; परन्तु कड़े कठोर नियम भी आलसी मनुष्योंको उद्योगी, अमितव्ययी मनुष्योंको मि व्ययी और मदमत्तोंको संयमी नहीं बना सकते। ऐसे सुधार हरएक मनु अपने परिश्रम, मितव्यय और स्वार्थत्यागके द्वारा ही कर सकता है। अ स्वत्व पानेसे नहीं, किन्तु अच्छी आदतें डालनेसे ये काम हो सकते हैं।

यह बात बहुधा देखी जाती है कि जैसी प्रजा होती है वैसा ही रा होता है। जो राज्य प्रजाकी अपेक्षा उन्नत अवस्थामें है, वह अवश्य गि कर प्रजाके समान हो जायगा और इसी तरह जो राज्य प्रजाकी अपेक्षा गि हुई दशामें है वह अंतमें उठकर उसीके समान उन्नत हो जायगा। पानीका धरातल ऊँचा नीचा न रहकर एकसा हो जाता है, उसी प्रकार रा और उसके नियम भी प्रजाके चरित्रके अनुकूल हो जाते हैं; यह प्रकृति नियम है। यदि प्रजा श्रेष्ठ है, तो राज्यसत्ता भी श्रेष्ठ होगी और यदि अज्ञानी और भ्रष्ट है तो राज्यसत्ता भी उसीके समान होगी। यह एक सि है कि किसी जातिकी योग्यता और बल उसकी राज्यसत्ताकी अपेक्षा म मनुष्योंके चरित्र पर कहीं ज़ियादा निर्भर है। क्योंकि जाति क्या है? बहुतसे मनुष्योंका समूह ही तो है; और सभ्यता क्या है? यह सम पुरुषों, स्त्रियों और बालकोंकी उन्नतिका रूप ही तो है।

जातिकी उन्नति उसके पृथक् पृथक् मनुष्यके परिश्रम, उद्योग और सच्चा
से मिलकर होती है। इसी तरह जातीय अवनति प्रत्येक मनुष्यके आलस्य
ार्थपरता और दुराचरणके समूहका नाम है। सामाजिक कुप्रथायें मनुष्यके
ाचारी जीवनसे ही पैदा होती हैं और ये सभी दूर हो सकती हैं अ
नुष्य अपना जीवन और चरित्र सुधार ले। यदि सरकार कानून बनाकर
हें दूर करना चाहे, तो ये कुप्रथायें फिर किसी दूसरे रूपमें प्रकट हो
येंगी। अगर यह मत ठीक है तो हमको नियमोंको बदलने और अच्छा
ानेका यत्न न करना चाहिए, किन्तु मनुष्योंको स्वयं उन्नत होनेमें सहा-
ा और उत्तेजना देनी चाहिए; यही सर्वोत्तम देश-भक्ति और परोपकार है।

बाह्य शासनकी अपेक्षा हमारा आंतरिक चरित्र हमारे लिए बहुत कामकी
ा है। किसी निर्दय राजाका दास होना बहुत ही बुरा है; परन्तु अज्ञान,
र्थ और दुराचरणका दास बनना उससे भी बुरा है। ऐसे दास केवल राजा
ा राज्यके बदलनेसे स्वतंत्र नहीं हो सकते। यह सोचना केवल भ्रम है।
ान्त चरित्र ही स्वतंत्रताका मूलाधार है और इसीसे सामाजिक रक्षा
जातीय उन्नति प्राप्त हो सकती है।

ातीय उन्नतिके विषयमें हम अब भी भूलें किया करते हैं। कुछ लोग
मादित्य और भोजकी याद करते हैं और कुछ लोग सरकारी निय-
आवश्यकता समझते हैं। "हमारा कल्याण उसी समय होगा जब
ादित्य सरीखा राजा राज्य करेगा," जिन लोगोंका ऐसा विचार है
मतलब यह है कि हमको कुछ न करना पड़े, कोई दूसरा ही हमारे
ाब कुछ कर दिया करे। यदि ऐसे विचारको आश्रय दिया जाय, तो
स्वतंत्र विचार जाते रहेंगे और अवनतिका मार्ग खुल जायगा। विक्र-
का सहारा ढूँढ़ना मानो उनकी शक्तिकी पूजा करना है और इसका
ा ही अकल्याणकारी होगा जैसा केवल धनकी भक्ति करनेसे होता
तियोंमें फैलनेके लिए इससे कहीं अच्छा विचार स्वावलम्बनका विचार
जब मनुष्य इसे पूर्णतया समझ जायँगे और इसके अनुसार चलने लगेंगे
विक्रमादित्यका आश्रय कदापि न ढूँढ़ेंगे। इसी तरह सरकारी निय-
ावश्यकता समझना भी केवल भ्रम है। हमारी उन्नति हमारे ही

ऊपर निर्भर है। परिश्रम और स्वार्थत्यागके साथ उद्योग करनेसे बहुत कुछ हो सकता है। भारतवासियोंमें अभी इस विचारका संचार नहीं हुआ है।

प्रत्येक जातिकी उन्नति उस जातिके मनुष्योंकी बहुतसी पीढ़ियोंके विचार और परिश्रमका ही फल है। भिन्न भिन्न श्रेणियोंके धीर और परिश्रमी मनुष्योंने अर्थात् कृषक, खानसे खोदनेवाले, आविष्कारक, अनुसंधानकर्ता, कारीगर, शिल्पकार और दस्तकार, कवि, दार्शनिक और राजनीतिज्ञ इन सबोंने ही मिलकर इस बड़े फलको पैदा किया है। एक पीढ़ीने दूसरी पीढ़ीके कामको उन्नत की और इसी तरह शनैः शनैः उन्नति होती चली गई। उत्तम कार्यकर्ताओंकी श्रेणीने व्यवसाय, विज्ञान और शिल्पविद्याकी व्यवस्था कर दी, और इस तरह हमको अपने पूर्वजोंके चातुर्य और परिश्रम द्वारा प्राप्त की हुई संपत्ति मिल गई है। अब हमारा कर्तव्य यह है कि इसे उन्नति देकर अपने बालबच्चोंके लिए छोड़ जायें।

जिन जातियोंमें स्वावलम्बनका जोश रहा है उनकी सदैव उन्नति हुई है। अँगरेजोंकी जाति इसका उदाहरण है। अँगरेजोंमें सदैव ऐसे मनुष्य होते हैं, जो अपने देशके अन्य मनुष्योंसे बड़े-चढ़े रहे हैं। इनके अतिरिक्त बहुत छोटे और अल्पप्रसिद्ध मनुष्यों द्वारा भी उन्नति हुई है। भारतवासियोंमें जब स्वावलम्बनका भाव मौजूद था तब यह देश भी संसारमें उन्नति शिखर पर था। चाहे इतिहासमें सेनापतियोंके ही नाम लिखे जायें, परन्तु अधिकांश विजय एक एक सैनिककी ही शूरवीरतासे होती है। बहुत आदमियोंके जीवनचरित नहीं लिखे गये, परन्तु उन्होंने सभ्यता और वृद्धिमें उतना ही योग दिया है जितना उन भाग्यशाली महात्माओंने, जिनके जीवनचरित लिपिबद्ध हो गये हैं। छोटेसे छोटा मनुष्य, जिसने औरोंको परिश्रम, उद्योग, निर्व्यसनता और सत्यपरताका उदाहरण दिखाया है अपने देशकी वर्तमान और भावी उन्नति पर बड़ा प्रभाव डालता है; क्यों कि उसका जीवनचरित गुप्तरीतिसे दूसरोंके जीवनोंमें प्रवेश कर जाता है और भविष्यमें सदैवके लिए उत्तम उदाहरणका प्रसार करता है।

यह हमारा प्रतिदिनका अनुभव है कि उद्योगशील मनुष्य दूसरोंके जीवन और कर्मों पर सबसे अधिक स्थायी प्रभाव डालता है और वास्तवमें सर्वोत्तम व्यावहारिक शिक्षा देता है। विद्यालय और पाठशालायें उन्नतिकी केवल

प्रारम्भिक शिक्षा देती हैं। घरोंमें, रास्तोंमें, बंकोंमें, कारखानोंमें, खेतोंमें, शिल्पशालाओंमें और मनुष्योंके नित्यके गमनागमनके स्थानोंमें जो जीवन-संबंधी शिक्षा मिलती है वह पाठशालाओंकी शिक्षासे कहीं जियादा प्रभावशालिनी होती है। यह शिक्षा हमको मानवी जीवनके कर्तव्य और व्यवहार सिखलाती है—यह पुस्तकों द्वारा कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। एक विद्वानने अपने सारगर्भित शब्दोंमें कहा है कि "अध्ययन करनेसे हम अध्ययनसे काम लेना नहीं सीख जाते। यह बात तो अध्ययनके उपरान्त केवल निरीक्षणसे—अनुभवसे आती है।" मनुष्य अध्ययनकी अपेक्षा काम करनेसे अधिक निपुण होता है। साहित्यकी अपेक्षा जीवन, अध्ययनकी अपेक्षा कार्य और जीवनचरितोंके स्वाध्यायकी अपेक्षा चरित्र मनुष्यजातिकी त्रुटियोंको दूर करते हैं और उसको सदैव उन्नत बनाये रहते हैं।

तो भी बड़े और विशेष कर सज्जन मनुष्योंके जीवनचरित दूसरोंको सहायता एवं उत्तेजना देनेमें बड़े शिक्षाप्रद और उपयोगी होते हैं। कुछ महात्माओंके जीवनचरित तो धार्मिक पुस्तकोंके समान हैं। क्यों कि वे अपने और संसारके कल्याणके लिए जीवनको श्रेष्ठ बनाना, विचारोंको ऊँचे रखना, और परिश्रम करना सिखलाते हैं। वे अपने पैरोंपर आप खड़े रहने, अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें धैर्यपूर्वक लगे रहने, अश्रान्त परिश्रम करने, और सचाईपर दृढ़ रहनेके बहुत उत्तम उदाहरण हैं और खुले शब्दोंमें हमको यह बतलाते हैं कि प्रत्येक मनुष्यमें अपनी उन्नति करनेकी कितनी शक्ति मौजूद है। वे हमको यह भी साफ साफ बतलाते हैं कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरताके द्वारा छोटेसे छोटे मनुष्य भी प्रतिष्ठापूर्वक अपना निर्वाह कर सकते हैं और वास्तविक यश प्राप्त कर सकते हैं।

यह बात नहीं है कि किसी एक जाति अथवा श्रेणीके ही मनुष्य विज्ञान, साहित्य और कला-कौशलमें विद्वान् हुए हों। ऐसे मनुष्य विद्यालयों, कारखानों और किसानोंके घरोंमें, निर्धन लोगोंके झोंपड़ों और धनाढ्योंके महलोंमें—सभी स्थानोंमें हुए हैं। कई बड़े बड़े धार्मिक नेता साधारण स्थितिके मनुष्य थे। कभी कभी अत्यंत निर्धन मनुष्य भी सर्वोच्च पदोंपर पहुँच गये। बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ भी, जो अटल [illegible] उनके मार्गमें बाधक नहीं हुईं। बल्कि इन्हीं कठिनाइयों [illegible] र सहनशील-

ताकी शक्तियोंको उत्तेजित करके और उनके सोते हुए भावोंको जगाक
उनको बहुधा बड़ी सहायता दी है। कठिनाइयोंका सामना करके सफलता प्राप्त
करनेके इतने उदाहरण मिलते हैं कि हमको यह मानना पड़ता है कि मनुष्य
जो इच्छा करे वही कर सकता है। इस प्रकारके कुछ उदाहरण लीजिए।

संस्कृतके सर्वश्रेष्ठ कवि कालिदासके विषयमें जो कुछ मालूम है उसके
अनुसार वे चरवाहे थे। वे इतने मूर्ख थे कि एकबार जिस डाल पर बैठे थे
उसीको काट रहे थे। अपने विवाहके समय तक वे सर्वथा अशिक्षि
यहाँतक कि साधारण शब्दोंका शुद्ध उच्चारण भी न कर सकते थे
काव्यके रचयिता और तामिल भाषाके सर्वोत्तम कवि वल्लुवर
जातिके जुलाहे थे। उनकी भगिनी औवेयार भी सुप्रसिद्ध क
हिन्दीके श्रेष्ठ कवि और समाजसुधारक महात्मा कबीरदास जु
उनके उपदेश लोगोंको इतने पसंद आये कि उनका एक पंथ
संप्रदाय ही जुदा हो गया। मराठीके प्रसिद्ध लेखक नामदेव द
वल्लभाचार्यके शिष्य हिन्दी-कवि कृष्णदास शूद्र थे। शेख मा
मुसल्मान महिला हिन्दीकी सुकवि हो गई है; उसके छन्द बड़े मनो
वह रँगरेजिन थी और रँगाईका काम किया करती थी। ताजनिया
एक स्त्रीने हिन्दी पद्योंमें बहुत अच्छी पहेलियाँ लिखी हैं। वह उत्ताव
रहनेवाली एक तेलिन थी। लार्ड ऐल्गिनके आनरेरी सिविल सर्जन र
दुर विश्रामरामजी घोले अहीर थे। राणु रावजी आरू माली थे

भाट जाति भी बिना ख्याति पाये नहीं रही है। महाराज पृ
द्वारा सम्मानित महाकवि चंदबरदाई ब्रह्मभट थे। पृथ्वीराजके
उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। वे 'पृथ्वीराजरासो' नामक ग्रंथ बनाकर
कीर्ति अमर कर गये हैं। वे केवल कवि ही न थे, किन्तु अच्छे सैनि
थे। एक बार उन्होंने पृथ्वीराजके शत्रु भीमंगको युद्धमें परास्त किय
विजयपाल-रासाके रचयिता नल्लसिंह भाट थे। गंगभाटका नाम तो
है ही। पूरनमल भाट अलवर दरबारके कवि थे। रायपुरानके
प्रसिद्ध कवि ठाकुर भाट थे। इनके पुत्र धनीराम भी अच्छे कवि थे

दरिद्र मनुष्योंने अनेक विषयोंमें उन्नति करके ख्याति पाई है और
उन्होंने संसारको लाभ पहुँचाया है। बहुतसे लेखक और कवि दरि

चाणक्य एक निर्धन ब्राह्मणके पुत्र थे। वे स्वयं भी बड़े निर्धन थे। चाणक्य जब पाटलिपुत्र (पटना) में नंदराजाके दरबारमें गये थे तब वहाँके पंडितों और दरबारियोंने उनके फटे और मलीन वस्त्र देखकर उनका बड़ा उपहास किया था। परन्तु चाणक्यने अपने उद्योगसे ऐसी दरिद्रतामें भी विद्या प्राप्त की। कामधेनु और विद्या सदैव फल देती हैं। अंतमें चाणक्यका बड़ा सम्मान हुआ। महाकवि गोस्वामी तुलसीदासके विषयमें बहुसम्मति यही है कि वे अत्यंत दरिद्र थे। सूरदास भी अत्यंत दरिद्र थे। वे आठ वर्षकी अवस्थामें ही अपने पिताको छोड़कर मथुरा चले आये थे। सम्राट् बाबरके दरबारके हिन्दी कवि नरहरिके पिता बड़े दरिद्री थे। संस्कृत और बङ्गभाषाके प्रसिद्ध विद्वान् ईश्वरचंद्र विद्यासागर परम दरिद्री थे। हिन्दीके सुकवि कुम्भनदास भी बहुत दरिद्री थे। वे वल्लभाचार्यके शिष्य थे और एकबार सम्राट् अकबरने फतहपुर सीकरीमें इनका बड़ा सम्मान किया था। चैतन्य महाप्रभुने दरिद्र घरमें जन्म लिया था। इसी तरह गुरु नानक, अक्षयकुमार, द्वारकानाथ, कृष्णदास इत्यादि अनेक महात्मा निर्धन घरोंमें उत्पन्न हुए थे। प्रसिद्ध मासिकपत्र ' ईस्ट एंड वेस्ट ' के सुयोग्य सम्पादक बहरामजी मेरवानजी मलबारी परम दरिद्र थे। वे बाल्या-वस्थामें ही अनाथ हो गये थे और संसारमें उनका कोई आश्रयदाता नहीं था। प्रसिद्ध कोशकार वामन शिवराम आपटे अत्यंत दरिद्र थे। मद्रास हाइकोर्टके जज सर मथुस्वामी ऐयर ऐसे दरिद्र थे कि उनको १२ वर्षकी अवस्थामें ही एक रुपया मासिककी नौकरी करनी पड़ी थी। कलकत्ता हाई-कोर्टके दुभाषिया श्यामाचरण सरकार भी बाल्यकालमें परम दरिद्र थे।

राजनीतिज्ञों और सैनिकोंको भी लीजिए। द्रोणाचार्य अत्यंत दरिद्र थे। जो अपने बालकको दूध मोल लेकर भी न पिला सकते थे, उनके पास अस्त्र क्या रक्खा था! राजा बीरबलने गंगादास नामक एक निर्धन ब्राह्मणके यहाँ जन्म लिया था। वे केवल नीतिज्ञ ही नहीं, किन्तु अच्छे सैनिक भी थे। युद्धमें ही उनकी जान गई। उनमें और भी गुण थे। उनकी हाजिर-जवाबी तो ऐसी प्रसिद्ध है कि प्रायः सभी भारतवासियोंको उनके दो चार चुटकुले याद रहते हैं। ' बीरबल-विनोद ' में उनकी हाजिर-जवाबीके अनेक नमूने दिये हैं। वे हिन्दीमें कविता भी बड़ी ललित और मनोहर करते थे।

२

सम्राट् अकबर उनके गुणों पर एसे लट्टू थे कि उन्होंने उनकी मृत्युके बाद दो दिन तक भोजन भी न किया था! सम्राट् अकबरके कोषाध्यक्ष राजा टोडरमल अत्यंत दरिद्र थे। महाराज रणजीतसिंहके सरदार और परम-सहायक फूलासिंहके पिता बड़े निर्धन थे। एकबार जब घरमें कुछ खानेको न रहा तब वे दिल्लीमें नौकरी ढूंढ़नेके लिए आये थे। फूलासिंहकी वीरता बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने महाराज रणजीतसिंहको काश्मीर पर विजय पानेमें बड़ी सहायता दी थी। महाराजने टौरीका युद्ध भी उन्हींके बल पर जीता था। फूलासिंह जातिके जाट थे।

व्यवसाय और कलाकौशल्यमें भी अनेक दरिद्रोंने उन्नति की है। निर्णयसागर प्रेसके संस्थापक सेठ जावजी दादाजी चौधरी अत्यंत दरिद्र थे। उनके पितामह बंबईमें हवालदार थे और उनके पिता एक पेढ़ीवालेके यहाँ बहुत छोटी नौकरी करते थे। जावजीका जन्म सन् १८३९ ईसवीमें हुआ। वे अपने पिताके इकलौते पुत्र थे। जब वे सात वर्षके हुए तब उनके पिताका देहान्त हो गया। एक तो वे पहले ही दरिद्र थे और दूसरे इस घटनासे उनके ऊपर आपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा। उनकी माता तरकारी बेचकर निर्वाह करने लगी। जब जावजीकी अवस्था दस वर्षकी हुई और वे कुछ काम करनेके योग्य हुए तब वे दो रुपये मासिक पर 'अमेरिकन मिशन प्रेस' में टाइप घिसनेके काम पर नौकर हो गये। यहाँ उन्होंने टाइप-शिल्पसंबंधी प्रारम्भिक शिक्षा पाई, जिसमें उन्होंने अंतमें बड़ा नाम पाया। इस प्रेसमें वे कई वर्षों-तक नौकर रहे और जब यह प्रेस 'टाइम्स आफ इंडिया' ने खरीद लिया तब वे वहाँ भी डेढ़ वर्ष तक काम करते रहे। तत्पश्चात् वे 'इन्दु-प्रकाश प्रेस' में १२) रुपये मासिक वेतन पर नौकर हो गये।। फिर वे ओरियण्टल प्रेसमें टाइप ढालनेके काम पर नौकर हो गये और उन्हें ३०) रु० मासिक मिलने लगे। यहीं पर उन्होंने टाइप ढालनेके कामका ज्ञान प्राप्त किया और कुछ समयमें एक निजी कारखाना खोलनेका निश्चय किया।

सन् १८६४ में उन्होंने टाइप ढालनेका निजी कारखाना खोला और पूर्व अनुभवके कारण उनको इस काममें अच्छी सफलता हुई। उन्होंने शीघ्र ही मराठी टाइप ढालनेका एक नया ढंग निकाला और उनके टाइप अन्य सब कारखानोंके टाइपोंसे अधिक सुन्दर और उत्तम बनने लगे। सर्वसाधारणने

उनको बहुत पसंद किया और उनकी बिक्री खूब बढ़ गई। इस काममें सफलता पाकर जावजीने अपना एक प्रेस खोल दिया और उसका नाम 'निर्णयसागर' रक्खा। इस काममें भी उन्होंने वैसी ही चतुराई दिखाई और देशी भाषाओंकी बहुत अच्छी पुस्तकें छापनेका काम प्रारंभ कर दिया। उन्होंने सब तरहके बहुत सुन्दर टाइप बनाये। फिर तो बम्बईकी सरकारने भी अपनी बहुमूल्य संस्कृत पुस्तकें इसी प्रेसमें प्रकाशित कराईं। स्कूलोंके लिए गुजराती और मराठीकी पुस्तकें भी यहीं प्रकाशित होने लगीं। जावजीने इस प्रेसको उपयोगी और उच्चश्रेणीका बनानेमें कोई बात न उठा रक्खी। वे स्वयं भी नामी नामी विद्वानोंकी पुस्तकें प्रकाशित करके बहुत थोड़े मूल्यमें बेचने लगे। इससे सर्व साधारणमें शिक्षाका बड़ा प्रचार हुआ।

उन्होंने अपने यहाँसे तीन मासिकपुस्तकें भी निकालना आरंभ किया, जिनके नाम बालबोध, काव्यमाला और काव्यसंग्रह हैं। इन पुस्तकोंने भी जनसाधारणको बड़ा लाभ पहुँचाया। जावजीने कितनी सफलता प्राप्त की, इसका कुछ अनुमान इस बातसे हो सकता है कि जावजीके जीवनकालमें ही उनके प्रेसके सब कर्मचारियोंका वेतन मिलकर ३०००) मासिक था और अब यह रकम लगभग दूनी हो गई है। गवर्नमेण्टने उनके कामसे प्रसन्न होकर उनको जे. पी. की उपाधिसे विभूषित किया था।

जावजीका चरित्र भी बड़ी उच्चश्रेणीका था। वे बड़े दयालु और उदार-चित्त थे। वे दीनदुखियोंसे बड़ा प्रेम रखते थे और उनकी सहायता करनेको सदैव तत्पर रहते थे। एक बार उनके 'बालबोध' मासिक पत्रकी उत्तमतासे प्रसन्न होकर गायकवाड़ श्रीसयाजीराव महाराजने उनको १०००) रुपया पुरस्कार दिया; परन्तु उदारचित्त जावजीने यह रुपया अपने पास न रखकर बालबोधके सम्पादकको दे दिया। जावजीके जीवनमें सबसे अधिक विचित्र बात यह है कि बहुत थोड़ीसी शिक्षा पाकर ही उन्होंने इतनी उन्नति कर ली। व्यवसायमें अपने उद्योग, परिश्रम और सचाईके कारण उनकी, आश्चर्यजनक वृद्धि हुई और वे सर्वसाधारणके प्रिय बन गये। उनकी मृत्युसे छापेकी कला और व्यवसायको बड़ी हानि हुई।

कृष्णपान्तीका जन्म एक दरिद्र घरमें हुआ। उनको बाल्यावस्थासे ही २ ने सिरपर नाजकी गठरी उठाकर बाजारमें बेचने जाना पड़ता था। वे

ही कृष्णपान्ती अपने उद्योग और अध्यवसायसे ऐसे धनाढ्य होगये कि ए
दुर्भिक्षके अवसर पर उन्होंने तीन लाख रुपयेके चावल बंटवा दिये! धना
रामदुलाल सरकार पहले ऐसे निर्धन थे कि पांच रुपया मासिकपर नौक
करते थे। बाबू हेमचन्द्र, जी. एस. परांजपे, राजाबहादुर दीनदया
फोटोग्राफर, व्यंकटेश्वर प्रेसके मालिक सेठ गंगाविष्णु और सेठ खेमरा
श्रीकृष्णदास इत्यादिके विषयमें भी यही कहा जा सकता है।

उपर्युक्त महाशयोंने अपने प्रारम्भिक जीवनमें अनेक कठिनाइयोंको सह
करके अपनी प्रतिभा और उद्योगके पराक्रमसे बड़ा यश लाभ किया। य
वे शुरूसे ही धनाढ्य होते तो वही धन दरिद्रताकी अपेक्षा उनकी उन्नति
अधिक बाधक होता। उन्होंने केवल धैर्य और उद्योगके बलसे अत्यंत नि
श्रेणीसे उन्नति करते करते बड़ी कीर्ति पाई और समाजका बड़ा उपक
किया। इस देशमें और अन्य देशोंमें इस तरहके इतने उदाहरण मिलते
कि अब यह बात असाधारण नहीं मालूम होती। बहुतसे मनुष्योंके विषय
यह कहा जा सकता है कि उनके प्रारम्भिक कष्ट और कठिनाइयाँ उनक
सफलताके लिए अत्यंत आवश्यकीय और अनिवार्य थीं। अटूट परिश्रम
बदलेमें उनको यश मिला। याद रक्खो कि आलसी मनुष्यके लिए कि
प्रकारकी उत्कृष्टता प्राप्त करना सर्वथा असंभव है। आत्मोत्सर्ग, मानसि
उन्नति एवं व्यवसायमें केवल उद्योगी मनुष्य ही सफलता प्राप्त कर सक
है। मनुष्यका जन्म चाहे जैसे धनाढ्य या प्रतिष्ठित घरमें हो, परन्तु उ
यथार्थ कीर्ति केवल अटूट परिश्रमके द्वारा ही मिल सकती है। धना
मनुष्य रुपया देकर दूसरोंसे अपना काम करा सकता है; परन्तु व
दूसरोंके द्वारा अपना विचार-कार्य नहीं करा सकता और न वह किसी प्रकार
आत्मोन्नति ही खरीद सकता है।

मध्यम श्रेणीके मनुष्योंने भी ख्याति प्राप्त की है। संस्कृतके अगाध पंडि
और अनेक भाषाओंके जानकार राजाराम रामकृष्ण भागवतके पि
बम्बईमें एक साधारण कर्मचारी थे। गुजराती भाषाके सुप्रसिद्ध विद्व
और अंगरेजीके लेखक गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठीके पिता साधार
व्यापारी थे। श्रीयुत जी. सुब्रह्मनिया ऐयर और वोमेशचन्द्र बन्यो
ध्यायके पिता वकील थे। सर फीरोजशाह मेहेरवानजी मेहता, दी

शाह पेस्तनजी वाचा, पंडित अयोध्यानाथ और जस्टिस बदरुद्दीन तय्यबजीके पिता व्यापार करते थे। जस्टिस महादेव गोविन्द रानडेके पिता नासिकमें एक साधारण कर्मचारी थे।

पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा तैलंग स्वामी, श्रीयुत गोपाल कृष्ण गोखले, डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र, लाला, हंसराज, 'एडवोकेट' के सम्पादक मुन्शी गंगाप्रसाद वर्मा, काशीनाथ त्र्यंबक तैलंग, सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. इत्यादिके पिता साधारण स्थितिके पुरुष थे। श्रीयुत दादाभाई नवरोजीके पिता पुरोहित थे, बल्कि यह काम उनके वंशमें कई पीढ़ियोंसे होता था।

फ्रांसके नेपोलियनके समान अनेक साधारण सैनिकोंने आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है। मराठा-शक्तिके व्यवस्थापक महाराज शिवाजी कौन थे? उनके पिता शाहजी बीजापुरके बादशाहके यहाँ नौकर थे। शिवाजीने पूनामें रहकर युद्ध-कौशल सीखे थे। महाराज माधवराव सिंधिया साधारण सैनिक थे। पहले पहले उन्होंने पानीपतके युद्धमें कुछ ख्याति पाई। फिर वे राजा हो गये। दिल्ली और मथुरामें रहकर वे मुगल-सम्राट् शाह आलमके नामसे मुगल-राज्य पर भी शासन करते थे। उनके पिता रानोजी, बालाजी विश्वनाथ पेशवाके एक निम्न सेवक थे। मैसूरके सुलतान हैदरअली उसी देशके हिन्दूराजाके यहाँ एक साधारण सैनिक थे। बहमनी राज्यके संस्थापक शाह हसनगंगू एक ब्राह्मणके सेवक थे और अत्यंत दरिद्र थे। दिल्लीके शासक और सूरवंशके संस्थापक शेरशाह सूर एक साधारण सैनिक थे। दिल्लीके बादशाह कुतुब-उद्दीन ऐबक गुलाम थे।

इस लिए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उन्नतिके लिए यह जरूरी नहीं है कि मनुष्य धनी हो अथवा उसके पास सब तरहके साधन मौजूद हों। यदि ऐसा होता तो संसार सब युगोंमें उन मनुष्योंका ऋणी न होता, जिन्होंने उच्च श्रेणीसे उन्नति की है। जो मनुष्य आलस्य और ऐश आराममें अपने दिन बिताते हैं उनको उद्योग करने अथवा कठिनाइयोंका सामना करनेकी ज़रूरत नहीं पड़ती और न उनको उस शक्तिका ज्ञान होता है, जो जीवनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए परम आवश्यक है। गरीबीको लोग मुसीबत समझते हैं, परन्तु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य दृढ़तापूर्वक अपने

पैरोंपर खड़ा रहे तो यही गरीबी उसके लिए आशीर्वाद हो सकती है। गरीबी मनुष्यको संसारके उस युद्धके लिए तैयार करती है जिसमें यद्यपि कुछ लोग नीचता दिखाकर विलास-प्रिय हो जाते हैं, परन्तु समझदार और सच्चे हृदयवाले मनुष्य बल और विश्वासपूर्वक लड़ते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। एक विद्वान्का कथन है कि "मनुष्योंको न तो अपने धनका यथार्थ ज्ञान है और न अपनी शक्तिका। धनमें वे इतना महत्व समझते हैं जितना उसमें वास्तवमें नहीं है और शक्तिकी वे उतनी कदर नहीं करते जितनी उनको करनी चाहिए। अपने पैरोंपर आप खड़े रहनेसे और संयमका अभ्यास करनेसे मनुष्यको यह शिक्षा मिलती है कि वह अपनी ही कमाईकी रोटी खावे और अपनी आजीविकाके लिए और अपने अधिकारमें आये हुए उत्तम पदार्थोंकी वृद्धि करनेके लिए सच्चे दिलसे परिश्रम करे।"

सुख और भोगविलासके लिए, जिनकी ओर मनुष्य स्वभावतः झुकते हैं, धन ऐसा प्रबल प्रलोभन है कि वे मनुष्य बड़े धन्य हैं जो धनकुबेरोंके यहाँ पैदा होकर भी संसारमें कुछ काम कर दिखाते हैं, और भोगविलाससे हाथ उठाकर अपना जीवन परिश्रममें व्यतीत करते हैं। बड़े दुःखकी बात है कि हमारे देशके अनेक धनिक आलस्यमें, नाच-रंगमें और खेल-तमाशोंमें अपने समयको नष्ट कर देते हैं। इसके विपरीत इँग्लैण्ड इत्यादि देशोंके धनिक देश-सेवाको ही अपने जीवनका एक मात्र उद्देश्य समझते हैं और स्वदेशके लिए सब तरहका परिश्रम करते हैं और कष्ट उठाते हैं; यहाँ तक कि अपने देश और अपने भाइयोंके लिए युद्धमें अपनी जान तक दे देते हैं। पर भारतीय श्रीमान् इन बातोंसे कोसों दूर भागते हैं।

धनाढ्य मनुष्य भी अप्रसिद्ध नहीं रहे हैं। विदेशोंमें ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं। भारतमें भी कभी कभी ऐसे रत्न चमक जाते हैं, जिन्होंने किसी न किसी रूपमें देशसेवा की है और जिनसे अन्य समृद्धिशाली मनुष्योंको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। साहित्यमें सर रवीन्द्रनाथ ठाकुरको ले लीजिए [illegible] संसारमें आज धूम मची हुई है। आपके कुलमें सदैव विपुल

ज्यर यूरोप और अमेरिकाके बड़े बड़े विज्ञानवेत्ता दाँतोंके तले उँगली
जाते हैं। राजनीतिमें राजा सर टी. माधवरावको लीजिए जिन्होंने ट्राव-
कोर, इंदौर और बड़ौदाके दीवान रहकर उक्त राज्योंकी प्रजाका बहुत भारी
उपकार किया और अतुल यश और सम्मान प्राप्त किया। आपने एक सद्-
गृहस्थी कुलमें जन्म लिया था। आपके पिता भी ट्रावनकोरके दीवान थे।
र्तमान देशभक्तोंमें महात्मा मोहनदास करमचंद गांधीका नाम सदा
अमर रहेगा जिन्होंने अपने देशभाइयोंके दुःखोंको दूर करना ही अपने जीव-
नका एक मात्र उद्देश्य बना रक्खा है। आपके पितामह और पिता पोरबंद-
रके दीवान थे। जाति-हितैषियोंमें सर सय्यद अहमदका नाम लिया जा
सकता है। उनके पितामह सम्राट् आलमगीर (द्वितीय) के राजमंत्री थे
और उनके पिताको सम्राट् अकबर (द्वितीय) ने मंत्री-पद पर नियत करना
चाहा था। उद्योग-धंधों और व्यापारमें जे. एन. टाटाका नाम किससे छिपा नहीं है।
धनाढ्योंमें बम्बईके सेठ प्रेमचन्द रायचन्दको कौन नहीं जानता? आपने
अपने ही उद्योगसे विपुल धन उपार्जन किया था। आपने अपने जीवनमें सब
मिलाकर पचास, साठ लाख रुपये दान किये। आपने कई लाख रुपया कलकत्तेके
विश्वविद्यालयको भी दिया, जिसके ब्याजसे ऊँची परीक्षा पास करनेवालोंको
छात्रवृत्ति दी जाती है, जो 'प्रेमचन्द-रायचन्द-स्कालर्शिप' के नामसे
प्रसिद्ध है। अन्य साधारण कुलोंमें जन्म लेनेवालोंमें श्रीयुत रमेशचन्द्रदत्त,
द्वारकानाथ मित्र, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, महर्षि देवेन्द्रनाथ
ठाकुर, महाराजा सर दिनकरराव, सर सेठ हुकमचंद इत्यादिके नाम लिये
जा सकते हैं। परन्तु स्मरण रहे कि इस समय ऐसे मनुष्य भारतवर्षमें इने-
गिने हैं।

अब विदेशोंमें चलिए। विदेशोंमें कई प्रकारके उदाहरण तो भारतवर्षसे
भी अधिक और उत्तम मिलते हैं। वहाँ पर सैकड़ों नीच स्थितिके मनुष्योंने
अमित यश प्राप्त किया है और अपने देशका ही मुख उज्ज्वल नहीं किया है,
किन्तु समस्त संसारको लाभ पहुँचाया है। भारतवर्षमें, जाति-पाँतिका भेद
बड़ा प्रबल है, इसलिए यहाँ नीच जातिके मनुष्य उठने नहीं पाते; परन्तु
इंग्लैण्ड आदि देशोंमें, यह बात नहीं है। वहाँ ऐसे सैकड़ों मनुष्य विज्ञान,
साहित्य, उद्योग, व्यवसाय इत्यादिमें बहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके हैं।

अँगरेजी भाषाके कविशिरोमणि शेक्सपियर किस जातिके थे, यह ठीक ठीक नहीं मालूम, परन्तु यह संदेहरहित है कि वे निम्नश्रेणीके मे उनके पिता कसाई थे और बिक्रीके लिए जानवर पालते थे। यह भी क जाता है कि शेक्सपियर बाल्यकालमें ऊन कातनेका धंधा करते थे। कु लोगोंका कथन है कि वे स्कूलमें सहायक अध्यापक थे और फिर एक दला के मुनीम हो गये थे। शेक्सपियर सचमुच कोई एक काम करनेवाले नहीं किन्तु सर्व मानवजातिके सार मालूम होते हैं। किसीका मत है कि अवश्य नौकरी ही करते रहे होंगे और कोई उनके लेखोंकी अंतर साक्षीके आधार पर उन्हें किसी पादरीका मुहर्रिर अथवा घोड़ोंका व्याप ठहराते हैं। यह निश्चय है कि शेक्सपियर नाटकोंमें तमाशा करते थे औ उन्होंने सब तरहके अनुभवों और निरीक्षणोंसे अपने ज्ञानभंडारकी पूर्ति क थी। वे चाहे जो काम करते हों, परन्तु यह निश्चय है कि वे ज्ञान प्रा करनेमें अवश्य प्रवीण रहे होंगे। उनके लेख अँगरेज जातिके चरित्र प अब भी बड़ा शक्तिशाली प्रभाव रखते हैं।

कवि बर्न्स साधारण मजदूर थे। रुई कातनेकी मशीनके आविष्कारक सर रिचर्ड आर्कराइट और प्रसिद्ध चित्रकार टर्नर पहले नाईका काम करते थे। प्रसिद्ध नाटककार बेन जानसन जो एक हाथमें कन्नी और दूस रेमें किताब लेकर काम किया करता था, राज था। उसीके समान भूगर्भ शास्त्रवेत्ता ह्यूमिलर और मूर्तिकार एलेन कनिंघम राज थे। बढ़इयोंमें प्रतिभाशाली जान हण्टर, चित्रकार रोमने और ओपी, और मूर्तिकार जान गिबसनका नाम लिया जा सकता है।

ता रहा। वीर सर जान हाक्सवुड, जिसने फ्रांसवालोंके विरुद्ध पोशि-के युद्धमें विजय पाई थी, अपने आरम्भिक जीवनमें लंडनके एक दर्ज़ीके काम सीखा करता था। परन्तु दर्ज़ियोंमें सबसे प्रसिद्ध निःसंदेह युनाइ-स्टेट्स अमेरिकाके भूतपूर्व प्रेसिडेंट एँड्र्यू जानसन हैं, जिनमें विचित्र त्र-बल और मानसिक शक्ति थी। एक बार जब वे वाशिंगटन नगरमें ने एक व्याख्यानमें वर्णन कर रहे थे कि मैं अपने राजनैतिक जीवनके में शहरका हाकिम हुआ था और फिर नियमव्यवस्थाके सभी अंगोंमें र बढ़ता चला गया, तब श्रोताओंमेंसे एक आवाज आई, कि "दर्ज़ीकी ोंसे उठे हो!" जानसनका स्वभाव था कि वे ऐसी चुटकी लेनेसे बुरा मानते थे, उलटा उसको लाभदायक बना देते थे। बस उन्होंने तुरंत ही ा कि, "कोई सज्जन कहते हैं कि मैं दर्ज़ी था, परन्तु मैं इस बातसे चित् भी नहीं घबड़ाता; क्यों कि जब मैं दर्ज़ी था, तो शहरमें और दि बनानेमें प्रसिद्ध था; मैं अपने ग्राहकोंसे अपने वायदेमें कभी न चूकता और सदैव उत्तम काम करता था।"

कार्डिनल वुलज़ी, डीफो एकेंसाइड, इत्यादि कसाई थे। भाफके इसके आविष्कारके संबंधमें न्यूकोमैन, वाट और स्टीफिन्सनके नाम सिद्ध हैं। इनमेंसे पहला लुहार था, दूसरा गणितसंबंधी औज़ार बनानेवाला और तीसरा अंजनमें कोयला झोंकनेवाला था। माइकल फेरेडे, जो एक हारके पुत्र थे, शुरूमें जिल्द बाँधनेका काम सीखते रहे और बाईस वर्षकी अवस्थातक यही धंदा करते रहे; वे अब दार्शनिकोंके शिरोमणि हैं।

ज्योतिःशास्त्रकी उन्नति करनेवालोंको लीजिए। कोपर्निकसका पिता क (पालिश) पकानेका धंदा करता था। केपलर जर्मनीके एक भटि-यारेका लड़का था। डी एलिम्बर्टको एक गिरजेकी सीढ़ियों पर कोई लड़को डाल गया था और एक जिला (पालिस) करनेवालेकी स्त्री उस लड़केको उठा लाई थी और उसने उसका पालनपोषण किया था। लेपलेस क दरिद्र किसानका लड़का था।

धर्मोपदेशकोंके पुत्रोंने इंग्लैण्डके इतिहासमें विशेषतर ख्याति पाई है। इनमेंसे मशहूरी युद्धोंमें ड्रेक और नैलसनने, विज्ञानमें वोलेस्टन और

रहा। वीर सर जान ह्वाकस्वुड, जिसने फ्रांसवालोंके विरुद्ध पोशि-
युद्धमें विजय पाई थी, अपने आरम्भिक जीवनमें लंडनके एक दर्जीके
म सीखा करता था। परन्तु दर्जियोंमें सबसे प्रसिद्ध निःसंदेह युनाइ-
स अमेरिकाके भूतपूर्व प्रेसीडेंट ऐंड्र्यू जानसन हैं, जिनमें विचित्र
ल और मानसिक शक्ति थी। एक बार जब वे वाशिंगटन नगरमें
क व्याख्यानमें वर्णन कर रहे थे कि मैं अपने राजनैतिक जीवनके
हरका हाकिम हुआ था और फिर नियमव्यवस्थाके सभी अंगोंमें
द्दता चला गया, तब श्रोताओंमेंसे एक आवाज आई, कि "दर्जीकी
ठे हो!" जानसनका स्वभाव था कि वे ऐसी चुटकी लेनेसे बुरा
थे, उल्टा उसको लाभदायक बना देते थे। बस उन्होंने तुरंत ही
"। कोई सज्जन कहते हैं कि मैं दर्जी था, परन्तु मैं इस बातसे
ी नहीं घबड़ाता; क्यों कि जब मैं दर्जी था, तो भद्रतामें और
मेमें प्रसिद्ध था; मैं अपने ग्राहकोंसे अपने वायदेमें कभी न चूकता
दैव उत्तम काम करता था।"

नल वुलज़ी, डीफो यर्कवाइट, इत्यादि कसाई थे। भापके
ाविष्कारके संबंधमें न्यूकोमैन, वाट और स्टीफिन्सनके नाम
। इनमेंसे पहला लुहार था, दूसरा गणितसंबंधी औजार बनानेवाला
ीसरा अंजनमें कोयला झोंकनेवाला था। माइकल फेरेडे, जो एक
र थे, शुरूमें जिल्द बांधनेका काम सीखते रहे और बाईस वर्षकी
यही धंदा करते रहे: वे अब दार्शनिकोंके शिरोमणि हैं।

ाशकी उन्नति करनेवालोंको लीजिए। कोपर्निकस्का पिता
ैरा) पकानेका धंदा करता था। केपलर जर्मनीके एक भटि-
ड़का था। डी एलिकर्टको एक गिरजेकी सीढ़ियों पर कोई
ड़ गया था और एक जिला (पालिश) करनेवालेकी स्त्री उस
ठा लाई थी और उसने [illegible] किया था। लैपलेस

वातोंकी छानबीन कर डाली और सबमें अपूर्वता प्राप्त की। उन्होंने इ उन्नति कैसे कर डाली, यह बात बहुतसे मनुष्योंके लिए गुप्त रहस्य रही सेमुएल रोमेलीसे किसी नये कामके करनेके लिए अनुरोध किया ग तब उन्होंने अपने पास समयका अभाव दिखाते हुए कहा "इस का ब्रौघमके पास ले जाओ। उनके पास दुनियाभरके कामोंके लिए स मौजूद रहता है।" इसका रहस्य यह था कि ब्रौघम एक क्षण भी बे न खोते थे; और इसके साथ ही उनका शरीर लोहेके समान मज और स्वस्थ था। जब वे उस उम्र पर पहुँचे, जिस पर पहुँचकर बहु आदमी संसारका सब बखेड़ा छोड़कर अपने पूर्व परिश्रमके फल भोगते और विश्राम लेते हैं, तब उन्होंने अपने परिश्रमके फलको लंडन और पेरि अनेक धुरंधर वैज्ञानिक विद्वानोंके सामने एक व्याख्यानमें प्रकट किया अ उसी समयके लगभग वे अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक भी प्रकाशित कराते रहे

यद्यपि ये और अन्य उदाहरण प्रकट करते हैं कि व्यक्तिगत परिश्रम और उद्योगसे बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है, तो भी यह स्वीकार करना पड़े कि जीवनयात्रामें जो सहायता हमको दूसरोंसे मिलती है वह भी बड़े म रखती है। अँगरेजीके एक कविने खूब कहा है कि "धीरताके साथ दूसरों सहायता ग्रहण करना और अपने पैरोंपर आप खड़े रहना, ये दोनों बातें प रस्पर विरुद्ध होनेपर भी साथ साथ रहती हैं।" बचपनसे लेकर बुढ़ापे त सभी लोग अपने पालन-पोषण और उन्नतिके लिए दूसरेके न्यूनाधिक ऋणी रहते हैं और जितने बड़े और शक्तिशाली मनुष्य हैं वे दूसरोंसे सहायत स्वीकार करनेके लिए सबसे अधिक तैयार रहते हैं।

मनुष्यका चरित्र वास्तवमें बहुतसी छोटी छोटी बातोंके प्रभावसे बनत उदाहरण और उपदेश, जीवन-चरित और साहित्य, मित्र और पड़ोसी, संसार जिसमें हम रहते हैं और हमारे पूर्वजोंके उत्तम शब्द और इत्यादि ऐसी ही अनेक बातें हमारे चरित्रपर अपना प्रभाव डालतं यद्यपि इन बातोंके प्रभाव निःसंदेह बड़े हैं तो भी यह स्पष्ट है कि मनु अपना सुधार करनेमें और सच्चरित्र बननेमें स्वयं शक्तिपूर्वक उद्योग चाहिए। चाहे बुद्धिमान् और सज्जन मनुष्य दूसरोंके कितने ही ऋणी परन्तु अपनी सर्वोत्तम सहायता अपने आप करनी चाहिए।

उद्योगी आविष्कर्त्ता।

" सर्वत्र एक अपूर्व युगका हो रहा सञ्चार है,
देखो, दिनों दिन बढ़ रहा विज्ञानका विस्तार है।
अब तो उठो क्या पड़ रहे हो व्यर्थ सोच विचारमें ?
सुख दूर, जीना भी कठिन है श्रम बिना संसारमें॥ "

—मैथिलीशरण गुप्त

" निम्नश्रेणीके मनुष्योंने इंग्लैंडके लिए आविष्कारसंबंधी जितने कार्य कि
उनको निकाल दो और फिर देखो कि केवल उन्हींके अभावसे इंग्लैंड
गति कैसी हो जाती है। "

—आर्थर हैल्प्स।

" अब संसारका स्वामित्व उद्योग और विज्ञानशास्त्रके हाथ रहेगा। विज्ञान
ेडत और उद्योगी पुरुष अपनी शक्तिसे सारी दुनियाको वशीभूत कर लेंगे

—ड्साल्वान्दी।

प्रत्येक देशकी महत्ता उस देशके उद्योग-धंधोंपर बहुत कुछ निर्भर है
किसान, उपयोगी पदार्थोंके बनानेवाले, औज़ारों और मशीनोंके ईज
रनेवाले, पुस्तकोंके लेखक, शिल्पकार इत्यादि सभी अपने अपने उद्योग
शकी उन्नति करते हैं। इसी उद्योगके कारण आज हम पश्चिमी देशोंको फू
ला पाते हैं और इसीके अभावसे हमारी दशा ऐसी शोचनीय हो रही है
ब इस देशमें भी उद्योग धन्धे होते थे, तब यह देश भी उन्नतिके शिखर
था। लंदन और पेरिसकी महिलायें भी यहाँके—ढाकेके कपड़ोंको पहन
गर्व करती थीं। अकेले बंगालमें ही लाखों मनुष्य शिल्प-व्यवसाय करते थे
भारतवासियोंके बनाये हुए पदार्थ संसार-भरमें बिकते थे। दिल्लीमें
लोहेका ऊँचा स्तंभ है वह हमारे ही पूर्वजोंके शिल्पचातुर्यका नमूना है
पश्चिमी शिल्पकार इसको देखकर दाँतोंके तले उँगली दबाते हैं। इस
अवस्था इस समय चौदह सौ वर्षकी है, परन्तु हवा और पानीमें निरं
खुले रहने पर भी इस पर मोरचेका नाम तक नहीं है। भारतकी गृ
निर्माण-विद्या और चित्रकारीके प्राचीन नमूने अब भी अद्भुत समझे जाते हैं

स्वावलम्बन—

अजण्टा और एलोराकी गुफाओंकी चित्रकारी पश्चिमी शिल्पकारोंको च
कर रही है। भारतीय कलाकौशल्यके ऐसे अनेक नमूने सिद्ध करते है
प्राचीन आर्यजातिकी उद्योगशीलता बहुत बढ़ी चढ़ी थी। यहाँके औद्यो
नेताओंने अनेक आविष्कार किये थे। परन्तु वह औद्योगिक उत्साह अब भ
तवासियोंसे कोसों दूर है।

इस विषयमें हम पश्चिमी देशोंसे बहुत कुछ शिक्षा ले सकते हैं। वि
पश्चिमकी जातिसे हमारा सबसे अधिक घनिष्ठ संबंध है वह अँगरेज जाति
इस जातिका औद्योगिक उत्साह प्राचीन कालमें जैसा तीव्र था वैसा ही,
भी है। इस जातिके सामान्य मनुष्योंका औद्योगिक उत्साह ही अँगरे
राज्यकी औद्योगिक महत्ताका आधार है। इसी उत्साहके कारण अँगरे
राज्यशासनकी त्रुटियाँ और नियमावलीके दोषोंकी हानियाँ दूर हुई हैं।

अँगरेजोंको उद्योग-धंधोंसे सर्वोत्तम शिक्षा भी मिली है। उद्योग दी
वाले जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्यको सर्वोत्तम शिक्षा मिलती है उसी प्रक
इससे समस्त जातिको भी लाभ पहुँचता है। ईमानदारीके साथ कोई उद्यो
धंधा करना कर्तव्यपालन करनेके समान श्रेष्ठ है और दैवने दोनोंका सुन्
साथ घनिष्ट संबंध रक्खा है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि अपने शारीरि
अथवा मानसिक परिश्रमसे कमाई हुई रोटीके बराबर दूसरी रोटी मीठी नह
होती। परिश्रमके द्वारा ही मनुष्यने पृथ्वी पर अपना अधिकार जमा लिया है
और इसीसे मनुष्यने अपनी जंगली दशासे छुटकारा पाया है। सच तो यो
है कि परिश्रमके बिना मनुष्य सभ्यताकी ओर एक कदम भी नहीं बढ़ा है।
मनुष्यके लिए परिश्रम करना जरूरी है। मनुष्यका कर्तव्य है कि वह परि-
श्रम करे। इतना ही नहीं, मनुष्यके लिए परिश्रम आशीर्वाद है। केवल
आलसी मनुष्योंको परिश्रम आपत्ति मालूम होता है। हाथ-पैरोंकी नस नस
पर और मस्तिष्ककी एक एक रग पर लिखा हुआ है कि परिश्रम करना मनु-
ष्यका कर्तव्य है। क्योंकि इन्हीं नसों और रगोंके मिल कर काम करनेसे
मनुष्यको संतोष और आनंद मिलता है। व्यवहार-बुद्धिकी सर्वोत्तम शिक्षा
परिश्रमकी पाठशालामें मिलती है, और हमको आगे चल कर मालूम होगा
कि हाथ-पैरोंकी मेहनत और ऊँचे दरजेकी मानसिक उन्नति परस्पर विरोधी
नहीं है।

एक बड़े अनुभवी मनुष्यका कथन है कि कड़ेसे कड़े परिश्रमसे भी आनन्द मिलता है और उन्नति करनेके साधन प्राप्त होते हैं। ईमानदारीके साथ परिश्रम करनेसे सर्वोत्तम शिक्षा मिलती है और परिश्रमकी पाठशाला सबसे उत्तम है। क्योंकि उसमें उपयोगी बनना सिखलाया जाता है, स्वतंत्रताका भाव आता है और धैर्यपूर्वक उद्योग करनेकी आदत पड़ती है। कारीगरको रोजमर्रा औजारों और दूसरी चीजोंसे काम करना पड़ता है और संसारके लोगोंके साथ व्यवहार करना पड़ता है। इससे उसकी निरीक्षण-शक्ति बढ़ती है और वह जीवनयात्रामें अपने पैरोंपर आप खड़े होनेके और अपने आपको उन्नत बनानेके योग्य हो जाता है। किसी दूसरे पेशेसे मनुष्य इतनी योग्यता नहीं प्राप्त कर सकता।

पहले अध्यायमें हम अनेक प्रतिष्ठित मनुष्योंके नाम लिख आये हैं, जिन्होंने अपने उद्योगके द्वारा निम्न श्रेणीसे उठकर विज्ञान, व्यापार, साहित्य, शिल्प इत्यादिमें ख्याति पाई है। उनके उदाहरणोंसे मालूम होता है कि गरीबी और श्रमके कारण जो कठिनाइयाँ सामने आजाती हैं वे दुर्जय नहीं हैं। जिन उपायों और आविष्कारोंकी बदौलत अँगरेज जाति ऐसी शक्तिशालिनी और धनशालिनी हो गई है, उनके अधिकांशके लिए निस्संदेह अत्यंत निम्न श्रेणीके मनुष्योंका आभार मानना चाहिए। इस संबंधमें ऐसे लोगोंने जो कुछ किया है उसको यदि निकाल दो तो फिर मालूम होगा कि अन्य मनुष्योंके द्वारा वास्तवमें बहुत ही कम काम हुआ है।

आविष्कार-कर्ताओंके द्वारा संसारके कई बड़े बड़े व्यवसाय चल पड़े हैं। उनके द्वारा संसारको आवश्यक पदार्थ और सुख तथा भोगविलासकी चीजें प्राप्त हुई हैं; और उनकी प्रतिभा तथा परिश्रमके कारण मनुष्यजातिका जीवन अधिक सुगम और सुखमय हो गया है। हमारा भोजन, हमारे वस्त्र, हमारे घरोंका असबाब, शीशे जो हमारे घरोंमें प्रकाशको आने देते हैं, परन्तु सर्दीको रोक लेते हैं, गैस और बिजली जिनसे सड़कों, गलियों और घरोंमें प्रकाश होता है, रेल, जहाज इत्यादि जिनसे हम स्थल और जल पर यात्रा करते हैं, व्योमयान जिनसे हम पक्षियोंकी भाँति उड़ते फिरते हैं, वे औजार जिनसे नाना प्रकारकी चीजें बनती हैं, जो हमारी आवश्यकताओंकी पूर्ति करती हैं और हमको सुख देती हैं—ये सब हमको बहुतसे मनुष्य तथा

बहुतसे मस्तिष्कोंके श्रम और चातुर्यसे ही मिली हैं। इन आविष्कारोंसे म
जाति बहुत सुखी हो गई है और प्रतिदिन व्यक्तिगत एवं जातीय कु
शलताके बढ़नेसे हमको उनका फल मिलता रहता है।

यद्यपि भाफका अंजन, जो यंत्रोंका राजा है, एक ऐसी चीज है जि
आविष्कार नवीन युगमें ही हुआ है, तथापि इसका विचार सैकड़ों वर्ष
उत्पन्न हुआ था। अन्य आविष्कारों और अनुसंधानोंके समान यह भी
शनैः हुआ है। एक मनुष्य अपने परिश्रमका फल अपने उत्तराधिकारि
दे गया, उन्होंने उसकी उन्नति करके उसे और आगे बढ़ाया और
तरह कई वंशपरंपराओंतक यह कार्य जारी रहा। भाफके अंजनका वि
बहुत पहले शुरू हुआ, परंतु जबतक वह यन्त्रकारों द्वारा कार्यरूपमें परि
न किया गया, तबतक बेकार ही था। इस अद्भुत यन्त्रके आविष्कारमें
और उद्योगशील मनुष्योंने जो धीरज दिखाया है अथवा परिश्रम किया
और जिन जिन आपत्तियोंका सामना किया है उनकी कथा बड़ी ही वि
है। वास्तवमें यह कथा मनुष्यकी स्वावलम्बन-शक्तिका एक स्मारक है
इसके चारों तरफ वे लोग हैं, जिन्होंने अपने अटूट परिश्रमसे इस आवि
रमें योग दिया है और जेम्स वाट—जो उद्योगी धैर्यवान् और बिना थ
काम करनेवाला था—उन सबका शिरोमणि है।

जेम्स वाट सरतोड़ परिश्रम करनेवाला था। इसका जीवनचरित सि
करता है कि सर्वश्रेष्ठ परिणामोंकी प्राप्तिके लिए स्वाभाविक शक्ति औ
योग्यताकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु बड़े भारी उद्योग और अति सुव्य
स्थित चातुर्यकी जरूरत है—ऐसे चातुर्यकी जो परिश्रम, लगातारके उद्यो
और अनुभवके द्वारा प्राप्त होता है। उस समय बहुत लोगोंका ज्ञान वाट
ज्ञानसे कहीं बढ़ा चढ़ा था, परन्तु उनमेंसे किसीने भी वाटके समान अप
ज्ञानको उपयोगी और व्यावहारिक बातोंकी सिद्धिमें लगानेका परिश्रम
किया। उसमें सबसे बड़ा गुण यह था कि वह हर बातका निरीक्षण अर्थ
धैर्यपूर्वक करता था। उसने अपने ध्यानाभ्यासको, जिसपर मस्तिष्ककी द
तर शक्तियाँ अवलम्बित हैं, बड़ी सावधानीसे बढ़ाया था। एक महाशय
कथन है कि मनुष्योंकी बुद्धिमत्तामें जो भिन्नता दिखाई देती है उसक

यही है कि उन्होंने बचपनमें न्यूनाधिक ध्यानाभ्यास किया है;
शक्तियोंमें भेद-भाव होना तो गौण कारण है।

वाटको बाल्यकालमें भी अपने खिलौनोंमें विज्ञानका दर्शन होता था । अपने पिताके बढ़ईखानेमें पड़े हुए ऊँचाई नापनेके यंत्रोंको देखकर उसको दृष्टि-विद्या और खगोल शास्त्रके अध्ययनका शौक पैदा हुआ । अपनी अस्वस्थताके कारण उसने शरीर-शास्त्रके रहस्यको जानना चाहा; और अपने आसपासके ग्रामोंमें अकेले भ्रमण करनेसे उसका ध्यान वनस्पति-शास्त्र और इतिहासकी ओर आकर्षित हुआ । जब वह गणितसंबंधी औजार बनानेका व्यवसाय किया करता था, तब उसे एक बाजेकी मरम्मतका काम मिला; और यद्यपि उसे गान-विद्यामें रुचि न थी, तथापि उसने स्वरविद्याका अध्ययन किया और उस बाजेको सफलतापूर्वक बना दिया । इसी तरहसे जब न्यूकोमेनका बनाया हुआ भापका अंजन उसके पास मरम्मतके लिए आया तब वह तुरंत ही ताप, वाष्पीभवन और गाढ़ीकरणके संबंधमें उस कालमें जो कुछ मालूम था उसे सीखनेके लिए तत्पर होगया और इसके साथ ही यंत्र-विद्या और निर्माण-विद्या भी सीखता रहा । अपने अध्ययनके परिणामोंसे अंतमें उसने स्वयं एक भापका अंजन बनाकर दिखा दिया ।

दस वर्षतक वह यंत्रोंको बनाता और उनके विषयमें विचार करता रहा । इसे आनंदित करनेके लिए आशाकी बहुत थोड़ी मात्रा थी और उसे उत्साहित करनेके लिए मित्र भी बहुत थोड़े थे । इसके साथ ही साथ वह कई तरहके धंधे करके अपने कुटुम्बका भरण पोषण करता रहा । वह ऊँचाई नापनेके यंत्र बनाता और बेचता था, बाँसुरी और अन्य बाजे बनाता था, मकानोंकी माप करता था, सड़कें मापता था, नहरोंकी खुदाईके कामका निरीक्षण करता था; इस तरह जो काम मिल जाता था और जिसमें फायदेकी सूरत दिखाई देती थी वही करने लगता था । अंतमें वाटको एक सुयोग्य साथी मिल गया जिसका नाम मैथ्यू बौल्टन था । वह एक चतुर, उद्योगशील और दूरदर्शी मनुष्य था जिसने भापके अंजनसे सब तरहके काम लेनेका बीड़ा उठा लिया था, और इतिहास अब उन दोनोंकी सफलताका साक्षी है ।

बहुतसे चतुर आविष्कार-कर्ताओंने समय समय पर भापके अंजनमें नई नई उन्नति बढ़ाई है और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सब तरहकी चीजें बनानेके योग्य कर दिया है । कलोंको चलाना, जहाजोंको

वाटको बाल्यकालमें भी अपने खिलौनोंमें विज्ञानका दर्शन होता था। अपने पिताके बढ़ईखानेमें पड़े हुए ऊँचाई नापनेके यंत्रोंको देखकर उसको दृष्टि-विद्या और खगोल शास्त्रके अध्ययनका शौक पैदा हुआ। अपनी अस्वस्थताके कारण उसने शरीर-शास्त्रके रहस्यको जानना चाहा; और अपने आसपासके ग्रामोंमें अकेले भ्रमण करनेसे उसका ध्यान वनस्पति-शास्त्र और इतिहासकी ओर आकर्षित हुआ। जब वह गणितसंबंधी औज़ार बनानेका व्यवसाय किया करता था, तब उसे एक बाजेकी मरम्मतका काम मिला; और यद्यपि उसे गान-विद्यासे रुचि न थी, तथापि उसने स्वरविद्याका अध्ययन किया और उस बाजेको सफलतापूर्वक बना दिया। इसी तरहसे जब न्यूकोमेनका बनाया हुआ भापका अंजन उसके पास मरम्मतके लिए आया तब वह तुरंत ही भाप, वाष्पीभवन और गाढ़ीकरणके संबंधमें उस कालमें जो कुछ मालूम था उसे सीखनेके लिए तत्पर होगया और इसके साथ ही यंत्र-विद्या और निर्माण-विद्या भी सीखता रहा। अपने अध्ययनके परिणामोंसे अंतमें उसने स्वयं एक भापका अंजन बनाकर दिखा दिया।

इस वर्षतक वह यंत्रोंको बनाता और उनके विषयमें विचार करता रहा। उसे आनंदित करनेके लिए आशाकी बहुत थोड़ी मात्रा थी और उसे उत्साहित करनेके लिए मित्र भी बहुत थोड़े थे। इसके साथ ही साथ वह कई तरहके धंधे करके अपने कुटुम्बका भरण पोषण करता रहा। वह ऊँचाई नापनेके यंत्र बनाता और बेचता था, बाँसुरी और अन्य बाजे बनाता था, मकानोंकी माप करता था, सड़कें नापता था, नहरोंकी खुदाईके कामका निरीक्षण करता था; इस तरह जो काम मिल जाता था और जिसमें फायदेकी सूरत दिखाई देती थी वही करने लगता था। अंतमें वाटको एक सुयोग्य साथी मिल गया जिसका नाम मैथ्यू बौल्टन था। वह एक चतुर, उद्योगशील और दूरदर्शी मनुष्य था जिसने भापके अंजनसे सब तरहके काम लेनेका बीड़ा उठा लिया था, और इतिहास अब उन दोनोंकी सफलताका साक्षी है।

बहुतसे चतुर आविष्कार-कर्ताओंने समय समय पर भापके अंजनमें नई नई शक्तियाँ बढ़ाई हैं और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सब तरहकी चीजें बनानेके योग्य कर दिया है। कलोंको चलाना, जहाज़ोंको

बहुतसे मस्तिष्कोंके श्रम और चातुर्यसे ही मिली हैं। इन आविष्कारोंसे जाति बहुत सुखी हो गई है और प्रतिदिन व्यक्तिगत एवं जातीय ताके बढ़नेसे हमको उनका फल मिलता रहता है।

यद्यपि भाफका अंजन, जो यंत्रोंका राजा है, एक ऐसी चीज है आविष्कार नवीन युगमें ही हुआ है, तथापि इसका विचार सैकड़ों व उत्पन्न हुआ था। अन्य आविष्कारों और अनुसंधानोंके समान यह शनैः हुआ है। एक मनुष्य अपने परिश्रमका फल अपने उत्तराधिका दे गया, उन्होंने उसकी उन्नति करके उसे और आगे बढ़ाया और तरह कई वंशपरंपराओंतक यह कार्य जारी रहा। भाफके अंजनका बहुत पहले शुरू हुआ, परंतु जबतक वह यन्त्रकारों द्वारा कार्यरूपमें प न किया गया, तबतक बेकार ही था। इस अद्भुत यन्त्रके आविष्कारमें और उद्योगशील मनुष्योंने जो धीरज दिखाया है अथवा परिश्रम कि और जिन जिन आपत्तियोंका सामना किया है उनकी कथा बड़ी ही वि है। वास्तवमें यह कथा मनुष्यकी स्वावलम्बन-शक्तिका एक स्मारक इसके चारों तरफ वे लोग हैं, जिन्होंने अपने अटूट परिश्रमसे इस आवि रमें योग दिया है और जेम्स वाट—जो उद्योगी धैर्यवान् और नियम काम करनेवाला था—उन सबका शिरोमणि है।

वाटको बाल्यकालमें भी अपने खिलोनोंमें विज्ञानका दर्शन होता था। अपने पिताके बढ़ईखानेमें पड़े हुए ऊँचाई मापनेके यंत्रोंको देखकर उसको दृष्टि-विद्या और खगोल शास्त्रके अध्ययनका शौक पैदा हुआ। अपनी अस्वस्थताके कारण उसने शरीर-शास्त्रके रहस्यको जानना चाहा; और अपने आसपासके ग्रामोंमें अकेले भ्रमण करनेसे उसका ध्यान वनस्पति-शास्त्र और इतिहासकी ओर आकर्षित हुआ। जब वह गणितसंबंधी औजार बनानेका व्यवसाय किया करता था, तब उसे एक बाजेकी मरम्मतका काम मिला; और यद्यपि उसे गान-विद्यामें रुचि न थी, तथापि उसने स्वरविद्याका अध्ययन किया और उस बाजेको सफलतापूर्वक बना दिया। इसी तरहसे जब न्यूकोमैनका बनाया हुआ भाफका अंजन उसके पास मरम्मतके लिए आया तब वह तुरंत ही ताप, वाष्पीभवन और गाढ़ीकरणके संबंधमें उस कालमें जो कुछ मालूम था उसे सीखनेके लिए तत्पर होगया और इसके साथ ही यंत्र-विद्या और निर्माण-विद्या भी सीखता रहा। अपने अध्ययनके परिणामोंमे अंतमें उसने स्वयं एक भाफका अंजन बनाकर दिखा दिया।

दस वर्षतक वह यंत्रोंको बनाता और उनके विषयमें विचार करता रहा। उसे आनंदित करनेके लिए आशाकी बहुत थोड़ी मात्रा थी और उसे उत्साहित करनेके लिए मित्र भी बहुत थोड़े थे। इसके साथ ही साथ वह कई तरहके धंधे करके अपने कुटुम्बका भरण पोषण करता रहा। वह ऊँचाई मापनेके यंत्र बनाता और बेचता था, बाँसुरी और अन्य बाजे बनाता था, मकानोंकी माप करता था, सड़कें मापता था, नहरोंकी खुदाईके कामका निरीक्षण करता था; इस तरह जो काम मिल जाता था और जिसमें फायदेकी सूरत दिखाई देती थी वही करने लगता था। अंतमें वाटको एक सुयोग्य साथी मिल गया जिसका नाम मैथ्यू बोल्टन था। वह एक चतुर, उद्योगशील और दूरदर्शी मनुष्य था जिसने भाफके अंजनसे सब तरहके काम लेनेका बीड़ा उठा लिया था, और इतिहास अब उन दोनोंकी सफलताका साक्षी है।

बहुतसे चतुर आविष्कार-कर्ताओंने समय समय पर भाफके अंजनमें नई नई शक्तियाँ बढ़ाई हैं और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सब तरहकी चीजें बनानेके योग्य कर दिया है। कलोंको चलाना, जहाजोंको

चलाना, आटा पीसना, किताबें छापना, सिक्कों पर छाप लगाना, पीटना, चिकना करना और मोड़ना इत्यादि इसतरहके काम, जिनकी आवश्यकता होती है, भापके अंजनके द्वारा किये जाते हैं। भेजन अत्यंत उपयोगी सुधारका प्रस्ताव ट्रेविथिकने किया था जिसकी पूर्ति जार्ज स्टीफिन्सन और उसके पुत्रने की। यहाँ हमारा मतलब गतिमान अंजनसे है, जिसके द्वारा बड़े महत्त्वके सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, और जिसका असर मानवी उन्नति तथा सभ्यता पर बाष्पके भागके भी अधिक पड़ा है।

वैतक—जो दौड़में अपने आपको पिछड़ा हुआ देखते हैं—खूब शोर मचाते हैं, और इस कारण वाट, स्टीफिन्सन और आर्कराइट सरीखे मनुष्योंको अपने व्यावहारिक और सफल आविष्कारकर्ता होनेके स्वत्वों और ख्यातिकी बहुधा रक्षा करनी पड़ती है।

अन्य बहुतसे यंत्रकारोंके समान आर्कराइटने भी दरिद्र अवस्थासे उन्नति की। वह सन् १७३२ ईस्वीमें प्रैसटनमें पैदा हुआ। उसके माता पिता बड़े कंगाल थे और वह उनके तेरह बालकोंमें सबसे छोटा था। उसने स्कूलमें कभी शिक्षा नहीं पाई; जो कुछ शिक्षा उसे मिली वह उसने अपने आप प्राप्त की और वह अंत समयतक बड़ी कठिनाईके साथ लिखने-पढ़नेके योग्य हुआ। बाल्यकालमें वह एक नाईके यहाँ काम सीखने लगा और जब वह यह काम सीख चुका, तब बोल्टनमें रहने लगा। उसने वहाँ पर एक दूकानके नीचेका तैखाना किराये पर ले लिया और उसके ऊपर यह लिखवा दिया—"आओ, इस तैखानेके नाईके पास आओ—वह दो पैसेमें हजामत बना देता है।" दूसरे नाइयोंके ग्राहक कम हो चले, क्यों कि वे जियादा दाम लेते थे, अतः उनको भी अपनी मजदूरी घटा कर इतनी ही करनी पड़ी। फिर आर्कराइटने, जो अपने धंधेको चलानेकी फिक्रमें था, यह घोषणा कर दी कि "मैं एक ही पैसेमें अच्छी हजामत बनाता हूँ।" कुछ वर्ष बाद उसने वह तैखाना छोड़ दिया और वह स्थान स्थानमें घूम-घूमकर बालोंका रोजगार करने लगा। उस समयमें इंग्लैण्डके निवासी लम्बे बालोंकी टोपी पहना करते थे और इन टोपियोंका बनाना नाईयोंके व्यवसायका प्रधान अंग था। आर्कराइट टोपियाँ बनानेके लिए इधर उधर घूमकर बाल खरीदने लगा। वह एक तरहका खिज़ाब भी बनाने लगा, जिससे उसका धंधा खूब चलने लगा; परन्तु इतने पर भी उसकी आमदनी केवल इतनी होती थी कि वह अपना निर्वाह ही कर सकता था।

कुछ समयमें बालोंकी टोपी पहननेके रिवाजमें परिवर्तन हो गया, अतएव बालोंकी टोपी बनानेवालों पर संकटका पहाड़ टूट पड़ा, और आर्कराइटने जिसकी रुचि यंत्रोंकी ओर थी, अपना ध्यान मशीन बनानेमें लगाया। उस समय कातनेकी कल बनानेकी बहुत लोगोंने चेष्टायें की थीं, इस लिए हमारे नाईने भी आविष्काररूपी समुद्र पर औरोंके साथ अपना जहाज चलाना

चाहा। वैसी ही रुचिवाले अन्य स्वशिक्षित मनुष्योंके समान वह अ
समय पहलेसे ही एक ऐसी कलका आविष्कार करनेमें लगाया करता
जिसकी गति चिरस्थायी हो और ऐसी कल बनाकर फिर कातनेकी
बनाना सुगम था। वह ऐसे परिश्रमके साथ प्रयोग करता रहा कि उसने अ
रोजगारकी भी परवा न की। उसके पास जो थोड़ासा धन जमा हुआ
वह भी खर्च हो गया और वह निर्धन हो गया। उसकी पत्नीको—क्यों
उसने इस बीचमें अपना विवाह भी कर लिया था—इस बातकी बड़ी चि
हुई। वह समझती थी कि मेरा स्वामी समय और रुपया वृथा खो रहा
इस लिए उसका क्रोध एकदमसे ऐसा भड़का कि उसने अपने पतिके बनाये
यंत्रोंको लेकर तोड़ मरोड़ डाला। क्यों कि उसने सोचा कि ऐसा कर
कुटुम्बके दरिद्रका कारण दूर हो जायगा। आर्कराइट बड़ा हठी और उत्सा
शील मनुष्य था, इस लिए अपनी स्त्रीके इस कृत्य पर वह ऐसा आग बबू
हुआ कि अपनी स्त्रीसे अलग रहने लगा।

इधर उधर फिरनेसे आर्कराइटका परिचय एक घड़ीसाजसे हो ग
था, जिसका नाम 'के' था। केने आर्कराइटको चिरगतिवान् मशीनके बनाने
सहायता दी। यह खयाल किया जाता है कि आर्कराइटको बेलनोंसे कातने
सिद्धांतका बोध केने कराया था; परन्तु यह भी कहा जाता [illegible] राइट
इस बातका विचार पहले पहल उस समय हुआ जब उसने अनायास देखा कि
गरम लोहेका एक टुकड़ा लोहेके बेलनोंके बीचमें गुजारे जानेसे लम्बा है
गया। जो हो, परन्तु इस विचारने आर्कराइटके मस्तिष्क पर पूरा अधिका
जमा लिया और वह अपनी मशीन बनानेका उपाय सोचने लगा; परन्तु इस
विषयमें के उसे कुछ न बतला सका। आर्कराइटने अब बाल इकट्ठा करनेक
धंधा छोड़ दिया और वह अपनी मशीनकी पूर्तिमें लग गया, जिसका एक
नमूना उसने केसे अपने सामने बनवाकर प्रेसटन नगरकी एक पाठशालाके
एक कमरेमें रखवा दिया। ऐसे नगरमें इस मशीनको सर्व साधारणमें दिखाना—
जहाँ बहुतसे मनुष्य हाथसे चर्खा कातकर निर्वाह करते थे—बड़ा भयपूर्ण
कार्य था। समय समयपर पाठशालाके कमरेके बाहर भयंकर चिल्लाहट सुनाई
देती थी। तब आर्कराइटने अपनी मशीनको वहाँसे उठाकर एक ऐसे स्थानमें
ले जाना चाहा, जहाँ भय कम हो, क्योंकि उसे याद था कि जब केने वरकोक

आविष्कार किया था, तब लोग उसके ऊपर टूट पड़े थे और उसको लँक-
शायरसे निकाल दिया था और बेचारे हार्ग्रीव्जने जब पानीसे चलनेवाली कात-
नेकी मशीन बनाई थी तब उपद्रवी लोगोंने उसे तोड़ डाला था। अत एव
वह नॉटिंघम नगरको चला गया और वहाँके सेठोंसे उसने आर्थिक सहायताकी
प्रार्थना की। एक बार वह असफल हुआ, परन्तु एक दूसरी जगहसे उसे
इस शर्त पर सहायता मिल गई कि वह अपने आविष्कारसे कमाये हुए
धनमें उनको भी साझी करे। आर्कराइटको अपना काम करनेके लिए एक
विशिष्ट अधिकार-पत्र भी मिल गया। पहले पहल नॉटिंघममें एक रुईका
मिल बनाया गया, जो घोड़ोंसे चलाया जाता था और कुछ दिनों बाद एक
दूसरा बहुत बड़ा मिल क्रोमफर्डमें बनाया गया, जो पानीके जोरसे चलाया
जाता था।

परन्तु यदि आर्कराइटके आगामी परिश्रमका खयाल किया जाय, तो
कहना पड़ेगा कि अभी तो उसका परिश्रम शुरू ही हुआ था। उसको अभी
तो अपनी मशीनके बहुतसे पुर्जोंकी पूर्ति करनी थी। उस मशीनमें वह
निरंतर परिवर्तन और सुधार करता रहा, यहाँ तक कि अंतमें वह खूब काम-
लायक और लाभदायक बन गई। उसने चिरकालिक धैर्यपूर्वक परिश्रमसे
ही सफलता प्राप्त की। कई वर्षोंतक तो निराशा होती रही, रुपया भी
बहुत खर्च हुआ और कोई नतीजा न निकला। जब सफलता निश्चय मालूम
होने लगी, तब लँकशायरके कारीगर आर्कराइटके विशिष्टाधिकार-पत्र पर इस
लिए टूट पड़े कि वे उसे फाड़ डालें। आर्कराइटको लोग कारीगरोंका शत्रु
कहने लगे और एक दिन पुलिस तथा शस्त्रधारी सिपाहियोंकी एक बलवती
सेनाके देखते देखते लोगोंने आर्कराइटके एक मिलको नष्ट कर दिया। लँक-
शायरके आदमियोंने उसके सूतको खरीदनेसे इनकार किया; यद्यपि वह बाजा-
रमें सबसे बढ़कर था। फिर उन्होंने उसे उसकी मशीनोंके प्रयोगके लिए
विशिष्टाधिकार न दिया और सबोंने मिलकर उसे न्यायालयमें दाखिल कर
देना चाहा। सुविचारवान् मनुष्योंके ना-पसंद करने पर भी आर्कराइटका
विशिष्टाधिकार गड़बड़ कर दिया गया। न्यायालयमें परीक्षा हो चुकनेके
बाद, जब वह एक सरायके सामने होकर—जिसमें उसके विरोधी ठहरे हुए
थे—निकल रहा था, तो उसके एक विरोधीने आर्कराइटको सुनानेके लिए

जोरसे कहा कि " देखा, हमने पुराने खूसट नाईको कैसा मजा चखा
इसका आर्कराइटने यों नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—" ऊँह ! कुछ परव
मेरे पास एक उस्तरा बच रहा है, जो तुम सबकी हजामत बना दे
इसके बाद आर्कराइटने तीन अन्य नगरोंमें एक एक मिल स्थापित
और पहले मिल भी, जिनमें दूसरोंका साझा था, साझा टूट जानेसे
राइटके अधिकारमें आ गये। उसके मिलोंमें इतना माल बनता था
ऐसा अच्छा बनता था कि थोड़े ही समयमें उसने उस व्यवसाय पर
पूर्ण अधिकार जमा लिया कि वह ही भाव निकालता था और उसने
रुई कातनेवालोंको भी अपनी मुट्ठीमें कर लिया।

आर्कराइटमें बड़ा चरित्रबल था, अदम्य साहस था, बहुत कुछ सांस
चतुराई थी और इसके साथ ही उसकी व्यावसायिक योग्यता इतनी
बड़ी थी कि उसको प्रतिभा कहनेमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। एक
उसको बहुत कठिन और निरंतर परिश्रम करना पड़ा था; क्योंकि उस
उसे अपने बहुतसे कारखानोंकी व्यवस्था करनी पड़ी, उनको चलाना
और इन कामोंमें उसे कभी कभी सवेरे चार बजेसे रातके नौ बजेतक
श्रम करना पड़ता था। पचास वर्षकी अवस्थामें वह व्याकरण सीखनेमें
और उसने लिखने-पढ़नेमें उन्नति करनी चाही। इस तरह सब कठिना
पर विजय पाकर उसको अपने साहसका फल मिलनेका आनंद प्राप्त हुआ
अपनी पहली मशीनके बनानेके १८ वर्ष बाद उसका डर्बीशर जिलेमें
सन्मान होने लगा कि वह उस जिलेका हाई शेरिफ (एक तरहका आन
मैजिस्टेट) बना दिया गया, और कुछ समय पश्चात् महाराज जार्ज तृती
ने उसको नाइट (*Knight*) की उपाधिसे विभूषित कर दिया।

अनेक बड़े बड़े व्यवसायोंमें ऐसे ही उद्योगी और कार्यकुशल मनुष्य
उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने अपने रहनेकी जगहके आसपासके जिलों
बड़ा लाभ पहुँचाया है और समस्त समाजके बल और धनको बढ़ा दिया
मोजे बुननेकी कलाका आविष्कारकर्ता विलियम ली मशीन बनानेमें ब
चतुर और धैर्यवान् मनुष्य था। उसके परिश्रमके द्वारा उसके रहनेकी जगह
आसपासके जिलोंके कारीगरोंके लिए बहुत बड़ा धंधा निकल आया। मोजे

ामें परस्पर विरोध है; परन्तु आविष्कारकर्ताके नामके विषयमें कुछ भी ाय नहीं है। वह विलियम ली था और सन् १५६३ ईस्वीमें पैदा हुआ । कुछ लोगोंका मत है कि उसके पास छोटीसी जमींदारी थी और कुछ ग कहते हैं कि वह एक निर्धन विद्यार्थी था और उसको शुरूसे ही गरी-का सामना करना पड़ा था। वह सन् १५७८ में कैम्ब्रिजके क्राइस्ट कालि-ां भरती हो गया। उसको भोजन, वस्त्र इत्यादि कालिजकी ओरसे ही लते थे। फिर वह एक दूसरे कालिजमें भरती हुआ और वहाँसे उसने . ए. की परीक्षा पास की। वह एम. ए. की कक्षामें भी पढ़ा था नहीं, ह ठीक नहीं मालूम।

जिस समय लीने मोज़ा बनानेकी कलाका आविष्कार किया उस समय वह क गिरजेमें नौकर था। कहा जाता है कि वह एक युवती पर आसक्त हो या, परन्तु उस कुमारीने उसकी कुछ परवा न की। जब ली उस कुमारीके हाँ जाता था, तब वह अपने मोज़े बुननेमें तथा अपने शिष्योंको इस ामकी शिक्षा देनेमें बहुत जियादा ध्यान देती थी और लीकी बातोंको न ुनती थी। लीको इस अपमानका बड़ा खयाल हुआ और उसने ठान लिया क अब मैं मोज़ा बुननेकी एक मशीन बनाऊँगा जिससे हाथकी अपेक्षा पिक्षा अधिक काम होगा और इस लिए हाथसे मोज़ा बुननेका व्यवसाय ामहीन हो जायगा। तीन वर्षतक वह अपने आविष्कारमें लगा रहा। जब ासे सफलताकी आशा झलकने लगी, तब वह नौकरी छोड़कर मशीनसे ोज़ा बनानेके व्यवसायमें लग गया। इस कथाका समर्थन कई प्रमाणोंसे ोता है।

मोज़ेकी मशीनकी आविष्कारसंबंधी घटनायें चाहे जो रही हों, परन्तु इसमें ुछ संदेह नहीं कि आविष्कारकर्ताकी यंत्रसंबंधी प्रतिभा बड़ी विलक्षण थी। एक गिरजेके नौकरके लिए जो एक दूसरे ग्राममें रहता हो और जिसका जीवन अधिकतर पुस्तकावलोकनमें ही व्यतीत हुआ हो, ऐसी सूक्ष्म और पेचीदा पुर्ज़ोंकी मशीन बनाना और उँगलियोंसे सलाइयोंमें सूतके फंदे डाल कर उनमें डोरा पिरोनेके धीमे और थकानेवाले कामको मशीनसे कातनेकी सुंदर और शीघ्रपद्धतिमें एकदम पलट देना वास्तवमें एक आश्चर्यजनक सफलता थी, जो यंत्रसंबंधी आविष्कारोंके इतिहासमें अद्वितीय कही जा

सकती है। लीकी योग्यता इस दृष्टिसे और भी अधिक प्रशंसनीय है
उस समय हस्तकौशलसंबंधी शिल्प प्रारम्भिक अवस्थामें थे, और
चीजोंके बनानेके लिए कलोंके आविष्कार करने पर बहुत कम ध्यान दि
जाता था। उसको यथाशक्ति पूर्व विचारके बिना ही अपनी मशीनके
बनाने पड़े और जैसे जैसे कठिनाइयाँ आती गईं वैसे ही उसको उनके
करनेके उपाय सोचने पड़े। उसके औजार दोषयुक्त थे; उसके पास मा
भी ठीक न था, और उसे मदद देनेके लिए कोई भी चतुर कारीगर न
कहा जाता है कि उसकी बनाई हुई पहली मशीन लकड़ीकी थी; यहाँ
कि सुइयाँ भी लकड़ीके टुकड़ोंमें लगा दी गई थीं। लीकी एक प्रधान क
नाई यह थी कि सुइयोंसे उनमें छिद्र न होनेके कारण टाँका न लग सक
था; परन्तु इस कठिनाईको भी उसने रेतीसे सुइयोंमें छिद्र करके दूर
दिया। निदान उसने सब कठिनाइयोंको एक एक करके दूर कर दिया
तीन वर्ष परिश्रम करनेके पश्चात् वह मशीन इस योग्य हो गई कि उससे क
लिया जा सके। लीने–जो अपने शिल्पके प्रति उत्साहसे परिपूर्ण था–के
र्टन नामक ग्राममें मोजा बुननेका काम शुरू कर दिया। वह वहाँ कई व
तक काम करता रहा और अपने भाई और अन्य कई कुटम्बियोंको
काम सिखलाता रहा।

बादमें उसने अपनी मशीनकी बहुत कुछ पूर्ति की और उसे रानी एलि
जाबेथके संरक्षणको प्राप्त करनेकी अभिलाषा हुई, जो बुने हुए रेशमी मोजों
बहुत पसंद करती थी। अतएव ली अपनी मशीन रानीको दिखानेके लि
लण्डन गया। पहले उसने अपनी मशीनको राजसभासदोंको दिखाया और
उनमेंसे एकको उससे काम करना भी सिखा दिया। इन दरबारियोंकी सह
यतासे अंतमें लीको रानीके सम्मुख उपस्थित होनेकी आज्ञा मिल गई और
उसने रानीके सामने मशीनसे काम किया। परन्तु उसको जैसे उत्साह
आशा थी वह उसे न मिला, बल्कि रानीने यह कहकर उस आविष्कार
उल्टा विरोध किया कि इससे बहुतसे आदमियोंकी–जो हाथसे मोजे बुनते
हैं–जीविका नष्ट हो जायगी। लीको और कोई संरक्षक भी न मिला और
उसने यह समझ लिया कि लोग मेरी और मेरे आविष्कारकी अवज्ञा करते
हैं। अतएव जब फ्रांसके एक चतुर राजमंत्रीने उससे फ्रांसके रोहन नगरमें

लनेके लिए और वहाँके कारीगरोंको मोजा बुननेकी मशीन बनानेकी औ
उससे काम करनेकी शिक्षा देनेके लिए अनुरोध किया, तब उसने उसव
ात तुरंत ही स्वीकार कर ली। वह अपने भाई और कई अन्य कारीग
हित अपनी मशीनको लेकर चला गया। रोहन नगरमें उसका हार्दि
वागत किया गया और उसने एक बड़ा कारखाना खोल दिया, जिस
उसकी नौ मशीनें निरंतर काम करने लगीं; परन्तु इसी समय उस बेचारे
विपत्तिने फिर आ घेरा। फ्रांसका राजा हेनरी चतुर्थ, जो उसका संरक्ष
बना था और जिससे उसको पुरस्कार, सम्मान इत्यादि मिलनेकी आशा थ
मार डाला गया। इससे जो कुछ उत्साह और संरक्षण उसे अवतक मि
था, वह सब जाता रहा। अपने स्वत्वोंको प्रकट करनेके लिए वह राजधा
पैरिसमें पहुँचा, परन्तु वह प्रोटेस्टेंट सम्प्रदायका था तथा विदेशी था, अतए
उसकी प्रार्थनाओं पर कुछ भी ध्यान न दिया गया और नाना कष्टोंसे त
आकर वह गौरववान् आविष्कारकर्ता थोड़े ही दिनोंमें पेरिसमें बड़ी गरी
और आपत्ति भुगतते हुए इस संसारसे उठ गया।

लीका भाई अन्य सात कारीगरोंसहित किसी तरह फ्रांससे भाग
इंग्लैंडमें आगया और सिवाय दो मशीनोंके अपनी सब मशीनोंको भी
...था। इंग्लैंडमें आकर उसने एक और आदमीके साथ–जिसको लीने मशी
का बुननेका यह काम सिखलाया था–साझा कर लिया। फिर इन दोने
र कारीगरोंकी सहायतासे मोजा बुननेका काम शुरू किया और ब
फलता प्राप्त की। जिस जिलेमें यह कारखाना खोला गया था, उ
ें बहुत पाली जाती थीं और उनसे बहुत अच्छी ऊन मिल जाती
लैंडमें धीरे धीरे इन मशीनोंका रिवाज बढ़ता गया, और अंतमें मशी
जे बुनना एक बड़ा भारी व्यवसाय बन गया।

प्रसिद्ध किन्तु हतभाग्य जैकर्डका जीवनचरित बड़ी उत्तम रीतिसे ब
ता है कि चतुर मनुष्य–चाहे वे कितनी ही निम्न श्रेणीके हों–आ
ातिकी उद्योगशीलता पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। जैकर्डके मातापिता प्र
ंके लायोन्स नगरमें रहते थे और बड़े निर्धन थे। जैकर्डका पिता हा
पड़ा बुना करता था। अपनी गरीबीके कारण वह अपने पुत्र जैकर्डको शि
दे सकता था। जब जैकर्ड बड़ा हुआ और इस योग्य हुआ कि कुछ

सील भके तब उसका पिता उसको एक जिल्द बाँधनेवालेके यहाँ का
मेके लिए भेजने लगा। एक वृद्ध गुमास्तेने, जो उस जिल्दसाजका
किया करता था, जैकर्डको कुछ गणित सिखलाया। जैकर्डने थोड़े ही
यंत्र-विद्याकी ओर रुचि प्रकट की और उसके कई कार्योंने गुमास्तेको
कर दिया। गुमास्तेने जैकर्डके पितासे जैकर्डको कुछ और काम सि
अनुरोध किया, जिससे वह अपनी विचित्र शक्तियोंकी अधिक उ
सके। अतएव जैकर्डने एक चाकू-कैंची बनानेवालेके यहाँ नौकरी
और वहाँ वह काम सीखने लगा। परन्तु उसका मालिक उसके सा
बुरा बर्ताव करता था, इस लिए जैकर्डने कुछ समय बाद उसकी नौक
दी और वह एक टाइप ढालनेवालेके यहाँ काम सीखने लगा।

इसी बीचमें जैकर्डके माता पिताका देहांत हो गया, अतएव
मजबूर होकर अपने पिताके दो राछोंको लेकर कपड़ा बुननेका धंधा इ
दिया। वह तुरंत ही उन राछोंको सुधारनेमें लग गया। अपने आवि
वह ऐसा दत्तचित्त हुआ कि उसने अपना धंधा छोड़ दिया और वह
ही कङ्गाल हो गया। इसके बाद उसने अपना ऋण चुकानेके लिए र
बेच दिया और अपना विवाह भी कर लिया, जिससे उसके ऊपर अ
भार हो गया। वह और भी गरीब होगया और कर्जसे मुक्त होनेके
उसने अपनी झोपड़ी भी बेच दी। उसने नौकरी ढूंढनेका प्रयत्न
परन्तु उसे सफलता न हुई, क्योंकि लोग समझते थे कि वह आलसी है
अपने आविष्कारोंके संबंधमें आकाशमें महल बनाया करता है। अंतमें
मैंस नगरमें एक रस्सी बनानेवालेके यहाँ नौकर हो गया। उसकी
लायोन्स नगरमें ही रह गई और टोपी बनाकर अपना पेट भरने लगी।

कुछ वर्षोंतक जैकर्ड उन्नति करता रहा और अंतमें उसने कपड़ा बुन
मशीनका आविष्कार किया। इस मशीनका रिवाज धीरेधीरे परंतु स्थिर
बढ़ा और दस वर्ष बाद लायोन्स नगरमें ऐसी चार हजार मशीनोंमें
होने लगा! इसी बीचमें जैकर्डको एक युद्धमें लड़ना पड़ा और उसका
दिनों तक बन्द रहा। कदाचित् वह सैनिक ही बना रहता; परन्तु
...र पर उसका इकलौता पुत्र मारा गया और वह लायोन्स नगरमें अ
... पस सेनामेंसे भाग कर और आया। कुछ दिनोंतक वह

ा रहा और अब उसे फिर अपने आविष्कारोंका ध्यान आया। परन्तु उसके पास इस कामके लिए रुपया कहाँ था? उसने एक कारीगरके यहाँ नौकरी कर ली। जैकर्ड दिनमें अपने मालिकका काम करता था और रातको अपने आविष्कारोंमें लगा रहता था। वह समझता था कि कपड़ा बुननेकी कलामें अधिक उन्नति हो सकती है। एक दिन उसने मालिकसे भी अनायास यह बात कह दी और खेद प्रकट करके यह भी कहा कि "मैं अपनी गरीबीके कारण अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर सकता।" सौभाग्यवश उसके दयालु मालिकने उसकी बातोंका मूल्य जान लिया और इस कामके लिए उसको रुपया दिया।

तीन महीनेमें जैकर्डने एक कल बनाई, जिसके द्वारा कठिन और थका देनेवाला परिश्रम जो कारीगरोंको अपने हाथसे करना पड़ता था, यंत्रोंके द्वारा किया जाने लगा। यह मशीन पेरिसकी एक प्रदर्शिनीमें रक्खी गई और जैकर्डको इसके पुरस्कारमें एक पीतलका पदक मिला। दूसरे वर्ष लंदनकी सोसायटी आफ आर्ट्सने ऐसी मशीन बनानेके लिए पुरस्कार नियत किया जिससे मछली पकड़नेका जाल और शत्रुको जहाज पर चढ़नेसे रोकनेवाला जाल बन सके। जैकर्डको जब यह समाचार मिला, तो उसने तीन सप्ताहमें ही ऐसी मशीनका आविष्कार कर दिया। इससे उसका इतना यश हुआ कि फ्रांसके सम्राटने उसको अपने यहाँ बुलाकर उसका स्वागत किया। उसको रहनेके लिए मकान दिया गया और नये आविष्कार करनेके लिए उसका वेतन नियत कर दिया गया। वहाँ रहकर उसे तरह तरहकी मशीनें देखनेका अवसर प्राप्त हुआ।

उसने कुछ भद्दे औज़ार बनाये और फिर उनकी सहायतासे लकड़ीकी घड़ी बनाई, जो बिलकुल ठीक समय देती थी। एक छोटेसे गिरजेके लिए उसने देवदूतोंकी कुछ मूर्तियाँ बनाईं, जो अपने पंखोंको हिलाती थीं और कुछ मूर्तियाँ पुजारियोंकी बनाईं, जो गिरजेके संबंधमें कुछ संकेत किया करती थीं। उसने और भी कई स्वयं काम करनेवाले खिलौने बनाये। उसने एक अद्भुत बतख बनाई, जो सच्ची बतखके समान पानीमें तैरती थी, खेलती थी, पानी पीती थी और बोलती थी। उसने एक प्राचीन ग्रंथमें वर्णित बातोंके आधार पर एक साँप बनाया, जो उसी तरह फुफकार मारता और ...ता था, जैसा उस ग्रंथमें लिखा था।

धैर्यकी महिमा ।

" संसारकी मनरस्थलीमें धीरता धारण व
चलते हुए निज इष्ट पथमें संकटोंसे मत ड

' धैर्य या धीरज वीरताका अति उत्तम, मूल्यवान् अं
। सर्व आनन्दोंका एवं शक्तियोंका मूल है । आश
अधीरता हो तो, कदापि सुख नहीं मिलता । "—उ

समस्त जीवनचरितोंमें जो धैर्यके अत्यंत महत्त्वपूर्ण
हैं उनमेंसे कुछको हम कुम्हारोंके इतिहासमें पाते
सबसे विचित्र विदेशी उदाहरण लेते हैं जो फ्रांस
गी, जर्मनीनिवासी फ्रैडरिक बूटघर और इंग्लैंड
इके जीवनचरितोंमें मिलते हैं ।

पि अधिकांश प्राचीन जातियाँ चिकनी मिट्टीके साथ
डा जानती थीं, परन्तु मिट्टीके बरतनों पर ओप
बहुत कमको मालूम था । इट्रूरियाके प्राचीन नि
दार अथवा लुकदार बरतन बनानेकी कलासे परिचि
के नमूने अब भी प्राचीन-पदार्थ-संग्रहोंमें मिलते
लोग बीचमें भूल गये थे; इसका उद्धार अभी थोड़े
चीन कालमें इट्रूरियाके बरतन बहुत दामोंमें आते
द् आगस्टसके समयमें एक बरतनका मूल्य उसीके व
ना पड़ता था । मूअर लोगोंको यह कला मालूम थी
यमें ऐसे बरतन बनाया करते थे। जब सन् ११९५ ईस्वीमें
' ले लिया तब वे लूटकी और चीजोंके साथ मूअर लोगो
न भी ले गये और उन्होंने इन बरतनोंको पिसा नगर (
 प्राचीन गिरजोंमें लगा दिया, जहाँ वे अबतक लगे हैं । दो
बाद् इटलीवाले इन बरतनोंकी नकल करके लेपदार बरतन

हल गसकनीकी ओर यात्रा
भी कभी समय निकाल कर
कर वह उत्तरकी तरफ चला
फिरता रहा । इसके बाद
देया और सैनटीज नामक
माप करनेका काम करने
का भार उस पर आरूढ़ा
शक्ति भर काम करने पर
होती थी । अतएव उसको
और अच्छा काम करनेका
पर चित्र बनाने और लेप
को बिलकुल न जानता
न पकाते हुए न देखा
र पड़ा । उसका कोई
था और सीखनेका
थे ।
दाचित् वह लुकाका
नेकी नई कला पर
। देखना ऐसी सुन्दर
प्य पर कुछ असर न
में उसका कुछ असर
कोई दूसरा धंधा
स बरतनकी नकल
जीवनमें खलबली
बनानेका उसे रोग
सोममें इटलीका
दीन रहा था और
के पास रहा और

मिट्टीके बरतन बनाने और उन पर लेप करनेकी विधि जाननेकी ३
भटकने लगा।

पहले तो उसने जिन चीजोंका लेप बना हुआ था उनको केवल अ
जानना चाहा; और उनको जाननेके लिए उसने तरहतरहकी परीक्ष
करना आरंभ किया। उसने उन सब चीजोंको—जिनसे उसकी समझमें ले
सकता था—चूर करके एक मसाला तैयार किया। फिर वह साधारण
बरतन मोल लाया और उनके टुकड़े करके उसने उस चूरेको उनके
भुरक दिया और एक भट्टी बनाकर उन टुकड़ोंको आगमें रख दिया। इ
परीक्षायें निष्फल हुईं और बरतन, ईंधन, मसाला, समय और परिश्र
खोनेके सिवाय कुछ हाथ न आया। स्त्रियाँ ऐसी परीक्षाओंको सहज ही
नहीं करतीं। क्योंकि इनका स्पष्ट परिणाम यह होता है कि बच्चोंके
भोजन और वस्त्र मोल लेनेके साधन भी नष्ट हो जाते हैं। यद्यपि पैलि
स्त्री और और बातोंमें अपने पतिकी आज्ञाका पालन करती थी, तो भी
इस बात पर राजी न हुई कि मिट्टीके और बरतन खरीदे जायँ। क्योंकि
समझती थी कि वे तोड़नेके ही लिए खरीदे जाते हैं। परन्तु उसे
पतिकी बात माननी पड़ी, क्योंकि पैलिसीने लेपका रहस्य जाननेका दृढ़ सं

हवेलके खपरे पकाये जाते थे और जो उसके घरसे दो कोससे भी अधिक दूर था। टुकड़े पक जाने पर निकाले गये और वह उन्हें देखने गया; परन्तु उसे फिर असफलता हुई। यद्यपि वह निराश हो गया तो भी परास्त न हुआ; उसने उसी जगह फिर नये सिरेसे काम शुरू करनेका संकल्प कर लिया।

वह कुछ समय तक यह काम न कर सका। क्योंकि वह भूमि मापनेके कोई सरकारी कामके करने पर मजदूर किया गया और इस कामकी उसे मजदूरी भी खूब मिली। इस कामसे छुट्टी पाते ही वह अपने पुराने काममें दूने उत्साहके साथ लग गया। उसने तीन दर्जन मिट्टीके बरतन और मोल लेकर तोड़े, उनके टुकड़ों पर उसने कई तरहके मसाले बना कर डाले और फिर उन्हें पकानेके लिए वह एक पासकी भट्टी पर ले गया, जहाँ शीशा या काच गलाया जाता था। इस बार उसे कुछ कुछ आशा हुई। शीशेकी भट्टीकी तेज गर्मीसे कुछ मसाले पिघल गये, परन्तु उनका सफेद लेप न बना।

वह दो वर्ष तक और परीक्षायें करता रहा, परन्तु कोई संतोषप्रद परिणाम न हुआ। इसी बीचमें भूमि मापनेसे उसे जो मजदूरी मिली थी वह सब खर्च हो गई और वह पुनः निर्धन हो गया। परन्तु उसने एक बार और भी जी-तोड़कर कोशिश करनेका संकल्प कर लिया और इस बार उसने सब दफेसे अधिक बरतन तोड़े। उसने तीन सौसे भी अधिक टुकड़े शीशेकी भट्टी पर भेज दिये और वहाँ पर स्वयं उनके पकनेका फल देखनेको गया। चार घंटे तक वह देखता रहा और फिर भट्टी खोली गई। तीन सौ ठिकरोंमेंसे केवल एक ठिकरेका मसाला पिघला और वह निकाल कर ठंडा किया गया। ठंडा होने पर मसाला कड़ा हो गया और वह सफेद-सफेद तथा चिकनासा दिखने लगा। उस ठिकरे पर सफेद लेप चढ़ गया और पैलिसीने उसे अपूर्व सुन्दर ठहराया। इतना कष्ट उठाने पर उसे वह अवश्य ही सुन्दर मालूम हुआ होगा। वह उसे लेकर अपनी स्त्रीको दिखानेके लिए घर दौड़ा और उससे कहा कि "मुझे मालूम होता है कि अब मैं एक नया मनुष्य होगया हूँ।" परन्तु उसका मनोरथ अभी सफल न हुआ था; अभी तो वह उससे कोसों दूर था। इस चेष्टामें, जिसको वह अन्तिम समझता था; कुछ सफलता हो जानेसे उसने और भी परीक्षायें कीं और उसको फिर अनेक बार असफलतायें हुईं।

लाये थे कई दिनोंतक आगमें पकनेसे अब बिलकुल निकम्मे होगये थे। यह
पना रुपया तो सब खर्च कर चुका था; परन्तु उधार ले सकता था। उसकी
ग्न अब भी अच्छी थी। उसने एक मित्रसे अधिक ईंधन और बरतन
लि लेनेके लिए काफी रुपया उधार ले लिया और यह एक बार और परीक्षा
रनेके लिए तयार हो गया। बरतनों पर नये मसालेका लेप चढ़ा कर
नको भट्टीमें रख दिया गया और आग फिर सुलगाई गई।

यह परीक्षा अन्तिम थी और सब परीक्षाओंसे अधिक साहसपूर्ण थी।
ाग दहकने लगी; गर्मी प्रचंड हो गई; परन्तु फिर भी लेप न पिघला
धन निबटने लगा। अब आग कैसे जले? बागका हाता लकड़ियोंका बना
ा। वे लकड़ियाँ जल सकती थीं। इनको अवश्य बलिदान कर देना चाहिए;
घरकी दुनिया उधर हो जाय, परन्तु महती परीक्षाका काम न बिगड़ने पाय।
ो लकड़ियाँ भी खींचखाँचकर तोड़ ली गई और भट्टीमें झोंक दी गई। वे
ी जल गई और कुछ न हुआ। लेप अभी तक न पिघला। यदि दस मिनट
और गर्मी लगे तो शायद पिघल जाय। चाहे सर्वस्व जाता रहे, परन्तु ईंधन
ट्टीमें अवश्य लाना चाहिए। अब केवल घरका लकड़ीका असबाब और
आलमारियाँ बाकी थीं। घरमें चड़चड़ानेका शब्द सुनाई दिया। स्त्री और
च्चे, जो समझते थे कि पैलिसी पागल होगया है, चिल्लाते रह गये और
ोल्सीने मेजोंको तोड़-ताड़कर भट्टीमें झोंक दिया। परन्तु फिर भी लेप न
पिघला। अभी आलमारियाँ बाकी थीं। घरमें लकड़ियोंके चड़चड़ानेका शब्द
फिर सुनाई दिया; आलमारियाँ भी तोड़कर भट्टीमें झोंक दी गई। उसकी
स्त्री और बच्चे घरसे निकल कर भागे और पागलोंकी तरह नगरमें यह चिल्लाते
हुए फिरने लगे कि "बेचारा पैलिसी बावला हो गया है और ईंधनके लिए
घरका असबाब तक नष्ट किये डालता है!"

पूरे एक महीनेसे पैलिसीने अपने शरीरपरसे कुर्ता भी न उतारा था। वह
सूखकर बिलकुल काँटा हो गया था—परिश्रम, चिन्ता, निरीक्षण और भूखसे
तंग आगया था। वह ऋणी हो गया था और विनाशोन्मुख मालूम होता
था। परन्तु उसने अन्तमें गुप्त रहस्य जान लिया, क्योंकि गर्मीकी अंतिम
प्रचंडतासे लेप पिघल गया। जब साधारण मटमैले घड़े भट्टीके ठंडे पड़ जाने
पर उसमेंसे निकाले गये, तब उन पर सफेद चमकदार लेप चढ़ गया था।

उसने समझा कि अब आविष्कार होनेको ही है और इस लिए व करनेके लिए उसने अपने घरके पास एक भट्टी ही नहीं बनवा दिया, जहाँ वह अपना काम गुप्त रीतिसे कर सके। उसने अपने भट्टी बनाना शुरू कर दिया। इसके लिए वह अपनी पीठ प लादके लाता था। ईंटें चिननेवाला, मजूरका काम करनेवाला और स वही था। इस काममें सात आठ महीने और निकल गये। अन्तमें भ गई और कामके लायक हो गई। इसी बीचमें पैलिसीने मिट्टीके बहु तन बना लिये थे, जिन पर वह लेप चढ़ाना चाहता था। उनको ए कुछ पकाकर उसने उन पर लेप चढ़ाया और फिर पकानेके लिए भट्टी दिया। यद्यपि उसके पास खर्च बहुत कम था, तो भी उसने कुछ अपनी अन्तिम चेष्टाके लिए ढेरका ढेर ईंधन इकट्ठा कर लिया था जि इसको काफी समझता था। अब उसने भट्टी सुलगाई और काम शुरू दिन भर वह भट्टीके सामने बैठा रहा और ईंधन झोंकता रहा। फिर र भी बैठा रहा, उसी तरह टकटकी लगाये देखता रहा और ईंधन रहा; परन्तु लेप न पिघला। मेहनत करते करते सूर्योदय हो गया। स्त्री वहीं पर कुछ कलेवा ले आई—क्योंकि वह भट्टीके पाससे हि चाहता था। वह निरन्तर ईंधन डालता रहा। एक दिन और भी गया, परन्तु लेप न पिघला। सूर्य अस्त हुआ और रात भी निकल पैलिसी पीला और दुबला पड़ गया, परन्तु वह परास्त न हुआ। वह भट्टीके सामने बैठा रहा और लेपके पिघलनेकी बाट देखता रहा। दिन और रात भी इसी तरह निकल गई—चौथे, पाँचवें यहाँ तक कि रातदिन भी,—हाँ, हाँ, छः बड़े बड़े दिन और रातें असमसाहसी पैलि प्रतीक्षा करते हुए, परिश्रम करते हुए और ढारस बाँधते हुए निकल और फिर भी लेप न पिघला।

फिर उसको खयाल हुआ कि मसालेकी चीजोंमें कुछ दोष रह गया —कदाचित् गलानेवाली चीजोंमें कुछ कसर रह गई होगी; इसलिए नई चीजें पीसकर और मिलाकर एक बार और जाँच करनेके लिए मसाला तैयार किया। इस प्रकार दो तीन सप्ताह और निकल गये। वह और बरतन कहाँसे खरीदे? क्योंकि पहले बरतन जो उसने अपने हा

ये ये कई दिनोंतक आगमें पकनेसे अब बिलकुल निकम्मे होगये थे। वह रुपया सो सब खर्च कर चुका था; परन्तु उधार ले सकता था। उसकी अब भी अच्छी थी। उसने एक मित्रसे अधिक ईंधन और बरतन लेनेके लिए काफी रुपया उधार ले लिया और वह एक बार और परीक्षा के लिए तयार हो गया। बरतनों पर नये मसालेका लेप चढ़ा कर भट्टीमें रख दिया गया और आग फिर सुलगाई गई।

यह परीक्षा अन्तिम थी और सब परीक्षाओंसे अधिक साहसपूर्ण थी। दहकने लगी; गर्मी प्रचंड हो गई; परन्तु फिर भी लेप न पिघला। निकलने लगा। अब आग कैसे जले? बागका हाता लकड़ियोंका बना। ये लकड़ियाँ जल सकती थीं। इनको अवश्य बलिदान कर देना चाहिए; की दुनिया उधर हो जाय, परन्तु महती परीक्षाका काम न बिगड़ने पाय। लकड़ियाँ भी खींचखींचकर तोड़ ली गईं और भट्टीमें झोंक दी गईं। वे जल गईं और कुछ न हुआ। लेप अभी तक न पिघला। यदि दश मिनट गर्मी लगे तो शायद पिघल जाय। चाहे सर्वस्व जाता रहे, परन्तु ईंधन से अवश्य लाना चाहिए। अब केवल घरका लकड़ीका असबाब और अलमारियाँ बाकी थीं। घरमें चड़चड़ानेका शब्द सुनाई दिया। स्त्री और , जो समझते थे कि पैलिसी पागल होगया है, चिल्लाते रह गये और लीने मेजोंको तोड़-ताड़कर भट्टीमें झोंक दिया। परन्तु फिर भी लेप न गा। अभी आलमारियाँ बाकी थीं। घरमें लकड़ियोंके चड़चड़ानेका शब्द र सुनाई दिया; आलमारियाँ भी तोड़कर भट्टीमें झोंक दी गईं। उसकी और बच्चे घरसे निकल कर भागे और पागलोंकी तरह नगरमें यह चिल्लाते फिरने लगे कि "बेचारा पैलिसी बावला हो गया है और ईंधनके लिए का असबाब तक नष्ट किये डालता है!"

पूरे एक महीनेसे पैलिसीने अपने शरीरपरसे कुर्ता भी न उतारा था। वह थकर बिलकुल काँटा हो गया था—परिश्रम, चिन्ता, निरीक्षण और भूखसे आगया था। वह ऋणी हो गया था और विनाशोन्मुख मालूम होता । परन्तु उसने अन्तमें गुप्त रहस्य जान लिया, क्योंकि गर्मीकी अंतिम ढताले लेप पिघल गया। जब साधारण मटमैले घड़े भट्टीके ठंडे पड़ जाने उसमेंसे निकाले गये, तब उन पर सफेद चमकदार लेप चढ़ गया था।

इसीके लिए उसने तिरस्कार निन्दा और घृणा सहन की और संतो
वह उन अच्छे दिनोंकी प्रतीक्षा करता रहा, जब उसे अपने अनुभ
काम लेनेका अवसर मिले।

पैलिसीने फिर एक कुम्हारको नौकर रक्खा जिससे अपने ढंगके
बनवाये और वह स्वयं भी कुछ पात्र बनाने लगा, जिन पर उसने लेप
नेका निश्चय किया। परन्तु जब तक बरतन बनकर बिक्रीके लिए तयार
जायँ तबतक वह अपना और अपने कुटम्बका निर्वाह कैसे करे? सौभाग
उस नगरमें एक ऐसा आदमी था, जिसको पैलिसीकी ईमानदारी पर वि
था। वह एक भटियारा था। उसने उसको छः महीनेतक जबतक उ
काम चल न निकले अपने यहाँ रखना और भोजन देना स्वीकार कर लि
परन्तु उस कुम्हारके विषयमें जिसको उसने नौकर रक्खा था, पैलिसीको
ही अनुभव हो गया कि मैं उसको नियत मजदूरी न दे सकूँगा। वै
अपने घरको तो पहले ही उजाड़ चुका था, अब वह अपने आपको उ
सकता था; और सचमुच ही उसने कुम्हारको उस समय तककी मजदू
बदले अपने कपड़े देकर बिदा कर दिया।

पैलिसीने फिर एक भट्टी पहलेसे अच्छी तैयार की; परन्तु उसने दुर्
उसके भीतरकी ओर कुछ चकमक पत्थर लगा दिये। अब भट्टीमें
जलाई गई तो वे चकमक पत्थर भड़क कर फट गये और उनके छोटे छोटे टु
उचट कर बरतनों पर चिपक गये। यद्यपि लेप ठीक चढ़ा, परंतु बर
बहुत खराब हो गये और इस प्रकार छः महीनेका परिश्रम फिर भी नि
गया। बरतनोंके बिगड़ जाने पर भी लोग उन्हें कम दाम देकर खरीदने
राजी थे, परन्तु पैलिसीने उनको बेचना न चाहा, क्योंकि उसने सोचा
ऐसा करनेसे उसके नाममें बट्टा लग जायगा और इस लिये उसने सब पा
फोड़ डाले। उसने लिखा है कि, "इस पर भी आशा मुझमें जान डूँ
रही और मैंने पुरुषार्थ न छोड़ा। कभी कभी जब लोग मुझसे मिलने अ
तो मैं प्रसन्न होकर उनकी आव भगत करता, परन्तु वास्तवमें मैं दुखी रह

ारी भट्टियाँ बिना छत या छप्परके रहीं। जब मैं उनपर जाकर काम करता
ा, तब मुझे रातोंमें आधी और मेहके थपेड़े खाने पड़ते थे। न कोई सहा-
ता करनेवाला था और न कोई धीरज बँधानेवाला था, सिवाय इसके कि
ारे एक तरफ बिल्लियाँ रोया करती थीं और दूसरी तरफ कुत्ते भूँका करते
ा। कभी कभी ऐसी जोरोंकी आँधियाँ चलती थीं कि मुझे काम छोड़कर
रमें छिपना पड़ता था। मैं मेहसे ऐसा तर-बतर हो जाता था कि मानों
ीचमें होता हूँ। वहाँसे मैं आधी रातको या पौ फटने पर सोनेके लिए घर
ाता था; परन्तु वहाँ घरमें उजेला न होनेके कारण इस तरह ठोकरें खाता
ा और इधरसे उधर जाता था कि मानों मैं शराब पीकर नशेमें धूम रहा
ूँ। उस समय मैं थका हुआ और अपने परिश्रमके निष्फल जानेसे शोकातुर
हता था। परन्तु हाय ! घरमें भी शरण न मिलती थी, क्योंकि एक तो वह
ानीसे भर जाता था और दूसरे मुझे वहाँ पर और भी, बड़ी बलाका—घर-
ालोंकी झंझटोंका—सामना करना पड़ता था, जिनको याद करके मैं अब
ी आश्चर्य करता हूँ कि उस समयके मेरे बहुतसे कष्ट मुझे सर्वथा ही क्यों
ा खा गये। "

जब यह नौबत पहुँच गई, तब पैलिसी बड़ा उदास हुआ और आशासे
ाथ धो बैठा। उसका और सब कुछ हो गया, बस केवल दम बाकी रहा।
ह रंजके मारे नगरके पास खेतोंमें हाथ मारता फिरने लगा। उसके कपड़े
ीथड़े हो गये थे, उनकी धज्जियाँ उसके साथ लटकती फिरती थीं, और वह
ूखकर सूख कर काँटा हो गया था। अपनी पुस्तकके एक विचित्र अंशमें उसने
वर्णन किया है कि " मेरी टाँगोंमें पिंडलियोंका पता न रहा। वहाँ पर बन्धन
लगाने पर भी मोजे न टिक सकते थे; वे चलनेके समय गिरकर एड़ियों पर
आ जाते थे!" उसके घरवाले पैलिसीको उसके अल्हड़पनके कारण निरंतर बुरा
भला कहते थे और पड़ौसी उसकी मनमानी मूर्खताके कारण उसको लज्जासे
पानी पानी किये देते थे, इस लिए वह कुछ समयके लिए फिर अपना पुराना
धंदा करने लग गया। इस बीचमें उद्योगपूर्वक परिश्रम करके उसने अपने
कुटुम्बियोंका निर्वाह किया और वह अपने पड़ौसियोंकी निगाहमें भी कुछ
अच्छा बन गया; परन्तु लगभग एक वर्षके बाद ही उसने फिर अपने प्यारे
कामको उठा लिया ! यद्यपि वह लेपकी खोजमें अबतक दश वर्ष व्यतीत कर

आये और उसके बरतन भाँड़े चकनाचूर कर दिये गये। उन लोगोंने
रातमें ही एक अँधेरे कारागारमें ले जाकर बंद कर दिया और वे उसके
पर चढ़ाये जाने अथवा जलाये जानेकी घड़ीकी प्रतीक्षा करने लगे।
ो जला देनेका हुक्म जारी हो गया, परन्तु एक शक्तिशाली जमींदारने
बचा लिया—इस लिए नहीं कि उसे पैलिसीसे विशेष प्रेम था, किन्तु
लिए कि ईकोइन नगरमें जो विशाल भवन बन रहा था उसका लेपदार
लगानेके लिए और कोई शिल्पकार न मिल सकता था। इसी लिए वह
कर दिया गया।

पने दो पुत्रोंकी सहायतासे बरतन बनानेके कामके अतिरिक्त पैलिसीने
जीवनके अंतिम भागमें बरतन बनानेकी कलाके विषयमें कई पुस्तकें
कर इस लिए प्रकाशित कीं कि उनसे उसके देशवासियोंको शिक्षा
और वे उन त्रुटियोंसे बच सकें जो उसने स्वयं की थीं। उसने कृषि-
, गृह-निर्माण-विद्या और प्राकृतिक इतिहास पर भी पुस्तकें लिखीं।
फलित ज्योतिष, कीमिया (रसायन), जादू इत्यादिका कट्टर विरोधी
इस कारण उसके बहुतसे शत्रु पैदा हो गये, उसे धर्मच्युत कह कर
की निंदा करने लगे और वह अपने धर्मके कारण फिर कैद कर दिया
। यद्यपि वह अब ७५ वर्षका बूढ़ा था, और अपना एक पैर कब्रमें लटका
था, परन्तु उसका हृदय पहलेके समान ही वीर था। उसे मृत्युका भय
दया गया; परन्तु उसने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार न किया। वह अपने
में वैसा ही दृढ़ रहा जैसा कि लेपकी खोजमें रहा था। फ्रांस देशके सम्राट्
री तृतीय भी कैदखानेमें उसके पास इस लिए गये कि उसे धर्म बदलने
राजी करें। सम्राटने कहा—" भले आदमी, तूने मेरी माताकी और मेरी
तक ४५ वर्ष सेवा की है। खेद है कि तू अपना हठ नहीं छोड़ता है। हम
अब तक क्षमा करते रहे हैं। अब मेरी प्रजा और अन्य लोग मुझे दबाते
अत एव मैं मजबूर हूँ कि तुझे तेरे शत्रुओंके हाथमें छोड़ दूँ। यदि अब भी
पना धर्म न बदलेगा तो कल जीता जला दिया जायगा। " उस अजेय
मनुष्यने उत्तर दिया,—" राजन्, मैं ईश्वर (धर्म) के नाम पर जान तक
को तैयार हूँ। आपने कई बार कहा है कि हमको मुझ पर दया आती है;
नु अब मुझे आप पर दया आती है, क्योंकि आपने ये शब्द कहे हैं कि

त थी, इस लिए वह वृटगरके द्वारा मनमाना सोना प्राप्त कर लेनेकी में फूला न समाया। उसने समझा कि मेरे हाथ सोनेकी चिड़िया लग। उसने अपने कर्मचारियोंको आज्ञा दी कि वृटगरको गुप्तरीतिसे ड्रेसडन में ले आकर रक्खो। वे लोग वृटगरको लेकर गये ही थे कि सम्राट् रिकके सैनिक वहाँ आगये और कहने लगे कि वृटगरको हमारे हवाले। परन्तु उनके आनेमें देर हो गई; वृटगर ड्रेसनमें पहुँच चुका था। वहाँ एक महलमें ठहराया गया। उसको बड़ा सुख दिया गया, परन्तु उसकी चौकसी रक्खी गई और उस महल पर कड़ा पहरा लगा दिया गया। आगस्टस कुछ समय तक वहाँ न आसका, क्योंकि उसे उसी समय डमें एक राज-विद्रोहको शांत करने जाना पड़ा। परन्तु वह सोनेके लिए न था; इसलिए उसने वृटगरको एक पत्र भेजा जिसमें लिखा कि मुझे ना बनानेकी तरकीब लिख भेजो, मैं बना लूँगा। वृटगरने एक शीशी व दी जिसमें एक तरहका लाल रस भरा था और यह लिख भेजा कि दि किसी धातुको पिघलाकर यह रस उस पर डाल दिया जाय, तो उसका ना होजायगा। इस महत्त्वपूर्ण शीशीको सम्राटके पास स्वयं राजकुमार क बड़ीभारी सेनाके सहित ले गया। सम्राटको ज्यों ही यह शीशी मिली सने उसी दम उसकी परीक्षा करनी चाही। राजा और राजकुमार दोनों हलके भीतर अकेले ताला लगाकर बैठ गये! उन्होंने पहले सीसा पिघलाया गैर फिर उस पर यह लाल रस डाला; परन्तु कुछ न हुआ, सब कुछ कर-पर भी सीसाका सीसा ही रहा आया। राजाने वृटगरका पत्र फिर पढ़ा। समें लिखा था कि इस अर्कको 'पवित्र मनसे' डालना चाहिए; परन्तु राजा स दिन शामको दुराचारियोंकी संगतमें रहा था; इस लिए उसने सोचा के इसी कारणसे मुझे असफलता हुई। दूसरे दिन उसने फिर परीक्षा की, रन्तु इस बार भी कुछ न हुआ। तब तो राजाके क्रोधका कुछ ठिकाना न हा, क्योंकि इस बार परीक्षा करनेके पहले वह पादरीके सामने अपने पोंका प्रायश्चित्त ले चुका था!

आगस्टसने अब इरादा कर लिया कि वृटगरसे यह गुप्त रहस्य जबरदस्ती लूँगा; क्योंकि निर्धनतासे बचनेका यही एक उपाय है। वृटगरने सम्राटके स इरादेका हाल सुनकर फिर भाग जानेकी कोशिश की। वह किसी तरह

निकल भागा और तीन दिन तक यात्रा करके आस्ट्रिया देशमें पहुँ
और वहाँ उसने अपने आपको सुरक्षित समझा। परन्तु आगस्टसके
उसका पीछा किये चले आये। वे उसका पता लगाते लगाते वहाँ
जहाँ वह ठहरा था और उसे पकड़कर फिर ड्रेसडन ले गये। इस बार
खूब चौकसी की गई और कुछ दिन बाद वह एक किलेमें भेज दिया
उससे कहा गया कि राजाका खजाना बिल्कुल खाली पड़ा है औ
सुवर्णमेंसे सेनाके सिपाहियोंका पिछला वेतन चुकाना है। राजा उसके
स्वयं आया और क्रुद्ध होकर बोला, "अगर तू इसी वक्त सोना ब
शुरू न करेगा, तो फाँसी पर लटका दिया जायगा!"

वर्षों हो गये, बूटघरने सोना न बनाया; परन्तु उसको फाँसीकी स
दी गई। उसको तो ताँबेका सोना बनानेसे भी अधिक महत्वपूर्ण अनुस
करना था, अर्थात् वह चीनी मिट्टीके बर्तन बनानेके लिए पैदा हुआ
चीनीके कुछ बरतन पुर्तगालवाले चीनसे लाये थे, जो तौलमें अपनेमे
अधिक सोनेमें बिके थे। बूटघरका ध्यान इस ओर वाल्टरने आकर्षित कि
जो स्वयं बड़ा विद्वान् और प्रसिद्ध था। उसने बूटघरसे—जिसे अब
फाँसीका डर लगा था—कहा—"यदि तुम सोना नहीं बना सकते तो
और ही करो, चीनी बनाओ।"

बूटघरने उसकी बात मान ली और वह दिन रात परीक्षा करनेमें
गया। बहुत दिन हो गये, परन्तु उसका सब परिश्रम निष्फल हुआ। नि
घरिया बनानेके लिए उसके पास कुछ लाल मिट्टी आई, जिससे वह
मार्ग पर लग गया। उसने देखा कि यह मिट्टी आगमें खूब तपानेसे
बन जाती है, अपना आकार नहीं बदलती और रंगके सिवाय और
बातोंमें चीनीके समान हो जाती है। उसने अकस्मात् लालचीनीका अनु
संधान कर लिया, और वह उसके बरतन बना कर उन्हें चीनीके भाव
बेचने लगा।

परन्तु बूटघर जानता था कि असली चीनीका रंग सफेद होता है
इस लिए उसने इस गुप्त रहस्यका अनुसंधान करनेके लिए परीक्षायें
कीं। इसी तरह कई वर्ष निकल गये, परन्तु सफलता न हुई। निदान
एक दैवी घटना हुई, जिससे उसने सफेद चीनी बनानेकी रीति जान

।दिनों यूरोपियन देशोंमें लम्बे लम्बे बनावटी बालोंकी टोपी पहननेका
ाज था। सन् १७०७ ईस्वीमें एक बार बूटघरको अपनी बालदार टोपी
धेक भारी मालूम हुई। उसने नौकरसे इसका कारण पूछा। उसने उत्तर
या कि, "इसका कारण वह पौडर है, जो बालोंमें लगाया जाता रहा
।" यह पौडर एक प्रकारकी सफेद मिट्टीसे बनाया जाता था। बूटघरने
म ही अपना विचार दौड़ाया। उसने सोचा कि कदाचित् यह वही मिट्टी
जिसकी मैं खोजमें हूँ। बूटघरने उसकी परीक्षा की और उसका अनुमान
क उतरा।

इस बातका मालूम हो जाना पारस पथरके मालूम होनेसे भी कहीं
यादा महत्त्वका था। क्यों कि इससे हमारे बहुत काम निकलते हैं। अस्तु-
सन् १७०७ में उसने चीनीका पहला बरतन बनाकर सम्राट् आगस्टसको
खाया। वे उसे देख कर बड़े खुश हुए और बूटघरको उसके इस आवि-
रकी पूर्तिके लिए सहायता देनेको ैर हो गये। बूटघरने एक चतुर
रिगरको बुलवाकर चीनीके बरतन ब-ा सफलतापूर्वक बनाना शुरू कर
। उसने अब रसायनको सर्वथा छोड़कर चीनीके बरतन बनानेका काम
रे लिया और अपने कारखानेके द्वार पर यह लिखवा दिया:—" सर्व
क्तिमान् ईश्वरने, जो महान् विधाता है, एक सुवर्णकार (सुनार) को कुम्भ-
र (कुम्हार) बना दिया है।"

अब भी बूटघरकी बड़ी चौकसी की जाती थी, क्योंकि यह भय था कि
हीं वह अपने रहस्यको दूसरोंके सामने प्रकाश कर दे, अथवा स्वयं चम्पत
जाय। नये कारखाने और भट्टियाँ जो उसके लिए बनाई गई थीं, उन
रात दिन फौजोंका पहरा रहता था और छः उच्चपदाधिकारी उसकी देख
खके लिए उत्तरदाता बना दिये गये थे।

बूटघरको और परीक्षाओंमें-जो नई भट्टियोंमें की गई थीं-बड़ी सफलता
हुई और जो चीनीके बरतन उसने बनाये उनका बहुत मूल्य मिलने
ा। अतएव अब एक राजकीय कारखाना स्थापित करनेका प्रयत्न किया
ा। इस बातकी सम्राट्ने घोषणा कर दी और कारखानेमें काम करनेके
ई आदमी बुलवाये। बूटघर कारखानेका प्रबंधकर्ता बनाया गया। परन्तु
सके ऊपर सम्राट्ने अपने दो कर्मचारी नियत कर दिये और इस तरह बूट-

घर कैदी ही बना रहा। जब मैसिन नगरमें कारखाना बनाया ग
तब बूटघरको ड्रेसडनसे वहाँतक सैनिक ले गये। काम समाप्त हे
वह रातको तालेमें बंद कर दिया जाता था। इन सब बातोंसे
दुःख हुआ और उसने सम्राट्को बंधन कम कर देनेके विषयमें
पत्र लिखे। कुछ पत्र तो बड़े ही करुणाजनक थे। एक पत्रमें उस
कि मैं पहले आविष्कारकोंकी अपेक्षा अधिक कर दिखाऊँगा,
स्वतंत्रता दे दी जाय!

इन निवेदनोंके लिए राजा बहरा बन गया। वह रुपया खर्च क
अनुग्रह करनेको तैयार था; परन्तु स्वतंत्रता देनेवाला न था। वह
अपना दास समझता था। इस तरह वह कैदी कुछ समयतक तो का
रहा, परन्तु साल दो सालके बाद सुस्त पड़ गया। वह संसारसे औ
आपसे तंग आगया और उसने शराब पीनेकी आदत डाल ली।
देखादेखी सभी कारीगर शराब पीने लग गये; उदाहरणका ऐसा प्रभा
है! अब तो उन लोगोंमें ऐसे लड़ाई झगड़े होने लगे कि बहुधा फौजें
उनको शान्त करती थीं। कुछ समय बाद वे सब, जिनकी संख्या ती
भी अधिक थी, अन्यत्र कैदखानेमें कैद कर दिये गये।

. निदान बूटघर बहुत पीड़ित हो गया और मई सन् १७१३ में यही
होने लगा कि यह अब मरा और अब मरा। राजाको भय हुआ कि
सोनेकी चिड़िया हाथसे न जाती रहे, अतएव उसने बूटघरको पहरे
गाड़ीमें हवा खानेकी आज्ञा दी और जब वह कुछ अच्छा हुआ, तो
कभी कभी ड्रेसडन जानेकी भी आज्ञा दी जाने लगी। अप्रैल सन् १
ईस्वीमें सम्राट्ने उसे एक पत्र लिखा जिसमें उसने बूटघरको सम्पूर्ण स्व
देनेका वायदा किया; परन्तु अब क्या होता था। काम करते रहनेसे,
पीनेसे, निरंतर रोगी रहनेसे और कठिन कैद भुगतनेसे बूटघरका शरीर
नस्तक निकम्मा हो गया था। कुछ वर्ष और काटनेके बाद सन् १७१९ ई
मृत्युने उसे सब कष्टोंसे मुक्त कर दिया। सैक्सनीके महान् उपकारके
ऐसा बर्ताव किया और उसकी ऐसी दुःखपूर्ण मृत्यु हुई! चीनीके बरत
बनानेसे आगस्टसके खजानेकी इतनी वृद्धि हुई कि अधिकांश यूरोपि
...ोंने भी आगस्टसका अनुकरण किया। फ्रांसमें तो अब इस कारीगरी

षया है। वहाँ पर इसके द्वारा बड़ी भारी आय होती है और
कि बरतन निःसंदेह सर्वोत्तम होते हैं।

कुंभकार जोसिया वैजवुडका जीवन पैलिसी अथवा बूटगरके
म विचित्र और अधिक सफल है। वह अच्छे युगमें उत्पन्न हुआ
वीं शताब्दिके मध्य तक इंग्लैंड कलाकौशलके विषयमें यूरुपके
स श्रेणीके देशोंसे पिछड़ा हुआ था। उस समय भी इंग्लैंडमें
से कुम्हार थे, परन्तु वे बहुत ही भद्दे बरतन बनाते थे। अतएव
बरतन विदेशोंसे आते थे। अभीतक इंग्लैंडमें चीनीके ऐसे बरतन
नको कड़ी चीजसे भी खुरचनेसे उनपर दाग न पड़ सकें।
ो बहुत समयतक ' सफेद बरतन ' बनते रहे हैं वे सफेद न थे
के थे। जब वैजवुड सन् १७३० ईस्वीमें पैदा हुआ उस समय
की यह दशा थी। परन्तु जब वह ६४ वर्ष बाद मरा तब वह
 पलट गई। उसने अपने उद्योग चातुर्य और प्रतिभासे इस
ड़ नई और मजबूत कर दी।

। सामान्य श्रेणीमें भी ऐसे मनुष्य उत्पन्न हो जाते हैं, जो अपने
रित्रके द्वारा केवल काम करनेवालोंको परिश्रमकी आदत डाल-
रेक शिक्षा ही नहीं देते, किन्तु श्रम और धैर्यका उदाहरण
साधारणकी सब तरहकी कार्यकुशलता पर बड़ा गहरा प्रभाव
जातीय चरित्रगठनमें अच्छा योग देते हैं। वैजवुड ऐसा ही
उसके तेरह भाई थे और उनमें वह सबसे छोटा था। उसके
पिता दोनों कुम्भकार या कुम्हार थे। वह बालक ही था, तब
तीन सौ रुपया छोड़कर मर गये। वह ग्रामीण पाठशालामें
सीखता था; परन्तु पिताकी मृत्यु होने पर उसको पाठशाला
इया गया और वह अपने बड़े भाईको बरतन बनानेके काममें
लगा। उस समय उसकी अवस्था ग्यारह वर्षकी थी। कुछ
। ऐसी प्रचंड शीतला निकली कि उसके असरसे उसे जीवन-
रहा, क्योंकि उससे उसके दाहिने घुटनेमें एक ऐसी बीमारी
र उठ आती थी और वह बहुत वर्षों पीछे पैरके कटजाने पर
महाशयने कुछ वर्ष हुए कहा था कि, " जो रोग उसे हो

वेजवुडको कुछ समयतक अपनी भट्टियोंके कारण बड़ा कष्ट उठाना पड़ा; तु यह कष्ट पेलिसीके कष्टसे बहुत कम था। तो भी उसने अपनी कठिनाइयोंका उसी तरह सामना किया जिस तरह पेलिसीने किया था। बारबार कार्यों करनेमें और अटल-अविरत धैर्य रखनेमें उसने भी हद कर दी। ने पहले पहल जो रसोईके कामके लिए चीनीके बरतन बनानेकी चेष्टायें उनमें लगातार असफलतायें हुईं। महीनोंका परिश्रम बहुधा एक दिनमें हो जाता था। बहुतसी परीक्षायें करनेके बाद, जिनसे उसका बहुत य, रुपया और परिश्रम नष्ट हुआ, उसे जैसी चाहिए वैसी जिलाका पता ा। बरतन बनानेकी-शिल्पको उन्नत बनानेकी उसे धुन हो गई और ये उसने एक क्षणभर भी उपेक्षा न की। जब वह कठिनाइयोंको दूर के धनी हो गया, तब भी अपने शिल्पमें निपुणता प्राप्त करता रहा। के उदाहरणका प्रभाव सर्वत्र फैल गया, उस जिले भरके लोगोंमें कार्यशीलताका संचार हो गया, और अँगरेजी स्वर्तंत्रताकी एक बड़ी शाखा दृढ़ व पर स्थापित हो गई। उसका लक्ष्य सदैव सर्वोच्च उत्तमता पर रहता था र वह कहा करता था कि, "किसी चीजको खराब बनानेसे यही अच्छा कि वह बिलकुल ही न बनाई जाय।"

बहुतसे श्रेष्ठ और शक्तिशाली मनुष्योंने वेजवुडको हार्दिक सहायता दी। से दिलसे काम करनेवालेको सहायकों और उत्साहदाताओंकी कमी नहीं ती। उसने रानी चार्लटके लिए रसोईके बरतन बनाये जो इंग्लैंडमें बने सबसे पहले राजकीय बरतन थे और इससे वह 'राजकीय कुंभकार' का दिया गया। उसे चीनीके बढ़िया बरतन नकल करनेके लिए दिये गये और इस काममें उसको प्रशंसनीय सफलता हुई। उसने बड़े बड़े प्राचीन और सुन्दर बरतनोंकी नकल ज्योंकी त्यों उतार दी।

वेजवुडने रसायनशास्त्र पुरातत्त्व और चित्रविद्यासे भी सहायता ली। उसने फ्लैक्समैन नामक चित्रकारको ढूँढ निकाला और उसकी चित्रकुशलताका उपयोग अपने बरतनोंके काममें किया। इसीकी सहायतासे उसने सर्वप्रिय सुन्दर बरतन बनाये और उनके द्वारा प्राचीन चित्रविद्याको सर्वसाधारणमें फैलाया। उसने लगातार प्रयत्न व अध्ययन करके यह पता लगा लिया कि इटरुरियाके प्राचीननिवासी मिट्टी और चीनीके बरतनों पर और उन्होंके

समान अन्य चीजों पर किस तरह चित्रकारी किया करते थे। इस कलाको चीनमें लोग बिलकुल भूल गये थे। उसने विज्ञानमें भी अनेक आविष्कार करके ख्याति प्राप्त की। वह सार्वजनिक हितका बड़ा पोषक था। उसके प्रयत्नसे ही एक नहर बनवाई गई। उसने अपने जिलेमें एक अच्छी सड़क बनाई। उसने और भी बहुतसे काम किये जिनसे उसकी ख्याति बहुत ही बढ़ गई। उसके स्थापित किये हुए कारखाने देखनेके लिए यूरपके प्रायः सारे देशोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध मनुष्य आने लगे।

इयोंके समयमें वे जो संतोषपूर्ण आत्मनिर्भरता और उचित उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए जो शौर्य और धैर्य दिखलाते हैं वह उन जल और स्थलकी सेनाके सिपाहियोंसे कम नहीं होता जो सच्चे बहादुर होते हैं और संसारमें अपूर्व आत्मत्यागके उदाहरण छोड़ जाते हैं।

अध्याय चौथा।

अखंड उद्योग और आग्रह।

" संकट देख सामने अपने कभी न कहना ' हाय, '
धीरज धरके उसे झेलना साहस उरमें लाय।
भग्न-मनोरथ होकर भी तू श्रम करना मत छोड़;
सारी विषय-वासनाओंसे अपना मुँह ले मोड़ ॥

—रामदयालु।

" धनवान् उसे ही कहना चाहिए जो उद्योगी है। उद्योगी मनुष्य प्रत्येक पलको अपना समझता है। समय प्रकृतिका खजाना है। इस खजानेको ऐसे मनुष्य अपने ही अधिकारमें रखते हैं। कालके हाथमें काँचकी रेतसे भरी हुई शीशी है। उद्योगी वीर उसमेंके एक एक कणको गगनका चमकता हुआ तारा या अमूल्य हीरा समझकर लगातार परिश्रम करके संग्रह करते रहते हैं। "

डाक्नाट।

" हर कामके करनेके पहले यह निश्चय करो कि वह काम उचित है या नहीं यदि वह करनेके योग्य है तो उसमें दृढ़ताके साथ लग जाओ। फिर कैसा ही संकट आवे, परन्तु अपने निश्चयको कभी मत छोड़ो। "

जीवनके बड़े बड़े काम बहुधा सरल उपायों और साधारण योग्यतासे हो जाते हैं। मनुष्यको, जीवनमें जो चिन्तायें लगी रहती हैं, आवश्यकतायें पड़ती हैं और काम करने पड़ते हैं उनके कारण उसे सर्वोत्तम अनुभव प्राप्त करनेके अनेक अवसर मिलते हैं। जो काम बार बार करने पड़ते हैं उनमेंसे काम करनेवालेके लिए उद्योग और उन्नति करनेके बहुत मौके मिलते रहते

हैं। यह बात सदासे चली आई है कि मनुष्य दृढ़तापूर्वक अच्छे काम करनेसे ही अपना कल्याण कर सकता है; और वे ही लोग सबसे अधिक सफलता प्राप्त करते हैं जो सबसे अधिक दृढ़ बने रहते हैं और सच्चे हृदयसे काम करनेमें सबसे बढ़े रहते हैं।

लोग कहा करते हैं कि तकदीर अंधी होती है; परन्तु सच तो यों है कि तकदीर इतनी अंधी नहीं है जितने मनुष्य। जिन लोगोंको जीवनका कुछ अनुभव है वे जानते हैं कि जिस तरह हवा और लहरें अच्छे मल्लाहोंके पक्षमें रहती हैं उसी तरह तकदीर भी उद्यमी मनुष्योंका साथ देती है। बड़ेसे बड़े कामोंमें भी समझदारी, ध्यानशीलता, उद्योग, आग्रह इत्यादि साधारण गुण भी परम उपयोगी सिद्ध हुए हैं। बहुतसे कामोंमें प्रतिभाकी आवश्यकता भी नहीं होती, परन्तु बड़े बड़े प्रतिभाशाली मनुष्य भी इस साधारण गुणोंसे काम लेना बुरा नहीं समझते। कुछ मनुष्य तो यह भी नहीं मानते कि प्रतिभा कोई विलक्षण वस्तु है। एक प्रसिद्ध अध्यापकका कथन है कि उद्योग करने की शक्ति ही प्रतिभा है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटनकी बुद्धि बड़ी विलक्षण थी, तो भी जब लोगोंने उनसे पूछा कि–" आपने अपने अद्भुत अनुसंधान किस तरह किये?" तो उन्होंने नम्रतासे उत्तर दिया, " उन पर सदैव विचार करनेसे।" एक दूसरे अवसर पर उन्होंने अपने अध्ययनकी रीति इस प्रकार वर्णन की थी– " मैं अपने विषयको निरंतर अपने सम्मुख रखता हूँ और उस समयकी प्रतीक्षा करता हूँ जबतक मैं पहलेकी अधूरी समझी हुई बातोंको धीरे पूर्णतया न समझ जाऊँ।" अन्य मनुष्योंके समान धुन बाँधकर लगे रहनेसे ही न्यूटनने ऐसा यश प्राप्त किया। जब वे विश्राम करना चाहते थे, तब एक विषयको छोड़कर दूसरा विषय पढ़ने लग जाते थे। अपने एक मित्रसे उन्होंने कहा था कि " यदि मैंने संसारकी कोई सेवा की है, तो वह केवल परिश्रम और धैर्यपूर्वक विचारके द्वारा की है।"

केवल उद्योग और आग्रहके द्वारा ऐसे ऐसे अद्भुत कार्य हुए हैं कि बहुतसे नामी नामी मनुष्योंको इस बात में संदेह हो गया है कि प्रतिभा कोई विलक्षण वस्तु है। प्रसिद्ध विद्वान् वॉल्टेरका मत है कि प्रतिभाशाली मनुष्यों और साधारण मनुष्योंमें बहुत ही थोड़ा अंतर होता है। बैकेरिया कहा करता

या कि सभी मनुष्य कवि और वक्ता हो सकते हैं। रेनोल्ड्सका कथन है कि
प्रत्येक मनुष्य चित्रकार और मूर्तिकार हो सकता है। प्रसिद्ध दार्शनिक लौक,
हैल्वीटिअस, और डिईरोटका मत है कि सब मनुष्योंमें प्रतिभाशाली बननेकी
एक सी शक्ति मौजूद है और यदि कुछ मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोंको
काममें लाकर किसी कार्यको कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि और
लोग वैसे ही सुयोग और साधन पाकर उस कार्यको न कर सकें। यद्यपि यह
सच है कि परिश्रमसे अद्भुत अद्भुत कार्य हुए हैं और बड़े बड़े प्रतिभाशाली
मनुष्योंने अटूट परिश्रम किया है, तो भी यह स्पष्ट है कि मौलिक मानसिक
शक्ति और उत्तम भावोंके बिना चाहे कितना ही परिश्रम कितनी ही उचित
रीतिसे क्यों न किया जाय, तो भी तुलसीदास, वराहमिहर, वाग्भट
अथवा तानसेनका प्रादुर्भाव नहीं हो सकता।

संसारके महापुरुषोंने बहुधा यह कहा है कि हमने प्रतिभासे नहीं, किन्तु
निरन्तर परिश्रम करनेसे सफलता प्राप्त की है। महात्माओंके जीवनचरित
पढ़नेसे भी हमको यही मालूम होता है कि सुप्रसिद्ध आविष्कारकर्ताओं,
कलाकारों, विचारवानों और सब प्रकारके कार्यकर्ताओंको बहुत करके अटूट
परिश्रम करने और काममें निरन्तर लगे रहनेसे ही सफलता प्राप्त हुई है।
इन महात्माओंने सब चीजोंको यहाँतक कि समयको भी सुवर्णके समान बहु-
मूल्य समझा था। एक महात्माका वचन है कि सफलता प्राप्त करनेका गुप्त
रहस्य अपने विषयपर अधिकार प्राप्त करना है और यह अधिकार निरन्तर
लगे रहने और अध्ययन करनेसे प्राप्त होता है। यही कारण है कि जिन
लोगोंने संसारमें सबसे अधिक हलचल मचाई है उनमें प्रतिभाकी मात्रा
(यदि हम उसको प्रतिभा कह सकें), इतनी न थी जितनी कि उनमें
मध्यम श्रेणीकी योग्यता और अटूट परिश्रम करनेका गुण था। उनमें स्वाभा-
विक सद्गुण इतने न थे जितना कि वे अपने काममें मेहनतके साथ निरन्तर
लगे रहते थे। एक विधवाने अपने बुद्धिमान परन्तु लापरवाह लड़केके विष-
यमें कहा था कि "अफसोस! उसमें अटूट परिश्रम करनेका गुण नहीं है।"
जीवनकी दौड़में ऐसे बुद्धिमान मनुष्योंसे, जो जम कर काम नहीं कर सकते,
परिश्रमी और मंदगामी मनुष्य भी बाजी ले जाते हैं। इटली भाषाकी एक
कहावत है जिसका आशय यह है कि जो धीरे धीरे परन्तु निरन्तर चला करते

है वे बहुत आगे बढ़ जाते हैं। संस्कृतमें भी ऐसाही वचन है-"शनैः शनैः पन्थाः।"

अतएव मनुष्यका एक बड़ा उद्देश यह होना चाहिए कि वह कामका अभ्यास करे। जब यह गुण आजायगा तब जीवनके सारे काम सुगम मालूम होने लगेंगे। कामका निरंतर अभ्यास करना चाहिए। सुगमता परिश्रममें आती है। इसके बिना अत्यंत साधारण काम भी नहीं हो सकता। इससे कठिनाइयाँ दूर होजाती हैं। महारानी विक्टोरियाके प्रधान सचिव सर रा[illegible] पील बाल्यकालमें अभ्यास करने और बार बार प्रयत्न करनेसे ही रत्न[illegible] रत्न बन गये थे। जब वे बालक थे, तब उनके पिता उन्हें मेजके पास [illegible] करके पहलेसे तैयारी किये बिना ही व्याख्यान देनेका अभ्यास कराया क[illegible] थे और इतवारके दिन गिरजेमें सुने हुए धर्मोपदेशको बारबार दुहराने[illegible] अभ्यास कराते थे। पहले तो इस कार्यमें थोड़ी ही उन्नति हुई; परन्तु [illegible] निरंतर लगे रहनेसे चित्तकी एकाग्रताका अभ्यास प्रबल हो गया और वे धर्मो[illegible] पदेशको लगभग शब्दशः सुना जाने लगे। आगे प्रौढ़ अवस्थामें उनकी स्म[illegible] णशक्ति ऐसी अनूठी होगई थी कि वे राज-सभामें अपने प्रतिद्वंद्वियोंकी स[illegible] युक्तियोंका बिना भूले क्रमशः उत्तर देते चले जाते थे। यह उसी शिक्षा[illegible] फल था जो उन्होंने अपने पितासे बचपनमें पाई थी।

परन्तु याद रक्खो कि सर्वोत्तम उन्नति धीरे धीरे होती है। बड़े बड़े फ[illegible] तुरंत ही प्राप्त नहीं हो जाते। हमारी उन्नति यदि धीरे धीरे हो रही हो त[illegible] हमें उसपर सन्तोष करना चाहिए। एक महाशयका कथन है कि जो लोग प्रतीक्षा करना जानते हैं, वे सफलताके गुप्त रहस्यको समझते हैं। काटनेसे पहले हमको बोना पड़ता है और इस बीचमें हमको आशा बाँधे हुए धैर्य प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अच्छे फल बहुधा देरमें पकते हैं। एक कहावत है जिसका आशय यह है कि धीरजके साथ बाट देखनेसे और समय बीतनेसे शहतूतकी पत्तियोंका रेशम बन जाता है।

जो मनुष्य हँसी-खुशीसे काम करते हैं वे धीरजके साथ प्रतीक्षा कर सकते हैं। काम करनेके लिए चित्तकी प्रसन्नताकी बहुत आवश्यकता है। इससे बड़ी सहनशीलता आती है। काम करनेके लिए जिस चतुराईकी आवश्यकता होती है वह मुख्यकर प्रसन्नता और परिश्रमसे ही प्राप्त होती है। इन दोनों

ई बड़े आविष्कारकर्ताओंके जीवनचरितोंमें धैर्यके उदाहरण खूब मिलते
जिनके अंजनका आविष्कारकर्ता स्टीफिन्सन जब युवा मनुष्योंके सामने
यान देता था तब कहता था,–" जैसा मैंने किया है वैसा ही तुम भी
धैर्यसे काम लो।" स्टीफिन्सन अंजन बनानेमें स्वयं पंद्रह वर्ष तक
रहा था। वाट् अपने भाफके अंजन बनानेमें तीस वर्ष तक परिश्रम
रहा था। और लोगोंमें भी धैर्यके अद्भुत उदाहरण मिलते हैं। प्राचीन
लेखोंके पढ़ने और समझनेमें अनेक मनुष्योंने ऐसा घोर और अश्रान्त
न किया है कि सुनकर दाँतोंतले उँगली दबानी पड़ती है। उसके
ंमारको उन भाषाओंका ज्ञान प्राप्त हो गया है जिनको लोग कभीके
के थे और जिनके पढ़े जाने की कोई आशा न थी। पंडित भगवान
इन्द्रजीने इस विषयमें बड़ा परिश्रम किया था।

हित्यसेवियोंके चरितोंमें भी धैर्यशक्तिके अनेक उदाहरण मिलते हैं।
तापचन्द्ररायने 'महाभारत' का एक अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित
निश्चय किया था। यह निश्चय इतना दृढ़ था कि बाह्य साधन न
भी सफल हुए बिना न रहा। उन्होंने इस काममें अपने एक मित्र
इन गांगुलीसे सहायता ली थी। ये महाशय संस्कृत अच्छी जानते
ह थोड़ी थोड़ी करके सौ भागोंमें प्रकाशित की गई। परन्तु जब
तकका ८२ वाँ भाग निकला तब प्रतापचंद्रका देहान्त हो गया।
इस पुस्तकके प्रकाशित करनेमें बारह वर्षतक कठिन परिश्रम किया
थिक सहायता पानेके लिए भारतवर्षमें चारों ओर भ्रमण किया।
वल भारतवासियोंने ही नहीं किन्तु यूरप और अमेरिकावालोंने भी
। प्रतापचंद्र स्वयं धनाढ्य न थे; परन्तु उन्होंने इस पुस्तकके प्रका-
पनी गाँठका भी रुपया लगा दिया। सन् १८८५ ई० में उनको
रेमें बुखार आगया और इसीने उनके जीवनका अंत कर दिया।

ामना करते हुए इस महान् कार्यको कर डाला। इस समय नगेन्द्रबाबू अपने
वेश्वकोशको हिन्दीमें प्रकाशित कर रहे हैं।

बहरामजी, मेरवानजी मलबारी भी इसी गुणसे अलंकृत थे। उनमें
ार्य करनेकी अद्भुत शक्ति थी। उनके पिता बड़ोदेमें केवल बीस रुपया
ासिकपर नौकर थे। वे बहरामजीको केवल छः वर्षका छोड़कर परलोकवास
गये, इससे बहरामजीके ऊपर आपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा। उनकी माता
लेकर एक और जगह रहने लगी और किसी तरह अपना निर्वाह करने
। बहरामजी बचपनमें बड़ा उपद्रव किया करते थे। उन्होंने आसपासक
ोंका नाकोंदम कर रक्खा था। यद्यपि वे एक पाठशालामें भरती करा दिये
, तो भी उनकी चंचलतामें कमी न आई। इसके पश्चात् उनको बढ़ईका
सिखाया गया; परन्तु उन्होंने वह भी न सीखा। निदान वे दूसरी बार
शालामें भेजे गये, परन्तु फिर भी अपना पहला स्वभाव न छोड़ सके।
त करनेके अतिरिक्त उनको कोई धुन ही न थी। जब वे बारह
े हुए, तब उनकी माता भी चल बसीं। अब बहरामजीको किसका सहारा
! बस इसी दुर्घटनाने उनके जीवनको परिवर्तित कर दिया। पढ़ने लिखने
पढ़ईके कामसे जी चुरानेवाला बालक अब विद्याप्रेमी और गम्भीर बन
। इस नवीन कष्टसे बहरामजी निराश न हुए। उनमें न मालूम कहाँसे
ा आगई। वे सूरत पहुँचे और वहाँ पर एक स्कूलमें पढ़ने लगे। खानेके
उनके पास कुछ न था, इस लिए वे स्कूलसे अवकाश मिलने पर अपनी
थोड़ीसी विद्यासे–जो उपद्रव और ऊधम करते समय आगई थी–लड़-
ो घर पर पढ़ाने लगे और इससे जो कुछ मिलने लगा उसीसे अपना
ाह करने लगे। इस प्रकार कष्ट उठाते हुए उन्होंने थोड़े ही कालमें अँग-
ेकी अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। परन्तु वे गणितमें कच्चे थे, इस लिए
ट्रिक्युलेशनकी परीक्षामें उत्तीर्ण न हो सके। यह परीक्षा उन्होंने चार बार
, किन्तु सफलता न हुई। परन्तु वे निराश होनेवाले न थे; धैर्यको उन्होंने
थसे न जाने दिया। परीक्षा देनेकी उन्होंने एक बार और भी चेष्टा की और
बार वे उत्तीर्ण होगये। इसके बाद बहरामजीने गुजराती और अँगरेजीमें
पुस्तकें लिखीं, जिनसे उन्हें बड़ा यश मिला। राजराजेश्वरी महारानी

विक्टोरियाने भी उनकी एक पुस्तकको पढ़ा और उनकी बड़ी प्रशंसा
गुर्जर-साहित्यमें उनकी पुस्तकोंका अब तक बड़ा सम्मान है।

कुछ काल बाद बहरामजीने 'इन्डियन स्पेक्टेटर' नामक पत्रको अ
अधिकारमें ले लिया और उसका संपादन करना शुरू कर दिया। वे के
पत्रका संपादन ही नहीं; किन्तु उसके संबंधी सभी काम करते थे। इस प
समाज-सुधारके विषयमें बड़े उत्तम हास्यपूर्ण लेख निकला करते थे।
पत्रके चलानेके लिए बहरामजीके पास यथेष्ट धन न था; इस लिए एक
उन्हें अपनी स्त्रीके आभूषण तक बेच देने पड़े। परन्तु वे घबड़ाये न
धैर्यपूर्वक निरंतर परिश्रम करते रहे। थोड़े ही कालमें उनके पत्रका
देशमें और विदेशोंमें खूब सत्कार होने लगा। उसके ग्राहकोंकी संख्या ब
बढ़ गई। भारतके गवर्नर जनरल भी उसे बड़े चावसे पढ़ने लगे। उन्
दो पत्र और चलाये। उनमें से एक 'ईस्ट ऍंड वेस्ट' उनकी मृत्युके प
अब तक निकल रहा है और उत्तम श्रेणीका पत्र समझा जाता है। बहरा
जीने सामाजिक सुधारके लिए बहुत श्रम किया। विधवाओंकी दशा सुध
नेकी उन्होंने अनेक बार चेष्टायें कीं। इस काममें लोगोंने बहुत बाध
डालीं और उनको बहुत बुरा भला कहा; परन्तु उन्होंने किसीकी एक
सुनी। वे अपनी धुनके पक्के थे। लोग कहते थे कि ये केवल मानके लि
यह काम करते हैं और इस तरह वे उन्हें बदनाम करके निरुत्साह कर
चाहते थे; परन्तु उन्होंने संदेहको अपने पास भी न फटकने दिया। उन्
भारतीय स्त्रियोंको रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषाका काम सिखलानेका प्रबंध कि
उनमें शिक्षाका भी प्रचार किया। शिमलाके निकट धर्मपुरमें जो औ
चिकित्सालय क्षय-रोगके रोगियोंके लिए बना है वह आपके ही परिश्रम
फल है। सरकारने उन्हें अनेक उपाधियाँ देनी चाहीं, परन्तु उन्होंने स्वी
न कीं। वे नाम नहीं चाहते थे; उनको काम प्यारा था। बहरामजीका स्
वास सन् १९१२ में हुआ। इस प्रकार एक सर्वथा निराश्रय बालकने अ
ही बल पर काम करते हुए और अनेक कठिनाइयोंको झेलते हुए केवल
ही प्राप्त न किया, किन्तु देशकी बहुत बड़ी सेवा की। उनका सब प्रकार

और पुस्तकोंके द्वारा सर्वसाधारणमें समाज–सुधारका बीज अंकुरित करना, बाधाओंको सहन कर विधवाओंकी दशा सुधारनेकी चेष्टा करना, पारसी होकर भी हिन्दू जातिके पुरुष और स्त्रियोंकी सहायता करना, विरोधियोंकी बातें सुन कर भी अपने जी पर मैल न लाना; ये सब बातें मानवी धैर्य–शक्तिका एक बहुत ही उत्साहजनक उदाहरण हमारे सामने रखती हैं।

सैमुएल ड्यूका जीवन भी धैर्य-शक्तिका विचित्र उदाहरण है। उसके पिता एक मजदूर थे। दरिद्र होने पर भी वे अपने दो लड़कोंको एक छोटी पाठशालामें भेजते रहे। बड़े लड़केको पढ़नेमें रुचि थी इसलिए उसने अच्छी उन्नति कर ली; परन्तु छोटा लड़का सैमुएल पढ़नेमें बड़ा भद्दा था और उपद्रव करनेमें तथा कामसे जी चुरानेमें प्रसिद्ध था। जब वह आठ वर्षका हुआ तब एक खानमें मजदूरी करने लगा और डेढ़ आना रोज कमाने लगा। इसके बाद जब वह दश वर्षका हुआ तब एक मोचीके यहाँ काम सीखने पर बिठा दिया गया। इस काममें उसने बहुत दुःख भोगे। इन दुःखोंके मारे वह छुपा भाग जानेका और डाँकू बन जानेका विचार किया करता था। वह ज्यों ज्यों बड़ा होता गया, त्यों त्यों अल्हड़ होता गया। बागोंके फलोंको लूटनेमें वह अग्रसर रहता था। जब वह बड़ा हुआ तब उसे चोरीकी चाट लग गई। मोचीका काम सीख चुकनेके पहले ही, जब उसकी अवस्था १७ वर्षकी थी, वह एकदिन इस इरादेसे भाग गया कि मैं किसी लड़ाईके जहाज पर नौकरी कर लूँगा। परन्तु रातको वह एक खेतमें सो रहा और सर्दी खा गया जिससे फिर अपने काम पर लौट आया।

इसके बाद वह एक गाँवमें जा रहा और वहाँ जूते सीनेका धंधा करने लगा। इसी समय कौसेण्डमें उसने पटेबाजीमें इनाम पाया; इस काममें वह निपुण हो गया था। एक बार उसने एक मनुष्यको महसूली मालको लेके ले जानेमें सहायता दी। इस कार्यमें उसकी जानतक गई होती। वह कामोंमें औरोंके साथ इस लिए शरीक हो गया था कि एक तो उसको कामोंका शौक था, और दूसरे उसकी आमदनी काफी न थी इसलिए रुपयोंका भी लालच था। एक बार उस समस्त नगरमें यह बात मशहूर हो गई कि महसूली मालको चोरीसे ले जानेवाला एक मनुष्य समुद्रके किनारेके पास है और अपना माल जहाजमेंसे उतारनेको तैयार है। यह सुन-

कर उस स्थानके सब पुरुष-जो प्रायः सभी महसूली मालको चोरीसे ले आया करते थे-समुद्रके किनारे पर गये। उस मनुष्यने, जो महसूल बचानेके लिए अपने मालको चोरीसे ले आना चाहता था, अपना जहाज किनारेसे कुछ दूर खड़ा कर दिया। उसके सहायकोंमेंसे कुछ लोग तो चट्टानों पर संकेत करने और मालको छिपानेके लिए खड़े रहे और कुछ जहाज परसे नावोंमें माल भरकर किनारे पर लानेके लिए नियत हुए। सैमुएल ड्रयू इन्हीं नाववालोंमें था। रात बड़ी अँधियारी थी। थोड़ा ही माल उतारने पाया था कि आँधी चली और समुद्र फुफकारने लगा। जो लोग नावों पर थे उन्होंने धीरज धारण किया और माल उतारनेके लिए जहाजसे जमीनके किनारे तक कई चक्कर लगाये। जिस नावमें ड्रयू था उसी नावमें बैठे हुए एक आदमीकी टोपी हवामें उड़ गई और ज्यों ही उसने अपनी उड़ती हुई टोपीको पकड़नेकी चेष्टा की, त्यों ही उसकी झोकसे नाव औंधी हो गई। तीन आदमी तो तुरंत ही डूब गये। जो शेष रहे थे कुछ देर तक तो नावसे चिपटे रहे, परन्तु जब उन्होंने देखा कि नाव किनारेकी ओर न जाकर समुद्रमें और भी आगे बढ़ती जाती है तब तैरना शुरू कर दिया। वे जमीनसे दो मीलके फासले पर थे और अँधेरी रात थी। इन्हीं तैराकोंमें ड्रयू भी था। वह बड़ी ही कठिनाईसे तैर कर अपने दो एक साथियों सहित किनारे पर पहुँच गया और वहाँ सबेरे तक सर्दीसे सिकुड़ा हुआ पड़ा रहा। सबेरा होने पर जब लोगोंने उन्हें देखा तब वे उन्हें बस्तीमें ले गये। वे सबके सब अधमरे हो रहे थे। जब कुछ शराब पिलाई गई तब उनकी जानमें जान आई। शरीरमें कुछ बल आजाने पर ड्रयू अपने घरको चला गया जो दो मीलकी दूरी पर था।

युवाकालके शुरूमें ही इस प्रकारके कामोंमें पड़जानेसे उसके सुधरनेकी आशा न थी; परन्तु आश्चर्यकी बात है कि वह सुधर गया। उसी ड्रयूने जो बड़ा अक्खड़, बागोंका लुटेरा, मोची, पटेबाज और महसूली मालको चोरीसे ले आनेवाला था, आगे चलकर धर्मका प्रचार करनेमें और पुस्तकें लिखनेमें बड़ा नाम पाया। सौभाग्यसे बहुत बिगड़नेके पहले ही उसने अपना ध्यान और उद्योग दूसरी ओर लगा दिया जिससे कि वह उतना ही अच्छा और उपयोगी हो गया, जितना पहले खराब और निकम्मा हो गया था। ऊपर

और इसके बाद वह एक दूकान पर जूता बनानेके काम पर नौकर रह गया। ह्यू मरते मरते बचा था, शायद अब इसी कारण वह गम्भीर हो गया और उपद्रव करनेकी प्रवृत्ति उसकी कम हो गई। कुछ समय पीछे धर्मोपदेशक डाक्टर ऐडम क्लार्कके उपदेशोंने ड्यू पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला और इसी समय उसके पिताका देहान्त हो गया इस कारण तो वह और भी अधिक गम्भीर हो गया। उसका स्वभाव बिल्कुल बदल गया। उसने फिर से पढ़ना लिखना शुरू कर दिया, क्योंकि वह इस बीचमें प्रायः सब ही कुछ भूल चुका था। उसके एक मित्रके कथनानुसार उसके हस्ताक्षर इस समय ऐसे मालूम होते थे जैसे किसी मकड़ीने अपनी टाँगोंको स्याहीमें डुबाकर और कागज पर फिरकर एक अजीब तरहके चिह्न बना दिये हों। ड्यूने अपनी उस समयका स्थितिके सम्बन्धमें पीछे पीछे कहा था कि " जितना ही मैं पढ़ता था उतना ही मुझे अपनी अनभिज्ञताका अनुभव होता था; और मुझे अपनी अनभिज्ञताका जितना पता लगता था, उतनी ही मैं उसे दूर करनेकी चेष्टा करता था। अवकाश मिलने पर मैं अपने हरएक क्षणको कुछ न कुछ पढ़नेमें लगाता था। मुझको अपना निर्वाह करनेके लिए मजदूरी करनी पड़ती थी इस कारण पढ़नेके लिए बहुत थोड़ा समय मिलता था, और इसीसे मैं अपनी इस समयकी कमीको पूरा करनेके लिए भोजन करनेके समय अपने सामने किताब खोलकर रख लेता था और कमसे कम ५-६ पृष्ट पढ़ लेता था।" लाक नामक लेखकके निबंधोंको पढ़कर उसका ध्यान आत्मज्ञानकी ओर आकर्षित हुआ। उसने कहा कि " इन निबंधोंको पढ़कर मेरी मानसिक निद्रा जाग गई और मैंने अपने नीच विचारोंके छोड़ देनेका पक्का संकल्प कर लिया।"

इसके बाद ड्यूने थोड़ेसे रुपयोंसे निजी व्यवसाय शुरू कर दिया। उस समय उसकी कार्यतत्परताको देखकर एक पड़ौसी चक्कीवालेने उसको कर्ज दे दिया और इससे उसका व्यापार अच्छा चलने लगा। इस उद्योगमें ऐसी सफलता हुई कि उसने एक ही वर्षके पश्चात् सारा कर्ज चुका दिया। परन्तु इसके बाद उसने कर्ज लेनेसे कान पकड़ लिया। कर्जदार बननेसे उसे इतनी घृणा हो गई थी कि वह कई बार विपत्तिमें फँस कर भी अपने संकल्पसे च्युत न हुआ। कभी कभी वह इस लिए भूखा सो रहता था कि मुझे सवेरे कर्जदार होकर न उठना पड़े। वह परिश्रम और मितव्ययका अवलम्बन करके

स्वतंत्र होना चाहता था। उसे इस प्रयत्नमें धीरे धीरे सफलता भी हु
निरन्तर शारीरिक परिश्रम करते हुए भी उसने अपनी मानसिक उन्नति
नेके लिए खगोल, इतिहास और आत्मज्ञान या अध्यात्मका अध्ययन कि
उसे आत्म-ज्ञानका विशेष अध्ययन करनेका सुभीता इस कारण मिला कि
विषयमें शेष दो विषयोंकी अपेक्षा कम पुस्तकें देखनेकी आवश्यकता थी।

जूता बनाने और आत्मज्ञानका अध्ययन करनेके साथ साथ वह धर्मोप
देनेका काम भी करने लगा। उसे राजनीतिसे भी प्रेम हो गया; उस
दूकान पर उस ग्रामके राजनीतिके प्रेमी लोगोंकी भीड़ होने लगी। जब
न आते थे, तब वह स्वयं उनके पास सार्वजनिक विषयों पर बातचीत क
चला जाता था। इस काममें उसका इतना समय चला जाता था कि उस
कभी कभी दिनमें खोये हुए समयकी कमीको पूरा करनेके लिए आधी रा
तक काम करना पड़ता था। गाँवके सब लोग उसके राजनैतिक जोशकी प्र
किया करते थे। एक बार जब टूपू रातको एक जूतेका तला बना रहा था
एक लड़का उसके कमरेके भीतर रोशनी देखकर बंद दरवाजेके समीप आ
और अपना मुँह एक छिद्र पर लगाकर जोरसे बोला—"मोची मोची, रातको
काम करता है और दिनमें इधर उधर गप्पे हाँका करता है!" यह बात टू
कुछ समय बाद अपने एक मित्रसे कही। मित्रने पूछा—तुमने उस बदमाश
पीठ पर चमड़ेके कोड़ेके दोचार सपाटे क्यों न जमा दिये? टूपूने उत्तर दिया
" नहीं, यदि कोई मेरे कानके बिलकुल पास लाकर बंदूककी आवाज करत
तो भी मुझे उससे इतना भय अथवा घबड़ाहट न होती, जितनी उस लड़
केके उन थोड़ेसे शब्दोंसे हुई! मैंने उसी वक्त अपना काम छोड़ दिया औ
अपने जीमें कहा, 'सच है! सच है! परन्तु लड़के! तुझे मुझसे फिर ऐस
कहनेका अवसर न मिलेगा।' मुझे उस लड़केके शब्द ऐसे मालूम हुए कि
मानो वह देववाणी थी। उसकी बात पर मैंने अपने जीवन भर ध्यान रक्खा
है। मैंने उससे यह शिक्षा पाई है कि आजका काम कल पर न छोड़ना चाहिए
अथवा काम करनेके समयको व्यर्थ न खोना चाहिए।"

पहले पहल एक कविताके रूपमें प्रकट हुआ। उसकी कविताके कुछ अंश अबतक मौजूद हैं वह सूचित करते हैं कि आत्माके अमूर्तिक और अवि- ी होनेके सम्बंधमें उसके विचार कविता करते ही उत्पन्न हुए थे। उसके नेका स्थान रसोईघर था। वहां वह बूढ़ा सुलगानेकी धौंकनी पर किताब कर पढ़ा करता था। बच्चे शोर मचाते रहते थे और धूमधाम करते रहते ो भी वह अपने लेख लिखा करता था। उस समय पेन नामक लेखककी ढ़िका युग' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। लोग उसे बड़े चावसे पढ़ते । इस पुस्तकके प्रतिवादमें ड्रयूने एक छोटीसी पुस्तक लिखी, जो प्रकाशित गई। वह अकसर कहा करता था कि पेनकी पुस्तकने ही मुझे लेखक ाया। फिर तो कुछ समय पश्चात् ही उसने जल्दी जल्दी कई छोटी छोटी तकें लिख डालीं। कुछ वर्षोंके बाद उसने 'मनुष्यका आत्मा अमर है और र्त है' इस नामकी प्रसिद्ध पुस्तक लिखी, प्रकाशित कराई और उसको ३२० ' में बेच दिया। इस रकमको वह उस समय बहुत जियादा समझता था। ा पुस्तककी कई आवृत्तियाँ हो चुकी हैं और अब भी उसकी कदर की ती है। बहुतसे युवा लेखक अपनी थोड़ीसी सफलता पर भी फूल जाते हैं— भिमान करने लगते हैं; परन्तु ड्रयूको किंचित् भी घमंड न हुआ। प्रसिद्ध लेख- में गणना हो जानेपर भी अपने घरके द्वारके आगेकी गलीको झाड़ा करता । और अपने शिष्योंको जाड़ेके लिए कोयला लानेमें सहायता दिया करता था। सने कुछ समय तक तो साहित्यको, अपना रोजगार भी न बनाया था; वह र्चीका काम करके ही ईमानदारीसे उदरनिर्वाह करता था और उसमें जो समय चता था उसे पुस्तक लिखनेमें लगाता था। परन्तु पीछे वह अपना सारा ा समय साहित्यसेवामें लगाने लगा। उसने एक मासिकपत्रका संपादन रना शुरू किया और पुस्तकोंके प्रकाशकका भी वह प्रबंध करने लगा। इसने ई पुस्तकें लिखीं। अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें उसने कहा—"मैं जिस मय पैदा हुआ उस समय मनुष्यसमाजकी सबसे नीचेकी सीढ़ी पर था। रिश्रमसे ऊपर चढ़कर मैंने ईमानदारीके साथ, परिश्रम करके, मितव्ययका वलम्बन करके और सदाचार पर खूब लक्ष्य रखके अपने कुटुम्बको आदरणीय नानेकी जीवनभर चेष्टा की है। दैवकी कृपासे मेरा परिश्रम सफल हुआ ौर मेरे मनोरथ सिद्ध हो गये।"

पाँचवाँ अध्याय ।

साधनोंकी सहायता और सुयो

"खाली हाथ अथवा कोरी बुद्धिसे कोई महत्त्वका काम नह काम यंत्रों और साधनोंसे होते हैं। बुद्धि (मानसिक शक्ति) और (शारीरिक शक्ति) दोनोंको ये साधन एक समान आवश्यक हैं।"—बे

"सुयोगके सिरमें केवल आगेकी ओर बाल होते हैं, पीछेकी ओर गंजा रहता है। यदि तुम उसके आगेके बालोंको पकड़ लो तो वह तुम्हारे आजायगा। परन्तु यदि तुम उसे आगेसे निकल जाने दोगे तो फिर संसारमें ऐसी शक्ति नहीं है जो उसे पकड़ सके।"—लैटिनसे ।

किसी आकस्मिक घटना या दैवकी लीलाके भरोसे जीवनमें बड़ा काम नहीं होता। यह ठीक है कि कभी कभी रास्ता च चलते रुपयोंकी थैली हाथ लग जाती है, या ऐसा ही और कोई अनर्थ लाभ हो जाता है; परन्तु इस तरहके लाभकी आशामें बैठे रहना मूर्खता दृढ निश्चयके साथ निरन्तर परिश्रम करते रहना—उद्योगमें लगे रहना ही स

एकत्र स्वरूपको ही निपुणता कहते हैं और सम्पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है" । एक चित्रकारका सिद्धान्त था कि–' यदि कोई काम, करनेके योग्य है, तो वह भले प्रकार करनेके योग्य है–उसमें लापरवाही न करना चाहिए ।'

कहा जाता है कि कुछ अनुसंधान दैवयोगसे हुए हैं; परन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो मालूम होगा कि ऐसा कहना भूल है । जिन बातोंको हम समझते हैं कि दैवयोगसे मालूम हुई हैं वे जियादातर सुयोगों (मौकों) से बुद्धिपूर्वक लाभ उठानेसे मालूम हुई हैं । दैव कोई चीज ही नहीं है । बहुधा कहा जाता है कि जब न्यूटनने वृक्षसे सेवको गिरते हुए देखा, तब उसने गुरुत्वाकर्षणकी शक्तिका पता लगाया और यह केवल एक आकस्मिक घटना थी–दैवलीला थी । परन्तु ऐसा कहना ठीक नहीं; इसके पहले ही न्यूटन आकर्षण शक्तिके विषयमें वर्षों विचार व परिश्रम कर चुका था । सेवके गिरते ही उसने अपनी बुद्धिसे तुरंत ही उसका कारण समझ लिया और इस तरह उसने अपना प्रसिद्ध अनुसंधान किया । अर्थात् गुरुत्वाकर्षणका पता किसी दैवी घटनाका नहीं किन्तु न्यूटनके वर्षोंके परिश्रमका फल था । यद्यपि लोग समझते हैं कि बड़े आदमी बड़ी बातों पर ही ध्यान देते हैं, परन्तु असली बात यह है कि वे अत्यन्त साधारण और प्रतिदिनके व्यवहारकी बातोंकी भी छान बीन किया करते हैं । उनमें बड़ापन बस यही है कि वे [illegible]के साथ हर बातको समझ लेते हैं ।

मनुष्योंमें जो भेद दिखलाई देता है वह अधिकतर निरीक्षण-शक्तिके न्यूनाधिक होनेसे होता है । कोई कोई मनुष्य जितना देश देशान्तरोंमें फिरकर सीखते हैं उससे अधिक कुछ मनुष्य केवल नाटकोंको देख कर ही सीख लेते हैं । और आँख मस्तिष्क ये दोनों देखनेका काम करते हैं । जहाँ विचाररहित निरीक्षक कुछ नहीं देख पाते, वहाँ विवेकदृष्टिवाले मनुष्य बातकी तह तक [illegible]कर ध्यानपूर्वक भिन्नताओंको देखते हैं, दूसरी चीजोंके साथ उसका [illegible] करते हैं और उसके असली अभिप्रायको पा लेते हैं । गैलिलियोके पहले बहुत लोगोंने लटकी हुई चीजोंको बलपूर्वक हिलते हुए देखा था; परन्तु इस बातका रहस्य पहले पहल गैलिलियोकी ही समझमें आया । [illegible]के गिरजेके एक सेवकने एक लैम्पमें जो छतमें लटका हुआ था, तेल भर

विकास हुआ, जिसके द्वारा संसारके समस्त देशोंके समा
उधर जाया करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वीके नीचे दबे हुए पशु
स्पतियोंके छोटे छोटे अंशोंका बुद्धिमानीसे अभिप्राय समझनेसे भू
विकास हुआ और खान खोदनेका काम निकला, जिसमें अब क
लगाया जाता है और करोड़ों मनुष्योंके लिए उपयोगी धंधा निक

पानीकी बूंदोंमें उष्णता लगनेसे भाफका पैदा होना साधार
हम अपने रसोईघरोंमें यह बात प्रतिदिन देखते हैं। इसी भाफ
चतुराईसे बनाई हुई कलोंके द्वारा काममें लाते हैं, तब इसकी श
घोड़ोंकी शक्तिके बराबर हो जाती है। वह अपने बलसे समुद्रके
फटकारती है और बड़े बड़े तूफानोंका सामना करती है। खानें
निकालनेमें पंप और कारखानोंके चलानेमें और जहाज व रेलके इं
मशीनोंका प्रयोग किया जाता है, वे भाफकी ही शक्ति पर भव
यही शक्ति जब पृथ्वीके भीतर काम करती है तब पर्वतोंमेंसे ज्वाल
है और भूकम्पके रूपमें पृथ्वीको कम्पायमान कर देती है जिस
इतिहासमें बड़े बड़े भारी परिवर्तन हो जाते हैं।

कहा जाता है कि पहले पहल मारक्विस आफ वोरस्ट
भाफकी शक्तिकी ओर आकर्षित हुआ था। वह लंडनके टावर (बं
कैद था। वहाँ पर एक बड़ा भारी बरतन चूल्हे पर चढ़ा हुआ था।
खौल रहा था। बरतनके मुँह पर कड़ा ढक्कन लगा हुआ था। उस
देखा कि भाफके जोरसे यह ढक्कन उचट कर दूर जा पड़ा।
भाफकी शक्तिका ज्ञान हुआ और फिर उसने अपने इस अनुभ
एक पुस्तकमें प्रकाशित करा दिया, जिसकी सहायतासे अनेक और
शक्तिकी खोजमें लग गये। इसके बाद सेवेरी, न्यूकमन आदि
व्यवहारमें लाकर एक अंजन तैयार किया, जिसको वाटने उन्नति दी
अपना सारा जीवन भाफके अंजनकी पूर्ति करनेमें ही लगा दिया।

सुयोगों और संयोगोंसे लाभ उठाना, और उनको किसी कार्यके
लगाना सफलताका बड़ा भारी रहस्य है। जो मनुष्य कोई न कोई क

ज़ों, अजायबघरों, और प्रदर्शनियोंसे काम उठानेवालोंने ही विज्ञान
सम्बंधी सबसे अधिक काम किया है और यह ख़याल भी ठीक नहीं
। सबसे अधिक प्रसिद्ध यंत्रकार और आविष्कारक हुए हैं उन्होंने
शालाओंमें शिक्षा पाई थी। प्रसिद्ध चित्रकार राजा रविवर्माने किसी
लामें कभी शिक्षा नहीं पाई। आवश्यकता आविष्कारोंकी जननी है।
आवश्यकताके कारण ही सारे आविष्कार हुए हैं—मनुष्यको जिसके
पड़ा उसीकी वह खोज करता गया। सबसे अधिक फलदायक पाठ-
कठिनाई' की पाठशाला हैं। संकटों और कठिनाइयोंसे ही तरह तर-
विष्कार होते हैं। कुछ सर्वोत्तम शिल्पकारोंने बहुत भद्दे औज़ारोंसे काम
; परन्तु याद रक्खो कि मनुष्य औज़ारोंके द्वारा नहीं किन्तु अपनी
और धैर्यके कारण शिल्पकार बनता है। बुरे शिल्पकारके लिए अच्छे
ज़ार बुरे हैं। एक चित्रकारसे किसीसे कहा कि, "आप अपने रंग
नहीं किस विचित्र रीतिसे मिलाते हैं?" उसने उत्तर दिया, "महा-
उन्हें अपने मस्तकके द्वारा मिलाता हूं।" हरएक प्रसिद्ध कार्यकर्ताके
यही बात समझना चाहिए। फरगुसनने अनेक अद्भुत चीज़ें–जैसे
की घड़ी, जो ठीक घंटे बताती थी—एक साधारण चाकूसे बनाई। चाकू
ण औज़ार है, जो हर मनुष्यके पास होता है; परन्तु प्रत्येक मनुष्य
न नहीं होता। पानीका एक तसला और दो तापमापक यंत्र, केवल
औज़ारोंसे डाक्टर ब्लैकने अप्रकट तापका अनुसंधान किया यह सिद्ध
कि पृथ्वीकी तमाम चीज़ोंमें छुपी हुई गर्मी रहती है। डाक्टर वोले-
बहुतसे महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान केवल चायकी एक पुरानी
थोड़ेसे शीशे, कागज, एक छोटीसी तराजू और एक फूँकनीसे किये थे।
क (उड़ीसा) निवासी महामहोपाध्याय पं० चन्द्रशेखर सिंहने
सम्बन्धी अनेक अनुसंधान साधारण यंत्रोंसे कर डाले थे। उनके पास
घड़ी, एक दूरबीन, एक खगोल, एक शंकु और एक स्वयं वह यंत्रके
कुछ न था। और ये यंत्र भी उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्योतिष
स्वयं पढ़ पढ़कर बना लिये थे। आज कलके पश्चिमी यन्त्रोंका तो
कुछ समय तक नाम भी न सुना था। केवल प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंके
पुराने [illegible] ने नये

यता पर मुग्ध होकर उनको महामहोपाध्यायकी उपाधिसे विभूषित किया। के बड़े बड़े ज्योतिर्विद्याविशारद भी इस ग्रंथको देखकर दाँतोंके तले ी दबाते हैं। भारतवर्षमें भी आपका बड़ा सम्मान हुआ। यहाँके पंडि- मिलकर एक सभा की और इसमें आपके सिद्धान्तोंके अनुसार पञ्चाङ्ग का निश्चय किया। इस पञ्चाङ्गका बंगालमें खूब ही प्रचार है।

टोथर्डने रंग मिलानेकी कला तितलियोंके परोंको ध्यानपूर्वक देखकर थी। वह बहुधा कहा करता था कि "कोई नहीं जानता कि मैं छोटे छोटे कीड़ोंका कितना ऋणी हूँ।" चित्रकार विल्की खलिहानके जैसे कागजका और जली हुई लकड़ीसे पैन्सिलका काम निका- था! बालक रविवर्मा कोयलेसे दीवारों पर चित्र बनाया करता मैविक भी इसी तरह पहले खड़ियासे दीवारों पर चित्र बनाता था। ुसन खेतोंमें कम्बल ओढ़कर पड़ा रहता था और एक डोरेमें जिसमें दें पिरोये हुए थे, सितारोंका नक्शा बनाया करता था। अर्थात् वह एक तारेकी जगह अपने धागेमें एक एक मनिया अटका देता था। फ्रैंकलि- पहले पहल अपनी पतंगमें एक रेशमी रूमाल और दो आड़ी लकड़ियोंको कर उसे आकाशमें उड़ाया और उसके द्वारा गरजते हुए बादलोंमेंसे ली खींची। गिफर्ड जब कि वह एक चमारके यहाँ नौकर था, चमड़ेके छोटे चिकने किये हुए टुकड़ों पर गणितके सवाल लिखा करता था। री रिटिन हौस महर्णोंका हिसाब अपने हल पर लगाया करता था। यन्त साधारण अवसरों पर भी मनुष्यको उन्नति करनेके मौके अथवा मिल सकते हैं, यदि वह उनसे लाभ प्राप्त करनेके लिए तत्पर हो। एक लीका ध्यान, जब वे बढ़ईका काम करते थे, हिब्रू भाषामें लिखी बाइबिलको देखकर हिब्रू भाषाके सीखनेकी ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने राना व्याकरण मोल ले लिया और उस भाषाको वे स्वयं सीखने लगे। एडमन्डस्टोनसे, जो एक गरीब मालीका लड़का था, एक महाशयने कि, "तुम लैटिन भाषाकी पुस्तकें पढ़नेके योग्य कैसे हो गये?" तो उत्तर दिया कि "यदि मनुष्य केवल वर्णमालाके सब अक्षर सीख ले, वो कुछ चाहे सीख सकता है।" लगातारके प्रयत्न तथा धैर्यसे और का श्रमपूर्वक सदुपयोग करनेसे सारे काम सिद्ध हो जाते हैं।

फ्रांसके प्रसिद्ध अध्यक्ष ड्रागोसोने समयके छोटे छोटे अंशों
लगाकर एक बड़ा और योग्यतापूर्ण ग्रंथ लिखा था। भोजनकी प्र
मेंमें उसे जो समय मिलता था उसीमें वह लिखता था। मैडम डी. जे
ने अपने ग्रंथ उस समयमें लिखे जब वह राजकुमारीके आनेकी-वि
पढ़ाने आती थी-प्रतीक्षा किया करती थी। ऐलिहू बुर्रिटने लुहार
अपना निर्वाह करते हुए १८ नवीन तथा प्राचीन भाषायें और यूर
बोलचालकी भाषायें सीखीं।

कुछ मनुष्योंने अपने कामोंमें जो क्लेश उठाया है वह अद्भुत है;
इस क्लेशको ही अपनी सफलताका मूल समझते थे। ऐडीसन
'स्पेक्टेटर' (द्रष्टा) नामक पत्रके सम्पादनमें हाथ लगाया तब उ
पहल उसको तीन बार लिखना पड़ा, तब कहीं अच्छा लिखा गया।
अपनी एक पुस्तक जब पन्द्रह बार लिख ली, तब उसे संतोष हु
गिबनने अपनी पुस्तक नौ बार लिखी। हेलने बहुत बर्षोंतक प्रति
घंटेके हिसाबसे पढ़ा। जब वह कानून पढ़ते पढ़ते थक जाता था, तब
होनेके लिए दर्शनशास्त्र पढ़ने लगता था, और जब इससे भी थक ज
तब गणितका अध्ययन करने लगता था। पं० ईश्वरचन्द्र विद्या
दिनरातमें केवल दो घंटे सोते थे और शेष समयमें या तो पढ़ा करते
भोजन बनाना आदि अन्य आवश्यकीय काम किया करते थे। ह्यूमने
डका इतिहास' १३ घंटे रोज परिश्रम करके लिखा था। मौन्टेस
अपने लेखोंके एक भागके सम्बन्धमें अपने एक मित्रसे कहा था कि
तो इसे कुछ ही घंटोंमें पढ़ लोगे, परन्तु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने
लिखनेमें इतने समय तक परिश्रम किया है कि मेरे बाल सफेद पड़ गये

ही तरह जमह पा गई। डाक्टर पाईस्मिथ, अपने पिताके साथ
ो जिल्द बाँधनेका काम किया करते थे। उस समय वे जितनी
ढ़ते थे उन सबका हाल अनेक स्मरणलेखों, उद्धृत किये हुए वाक्यों
लोचनाओं सहित लिख लिया करते थे। उन्होंने इस तरहकी सामग्री
रनेमें अपने जीवनभर अश्रान्त परिश्रम किया था। उनके जीवनचरित-
लिखा है कि "वे सदैव काम करते रहते थे, सदैव आगे बढ़ते रहते
सदैव सामग्री इकट्ठी करते रहते थे।" बादमें इस सामग्रीसे उनको
हायता मिली।

। हंटर भी ऐसा ही करते थे। उन्होंने चिकित्सासम्बन्धी अनेक कार्य
। वे रातको केवल चार घंटे सोते थे और दिनमें भोजनके पश्चात् एक
र सोते थे। जब उनसे एक बार पूछा गया कि "आपने अपने
किस उपायसे सफलता प्राप्त की है?" तो उन्होंने उत्तर दिया–
सिद्धान्त यह है कि मैं किसी कामको शुरू करनेके पहले अच्छी तरह
मझ लेता हूँ कि वह हो भी सकता है या नहीं। यदि वह हो सकता
मैं उसे पूरा परिश्रम उठाकर करने लगता हूँ। एकवार शुरू करके मैं
कामको पूरा किये बिना कभी नहीं छोड़ता। इसी सिद्धान्त पर चलनेसे
री सफलतायें प्राप्त हुई हैं।"

वे बड़ा परिश्रमी था। वह थकता न था। आठ वर्ष तक निरंतर खोज
बाद उसने रक्त बहनेके सम्बन्धमें अपने विचार प्रगट किये। उसने
परीक्षाओंको बार बार दुहराया और जाँचा। वह पहलेसे ही जानता
अब मैं अपने अनुसन्धानको प्रकाशित करूँगा तब मुझे अपने सहयो-
का सामना करना पड़ेगा। जिस पुस्तकमें उसने अपने विचार प्रकाशित
हैं वह अत्यंत विनयपूर्वक लिखी गई थी और सरल, सुबोध तथा प्रमाण-
थी। इस पर भी लोगोंने उस पुस्तककी हँसी उड़ाई और उसके लेख-
सिड़ी व धूर्त समझा। कुछ समय तक उसके मतको किसीने भी ग्रहण
या और उसको फटकार और गालियोंके अतिरिक्त कुछ न मिला।
प्राचीन मनुष्योंके आदरणीय प्रमाणोंका खंडन किया था; इस लिए
का यहाँतक विश्वास हो गया था कि उसके विचार धर्मपुस्तकोंके प्रमा-
नष्ट करनेवाले और सदाचार व धर्मकी जड़को उखाड़ डालनेवाले हैं।

इसलिए अब जीवनके अन्तम लक्ष्मा तथा ख्यातिका भूखा
चाहता।" जैनरके ही जीवनकालमें संसारके तमाम सभ्य दे
लगानेकी रीतिको ग्रहण कर लिया और जब उनका देहान्त हु
लोगोंने उनको सारी मानवजातिका उपकारक स्वीकार किया।

ह्यूमिलरकी निरीक्षण शक्ति बड़ी तेज थी। उन्होंने साहित्य
दोनोंका अध्ययन उत्साह और सफलतापूर्वक किया था। जिस पुस्त
अपना जीवन-चरित लिखा है वह बड़ी मनोरंजक है और बहुत
समझी जाती है। वह इस बातका इतिहास है कि दरिद्र अवस्थामें
श्रेष्ठ व सदाचारी हो सकता है। उससे स्वावलम्बन, आत्मसम्मान
श्रयकी अत्यंत प्रभावशाली शिक्षायें मिलती हैं। इनके बचपनमें
पिता डूबकर मर गये, अतएव उनका उनकी विधवा माताने पा
किया। उन्हें पाठशालामें भी कुछ शिक्षा मिली; परन्तु वास्तवमें
तो वे लड़के जिनके साथ वे खेलते थे, वे मनुष्य जिनके साथ वे
थे और वे मित्र और कुटुम्बीजन जिनके साथ वे रहते थे—वे स
सर्वोत्तम अध्यापक थे। वे भिन्न भिन्न विषयोंका अध्ययन करते थे,
थे और नाना स्थानोंसे प्राचीन ज्ञानका संचय किया करते थे।
बढ़इयोंसे, मच्छीमारोंसे, मल्लाहोंसे यहाँ तक कि समुद्रके किनारे प
पड़े पत्थरोंसे भी वे कुछ न कुछ सीखते थे। वे अपने प्रपितामहके
ऐको लेकर निकल जाते थे और पत्थरोंको फोड़ते रहते थे तथा अभ
रमर, याकृत इत्यादिके टुकड़े इकट्ठे किया करते थे। कभी कभी
पूरा दिन बिता देते थे और वहाँ पर भूगर्भ-विद्या सम्बन्धी बातों
ध्यान देते थे। जब वे बड़े हुए तब एक संगतराशके यहाँ नौकर
यह काम उन्हें पसंद था। इसके बाद वे एक पत्थरकी खानमें
लगे। यह खान उनके लिए एक सर्वोत्तम पाठशाला बन गई
पृथ्वीके भीतरकी जो बनावटें उन्होंने देखीं उनसे उनका कुतूहल
[illegible] और उनपर विचारन किये हुए।

े योग्य बात न पाते थे, वहाँ वे समानता, भिन्नता और विशेषता देखा
ते थे और उन पर विचार किया करते थे। वे केवल अपनी आँखों और
नको खुला रखते थे और स्थिरता, परिश्रम और धीरजके साथ काम करते
। उनकी मानसिक उन्नतिका यही गुप्त रहस्य था।

उन्हें अपने हथौड़ेसे खोदते खोदते अथवा समुद्रकी लहरोंसे जो पृथ्वीकी
ट्टी उखड़ आती थी उसमें पुरानी मुर्दा मछलियाँ, वृक्ष इत्यादि ऐसी
ज़ें मिल जाती थीं, जो उस समय देखनेमें न आती थीं। इनको देखकर
नका कौतूहल बहुत बढ़ जाता था। वे अपने विषयसे कभी उपेक्षा न
रते थे; किन्तु अनुभव बढ़ाते जाते थे और प्राप्त वस्तुओंका मिलान करते
ले जाते थे। बहुत वर्ष पीछे जब वे संगतराशीका काम छोड़ चुके, तब
न्होंने प्राचीन लाल बलुआ पत्थरके विषयमें एक अति मनोज्ञ पुस्तक प्रका-
शित की, जिससे वे तुरंत ही भूगर्भशास्त्रवेत्ता प्रसिद्ध हो गये। उनकी पुस्तक
र्षोंके धीरतापूर्वक अनुभव और खोजका फल थी। उन्होंने अपने आत्म-
लिखचरितमें नम्रतापूर्वक लिखा है—" इस विषयके सम्बन्धमें यदि मुझमें
ोई गुण है, तो वह यह है कि मैंने धैर्यपूर्वक खोज की है और यह ऐसा
ुण है जिससे हर एक मनुष्य, जो इच्छा करे, वही मेरी बराबरी कर सकता
 अथवा मुझसे भी बढ़ सकता है। यदि धीरजके इस छोटेसे गुणको उचित
न्नति दी जाय तो इससे प्रतिभासे भी अधिक महत्त्वपूर्ण विचारोंका विकास
ो सकता है।"

प्रसिद्ध अँगरेज भूगर्भविद्याविशारद जान ब्रौन भी पहले मिलरके समान
गतराश थे। वे गृहनिर्माणका काम निजी तौर पर करते थे और मितव्यय
था परिश्रमसे इस काममें खूब निपुण हो गये थे। इस कामको करते हुए
नका ध्यान पृथ्वीमें दबे हुए पशुओंकी ठठरियोंकी ओर आकर्षित हुआ।
न्होंने उनका इकट्ठा करना आरम्भ कर दिया और बादमें उनका यह संग्रह
लैंडका एक सर्वोत्तम संग्रह बन गया। उनकी खोजसे हाथियों और
ैंडोंकी कुछ महत्वकी ठठरियाँ प्राप्त हुईं, जिनमेंसे अच्छी अच्छी उन्होंने
जायब घरमें रखवा दीं। अपने जीवनके अंतिम भागमें उन्होंने उन अत्यंत
े छोटे कीड़ोंके विषयमें-जो खड़ियामें मिलते हैं-विशेष ध्यान दिया और
नके विषयमें अनेक मनोरंजक बातोंका पता लगाया। उन्होंने परोपकारी,
द्यमय और आदरणीय जीवन व्यतीत किया; उनका देहान्त अस्सी वर्षकी
वस्थामें हुआ।

भूगोल-विद्याप्रकाशक सभाके सभापति सर रोडेरिक मर्चिसनको
वर्ष हुए राबर्ट डीक नामक एक मनुष्य मिला जो एक भट्टे पर काम कर
था; परन्तु भूगर्भविद्यामें खूब निपुण था। जब रोडेरिक मर्चिसन उससे
पर मिले, जहाँ वह ईंटें इत्यादि पकाकर अपनी गुजर किया करता था,
उसने अपने ग्रामके सम्बन्धमें बहुतसी भूगर्भ तथा भूगोलविद्यासंबंधी
बतलाईं और उस समयके बने हुए नक्शोंमें त्रुटियाँ भी बताईं, जो
अवकाश मिलने पर ग्राममें घूम घूम कर मालूम की थीं। अधिक पूछने
सर रोडेरिकको मालूम हुआ कि वह दीन मनुष्य केवल एक निपुण
पकानेवाला और भूगर्भविद्याविशारद ही नहीं है, किन्तु वनस्पतिशास्त्र
उच्च श्रेणीका जानकार है। सर रोडेरिकने कहा है कि "मैं यह जान
बड़ा लज्जित हुआ कि भट्टा पकानेवाला वनस्पति शास्त्रमें मुझसे कहीं
जानकारी रखता था। उसका ज्ञान मेरे ज्ञानसे दस गुना था और
संग्रहमें केवल बीस या तीस फूल ही संग्रह किये बिना रह गये थे।
उसको औरोंसे मिले थे, और कुछ उसने अपने ग्राममें अपने परिश्रमसे
किये थे। ये नमूने अत्यंत सुन्दर रीतिसे व्यवस्थित थे और उन पर
वैज्ञानिक नाम लिखे थे।"

अथवा एक भव्य मूर्ति बनानेके कामको हँसी खेल मत समझो-ये यों ही संयोगसे नहीं बन जाते। चित्रकार अपनी कूंची या कलमसे और मूर्तिकार अपनी छैनीसे जो सुन्दर आकार बनाता है उसमें यद्यपि उसकी स्वाभाविक बुद्धि या प्रतिभा भी कारण है तथापि इसके साथ ही उसे उसके अखंड उद्योग, अश्रान्त परिश्रम और निरन्तरके अभ्यास या मुहावरेका फल समझना चाहिए।

सर जौशुआ रेनाल्ड्सको उद्योगकी शक्ति पर बहुत बड़ा विश्वास था। उसका मत था कि "शिल्पचातुर्य अथवा कलाकुशलता चाहे जैसी प्रतिभालब्ध, दैवलब्ध या रुचिलब्ध हो सीखनेसे अवश्य आसकती है।" अपने एक मित्रको उन्होंने लिखा था कि "जो कोई चित्रकारी अथवा किसी और शिल्पमें निपुण होना चाहता है उसको प्रातःकाल उठनेके समयसे रात्रिको सोनेके समयतक अपना संपूर्ण ध्यान उसी एक विषय पर लगाये रखना चाहिए। एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था कि "जो निपुण होना चाहते हैं उनको अपने काममें जैसे बने तैसे, सवेरे, दोपहरको, रात्रिको इस तरह आठों पहर चौंसठों घड़ी लगे रहना चाहिए। तब उनको मालूम होगा कि वह खिलवाड़ नहीं है, किन्तु बहुत ही कठिन परिश्रम है।" यद्यपि शिल्पमें तथा कलाकौशलमें सर्वोच्च श्रेणीकी निपुणता प्राप्त करनेके लिए उसमें श्रमपूर्वक लगे रहना निःसंदेह अत्यंत आवश्यक है, तथापि यह अवश्य मानना पड़ेगा कि स्वाभाविक प्रतिभाके बिना कोरा श्रम किसी मनुष्यको शिल्पकार नहीं बना सकता, चाहे वह कितनी ही अधिक मात्रामें, कितनी ही उचित रीतिसे क्यों न की जाय। प्रतिभा स्वाभाविक होती है, परन्तु उसका विकास अभ्यासशिक्षाकी सहायतासे या स्वतःलब्ध शिक्षासे होता है जो पाठशालाकी शिक्षासे अधिक महत्त्वकी चीज है।

कई बड़े बड़े शिल्पकारोंने निर्धनता और अनेक बाधाओंका सामना करके अपनी उन्नति की है। ऐसे उदाहरणोंकी संसारमें कमी नहीं है। टिंटैरिटो रंगरेज था। साल्वेटर रोज़ा डँकुओंके साथ रहता था। गिओट्टो किसानका लड़का था। केवीडोनको उसके पिताने घरसे निकाल दिया था। इस तरहके और भी बहुतसे प्रसिद्ध शिल्पकार घोर कठिनाइयोंमें प्रचंड अध्ययन और श्रम करके अपनी कीर्तिको अमर कर गये हैं।

इन मनुष्योंने सौभाग्य अथवा दैवसे नहीं; किन्तु उद्योग और परिश्र
गौरव पाया है। यद्यपि इनमेंसे कुछने धन प्राप्त किया, तो भी यही उ
एक मात्र लक्ष्य न था, केवल धनका प्रेम ही उनको प्रारम्भिक जीव
आत्मसंयम और धुन बाँधकर परिश्रम करनेमें स्थिर न रख सकता। य
करनेका आनंद ही उनके लिए सर्वोत्तम फल था; धन जो उन्हें मिला
तो केवल संयोगवश मिल गया। बहुतसे शिल्पकार अपने काममें मग्न र
पसंद करते थे, और अपनी चीज़ोंके दामोंमें लोगोंसे झिकझिक करना प
न करते थे। स्पैगनोलैट्टोने धनवान् होनेके सब साधन प्राप्त करके भी उ
छोड़ दिया और निर्धन होकर परिश्रम करना पसंद किया। जब माइ
ऐंजीलोसे एक चित्रके संबंधमें, जो एक चित्रकारने बड़े परिश्रमसे अ
रकम कमानेके लिए तैयार किया था, पूछा गया, तो उसने कहा कि जब
वह धनाढ्य होनेकी इतनी अधिक तृष्णा रक्खेगा तब तक मैं समझता हूँ
वह निर्धन ही रहेगा।"

सर जोशुआ रेनाल्ड्सके समान, माइकल ऐंजीलोकी भी उद्योगशी
बड़ी श्रद्धा थी। उसका विश्वास था कि यदि हाथ मनकी आज्ञा अनुसार
ठीक काम करें तो मस्तकमें चाहे जैसी विलक्षण कल्पना उठे, उसकी हू
प्रतिमा पत्थरपर खींची जा सकती है। वह स्वयं बिना थकावटके परि
करनेवाला था; और अपने सहयोगियोंकी अपेक्षा अधिक समय तक अभ्य
कर सकता था। इसका कारण यह था कि वह बहुत ही साधारण भो
करता था। जब वह अपने काममें लगा रहता था, तब उसे दिनमें थ
रोटी और शराबकी आवश्यकता होती थी। वह बहुत करके आधी रा
अपना काम शुरू कर देता था! रातको वह अपनी टोपीमें मोमबत्ती ल
... था। कभी कभी वह इतना थक जाता था

द लेकर ताजा हो जाता था, फिर काममें लग जाता था। उसके पास एक ई आदमीकी मूर्ति थी। वह बूढ़ा आदमी एक गाड़ीमें रक्खा था और ड़ीके ऊपर एक बालूकी घड़ी थी, जिसपर यह लेख था—"अभी मैं सीख हा हूँ"।

टिशियन भी विनायके काम करनेवाला था। उसने एक राजाको एक मूर्ति बनाकर भेजी थी जिसके बनानेमें उसे हर रोज काम करनेपर भी सात वर्ष लगे थे। एक और मूर्ति उसने आठ वर्षमें बनाई थी। उसको अपनी सर्वोत्तम मूर्तियाँ बनानेके लिए जो धैर्यपूर्वक परिश्रम और चिरकालिक अभ्यास करना पड़ा उसका अनुमान बहुत कम लोग कर सकते हैं। एक रईसने उसकी बनाई हुई एक प्रतिमाका मूल्य पूछ कर उससे कहा कि "तुम इस प्रतिमाके पाँचसौ रुपये माँगते हो, जिसके बनानेमें तुम्हें केवल दसदिन लगे हैं।" उसने उत्तर दिया, "महाशय, आप यह नहीं जानते कि मैंने इस प्रतिमाको दस दिनमें बनाना तीस वर्षके कठिन परिश्रमसे सीखा है।" एक चित्रकारने एक चित्रको चालीस बार बनाकर रद कर दिया तब कहीं एकतालीसवें बार वह उसकी तबीयतके माफिक बन सका। इस तरह निरंतर दुहराना शिल्पमें सफलता पानेका एक प्रधान मार्ग है। बारबार प्रयत्न करना, असफल होनेपर भी परिश्रम करनेसे विरक्त न होना, जहाँसे भूल हो वहाँसे फिर गिनना शुरू कर देना, यह बड़ा ही बहुमूल्य गुण है। जिस मनुष्यमें यह गुण होता है वह संसारसागरमें सबसे आगे निकल जाता है और इसीकी प्रधानतासे कलाकुशलता आती है।

चाहे दैवने कितनी ही प्रतिभा दे दी हो, तो भी शिल्प विद्या चिरकालके और निरंतरके परिश्रमसे ही प्राप्त होती है। बहुतसे शिल्पकार अल्पकालमें ही दक्षता प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु बिना परिश्रमके उनका यह गुण कुछ काम नहीं ता। इस विषयमें वेस्टकी कथा प्रसिद्ध है। जब वह केवल सात वर्षका था द अपनी ज्येष्ठा भगिनीके सोते हुए बच्चेके सौन्दर्यको देखकर चकित हो गया गैर दौड़कर एक कागज ले आया। उसने तुरंत ही लाल और काली स्याहीसे स बच्चेका एक चित्र तैयार कर लिया। इस छोटीसी घटनाने दिखा दिया कि वह शिल्पकार बननेकी योग्यता रखता है और उसको इस काममेंसे उठा- र दूसरे काममें लगाना असंभव है। बहुत थोड़ी उमरमें उसकी प्रशंसा होने

और कभी कभी असफल होते थे। उन्होंने रंगोंके भरनेमें बड़ा परिश्र
किया, परन्तु उनको उत्साहित करनेवाला कोई न था। सन् १८७१ ं
मिस्टर चिसहोम, जो मद्रासकी शिल्पशालाके अधिष्ठाता थे, ट्रावनकोरं
पधारे। रविवर्माके कामको देखकर और यह जानकर कि उन्होंने चित्रकारीक
शिक्षा किसी दूसरेसे नहीं किन्तु अपने आप प्राप्त की है—उनको बहु
आश्चर्य हुआ। उन्होंने यह सोचकर कि 'यदि रविवर्माका काम संसारको
न दिखाया जायगा तो वह व्यर्थ जायगा' रविवर्मासे कहा कि मद्रासकी
प्रदर्शनीके लिए तुम अच्छा चित्र तैयार करो। इधर ट्रावनकोरके महारा
रविवर्माकी योग्यताको जान चुके थे, इसलिए उन्होंने इस कामके लिए रवि-
वर्माको यथेष्ट आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया। कई महीने परिश्रम
करके रविवर्माने एक चित्र तैयार किया। यह चित्र एक नेर-महिलाका था जो
अपने बालोंको चमेलीके फूलोंके हारसे गूँथ रही थी। चित्रने प्रदर्शनीकी
शोभाको द्विगुणित कर दिया। उसकी बड़ी प्रशंसा हुई और रविवर्माको इसके
उपलक्ष्यमें प्रदर्शनीकी ओरसे एक सुवर्णपदक भेट दिया गया। इससे उनका
उत्साह बढ़ गया—उन्हें विश्वास हो गया कि मैं भी कुछ कर सकता हूँ।
दूसरी बार उन्होंने एक तामिल-महिलाका चित्र बनाया। यह भी अच्छा बना
और इसके उपलक्ष्यमें भी उन्हें एक पदक मिला। इसके बाद उन्होंने अपना
'शकुन्तला-पत्रलेखन' नामक प्रसिद्ध चित्र बनाया, जो लोगोंको बहुत ही
पसन्द आया और मद्रासके गवर्नरने उसे अपने लिए खरीद लिया। अब
उन्होंने पौराणिक चित्र बनाना शुरू कर दिया जिनके द्वारा हिन्दुओंके पौरा-
णिक दृश्य लोगोंकी आँखोंके सामने सजीवसे होने लगे। इसी समय सर टी.
माधवरावने उनका एक चित्र बड़ौदा-नरेशको दिखलाया। उसे देखकर महा-
राज बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने राज्याभिषेकके अवसर पर रवि-
वर्माको आमंत्रित किया और उनका बड़ा सत्कार किया। इसी तरह उनका
परिचय मैसूरनरेशसे भी हो गया और अन्तमें वे भारतवर्षके अपने समयके
सर्वोत्तम चित्रकार हो गये। भारतको उनके चित्रोंका अभिमान है। इस तरह
एक साधारण बालक बिना किसीकी सहायता लिये अपने आप ही शिक्षा

क्स नामका संगतराश उद्योग और धैर्यको कार्यसिद्धिका मूलमंत्र
ता था । वह स्वयं इस मंत्रकी आराधना करता था और दूसरोंको भी
के अनुसार चलनेकी सम्मति देता था । वह बड़ा दयालु और प्रेमी पुरुष
इस कारण अनेक उत्साही युवक उसके पास सम्मति और सहायता
के लिए आते थे । एक बार एक लड़केने उसके घरका दरवाजा खटख-
। जोरकी खटखटाहट सुनकर बैंक्सकी दासीको क्रोध आगया । उसने
केको खूब धमकाया और वहाँसे चले जानेके लिए कहा । इतनेमें शोर-
सुनकर बैंक्स स्वयं बाहर आगया । उसने देखा कि एक लड़का अपने
लिये खड़ा है और दासी उसपर लाल-ताती हो रही है । पूछा, " लड़के
से क्या काम है ?" उसने उत्तर दिया—" मैं आपके पास इस लिए
या हूं कि आप कृपा करके मेरी सिफारिश कर दें और मुझे शिल्पविद्या-
में चित्रविद्या सीखनेके लिए भरती करा दें ।" बैंक्सने लड़केसे कहा—
उक्त विद्यालयमें भरती होना सहज नहीं है । यह मेरे हाथकी बात भी
है । पर तुम्हारे हाथमें जो चित्र हैं उन्हें तो मुझे दिखलाओ"। चित्रोंको
की तरह देखकर बैंक्सने कहा-" लड़के, अभी उक्त विद्यालयमें भरती
नेके लिए बहुत समय चाहिए । इस समय घर जाओ और अपनी पाठशा-
का अभ्यास जारी रक्खो । मैं समझता हूं तुम इस चित्रको लगभग एक
रीकेमें अधिक अच्छा बना लोगे, उस समय-तैयार हो जानेपर-मुझे यह
खला जाना । लड़का घर चला गया और उस चित्रके तैयार करनेमें परि-
म करने लगा । पहलेकी अपेक्षा दूनी मिहनतसे उसने वह चित्र तैयार
या और महीनेके अन्तमें बैंक्सको जाकर दिखाया । चित्र पहलेकी अपेक्षा
च्छा था; परन्तु बैंक्सने उसे फिर लौटा दिया और कह दिया कि " और
भी परिश्रम करो और भी अभ्यास बढ़ाओ ।" एक सप्ताहके बाद लड़का फिर
क्सके घर गया । इस बार उसका चित्र बहुत अच्छा था । बैंक्सने कहा—
" लड़के, प्रसन्न हो; साहस रख । यदि तू जीता रहा तो संसारमें अपना
नाम कर जायगा ।" बैंक्सकी भविष्यद्वाणी पूरी उतरी । इस लड़केका नाम
मुलरेडी था । यह बड़ा नामी चित्रकार हुआ ।

किन्तु सुनार, संगतराश, नक्काश, इमारतें बनानेकी विद्याका जानने
और लेखक भी था। उसके पिता बाजा बजाना बहुत अच्छा जानते थे
इसी काम पर एक राजाके यहाँ नौकर थे। उनकी प्रबल इच्छा थी कि
लड़का बाँसुरी बजानेमें निपुण हो जाय। परन्तु उनकी नौकरी छूट गई
इस कारण उन्हें अपनी इस इच्छासे हाथ धो देना पड़ा। अब उ
सेलिनीको एक सुनारके यहाँ काम सीखनेके लिए रख दिया। सेलि
शिल्पसे हार्दिक प्रेम था, इस कारण कुछ समय तक परिश्रम करनेसे वह
चतुर सुनार बन गया। इतनेमें वह एक मारपीटके झगड़ेमें फँस गया
छः महीनेके लिए नगरसे निकाल दिया गया। तब इसने दिनों तक
एक और सुनारके यहाँ रहना पड़ा और उसके पास उसने सोनेके तार
इके काम और जवाहरातका जड़ाऊ काम करना भी सीख लिया।

सोना, चाँदी, पीतल आदि पर सबसे बढ़कर काम करता था। मीनेका, मुहरछापों तथा सीपोंमें नक्काशीका काम भी वह करता था। ज्यों ही किसी सुनारके किसी काममें बड़ाई सुनता था, त्यों ही संकल्प कर लेता कि उससे बढ़कर काम करूँगा। इस तरह वह किसी सुनारकी समानता बनानेमें, किसीकी जिल्द करनेमें और किसीकी जवाहरात जड़नेके काममें था। वास्तवमें उसके व्यवसायका ऐसा कोई भी अंग न था जिसमें दूसरोंसे आगे बढ़नेकी इच्छा न रखता हो।

सैलिनीमें जो उमंग और उत्साह था, उसीके कारण वह इतना निपुण कार हो गया। वह बड़ा परिश्रमी था; कुछ न कुछ काम निरन्तर ही करता था। सफर करनेके लिए वह हमेशा तैयार रहता था। वह कभी रेंसमें रहता तो कभी रोमको चला जाता और वहाँसे मैंटुआ, रोम, नेपि-में घूम फिरकर फिर फ्लोरेंसमें लौट आता। वेनिस और पेरिसमें भी वह कभी दिखलाई देता था। वह अपनी यात्रायें प्रायः घोड़ेपर ही करता था, अपने साथ बहुतसा सामान नहीं ले जा सकता था। अतएव वह जहाँ ता था वहीं उसे अपने आवश्यक औजार स्वयं बनाना पड़ते थे। वह स्वयं अपने चित्रोंकी कल्पना करता था और स्वयं ही उन्हें चित्रित करता था। अपने हाथसे ही वह अंकित करता, खोदता, गलाता, और गढ़ता था। उसकी बनाई हुई प्रत्येक चीजमें उसकी प्रतिभाकी छाप लगी हुई है। उसे देखते ही ह मालूम हो जाता है कि उसमें सारी कारीगरी उसीकी है; ऐसा नहीं कि कि मनुष्यने उसका ढाँचा—रूपरेखा बनाई हो और दूसरेने उसी ढाँचेके अनुसार रचना की हो। छोटीसे छोटी चीज—कमरपट्टेका बकसुआ, बटन, इत्र आदि भी—उसके हाथोंमें आकर सुन्दर कारीगरीका नमूना हो जाती थी।

सैलिनी हस्तकौशल और शीघ्रताके लिए बहुत प्रसिद्ध था। एक सुनारके एक फोड़ा हुआ था। उसे चीरनेके लिए एक डाक्टर उसके घर सैलिनी भी वहीं खड़ा था। उसने देखा कि डाक्टरका औजार बेडौल रहा है—उस समयके डाक्टरोंके औजार प्रायः ऐसे ही हुआ करते थे— सैलिनीने कहा, डाक्टर साहब, सिर्फ १५ मिनिटके लिए आप ठहर जाइए। आऊँ तब तक आप नश्तर मत चलाइए। यह कह कर आया और उसी समय उसने सर्वोत्तम फौलादका एक

टुकड़ा लेकर एक नश्तर तयार कर लिया। निदान उसी नश्तरसे डाक्टरने उस लड़कीके फोड़ेको सफलतापूर्वक चीर दिया।

सैलिनीने अनेक उत्तमोत्तम मूर्तियाँ बनाई हैं। उनमेंसे यूनानी इन्द्रदेव (जुपिटर) की चाँदीकी मूर्ति बहुत ही प्रसिद्ध है। पर्सियस देवकी काँसेकी मूर्ति भी उसकी कीर्तिको बढ़ानेवाली है। यह मूर्ति उसने फ्लोरेंसके ड्यूक कास्मोके लिए बनाई थी।

जब उसने पर्सियसकी मूर्तिका पहला नमूना मोमका बनाकर ड्यूक महोदयको दिखलाया तब उन्होंने निश्चय रूपसे कह दिया कि इस नमूनेको *काँसेमें ढाल देना असंभव है—काँसेमें इतनी बारीकी नहीं आ सकती।* यह सुनकर सैलिनीको जोश आ गया। उसने तत्काल ही संकल्प कर लिया कि मैं इसके बनानेका केवल प्रयत्न ही न करूँगा किन्तु इसे बनाकर ही छोड़ूँगा। पहले उसने मिट्टीकी मूर्ति तैयार की और उसे आगकी भट्टीमें देकर पका लिया। इसके बाद उसने उस पर मोम चढ़ाकर उसे ठीक वैसा ही बना लिया जैसी मूर्ति वह बनाना चाहता था। इस मोमके ऊपर उसने एक प्रकारकी मिट्टि चढ़ाई और फिर उस मूर्तिको भट्टीमें रख दिया। इससे मोम पिघल गया और मिट्टीके दोनों पर्तोंके बीचमें काँसा ढलनेकी खाली जगह हो गई। इस प्रकार उसने साँचा तैयार कर लिया, अब मूर्तिका ढालना बाकी रह गया।

र पड़ रहा। कुछ लोग उसकी चारपाईके आसपास बैठे हुए इस दुः
पूर्ण प्रकट कर रहे थे कि इसी समय एक नौकरने उसके कमरेमें अ
सब काम बिगड़ गया, उसका सुधरना कठिन जान पड़ता है।
ही पैलिसीको जोश आ गया। बीमारीकी परवा न करके वह
खड़ा हुआ और भट्टीके पास चल दिया। वहाँ जाकर देखा कि अ
हो जानेसे धातु जम गई है।
क पड़ोसीके यहाँसे उसने सूखी लकड़ियोंका ढेर उठवा मँगाया
हा आगमें झोंकना शुरू कर दिया। आग फिर धधक उठी और
ने लगी; परन्तु आँधी अब भी बड़े वेगसे चल रही थी और मेह भी
था। आगकी लपटसे बचनेके लिए पैलिसीने कुछ मेजें और कुछ
रे मँगवाये जिनकी ओटमें खड़ा होकर वह लगातार लकड़ी झोंकने
। कभी लोहेकी छड़ोंसे तथा कभी लम्बे बाँसोंसे धातुको चलाने
सब धातु गल गई। इसी समय एक भयंकर आवाज हुई और पैलि
नके सामनेसे एक ज्वालामय दीप्ति निकल गई। दुर्भाग्यसे भट्टीका
र गया और धातु बहने लगी। यह देखकर कि धातु उचित वेगसे
ही है पैलिसी दौड़कर अपने रसोई घरमें गया और वहाँ उसे जो
जितने बर्तन मिले-सब तरहकी लगभग २०० रकाबियाँ, था
र देगचियाँ आदि-सब उठा लाया और उनको उसने भट्टीमें डाल दि
तमाम धातु यथेष्ट वेगसे बहने लगी और पर्सियसकी वह सुन्दर मूर्ति
गई। पाठकोंको याद होगा कि पैलिसीने भी इसी तरह अपने घरके अ
को भट्टीमें झोंक दिया था।

जान फॉक्सरमैन नामका एक और प्रसिद्ध शिल्पकार हो गया
पत्थर बिना मिट्टीके साँचे बनाया करता था। फ्लैक्समैन लड़कपनमें
था-उससे चलने फिरते न बनता था और अपने पिताकी दु
बैसाखियोंके सहारे बैठा रहता था। उसे पुस्तकें पढ़नेका तथा चित्र खीं
बड़ा शौक था। एक दिन वह एक पुस्तक पढ़ रहा था कि पादरी
उसकी दूकान पर आया। उसने लड़केसे पुस्तकका नाम आदि पूछने
कहा-"यह पुस्तक तुम्हारे पढ़नेके योग्य नहीं है। मैं तुम्हें एक और
देता हूँ उसे पढ़ा करना।" दूसरे दिन उसने सुप्रसिद्ध कवि होमरक

मिल गये थे-उसके लिए आकारके सर्वोत्तम नमूने थे और उन्हें वह अपनी बुद्धिसे और भी सुन्दर बना लेता था। यूनानकी राजधानी एथेन्सके विषयमें उसी समय एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तकमें उसे यूनानी बर्तनोंके असली नमूनोंके चित्र मिले और उनमेंसे सर्वोत्तम नमूनोंका अनुकरण करके उसने सुन्दर सुन्दर आकारोंके बर्तन बनाये और उनपर तरह तरहके दर्शनीय चित्र बनाये। अब वेजवुडने समझा कि मैं बड़ा भारी कार्य कर रहा हूँ और एक सार्वजनिक शिक्षाका प्रचारक बन गया हूँ। वह अपनी पिछली उम्रमें अपने इस परिश्रमका अभिमानके साथ वर्णन किया करता था कि मुझे इससे सौन्दर्यप्रेमकी शिक्षा मिली, उसपर मेरी रुचि बढ़ी, जनसाधारणमें चित्रकलाका प्रेम बढ़ा, मुझे धन मिला और मेरे शुभेच्छुक वेजवुडके व्यापारकी बढ़वारी हुई।

सन् १७८२ ईस्वीमें अपनी २७ वर्षकी उम्रमें उसने अपने पिताका आश्रय छोड़ दिया और लन्दनमें एक घर और एक कमरा काम करनेके लिए किराये पर लेकर रहने लगा। इसी समय उसने अपनी शादी भी कर ली। उसकी स्त्रीका नाम एन डेनमैन था। वह एक हँसमुख, जोशीली और उदारहृदयकी स्त्री थी। वह समझता था कि उसके साथ विवाह करनेसे मैं और अधिक उत्साहके साथ काम कर सकूँगा। क्योंकि उसके समान उसकी स्त्रीको भी काव्य और शिल्पका शौक था। इसके सिवाय वह अपने पतिकी प्रतिभाकी प्रशंसा बड़ी जोशीली भाषामें किया करती थी।

उस समयका प्रसिद्ध चित्रकार सर जोशुआ रेनाल्ड अविवाहित था। एक दिन फ्लैक्समैनकी उससे रास्तेमें भेट हो गई वह बोला, "फ्लैक्समैन, मैंने सुना है कि तुमने शादी कर ली है। यदि यह सच है तो अब तुम चित्रविद्यामें उन्नति करनेकी आशा छोड़ देना।" यह सुनकर फ्लैक्समैन सीधा घर गया और अपनी पत्नीसे बोला-" एन, मेरी चित्रविद्याकी उन्नति तो बस हो चुकी!" पत्नीने पूछा, "यह कैसे? मुझे साफ शब्दोंमें समझाओ।" तब फ्लैक्समैनने सर जोशुआ रेनाल्डने जो कुछ कहा था वह अपनी स्त्रीको सुना दिया। रेनाल्ड कहा करता था कि यदि विद्यार्थी निपुण होना चाहते हैं तो उन्हें अपनी सारी मानसिक शक्तियोंको, जागनेके समयसे सोनेके समय तक अपने शिल्पपर ही लगा देना चाहिए और कोई मनुष्य तब तक नामी शिल्प-

कार नहीं हो सकता जब तक कि वह रोम और फ्लोरेंस नगरोंमें जाकर "
कल एंजीलो आदिकी बनाई हुई अनमोल वस्तुओंको न देख ले। रेनाल्डके
इन सिद्धान्तोंको सभी जानते थे। इनका जिक्र करके फ्लैक्समैनने कहा "मे
मेरी इच्छा नामी शिल्पकार होनेकी है।" पत्नीने कहा–"आप नामी शिल्प-
कार अवश्य बनेंगे और रोमनगर भी जल्द देखेंगे।" पतिने पूछा, "परन्तु
यह कैसे हो सकता है? मेरी तो आर्थिक अवस्था इतनी अच्छी नहीं है।"
पत्नीने कहा, "काम करो और मितव्ययी बनो। मैं इसमें हर तरह सहा-
यता देनेके लिए तैयार हूँ। मैं यह नहीं चाहती–कोई यह न कहे कि एनी
जान फ्लैक्समैनकी चित्रविद्यामें उन्नति न होने दी।" इसके बाद उन दोनोंने
उचित धन जमा हो जानेपर रोम जानेका पक्का विचार कर लिया और
फ्लैक्समैनने कहा, "मैं रोम जाऊँगा और रेनाल्डको दिखलाऊँगा कि ब्याह
पुरुषकी हानिके लिए नहीं किन्तु लाभके लिए होता है; प्यारी एन, तुम भी
साथ चलना।"

इस प्रेमी जोड़ेने अपने साधारण घरमें पाँच वर्ष धैर्य और आनन्दसे
साथ व्यतीत कर दिये; परन्तु रोम जानेकी बात उनके सामनेसे कभी
एक घड़ी भरके लिए भी दूर न हुई। उनका एक पैसा भी आवश्यक
कार्योंको छोड़कर निरर्थक खर्च न होता था। अपने संकल्पका उन्होंने
किसीसे जिक्र भी न किया। रायल ऐकाडेमीसे भी उन्होंने सहायता न
माँगी; वे अपने धैर्य, परिश्रम और संकल्पपर ही अवलम्बित रहे। इस बीचमें
फ्लैक्समैनने बहुत ही थोड़े चित्र बनाकर बेचे। नवीन कल्पित चित्रोंके लि-
संगमरमर चाहिए; परन्तु उसके पास इतना द्रव्य न था कि जिससे संगमरमर
खरीद सके। इस लिए उसके पास जो कीर्तिस्तंभ बनानेके आर्डर
आते थे, उन्हें ही बनाकर वह अपना निर्वाह करता था। इस समय भी वह
वेजवुडका काम किया करता था; क्योंकि वह मजदूरीका धन हाथोंहाथ दे
देता था। गरज यह कि उसकी योग्यता दिनोंदिन बढ़ती गई और घर सुख
आशा और उमंगसे परिपूर्ण होता गया। उसकी प्रतिष्ठा भी दिनपर दि-
बढ़ती गई। वहाँके लोग उसका यथेष्ट आदर करने लगे और अपने
काम उसीको देने लगे।

गा और अन्य निर्धन शिल्पकारोंके समान, प्राचीन कारीगरीकी नकलें बना-
कर अपनी गुजर करने लगा। वहाँ जितने अँगरेज यात्री आते थे, वे सब
मीको पूछते हुए आते थे और जो कुछ काम बनवाना होता था इसीसे
नवाते थे। उसी समय उसने होमर आदि कवियोंके ग्रन्थोंके आधारपर
नेक सुन्दर सुन्दर चित्र बनाये और उन्हें बहुत ही सस्ते दामोंपर बेचा।
से प्रत्येक चित्रका मूल्य लगभग १२) रु० मिलता था। परन्तु वह केवल
पैसोंके ही लिए ही नहीं, रुपयोंके और अपनी कलाको उन्नत करनेके लिए
र बनाता था। अब उसके चित्रोंपर लोग मुग्ध होने लगे और उसके
ग्रयदाता बढ़ने लगे। इसी समय उसने कई बड़े बड़े आदमियोंकी फर-
इशपर 'कामदेव' 'अरुण' आदिके प्रसिद्ध चित्र बनाये। वह अपने घर
नेकी तैयारी कर रहा था कि इसी समय फ्लॉरेंस और कारारकी कला-
ओंने उसे अपना मेम्बर बना लिया।

उसकी कीर्ति लन्दनमें उससे भी पहले पहुँच गई थी, इस कारण उसे
पहुँचते ही बहुतसा काम मिल गया। उसने लार्ड मैन्सफील्डकी याद-
में उनकी मूर्ति बनाई जो वेस्ट मिनिस्टरमें आज भी बड़ी शानके साथ
है और फ्लैक्समैनकी कीर्तिको प्रसिद्ध कर रही है। उस समयके सदमे
द शिल्पी बैंक्सने इस मूर्तिको देखकर कहा था "यह छोटा मनुष्य तो
सबसे बढ़ गया!"

ब रायल एकाडेमीके सभासदोंने फ्लैक्समैनके आनेका हाल सुना और
ही बनाई हुई मैन्सफील्डकी मूर्ति देखी, तब उन्होंने उसे बड़े आदरके
सभासद बना लिया और वह एक प्रख्यात पुरुष बन गया। वह
या रोगी लड़का–जिसने सौंचे बेचनेवालेकी दूकानमें चित्र बनानेका
किया था–अब कलाकौशल्यका आचार्य समझा जाने लगा और रायल-
मीका शिल्पशिक्षक नियत कर दिया गया! उससे बढ़कर और कोई
पदका अधिकारी न हो सकता था। क्योंकि उसने अनेक प्रकारके
के सामने कमर कसकर केवल अपने ही बलसे उनपर विजय प्राप्त की
ऐसा मनुष्य जैसी अच्छी शिक्षा दे सकता है वैसी दूसरोंसे नहीं दी
सकती।

। हो गया, तब उसे मालूम हुआ कि मैंने अभी बहुत ही कम सीखा
से फिर शुरूसे सीखना चाहिए और परिश्रम उठाना चाहिए। वह उसी
एक फैक्टरीमें बढ़ईका काम करने लगा और कुछ समय तक काम
करते उसमें कुशल हो गया। उसकी इस कामकी ओर रुचि भी बढ़
। इसके बाद वह एक जहाजपर काम करने लगा और साथ ही साथ
र भी करता रहा। व्यापारमें उसे अच्छा लाभ हुआ। जहाजका काम करते
। वह हर मौकेपर उतर पड़ता था और प्राचीन इमारतोंके चित्र बनाता
बादमें उसने इस कामके लिए यूरोपके कई देशोंकी यात्रा की और वह
से चित्रोंका संग्रह करके अपने देशको लौट आया। इस तरह निपुणता
कीर्ति प्राप्त करनेके लिए उसने बड़ा परिश्रम किया और अन्तमें उसे
ो सफलता हुई।

सातवाँ अध्याय।

उत्साह और साहस।

"असमर्थ हैं किस भाँति हम निज धर्मका पालन करें!
निज दीन दुर्विध बान्धवोंका दुःख हम कैसे हरें।"
ऐसे वचन मुखसे कभी भी हम निकालेंगे नहीं,
कर हैं हमारे क्यों भला कर्तव्य पालेंगे नहीं॥ १॥
संसारमें ऐसी न कोई वस्तु दुर्लभ है नहीं,
उद्योग करके भी जिसे हम प्राप्त कर सकते नहीं।
अपना अनुद्यम ही हमारी हीनताका हेतु है,
दुर्भाग्य का, दौर्बल्यका दुख दीनताका हेतु है॥ २ "॥
—गोपालशरण सिंह।

उसने जो काम शुरू किया वह एकाग्रचित्त होकर किया और वह सफल-
रथ हुआ।

श्री रामचन्द्र, युधिष्ठिर, अर्जुन इत्यादि महात्माओंके चरितों पर हम
फूले नहीं समाते। अनेक संकटोंका सामना करके उन्होंने अपने
साह और धीरतासे क्या क्या किया, यह हमसे छिपा नहीं है। यहाँपर

वने कहा कि " मैं जन्मभूमिकी सेवा करना चाहता हूँ।" हुआ भी यही;
उन्होंने अपने जीवनमें देशके कल्याणके लिए बहुत कुछ किया। मौल
साहबने कहा " मैं उच्च राज-सम्मान चाहता हूँ।" अंतमें वे भूपाल रा
दीवान हुए और 'नवाब बहादुर'की पदवीसे सम्मानित हुए। मधुसू
दत्तने कहा " मैं कवि होना चाहता हूँ।" बस यही हुआ। वे अनेक
ताओंके साथ मेघनाद वध नामक अपूर्व काव्यके रचयिता हुए। माधव
पेशवाने मरतेसमय कहा कि " मेरी तीन इच्छायें मनहीमें रह गईं-
तो मैं गिलजई जातिके लोगोंको परास्त करना चाहता था, दूसरे
हैदरअलीको नीचा दिखाना चाहता था और तीसरी बात यह है कि मैं
कर्ज चुकाना चाहता था।" नाना फड़नवीस वहाँ पर मौजूद थे। उन्हों
यह सुन कर प्रतिज्ञा की कि " इन तीनों बातोंको मैं पूरा करूँगा"
उन्होंने तीनों बातें कर डालीं!

" क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः
पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत् ॥"

इच्छाकी स्वतंत्रताके विषयमें धर्मशास्त्रोंका चाहे जो सिद्धान्त हो,
यह हर एक आदमीका अनुभव है कि मनुष्य शुभाशुभ कामोंके
स्वतंत्र है—वह उस तिनकेके समान नहीं है जो जल पर इस लिए डाला
जाता है कि वह उसके प्रवाहकी दिशा बतलावे; किन्तु उसमें तो ऐसी
है जिसके द्वारा वह खूब तैर सकता है और लहरोंमें हाथ-पैर मार कर
स्वतंत्र रास्ता ग्रहण कर सकता है। हमारी इच्छाओंपर कोई
नहीं है। सब लोग अनुभव करते हैं और जानते हैं कि हमको काम
किसी तरहकी मजबूरी नहीं है। यदि हम इसके विरुद्ध समझ बैठें तो
काम करनेकी इच्छापर पानी फिर जाय। जीवनके सभी काम, उसके
रिक नियम, समाजसंगठन, और सार्वजनिक कायदे-कानून सब इस
दार्शिक विधान पर कायम हैं कि इच्छा स्वतंत्र है। अगर यह विधान
रहे तो जिम्मेदारीका नामोनिशान न रहे और शिक्षा, सीख, उपदेश,

र काम करनेमें स्वतंत्र ही नहीं तब किसी निश्चित मार्ग पर कैसे चल सकते हे ? नियम किस कामके होते यदि सब लोगोंका यह विश्वास न होता कि मनुष्य उनका पालन कर सकते हैं और करते हैं ? क्षण क्षण पर हमारा अंतःकरण यही कहता है कि इच्छा स्वतंत्र है। इच्छा ही एक ऐसी चीज है जिस पर हमें पूरा अधिकार है और उसको शुभ या अशुभ मार्ग पर चलाना हमारे ऊपर पूर्णतया निर्भर है। हमारी आदतें अथवा हमारी इच्छायें हमारी स्वामिनी नहीं है किन्तु हम उनके स्वामी हैं। उनके फंदेमें फँसनेके समय भी हमारा अंतःकरण कहता है कि हम उनसे दूर भाग सकते हैं और अगर हम उनके स्वामी बननेकी प्रतिज्ञा करें, तो इस कामके लिए उतने ही दृढ़ संकल्पकी आवश्यकता है जितना हममें मौजूद है।

एक विद्वान्ने एक बार एक नव युवकसे यह कहा था–"इस उम्रपर तुमको हर एक बात निश्चय कर लेनी चाहिए; नहीं तो तुम पीछे पछताओगे कि मैंने अपने पैरोंमें अपने आप कुल्हाड़ी मारी। इच्छा एक ऐसी चीज है जो अत्यन्त सुगमतासे हमारी आदतमें दाखिल हो जाती है। इस लिए दृढ़ इच्छा करना सीखो और उस पर अटल बने रहो। इस रीतिसे अपने अनिश्चित जीवनको निश्चित बनाओ और जिस तरह हवा चलनेसे सूखी पत्तियाँ उड़ती फिरती हैं उस तरह अपने जीवनको डावाँडोल मत होने दो।"

बकस्टनका मत था कि युवक जैसा बनना चाहे बहुत कुछ वैसाही बन सकता है, यदि वह प्रतिज्ञा कर ले, और उस पर आरूढ़ रहे। उसने अपने पुत्रको एक बार यह लिखा था–" तुम अब जीवनकी उस श्रेणी पर आगये हो जहाँसे तुम्हें दायें बायें मुड़ना है। तुमको अब इस बातके सुबूत अवश्य देने चाहिए कि तुम निश्चित नियमोंके अनुसार चलते हो, दृढ़ संकल्प कर सकते हो और तुममें मनोबल है; नहीं तो तुम आलसी बन जाओगे और तुम्हारा स्वभाव और चरित्र डावाँडोल तथा निकम्मे युवकोंका सा हो जायगा और एक बार इतना गिर कर फिर उठना सुगम न होगा। मुझे विश्वास है कि युवक अपने आपको बहुत कुछ अपनी इच्छानुसार बना सकता है। मेरे विषयमें यही बात हुई।...मेरा बहुत सा सुख और मेरे जीवनकी सब उन्नति उस परिवर्तनके फल हैं, जो मैंने तुम्हारी उम्र पर किया था। अगर तुम उत्साही और उद्योगी होनेका दृढ़ संकल्प कर लो तो विश्वास रक्खो कि तुमको जीवन-

पर्यंत इस बातकी खुशी रहेगी कि तुमने ऐसा संकल्प कि पाला। " मेरी इच्छा केवल स्थिरता अथवा दृढ़ताका ना उसके उचित प्रयोग पर निर्भर हैं। यदि दृढ़ इच्छा इन्द्रियोंके ओंमें लगा दी जाय, तो वह राक्षसके समान हानिकारक होगी और उसके साथ दुष्कर्म करने लग जायगी। परन्तु यदि अच्छे काम का इच्छा की जाय, तो वह राजाके समान लाभदायक होगी और बुद्धि उन्नतिमें सहायक होगी।

" जहाँ चाह है वहाँ राह है, " यह एक पुरानी और सिद्ध कह जो मनुष्य किसी कामके करनेका दृढ़ संकल्प कर लेता है, वह अप इसके बलसे ही प्रायः रुकावटोंको दूर कर देता है, और अपने का कर डालता है। हम अमुक कामके योग्य हैं, इस बातका विचार म प्रायः योग्य बनना है। किसी कामको पूरा करनेका पक्का इरादा क बहुधा वह काम पूरा किया जा सकता है। अर्जुनने जयद्रथको वध प्रतिज्ञा कर ली और उन्होंने यह काम कर ही डाला। सुवारो उन जिनको असफलता होती थी, कहा करते थे कि ' तुम केवल आधी कर सकते हो। ' वे यूरोपके प्रसिद्ध नीतिज्ञ रिचिली और महावीर थके समान ' असंभव ' शब्दको कोशमेंसे निकाल देना चाहते थे नहीं कर सकता ' और ' असंभव ' ये ऐसे शब्द हैं जिनसे वे सर्वदा घृणा करते थे। वे चिल्लाकर कहा करते थे,-" सीखो ! काम करो ! करो ! " उनका जीवन इस बातका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि मनुष्य शक्तियोंकी उत्साहपूर्वक उन्नति करके बहुत कुछ कर सकता है। आदमीमें शक्तियाँ गुप्तरूपसे मौजूद रहती हैं। केवल उनकी प्रकाशमें

नेपोलियनकी एक प्यारी कहावत यह थी कि "असलमें बुद्धिमान् वही
जो पक्का इरादा करना जानता है।" उसके जीवनने यह साफ़ साफ़ दिखा
था कि बलवान् और अटल इच्छा क्या क्या कर सकती है। वह अपने शरीर
र मनकी पूरी ताक़त अपने काममें लगा देता था। बलहीन राजाओं और
तियोंको उसने एक एक करके जीत लिया। अब नेपोलियनसे लोगोंने कहा
"ऐल्प्स पर्वत तुम्हारी सेनाके मार्गमें खड़ा है," तब नेपोलियनने उत्तर
या कि "ऐल्प्स पर्वत नहीं रहेगा" और सचमुचही उसने ऐल्प्स जैसे बड़े
तको काटकर सड़क बनवा दी। जिस जगह यह सड़क बनी उस स्थान-
र इससे पहले आदमीकी गुज़र तक न होती थी। वह कहा करता था कि
असंभव" शब्द केवल मूर्खोंके कोषमें मिलता है।" वह जी तोड़ मेहनत
नेवाला था। वह कभी कभी एकदम चार मंत्रियोंसे काम लेता था और
सबको थका देता था। वह किसीकी रिआयत करना तो जानता ही न
, यहाँ तक कि अपनी भी रिआयत न करता था। उसका प्रभाव दूसरे
गोंको उत्साहित करता था और उनमें एक नई जान फूंक देता था। वह
करता था कि "मैंने अपने सेनापति मिट्टीसे बनाये हैं।" परन्तु
का सब किया कराया निष्फल हुआ; क्योंकि उसकी घोर स्वार्थपरतासे
का और उसके देशका नाश हो गया। उसके जीवनसे यह शिक्षा मिली
त्साहको चाहे कितने ही उत्साहके साथ काममें लाया जाय; परन्तु स्वार्थ-
अपने स्वामीको और उन लोगोंको जिन पर उसका प्रयोग किया जाता
ट्टीमें मिला देती है और यदि किसी ज्ञानवान् मनुष्यमें सुजनता न हो
सका ज्ञान साक्षात् पाप है।

अंग्रेज़ सेनापति वैलिंगटन नेपोलियनसे भी बढ़े चढ़े थे। वे प्रतिज्ञा
में, मज़बूत रहनेमें और लगातार कोशिश करनेमें नैपोलियनसे कम न
के आत्मत्याग, कर्तव्यपालन और देशभक्तिमें नेपोलियनसे कहीं बढ़कर
नेपोलियन नामका भूखा था; परन्तु वैलिंगटन कर्तव्य-पालन पर जान
। बड़ीसे बड़ी कठिनाइयाँ भी वैलिंगटनको न तो रोक सकती थीं,
डरा सकती थीं। काम जितना ही कठिन होता जाता था
उत्साह उतना ही बढ़ता जाता था। पैनिनशुलर युद्धमें उन्होंने
बड़ी कठिनाइयों और मुसीबतोंको ऐसी दृढ़ता, धीरज और

वीरताके साथ सहन किया कि यह बात इतिहासमें अत्यन्त महत्व
माने लगी है। इस युद्धमें वैलिंगटनने अपनी प्रतिभा और बुद्धिमत्ता
चय देकर यह बतला दिया कि वे बड़े भारी सेनापति होनेके उप
अच्छे राजनीतिज्ञ भी थे। वे स्वभावतः बड़े चिड़चिड़े मिजाजके
उनको कर्तव्यपालनका इतना ख्याल रहता था कि वे अपने मिजाज
रख सकते थे और दूसरे लोगोंको यही मालूम होता था कि उनमें
शता कूटकूट कर भरी है। मान-बड़ाईकी इच्छा, लोभ, अथवा कि
अवगुणका लेशमात्र भी उनके चरित्रमें न था। वीर वैलिंगटनने अ
राई, वीरता, साहस और धीरजके द्वारा जो लड़ाइयाँ जीतीं
उनका नाम अमर हो गया।

जिस मनुष्यमें उत्साह है वह काम करनेको हमेशा तैयार रहत
जो कुछ करना चाहता है उसे तुरन्त ही निश्चय कर लेता है।
लेडयार्डसे पूछा गया कि "तुम आफ्रिका जानेको कब तैयार
हो?" तब उसने तुरन्त ही उत्तर दिया, "कल प्रातः काल ही
जब जर्विससे पूछा गया कि "तुम जहाजमें सवार होनेके लिए
होगे," तब उन्होंने उत्तर दिया, "अभी।" जब मुगल सम्राट्
बैरामखाँको विदा करके राज्यकी बागडोर स्वयं अपने हाथमें ली,
सूबेदारोंने अकबरके विरुद्ध विद्रोह करनेकी ठानी। जौनपुरमें
मालवामें आदमखाँने और कड़ामें आसफखाँने विद्रोह करके सर
चाहा। परन्तु अकबर अपने वैरियोंको बलवान् होनेका कभी अवस
था। वह तुरन्त ही चल दिया और इससे पहले कि वे लोग अप
सेना इकट्ठी न कर सकें। उसने एक एक पर धावा किया और उन
पाई। अकबरने इतनी जल्दी की कि उनको आशा भी न थी कि
जल्दी आ जायगा। तत्पर निश्चय करनेसे और इसी तरह शीघ्र
करनेसे युद्धमें विजय प्राप्त होती है। नेपोलियनने एक बार क
"आरकोलाका युद्ध मैंने केवल पचीस सवारोंसे जीत लिया। एक
दुश्मन आलस्यमें पड़ा था, तब मैंने उन सैनिकोंको हाथसे न जा
मैंने अपने मुट्ठीभर सवारोंको तुरन्त ही धावा करनेकी आज्ञा दी।
हमारे हाथ रही।" एक और अवसर पर नेपोलियनने कहा था कि

मी व्यर्थ खो देनेसे आपत्तिको आनेका मौका मिल जाता है । मैंने आस्ट्रि-
यनोंको केवल इसी वजहसे हरा दिया कि उन्होंने समयकी कदर न की —
जब वे अपना समय व्यर्थ गँवाने लगे तभी मैंने उनको परास्त कि
पिछली सदीमें अनेक अँगरेज अफसरोंने भारतवर्षमें बड़ा उत्सा
स दिखाया था । सर चार्ल्स नेपियरमें अद्भुत साहस और संकल्
होंने एक बार केवल दो हजार सैनिकोंसे, जिनमें केवल चार सौ
नहीं थे, पैंतीस हजार बलवान् और शस्त्रधारी बलूचियोंका मु
था । यह सचमुच बड़े साहसका काम था, परन्तु नेपियरको अप
र अपने आदमियों पर भरोसा था । बलूचियोंकी सेना कुछ ऊँचे प
पियरने उस सेनाके मध्यभाग पर आक्रमण किया । तीन घंटों त
द होता रहा । नेपियरकी छोटी सेनाके हरएक सैनिकने बड़ी शू
लाई; क्योंकि उन सबमें अपने सेनापतिका सा जोश भरा हु
छूची बीसगुने होने पर भी भगा दिये गये ! युद्धमें ही नहीं कि
र्योंमें इस तरहके साहस, दृढ़ता और आग्रहसे कामयाबी होती
रे अधिक साहस करनेसे बाजी मारी जाती है; थोड़ा ही और आगे
लेवा जीत लिया जाता है; पाँच मिनिट तक और वीरता दिखाने
में विजय होती है । चाहे तुममें शक्ति कम हो, परन्तु तुम अपने
बरी कर सकते हो और उस पर विजय पा सकते हो, यदि तुम
दृढ़चित्त होकर कुछ देर तक और लड़ते चले जाओ । एक किसान
ने अपने पितासे यह शिकायत की कि " मेरी तलवार छोटी है,"
र दिया कि " एक कदम बढ़कर मारो ।" यही बात जीवनके हर
त्यमें कही जा सकती है ।

वीरवर हमीरने चित्तौड़का उद्धार साहस और दृढ़ संकल्पसे ही
को आशा थी कि यह बालक जो केवल नामका राजा था—जिसके
था, न सेना थी और न राज्य था—ऐसे बड़े कामको कर सकेगा
रको अपने उद्योग और साहस पर विश्वास था । साहस बड़ी
साहसने स्पार्टाके सेनापति लिओनीडासको केवल तीन सौ
फारसके बादशाहकी बड़ी भारी सेनासे थर्मापलीके पर्वत पर
इसी साहसने राणा प्रतापको मुट्ठी भर राजपूतोंके बल पर

वीरताके साथ सहन किया कि यह बात इतिहासमें अत्यन्त महत्व
जाने लगी है। इस युद्धमें वैलिंगटनने अपनी प्रतिभा और बुद्धिम
चय देकर यह बतला दिया कि वे बड़े भारी सेनापति होनेके उप
अच्छे राजनीतिज्ञ भी थे। वे स्वभावतः बड़े चिड़चिड़े मिजाजके
उनको कर्तव्यपालनका इतना ख़याल रहता था कि वे अपने मिजाज
रख सकते थे और दूसरे लोगोंको यही मालूम होता था कि उनमें
दता कूटकूट कर भरी है। मान-बड़ाईकी इच्छा, लोभ, अथवा
अवगुणका लेशमात्र भी उनके चरित्रमें न था। वीर वैलिंगटनने अ
राई, वीरता, साहस और धीरजके द्वारा जो लड़ाइयाँ जीतीं उ
उनका नाम अमर हो गया।

जिस मनुष्यमें उत्साह है वह काम करनेको हमेशा तैयार रह
जो कुछ करना चाहता है उसे तुरन्त ही निश्चय कर लेता है।
लेडयार्डसे पूछा गया कि "तुम आफ्रिका जानेको कब तैयार
हो ?" तब उसने तुरन्त ही उत्तर दिया, "कल्प्रातः काल ही
जब जर्विससे पूछा गया कि "तुम जहाजमें सवार होनेके लिए
होगे," तब उन्होंने उत्तर दिया, "अभी।" जब मुगल सम्राट्
बैरामखाँको विदा करके राज्यकी बागडोर स्वयं अपने हाथमें ली
सूबेदारोंने अकबरके विरुद्ध विद्रोह करनेकी ठानी। जौनपुरमें ख
मालवामें आदमखाँने और कड़ामें आसफखाँने विद्रोह करके स्व
चाहा। परन्तु अकबर अपने वैरियोंको बलवान् होनेका कभी अव
था। वह तुरन्त ही चल दिया और इससे पहले कि वे लोग अप
सेना इकट्ठी न कर सकें। उसने एक एक पर धावा किया और उन
पाई। अकबरने इतनी जल्दी की कि उनको आशा भी न थी कि
जल्दी आ जायगा। झटपट निश्चय करनेसे और इसी तरह शीघ्र
करनेसे युद्धमें विजय प्राप्त होती है। नैपोलियनने एक बार क
"आरकोलाका युद्ध मैंने केवल पचीस सवारोंसे जीत लिया। एक
दुश्मन आलस्यमें पड़ा था, तब मैंने उस मौकेको हाथसे न जा
मैंने अपने मुट्ठीभर सवारोंको तुरन्त ही धावा करनेकी आज्ञा दी
हमारे हाथ रही।" एक और अवसर पर नैपोलियनने कहा था

इसके बाद बादशाहने टोडरमलको गुजरात पर चढ़ाई करनेके लिए भेजा। भी टोडरमलको सफलता हुई और उन्होंने विजय पाई। अब टोडरमल र प्रान्त पर चढ़ाई करनेके लिए भेजे गये। इस काममें उन्होंने बड़ा त्साह और साहस दिखलाया और सफलता प्राप्त की। अकबरने उनका बड़ा सम्मान किया और उनको अपना प्रधान दीवान नियत किया। यहीं पर टोडरमलकी ख्यातिकी 'इतिश्री' नहीं हुई। इसके बाद बंगाल और गुजरातमें बलवे हुए। इन बलवोंको भी शान्त करनेके लिए टोडरमल भेजे गये। टोडरमलने इन बलवोंको भी औरोंकी तरह शान्त किया। इन अवसरों पर टोडरमलने ऐसी वीरता और चतुराई दिखलाई कि बादशाह दंग रह गये। अकबर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने टोडरमलका मासिक वेतन आठ हजार रुपया कर दिया।

अब टोडरमलने राज्यभूमिके लगानकी व्यवस्था शुरू की। अब तक इसका कोई संतोषप्रद प्रबंध न था। उन्होने समस्त राज्यकी भूमिको नाप डाला और पैदावारके अनुसार उसके विभाग कर डाले। फिर उन्होंने जमीनके सब भागोंका लगान नियत किया और लगान वसूल करनेवाले कर्मचारियोंकी व्यवस्था की।

राजा बीरबलका जीवनचरित भी इससे कुछ कम विचित्र नहीं है। इन्होंने भी एक निर्धन घरमें जन्म लिया था। उनके पिता एक साधारण ब्राह्मण थे। ऐसी स्थितिसे उन्नति करते करते बीरबल सम्राट् अकबरके नवरत्नोंमें गिने जाने लगे। यह सब एक निर्धन बालकके साहस और उद्योगका फल था। अकबरके दरबारमें बीरबल पहले पहल कैसे पहुँचे इस बातका ठीक ठीक पता नहीं चलता। सुनते हैं कि एक बार सम्राट् अकबर बहुरूपियेका तमाशा देख रहे थे। बहुरूपियेने बैलका स्वाँग ऐसा अच्छा भरा था कि बादशाहने इसके तमाशेसे प्रसन्न होकर उसे अपना दुशाला इनाममें दे दिया। उस समय बालक बीरबल पाठशालाको पढ़ने जा रहा था। रास्तेमें बहुरूपियेका यह तमाशा हो रहा था। वह भी देखनेको ठहर गया। बीरबलने बहुरूपियेकी परीक्षा लेनेके लिए उस पर एक कंकड़ी फेंक दी। इस पर बहुरूपियेने अपनी बनावटी खालको ठीक इस तरह हिलाया जैसे कोई बैल हिलाता है। बीरबल यह देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने झटसे अपनी टोपी

बड़ी भारी सेनाके विरुद्ध हल्दीघाटकी प्रसिद्ध लड़ाईमें लड़ा था दिया। राजा टोडरमलका जीवनचरित उत्साह और साहसका विचित्र उदा है । उन्होंने एक दरिद्र घरमें जन्म लिया था। बचपनमें ही उनके पि देहान्त हो गया। उनकी माताने उनको बहुत थोड़ी शिक्षा दी। जब टो मल कामकाजके योग्य हुए तब वे दिल्लीकी ओर नौकरीकी तलाशमें दिये। कई दिन यात्रा करनेके बाद वे दिल्ली पहुँचे। भूखे प्यासे धर्मशा टिक रहे। दूसरे दिन धंधा ढूँढ़नेके लिए नगरमें फिरने लगे। घूमते फि वे एक बादशाही दफ्तरके पास जा निकले। वहाँ वे नौकर हो गये थोड़ासा हिसाब किताबका काम जानते थे। दफ्तरवालोंने उनकी प भी ली । उस समय दफ्तरमें दो चार आदमियोंकी जरूरत भी थी। रहकर टोडरमलने आश्चर्यजनक उन्नति की। इस तरह टोडरमलने कुछ तक सम्राट् शेरशाहके यहाँ काम किया। शेरशाहकी मृत्युके बाद सूरी कमजोर राजा होने लगे। हुमायूँने आकर दिल्लीके तख्तपर फिर कब्जा लिया। इस घटनाके कुछ महीने बाद हुमायूँकी मृत्यु हो गई और अ अकबर सिंहासनारूढ़ हुए। टोडरमल अकबरके यहाँ नौकर हो गये। समय बाद अकबरने उन्हें अपने एक मुख्य दफ्तरका काम सिपुर्द कि इस काममें टोडरमलने अपनी कार्यदक्षता और योग्यताका खूब परि दिया; सम्राट् अकबर उनके कामसे बहुत प्रसन्न हुए। अब तो टोडरम और भी बड़े बड़े काम मिलने लगे।

इन्हीं गुणोंके कारण वे सब तरहकी मुसीबतें सह लेते हैं और किसी का भय नहीं करते। अगर अपने काममें उनको मौतका भी सामना । पड़े तो वे बड़ी खुशीसे अपनी जान दे देते हैं। ऐसे ही वीर मनुष्योंके ..... ईसाई धर्मका इतना प्रचार हुआ है। फ्रान्सिस जेवियर ऐसे ही वीर पुरुष थे। उनका जन्म एक कुलीन घरानेमें हुआ था। सुख और ठाटबाट उनके पास कमी न थी। लोगोंमें उनकी प्रतिष्ठा भी बहुत थी। परन्तु उन्होंने सारे सुख और धन पर लात मारी और यह दिखला दिया कि संसारमें बहुतसी बातें ऐसी भी हैं जिनके सामने प्रतिष्ठा अथवा धनकी कुछ असलियत नहीं और मनुष्यको ऐसी ही बातोंकी ओर लक्ष्य रखना चाहिए। उनके आचार और विचार दोनोंसे ही भलमनसाहत टपकती थी। वे वीर थे, प्रतिष्ठाके पात्र थे और उदार थे। वे दूसरोंकी बात सहजमें ही मान लेते थे परन्तु वे उनपर अपना प्रभाव भी डाल सकते थे। वे अत्यन्त धीर, दृढ़निश्चयी और उत्साही मनुष्य थे। जब वे पेरिसके विश्वविद्यालयमें दर्शनशास्त्रके अध्यापक थे, तब उनकी उम्र बाईस वर्षकी थी। वहाँ लायोलासे उनकी गहरी मित्रता हो गई और वे अपने मित्रको धर्मोपदेश करनेके काममें सहायता भी देने लगे।

उसी समय पुर्तगालके सम्राट् जान तृतीयने भारतवर्षमें ईसाई धर्मके प्रचार करनेका संकल्प किया। इस कामके लिए बोबाडिला नामक एक महाशय चुने गये। परन्तु वे अचानक बीमार पड़ गये, इस लिए जो काम उनको सौंपा गया था उसके लिए दूसरे आदमीकी तलाश की गई और इस बार जेवियर चुन लिये। जेवियर अपने साथ बहुत थोड़ा सामान लेकर तुरन्त ही लिस्बन नगरको चल दिये और फिर वहाँसे भारतवर्षको रवाना हो गये। जिस जहाजमें वे बैठे थे उसीमें गोआ (बम्बई प्रान्त) के गवर्नर भी थे। उनके साथ एक हजार सैनिक भी गोआकी रक्षा करने जारहे थे। जेवियरके रहनेके लिए जहाजमें एक कोठरी अलग दी गई, परन्तु उन्होंने उतनी जगह घेरना उचित न समझा और वे रास्ते भर जहाजके बाहरी तख्ते पर ही पड़े रहे। वे अपने सिरके नीचे रस्सियोंको रखकर सो जाते थे और मल्लाहोंके साथ भोजन करते थे। वे मल्लाहोंका काम करते थे, उनके मनो-

गुणग्राहताको देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और वीरबलको अप
नौकर रख लिया। यह कथा ठीक हो या न हो, परन्तु यह निश्च
वीरबल छोटी उम्रमें ही बादशाहके यहाँ नौकर हो गये थे। वीरबल
कामसे और विशेष कर अपनी हाजिरजवाबीसे बादशाहको थोड़े ही
रिझा लिया।

वीरबलने युद्ध-कौशल भी सीख लिया। वे कई बार युद्धपर भेजे ग
बादशाहने उनके साहस और वीरताकी भूरि भूरि प्रशंसा की। सन्
ईसवीमें वे युसुफजई पठानोंसे युद्ध करनेके लिए भेजे गये। इसी युद्ध
बल काम आये। बादशाहको उनकी मृत्युसे जो शोक हुआ वह अ
है। वीरबल कविता भी अच्छी करते थे और बादशाहने उनको कवि
पदवी दी थी। बादशाहने उनको एक जागीर भी दी थी। बादशाह
बलको इतना चाहते थे कि वे उनको कभी अपनी आँखोंके सामनेसे
करते थे।

और बातोंमें भी जो युद्धसे अधिक शान्तिपूर्ण और लाभदायक हैं
मनुष्योंने कुछ कम उत्साह और साहस नहीं दिखलाया। जिस
वीर योद्धाओंका स्मरण किया जाता है उसी तरह धर्मोपदेशकों
उपकारकर्ताओंको भी न भूलना चाहिए। हम भारतवर्षमें ही स्वयं
हैं कि ईसाई धर्मोपदेशक कितना स्वार्थत्याग करते हैं। वे जो कुछ क
वह अपना कर्तव्य समझकर करते हैं। वे इस खयालसे काम नहीं कर
ऐसा करनेसे हमको यश मिलेगा। हजारों कोसकी दूरीसे अँगरेज
अपने घरबार और कुटुम्बियोंको छोड़कर हमारे देशमें आती हैं और
बच्चोंको पढ़ना, लिखना, सीना, पिरोना सिखलाती हैं, रोगियोंकी
शुश्रूषा करती हैं और अपने धर्मका प्रचार करती हैं। इस कामके लिए
इस देशकी भाषायें सीखनी पड़ती हैं, यहाँकी सख्तगर्मी झेलनी पड़ती
और अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ता है। क्या यह उत्साह और
सका काम नहीं है? यूरप और अमेरिका जैसे दूरवर्ती देशोंके अनेक मि
यहाँपर आते हैं और हम उनको बाजारमें खड़े होकर ईसाई धर्मका उप
करते हुए देखते हैं। इन उपदेशकोंमें अटल साहस और अनन्त धीरज

... उनके हृदयमें ऐसा दयाभाव था कि जो लोग
को देखते थे उनकी बातें सुनते थे उनमें भी दयाका संचार हो जाता था।
यह सोचकर कि प्रचार का काम बहुत बड़ा है और काम करनेवाले कम
जेवियर यहाँसे मलाका और जापानको चल दिये। वहाँ उनको बिल्कुल
जातियाँ मिलीं जो सर्वथा नई भाषायें बोलती थीं। वहाँ जाकर भी उन्होंने
रोगियोंकी सेवा की और लोगोंको ईसाई बनाया। वे भूख, प्यास, भय और
सहन कर लेते थे, न थकते थे। निदान ग्यारह वर्षके परिश्रमके बाद अब
चीनकी ओर जा रहे थे रास्तेमें ही उनको ज्वरने आ दबाया और उनके
जीवनका अन्त कर दिया।

वैदिक धर्मोपदेशक स्वामी विवेकानन्दके जीवनमें भी कुछ कम उत्साह
और साहसके दर्शन नहीं होते। फ्रान्सिस जेवियरके समान ये भी एक प्रति-
ष्ठित और धनाढ्य घरमें उत्पन्न हुए थे। धर्मसंबंधी प्रश्न उनके मस्तकमें सदैव
उठा करते थे। उनको दर्शनशास्त्रसे बड़ा प्रेम था। बी. ए. पास करनेके बाद
कुछ दिन उनकी भेट स्वामी रामकृष्ण परमहंससे हो गई। उन्हें उक्त स्वामी-
जीकी बातें ऐसी कुछ पसंद आईं कि वे उनके शिष्य हो गये और वेदान्तके
विषयमें उनसे बहुतसी बातें सीखीं। इस बीचमें स्वामी रामकृष्ण परमहंसके
और भी अनेक शिष्य हो गये। सन् १८८६ में स्वामीजीका देहान्त हो गया।
उनके अनेक शिष्योंने संसारके सुखोंको त्याग कर उन्हींके समान जीवन
व्यतीत करनेका संकल्प कर लिया। विवेकानन्दने भी यही संकल्प किया
और कुछ समय बाद वे ध्यान और अध्ययन करनेके लिए हिमालय पर्वत पर
चले गये। वहाँसे वे तिब्बतको चले गये और कुछ समय तक वहीं रहकर
धर्मग्रंथोंका अध्ययन करते रहे। इसके बाद वे भारतको लौटे और यहाँ जगह
जगह घूमकर वैदिक धर्मका प्रचार करने लगे। जिस समय वे मद्रासमें उप-
देश दे रहे थे उस समय अमेरिकाके शिकागो नगरमें एक महान् धर्मसभा
(The Great Parliament of Religions) होनेवाली थी।
मद्रासके कई विद्वानोंने स्वामी विवेकानन्दको उक्त सभामें हिन्दुधर्मका प्रति-
निधि बनाकर भेजनेका निश्चय किया और उनके कहनेपर स्वामीजी अमेरिका
चल दिये।

स्वावलम्बन ।

जब स्वामी विवेकानन्द अमेरिकामें पहुँचे तब उन्हें बड़े बड़े कष्टोंका सामना करना पड़ा । जो रुपया स्वामीजी अपने साथ भारतवर्षसे लाये थे वह सब रास्तेमें ही खर्च हो गया और इसलिए उन्हें अपने निर्वाहके लिए अमेरिकामें भीख तक माँगनी पड़ी । एक वृद्ध महिलाको स्वामीजीकी सूरत देखकर बड़ी हँसी आई और उसने सोचा कि यदि मैं इस विचित्र मनुष्यको अपने मित्रोंको दिखलाऊँ तो बड़ा मनोविनोद होगा । यह सोच कर उस महिलाने अपने कई मित्रोंकी दावत की और उस दावतमें स्वामीजीको भी न्योता दिया । जब दावतके लिए सब लोग इकट्ठे हो गये और स्वामीजीने उनसे वार्तालाप किया तब वे लोग स्वामीजीकी योग्यता पर मुग्ध हो गये—उनके आश्चर्यका ठिकाना न रहा । फिर तो स्वामीजीकी बड़ी कदर हुई । वे लोग स्वामीजीको दर्शनशास्त्रके एक अध्यापकके पास ले गये । उसने जब स्वामीजीसे हिन्दू-दर्शनशास्त्र पर बातें कीं तब उसे स्वामीजीकी योग्यताको देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ी । वह स्वामीजीको धर्म सभाके सभापति डाक्टर बरोजके पास ले गया और उन्होंने बड़ी खुशीके साथ अपनी सभामें स्वामीजीको हिन्दू धर्मके प्रतिनिधिरूपमें उपस्थित होनेका न्योता दिया । जब स्वामीजीने वेदान्त दर्शन पर सभामें अपने व्याख्यान दिये तब तो स्वामीजीकी बड़ी प्रशंसा हुई और दूसरे ही दिन समाचारपत्रोंद्वारा उनकी ख्याति अमेरिकाके एक सिरेसे दूसरे

न् अँगरेज स्वामीजीके शिष्य हो गये और उन्होंने स्वामीजीको वैदिक
के प्रचार करनेमें बड़ी सहायता दी।

सन् १८९६ के अन्तमें स्वामीजी भारतवर्षको लौट आये। यहाँ आकर
मीजीने कई स्थानोंपर आश्रम बनाये और भारतवासियोंको वैदिक धर्मके
गकी आवश्यकता समझाई। इस देशके निर्धन और दुखिया लोगोंके कष्ट
करनेके लिए स्वामीजीने बड़ी बड़ी कोशिशें कीं। परन्तु इतना अधिक
। करनेसे स्वामीजीका स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) बिगड़ने लगा। डाक्टरोंने
नो परदेश जानेकी सलाह दी, इस लिए वे फिर इँग्लैंड गये। वहाँ उनका
स्थ बहुत सुधर गया। इसके बाद वे अमेरिका चले गये। वहाँ पहुँच-
उन्होंने 'शान्तिआश्रम' और 'वेदान्त सोसायटी' नामक दो संस्थायें
पित कीं जो अब तक सैनफ्रेन्सिसको नगरमें मौजूद हैं और खूब काम कर
हैं।

सी समय फ्रान्सकी राजधानी पेरिस नगरमें एक धर्मसभा होनेवाली
स्वामीजीको इस सभाने निमन्त्रण भेजा, अतएव स्वामीजी
गये और वहाँ पर भी उन्होंने हिन्दू दर्शनशास्त्र पर व्याख्यान
। इसी बीचमें स्वामीजीका स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा और वे भारत-
लौट आये। परन्तु उनको अपने स्वास्थ्यका इतना खयाल न था
अपने महान् कार्यका था। उन्होंने काशीमें एक विद्यालय स्थापित
और दीन दुखी लोगोंके लिए एक आश्रम बनवाया। वैदिक धर्मके
करनेके लिए उन्होंने अनेक साधुओंको इकट्ठा किया और उनके रह-
लिए एक मठ बनवा दिया। स्वामीजी अनेक भारतीय युवकोंको दर्शन-
की शिक्षा स्वयं देते थे। इसी समय जापानियोंने स्वामीजीसे जापान
के लिए बहुत कुछ आग्रह किया; परन्तु स्वामीजी उनके साथ न जा
उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो रहा था। परन्तु फिर भी
होंने अपने उद्देशको न छोड़ा और वे भारतवर्षमें-ही तोड़ परिश्रम
रहे। उनका बहुत सा समय अपने शिष्योंको शिक्षा देनेमें चला जाता
इस कठोर परिश्रमका यह परिणाम हुआ कि उनका स्वास्थ्य बिगड़ता
गया और सन् १९०२ ईसवीमें उनका स्वर्गवास हो गया। ऐसे
, स्वार्थत्यागी और उत्साही मनुष्य संसारमें विरले ही होते हैं।

डाक्टर लिविंगस्टनका जीवन भी अत्यन्त मनोरंजक है। उनके मातापित
निर्धन परन्तु ईमानदार थे और अपनी बुद्धि और विवेकके लिए प्रसिद्ध थे
उनके पूर्वजोंमें कोई भी बेईमान न था। 'ईमानदार रहो,' यही एक सम्प
थी जो उन्होंने अपने बच्चोंके लिए छोड़ी थी। जब लिविंगस्टन दस वर्ष
हुए तब वे एक रूईके मिलमें नौकर हो गये। पहले हफ्तेके वेतनमेंसे
उन्होंने एक व्याकरण मोल ले लिया और उसके द्वारा कई वर्षों तक रात
समय एक स्कूलमें लैटिन भाषा सीखी। वे कभी कभी मिलमें काम कर
हुए भी किताब सामने रख लेते थे और पढ़ा करते थे। मिलकी कलोंक
आवाज कान फोड़े डालती थी, परन्तु वे किसी न किसी तरह अपने ध्यान
पढ़नेकी ओर लगाये ही रहते थे। लैटिन भाषा सीख लेनेपर उनका ध्या
धर्म-प्रचारकी ओर आकर्षित हुआ। इस कामके लिए उन्होंने कुछ चिकित्स
भी सीखी और यथाशक्ति रुपया भी बचाया। वे वर्षमें कुछ महीने नौक
करते थे और कुछ महीने कालिजमें पढ़कर विद्योपार्जन करते थे। वे नौकरी
जो कुछ रुपया कमाते वह पढ़ने लिखनेमें खर्च कर डालते थे और उसमें
कुछ बचत भी कर लेते थे। यह सब उन्होंने स्वावलम्बनसे ही किया औ
कभी किसीसे एक पैसेकी भी सहायता न ली। कालिजकी परीक्षा पास कर
नेके बाद वे लंदन मिशनरी सोसायटीकी ओरसे आफ्रिका गये। वे स्व
अपने खर्चसे चीन जाना चाहते थे, परन्तु वहाँपर युद्ध हो रहा था इस लि
न जा सके। आफ्रिकामें जाकर उन्होंने बहुतसे काम स्वतंत्रतापूर्वक अप
खर्चसे भी किये। जिस जहाजमें वे आफ्रिका भेजे गये थे वह कुछ काल बा
निकम्मा हो गया। उन्होंने पुस्तकें लिखकर भी कुछ धन इकट्ठा किया था

[illegible] और न सामाजिक व्यवस्था उत्तम थी। शिक्षाकी हालत बहुत बिगड़ी हुई थी। उस समय फारसीका ही अधिक प्रचार था, क्यों कि फारसी लिखे-पढ़ोंको नौकरी मिलनेमें बहुत सुविधा होती थी। इधर उधर पंडितों और मौलवियोंने अपने घर पर मकतब खोल रक्खे थे। वहीं पर विद्यार्थियोंको पढ़नेके लिए आना पड़ता था। उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके साधन बड़े ही दुर्लभ थे। उन दिनों फारसी और अरबीकी उच्च शिक्षाके लिए पटना बहुत मशहूर था। राममोहनरायने पहले एक मौलवीके यहाँ कुछ फारसी सीखी। फिर उनके पिताने उन्हें फारसी और अरबीकी उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए पटना भेज दिया। उस समय राममोहनरायकी अवस्था १२ वर्षकी थी। उन दिनों आने जानेके साधन आजकलकी तरह उत्तम न थे। रेल अथवा तारका कोई नाम भी न जानता था। मार्गमें डाकू और लुटेरोंका ही नहीं किन्तु जंगली जानवरोंका भी भय लगा रहता था। लुटेरे तरह तरहके वेष धारण करके यात्रियोंमें आ मिलते थे और मौका पाकर उनको लूट लेते थे। इसी तरह नदियोंमें भी तैराक लुटेरे नावोंको लूटा करते थे। यात्राका नाम सुनते ही बड़े बड़े आदमियोंके छक्के छूट जाते थे। लोग अपने घरपर चाहे कितने ही कष्ट उठा रहे हों, परन्तु परदेश जानेका नाम भी न लेते थे। ऐसी अवस्थामें १२ वर्षके राममोहनरायका अकेले पटना जाना बड़े भारी साहसका काम था। पटनामें विद्याध्ययन करते समय उनका ध्यान मुसलमानोंके अद्वैतवादकी ओर गया। इससे उनको मूर्तिपूजा पर भी संदेह होने लगा। पटनामें फारसी और अरबीका अच्छा ज्ञान संपादन करके वे काशीको संस्कृत और वेदशास्त्र पढ़नेके लिए गये। काशीमें रहकर उन्होंने उपनिषद् आदि ग्रन्थोंमें अद्वैतवादकी बड़ी अच्छी बातें पढ़ीं। इनको पढ़कर वे बड़े प्रसन्न हुए। साथ ही साथ मूर्तिपूजा-परसे उनकी श्रद्धा बिलकुल उठ गई। सोलह वर्षकी अवस्थामें उन्होंने मूर्ति-पूजाका खंडन करनेके लिए एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तकने हिन्दु समाजमें बड़ी अशान्ति फैला दी, क्योंकि चिरप्रचलित मूर्तिपूजापर हिन्दुओंका अटल विश्वास था। लोग अपने धर्मके इस अपमानको न सह सके। और राम-मोहनरायकी तीव्र निन्दा करने लगे। इधर तो लोग बिगड़ गये, और उधर राममोहनरायके पिता रामकान्त भी अपने मनमें अत्यन्त दुःखी हुए। राम-

से बड़े बड़े लोग उनकी विद्या, बुद्धि और ज्ञानके कारण उनका आदर
लगे। देहलीके बादशाहने उनको राजाकी उपाधिसे विभूषित किया।
बाद राजा राममोहनराय इंग्लेण्ड और फ्रांस गये। वहाँके राजाओंने भी
अपने घर बुलाकर उनका बड़ा सम्मान किया। अंतमें राजा राममोहन-
के अनेक प्रसिद्ध प्रसिद्ध मनुष्य अनुयायी हो गये।

आठवाँ अध्याय।

कार्यकुशल मनुष्य।

"क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति।"—कालिदास।

"क्या तू उस मनुष्यको देखता है जो अपना काम मेहनतके साथ कर रहा है वह राजाओंके यहाँ सन्मान पावेगा।"—सुलेमानकी कहावतें।

वे मनुष्य बड़ी भूल करते हैं जो कहते हैं कि "व्यापारी लोग निम्न-श्रेणीके हैं और पशुके समान व्यापारकी गाड़ीमें जुते रहते हैं। उनका न यही है कि एक नियत मार्गसे कभी न हटें, अर्थात् लकीरके फकीर रहें और अपने हरएक कामको अपने आप चलने दें।" हाँ, यह सच है जिस तरह अनेक विज्ञानवेत्ता, साहित्यसेवी और नीतिज्ञ संकीर्ण विचारके होते हैं उसी तरह बहुतसे व्यापारी भी होते हैं, परन्तु, ऐसे भी व्यापारी हैं जिनके मस्तक बड़े विचारवान् और विस्तृत हैं और जो बड़े बड़े कामोंके चलानेकी योग्यता रखते हैं।

किसी बड़े व्यापारको सफलतापूर्वक चलानेके लिए मनुष्यमें एक खास तरहकी योग्यता होनी चाहिए। उसको ऐसा कार्यकुशल होना चाहिए कि वह संकटके समयमें भी काम कर सके। उसमें बहुतसे मनुष्योंके कामकी व्यवस्था करनेकी योग्यता होना भी जरूरी है। उसमें ऐसी चतुराई होनी चाहिए कि मनुष्योंकी प्रकृतिको पहिचान सके। उसको अपनी उन्नति भी निरंतर करते रहना चाहिए और जीवनकी व्यवहारिक बातोंका अनुभव करना चाहिए।

---

१ अच्छे कामोंमें लगे हुए परिश्रमसे अवश्य सफलता होती है।

ाप्रबंध किया था और करते हैं । माननीय राय बहादुर रंगनाथ नृसिंह
लकर मध्यप्रदेशके सुप्रसिद्ध वकील और विद्वान् हैं, परन्तु वे व्यापारमें
वीण हैं । ' दि विहार ट्रेडिंग कम्पनी ' जो आजकल मजेसे चलती है
के परिश्रमका फल है । वे तीन चार व्यावसायिक कम्पनियोंके प्रबंधकर्ता
सिद्ध तत्ववेत्ता जान स्टुअर्ट मिल ईस्टइंडिया कम्पनीका हिसाब
के काम पर नौकर थे और इस कामको योग्यतापूर्वक करनेसे उनकी
प्राप्ति हुई थी। मिलके सहयोगी अफसर उनकी प्रशंसा और आदर इस
हीं करते थे कि वे बड़े भारी तत्ववेत्ता थे, किन्तु इसलिए कि वे दफ्तरके
बड़े निपुण थे और उनका काम बड़ा संतोषप्रद होता था । ज्योतिष-
विसाजी रघुनाथ लेलेने शुरूमें एक रोटीवालेके यहाँ और फिर
रेकी सौदागरके यहाँ नौकरी की थी । फिर वे मुन्सिफीमें मुहर्रिर हो
सके बाद उन्होंने ग्वालियर राज्यका हिसाब किताब जाँचनेका काम
इस काममें वे बड़े होशियार थे । एक बार ब्रिटिश गवर्नमेंटने जो
ग्वालियर राज्यको भेजा था उसमें विसाजी महाशयने एक बाईकी
काली थी । फिर वे मालवा प्रान्तके बन्दोबस्तमें चीफ अफसर नियत
त्ववेत्ता मिलके समान उनके साथियोंने भी उनका आदर उनके
वेत्ता होनेसे इतना नहीं किया जितना हिसाब किताबमें दक्ष
रण । वे ज्योतिषशास्त्रके नामी विद्वान् थे । उन्होंने वर्तमान पञ्चां-
शोधन किया और इंदौर राज्यकी ओरसे अपने ढंगका एक नया
काशित करना शुरू किया । महाभारत और रामायणके सम्बन्धमें
कई बातोंकी खोज की और इस बातका पता लगाया कि प्राचीन
ी दूरबीनका उपयोग करते थे ।

तीके सुप्रसिद्ध लेखक मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी व्यापा-
प्रवीण थे। उन्होंने एक महाजनकी दूकान पर केवल आठआना
रह कर बही खाते लिखनेका काम सीखा था । वे कुछ दिनों तक
ग्राड़ी भी करते रहे । उन्होंने व्यापारमें बहुत धन कमाया । एक
े बड़ा घाटा हुआ; परन्तु उन्होंने धैर्यपूर्वक फिर काम शुरू किया
कमीको शीघ्र ही पूरा कर लिया । वे व्यापार भी करते थे और
र और साहित्य-सेवामें भी लगे रहते थे । व्यापारने उनके साहित्य-

संबंधी कामोंमें कुछ भी बाधा न पहुँचाई। उन्होंने 'आरोग्य तत्व' नामक गुजराती पुस्तक लिखी जिससे उनकी बड़ी ख्याति हुई। इ जनसाधारणको और विशेष कर विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ पहुँच समय बाद उन्होंने वेदान्तदर्शन पर एक पुस्तक अँगरेजीमें लि पश्चिमी देशोंमें उनकी अच्छी ख्याति हुई। वहाँके विद्वानोंको पुस्तक बहुत पसंद आई। उन्होंने और भी अनेक ग्रंथ लिखे। वे और लेखक तो थे ही, परन्तु राजनीतिज्ञ भी बहुत अच्छे थे। आप ताके कारण वे जूनागढ़ राज्यमें कौन्सिलरके पद पर ६००) म नियत हुए। वे कई सभाओंके मंत्री और सभासद थे। बम्बई विश्व उन्हें अपना फेलो भी बनाया था। वे साहित्य-सेवाका बहुत सा का रके बीचमें अवकाश मिलने पर किया करते थे।

संस्कृतके सुप्रसिद्ध विद्वान् पण्डित *तारानाथ तर्कवाचस्पति* व्यापारी थे। वे कपड़ा, चाँवल इत्यादिका व्यापार करते थे। उ वर्षतक कठिन अध्ययन करके तर्कवाचस्पतिकी उपाधि प्राप्त की थी। शास्त्रोंके विद्वान् थे। उन्होंने बहुत समय तक कलकत्ताके संस्कृत क व्याकरणके प्रधान अध्यापकके पदको सुशोभित किया था। वे 'वा *अभिधान'* नामक कोष बनाकर अपनी कीर्ति अमर कर गये हैं। कि, इस ग्रंथको लिखनेमें उनको बारह वर्ष लगे थे और अस्सी हजा खर्च करना पड़ा था। ऐसे बड़े कामने भी उनके व्यापारमें कुछ विघ्न न

व्यापारमें प्रायः समझदार आदमीको ही सफलता प्राप्त होती है। पार्जन अथवा वैज्ञानिक अन्वेषणके समान व्यापारमें भी धैर्युक्त और उद्योगकी जरूरत है। प्राचीन यूनानियोंका कथन है कि किसी योग्यता प्राप्त करनेके लिए तीन बातें जरूरी हैं-स्वाभाविक गुण, अ और अभ्यास। व्यापारमें विवेक और धमपूर्वक अभ्यास करना मह गुप्त रहस्य है। हाँ, कभी कभी कुछ मनुष्योंका भाग्यवश वैसे ही दौ आता है; परन्तु यह गुणमें आते हुए धनके समान है जो मनुष्यको

बुद्धिमानीके साथ श्रमपूर्वक उद्योग किया जाय तो उसका उचित फल के बिना नहीं रहता । ऐसा उद्योग मनुष्यको उन्नतिके मार्गपर ले जाता इसके व्यक्तिगत चरित्रको प्रकट करता है और दूसरोंको भी काम करनेमें साहित करता है । चाहे सब लोग समान उन्नति न कर सकें, परन्तु हर-क आदमी अपनी योग्यतानुसार उन्नति अवश्य कर सकता है ।

यह अच्छा नहीं है कि मनुष्यके लिए जीवनमार्ग हदसे जियादा सुगम कर या जाय । श्रम करना और कष्ट उठाना इस बातसे अच्छा है कि हमारे सब म कोई दूसरा कर दिया करे और हमको सोनेके लिए गुदगुदे बिस्तर मिल या करें । सच तो यह है कि मनुष्यको काम करनेमें उत्साहित करनेके लिए, विनके प्रारंभमें जरूरतसे कम सामानका होना इतना आवश्यकीय है कि वह विनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए एक आवश्यक साधन कहा जा सकता है । क बार एक प्रसिद्ध न्यायाधीशसे किसीने पूछा कि "वकालतमें सफलता प्राप्त रनेके लिए सबसे बड़ा साधन क्या है ?" उसने उत्तर दिया कि "कुछ लोग अपनी योग्यतासे सफलता प्राप्त करते हैं, कुछ उत्तम संबंधोंके द्वारा, कुछ दैवयोगसे, परन्तु जियादातर वे लोग सफलता प्राप्त करते हैं जिनके पास शुरूमें एक पैसा भी नहीं होता ।"

मेहनत करनेकी जरूरतको व्यक्तियोंकी उन्नति और जातियोंकी सभ्यताकी मजी जड़ समझना चाहिए । यदि किसी मनुष्यकी जरूरतें बिना हाथ-पैर हिलाये ही पूरी हो जाया करें और उसको किसी बातकी प्रतीक्षा, आकांक्षा अथवा उद्योग करनेकी जरूरत ही न रहे, तो उस मनुष्यके लिए इससे बढ़-कर दूसरा शाप क्या हो सकता है ? यह विचार कि 'जीवनका न तो कोई उद्देश है और न उद्योग करनेकी आवश्यकता है, मनुष्यके लिए सब विचा-रोंसे अधिक कष्टदायक और असह्य होगा । बेकार रहते रहते मनुष्यकी जान तक चली जाती है ।

जिन मनुष्योंको जीवनमें असफलता होती है वे प्रायः भोले भाले बन जाते हैं और तुरन्त ही समझ लेते हैं कि सिवाय उनके हरएक आदमी उनकी विपत्तिका कारण हुआ है । कुछ समय हुआ, एक प्रसिद्ध लेखकने एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें उसने अपनी व्यापारसंबंधी अनेक असफलताओंके,

संबंधी कामोंमें कुछ भी बाधा न पहुँचाई। उन्होंने 'आरोग्य त
नामक गुजराती पुस्तक लिखी जिससे उनकी बड़ी ख्याति हुई।।
जनसाधारणको और विशेष कर विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ पहुँ
समय बाद उन्होंने वेदान्तदर्शन पर एक पुस्तक अँगरेजीमें लि
पश्चिमी देशोंमें उनकी अच्छी ख्याति हुई। वहाँके विद्वानोंको
पुस्तक बहुत पसंद आई। उन्होंने और भी अनेक ग्रंथ लिखे।
और लेखक तो थे ही, परन्तु राजनीतिज्ञ भी बहुत अच्छे थे। अ
ताके कारण वे जूनागढ़ राज्यमें कौन्सिलरके पद पर (१००) ?
नियत हुए। वे कई सभाओंके मंत्री और सभासद थे। बम्बई विश्व
उन्हें अपना फैलो भी बनाया था। वे साहित्य-सेवाका बहुत सा क
रके समयमें अवकाश मिलने पर किया करते थे।

पका मुझे लगान भी नहीं देना पड़ता था, नहीं होता था, और तुम मुझे
जर तीन हजार रुपया सालाना किराया देते रहे हो तिस पर भी उसको
लेनेके योग्य हो गये हो " उसने उत्तर दिया कि " इसका कारण तो
है। आप बेकार बैठे रहे और मैं कमर कसकर काममें लगा रहा। आप
पाई पर पड़े-पड़े चैन किया करते थे और मैं प्रातःकाल उठकर अपने
-काजमें लग जाता था।"

समयके मूल्यको समझकर काम करनेमें विलम्ब न करना चाहिए। इट-
ा एक विद्वान् कहा करता था कि "समय मेरी जायदाद है और यह एक
जायदाद है कि बिना जोतेहुए (परिश्रम किये हुए) तो इसमें कुछ
नहीं होता; परन्तु इसको सुधार लेनेमें परिश्रमी कार्यकर्ताका परिश्रम
निष्फल नहीं जाता। अगर इसे खाली पड़ा रहने दें, तो इसमें अहित-
ास और कांटे पैदा हो जायंगे। " कामकाजमें निरंतर लगे रहनेसे एक
ा तो यह होता है कि मनुष्यका मन पापकी ओर नहीं जाता; क्योंकि
में मनमें तरह तरहके अशुभ विचार उमड़े हुए चले आते हैं। जब
कामकाजमें लगे रहते हैं तब लड़ाई-झगड़े भी कम होते हैं। इसीके
र एक महाशय, जब उनके नौकरोंके पास कुछ काम करनेको न होता
ब उनको यह हुक्म देते थे कि " सब चीजोंको साफ करो। "

र्यकुशल मनुष्य कहा करते हैं कि " समय धन है " परन्तु वास्तवमें
नसे भी बढ़कर है। समयके उचित प्रयोगसे अपना सुधार, अपनी
और चरित्रकी उन्नति होती है। आलस्यसे अथवा बेमतलब बातोंसे
क घंटा रोज बचाया जाय और अपनी उन्नति करनेमें लगाया जाय,
में मनुष्य भी कुछ वर्षोंमें बुद्धिमान् बन जाय, और यदि वही समय
कामोंमें लगाया जाय तो उस मनुष्यका जीवन सार्थक हो जाय और
मय तक वह अनेक शुभकर्म कर डाले। यदि अपनी उन्नति करनेमें
िनट भी हर रोज लगाये जायँ तो एक सालके बाद इसका नतीजा खूब
तरह मालूम होने लगेगा। उत्तम विचार और सावधानीके साथ प्राप्त
का अनुभव कुछ भी जगह नहीं घेरते और हम उनको अपने साथियोंके
र्वत्र ले जा सकते हैं। उनके ले जानेमें न तो कुछ खर्च पड़ता और न कुछ
लूम होता है। समयका उचित उपयोग करनेसे बहुत समय बच रहता

धारण शीघ्रताके साथ कर लेते थे। उनका सिद्धान्त था कि "बहु
कामोंको सबसे जल्दी करनेका यही तरीका है कि एक दफेमें एक काम कि
जाय।" और वे किसी कामको इस उम्मेद पर अधूरा न छोड़ते थे कि
अधिक अवकाश मिलनेपर उसे फिर कर लेंगे। जब उनके पास काम
हो जाता था तब वे अपने भोजन और आराम करनेके समयको भी द
देते थे, परन्तु अपने कामके किसी हिस्सेको बिना किये न छोड़ते थे। इ
टका भी यही सिद्धान्त था कि "एक दफेमें एक ही काम करना चाहि
वे कहा करते थे कि "अगर मुझे कुछ करना होता है, तो जब तक
समाप्त नहीं हो जाता तब तक मैं किसी और बातका ख्याल तक नहीं
अगर मुझे घरका कोई काम करना हो, तो मैं एकाग्रचित्त होकर उसमें
जाता हूँ और उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता।"

यह स्वाभाविक अनुमान होता है कि जो मनुष्य समयके विषयमें असावधान है वह व्यवहारमें भी असावधान होगा और जरूरी बातोंमें उसका विश्वास न करना चाहिए। एक दिन जार्ज वाशिंगटनके मंत्री अपने कामपर देरमें आये और अपनी घड़ीके गलत होनेका बहाना करने लगे। वाशिंगटनने धीरेसे कहा कि "या तो तुम दूसरी घड़ी रक्खो या मैं दूसरा मंत्री रक्खूँगा।" नाना फड़नवीस समयके बड़े पाबंद थे। उनके सब काम नियमानुकूल होते थे; समयका जरा भी अपव्यय न होने पाता था। इससे न मालूम कितना काम उनके हाथोंसे हो जाता था। वे बड़े सबेरे उठते थे और आधीरात तक काम किया करते थे।

जो मनुष्य समयका खयाल नहीं रखता और उसका उचित उपयोग नहीं करता वह दूसरोंकी शान्तिको भी भंग कर देता है। जिन मनुष्योंको उससे काम पड़ता रहता है, उन सबका हर्ज हो जाता है। जिस मनुष्यको समयका खयाल नहीं उसे हरकाममें देर हो जाती है। वह जिस समयका वायदा कर देता है उसके बाद आता है। रेलके स्टेशन पर उस वक्त पहुँचता है जब रेल छूट गई है और लैटर बक्समें पत्र उस वक्त डालता है जब चिट्ठियाँ निकल चुकी हैं। ऐसा करनेसे सब काम गड़बड़ हो जाता है और जिस मनुष्यसे उसका काम पड़ता है उसका मन बिगड़ जाता है। यह बात प्रायः मिलेगी कि जो मनुष्य इस तरह समयमें पिछड़े रहते हैं वे सफलतामें भी पिछड़े रहते हैं; और संसार उनकी कुछ परवा नहीं करता। ऐसे लोग सदा अपने भाग्यकी ही शिकायत किया करते हैं।

हर एक उच्चश्रेणीके कार्यकर्तामें काम करनेके मामूली गुणोंके सिवाय और गुण भी होने चाहिए—उसमें हर बातको जल्दीसे समझनेकी योग्यता होनी चाहिए और उसको अपने इरादोंके पूरा करनेमें दृढ़ होना चाहिए। चतुराईका होना भी जरूरी है। यद्यपि यह गुण स्वाभाविक है, तो भी आलोचना और अनुभवसे इसकी उन्नति की जा सकती है। जिन मनुष्योंमें यह गुण होता है वे हरएक काम करनेका उचित मार्ग शीघ्र ही जान लेते हैं और यदि उनमें निर्णय करनेकी शक्ति भी हो, तो वे शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेते हैं। ये गुण उन लोगोंके लिए विशेष मूल्यवान् बल्कि अनिवार्य हैं जिनको बहुतसे आदमियोंसे काम लेना पड़ता है। उदाहरणके लिए एक सेनापतिको

है। ऐसा करनेसे काम भी चल निकलता है और मनुष्य स्वयं कामके बोझे
दब नहीं जाता। जो मनुष्य समयका खयाल नहीं रखता उसे हर काम
जल्दी करनी पड़ती है, वह घबड़ाया हुआ रहता है, उसको नई नई कठि
इयोंका सामना करना पड़ता है, उसका सारा जीवन जल्दी करनेके वा
सोचनेमें ही व्यतीत होता रहता है और उसे प्रायः मुसीबतें घेरे रहती हैं
नैल्सनने एक बार कहा था कि "मुझे अपने जीवनकी सारी सफलत
नियत समयसे पाव घंटा पहले तैयार रहनेसे प्राप्त हुई हैं।"

कुछ लोग रुपयेकी कदर उस वक्त तक नहीं समझते जबतक कि वे
नहीं हो जाते। बहुतसे लोग समयके विषयमें भी ऐसा ही करते हैं। वे प
तो समयको बेकारीमें निकाल देते हैं और जब जीवनके दिन शीघ्रतासे क
होते जान पड़ते हैं तब उन्हें समयके सदुपयोगका ध्यान आता है। परन
उस समय तक प्रायः आलस्यकी आदत ऐसी पक्की हो जाती है और उन
इस तरह जकड़ लेती है कि उसको दूर करना उनकी ताकतके बाहर
जाता है। याद रक्खो कि खोया हुआ धन परिश्रमसे, खोई हुई विद्या अभ्
यससे, खोया हुआ स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) संयम अथवा औषधसे हाथ
सकता है, परन्तु खोया हुआ समय सदैवके लिए चला जाता है। 'ग
वक्त फिर हाथ आता नहीं।'

ह स्वाभाविक अनुमान होता है कि जो मनुष्य समयके विषयमें असावधान वह व्यवहारमें भी असावधान होगा और जरूरी बातोंमें उसका विश्वास करना चाहिए। एक दिन जार्ज वाशिंगटनके मंत्री अपने कामपर देरमें ये और अपनी घड़ीके गलत होनेका बहाना करने लगे। वाशिंगटनने धीरेसे हा कि "या तो तुम दूसरी घड़ी रक्खो या मैं दूसरा मंत्री रक्खूँगा।" ना फडनवीस समयके बड़े पाबंद थे। उनके सब काम नियमानुकूल ते थे; समयका जरा भी अपव्यय न होने पाता था। इससे न मालूम कितना म उनके हाथोंसे हो जाता था। वे बड़े सबेरे उठते थे और आधीरात तक म किया करते थे।

जो मनुष्य समयका खयाल नहीं रखता और उसका उचित उपयोग नहीं ता वह दूसरोंकी शान्तिको भी भंग कर देता है। जिन मनुष्योंको उससे न पड़ता रहता है उन सबका हर्ज हो जाता है। जिस मनुष्यको समयका ाल नहीं उसे हरकाममें देर हो जाती है। वह जिस समयका वायदा कर है उसके बाद आता है। रेलके स्टेशन पर उस वक्त पहुँचता है जब रेल चल है और लैटर बॅक्समें पत्र उस वक्त डालता है जब चिट्ठियां निकल चुकती ऐसा करनेसे सब काम गड़बड़ हो जाता है और जिस मनुष्यसे उसका पड़ता है उसका मन बिगड़ जाता है। यह बात प्रायः मिलेगी कि जो य इस तरह समयमें पिछड़े रहते हैं वे सफलतामें भी पिछड़े रहते हैं; संसार उनकी कुछ परवा नहीं करता। ऐसे लोग सदा अपने भाग्यकी िकायत किया करते हैं।

र एक उच्चश्रेणीके कार्यकर्तामें काम करनेके मामूली गुणोंके सिवाय और भी होने चाहिए–उसमें हर बातको जल्दीसे समझनेकी योग्यता होनी ए और उसको अपने इरादोंके पूरा करनेमें दृढ़ होना चाहिए। चतुरा- होना भी जरूरी है। यद्यपि यह गुण स्वाभाविक है, तो भी आलोचना अनुभवसे इसकी उन्नति की जा सकती है। जिन मनुष्योंमें यह गुण है वे हरएक काम करनेका उचित मार्ग शीघ्र ही जान लेते हैं और यदि निर्णय करनेकी शक्ति भी हो, तो वे शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेते य गुण उन लोगोंके लिए विशेष मूल्यवान् बल्कि अनिवार्य हैं जिनको से आदमियोंसे काम लेना पड़ता है। उदाहरणके लिए एक सेनापतिको

ले लीजिए। उसको केवल बहादुर ही नहीं किन्तु कार्यकुशल भी चाहिए। उसको चतुर और मनुष्यके स्वभावका पहचाननेवाला होना चा उसमें इस बातकी योग्यता होनी चाहिए कि वह बहुतसे आदमियोंको पर भेजनेका, उनके खाने कपड़ेका और दूसरी ज़रूरी बातोंका प्रबं सके। इन बातोंमें नेपोलियन और वैलिंगटन दोनों ही उच्चश्रेणीके कुशल मनुष्य थे।

नेपोलियन कार्सीका टापूका रहनेवाला एक साधारण सैनिक था। योग्यतासे वह फ्रांसदेशका प्रधान सेनापति हो गया और अंतमें वहीं राजा हो गया। यद्यपि वह छोटी छोटी बातोंसे भी बड़ा प्रेम रखत परन्तु उसकी विचार करनेकी शक्ति बड़ी विलक्षण थी। इसी कारण वह दूरकी बात सोच लेता था और बहुतसे आदमियोंके छोटी छोटी बातोंका भी प्रबंध झटपट कर डालता था। वह मनुष्यके ऐसो कुछ ऐसा पहचानता था कि अपने कामके लिए सबसे बढ़िया चुन लेता था और गुमाश्तों कभी धोखा न खाता था। असली बातोंमें तक हो सकता था वह अपने गुमाश्तों पर बहुत कम विश्वास करता था। बातका समर्थन सन् १८०७ की एक घटनासे खूब अच्छी तरह होता है।

र बातें करता था, थियेटरोंके झगड़ोंको शान्त करता था और विदेशी राजाओंसे पत्रव्यवहार करता था। उसका शरीर सौ स्थानपर रहता था, परन्तु मन सारे संसारमें फिरता था।

एक ही समयमें वह अनेक काम करता था। एक पत्रमें उसने अपने एक ... से पूछा कि "तुमको मेरी भेजी हुई बंदूकें ठीक ठीक मिल गईं या ?" दूसरे पत्रमें उसने अपने एक दूसरे आदमीको बूर्टमबर्गकी फौजोंको ... जूते इत्यादि बाँटनेके लिए लिखा; तीसरे आदमीको उसने फौजके ... दूना नाज भेजनेके लिए मजबूर किया, चौथे आदमीको उसने लिखा ... कि "फौजको कमीजोंकी जरूरत है और वे अभी तक नहीं मिलीं।" ... आदमीसे उसने पूछा कि "मुझे बतलाओ कि तुमने बिसकुट और ... का इन्तजाम कर लिया था नहीं।" छठे आदमीको लिखा कि "सैनिक ... करते हैं कि हमको अभी तलवारें नहीं मिलीं। किसी अफसरको ... लानेके लिए पोसन भेज दो। उनको टोपियोंकी भी जरूरत है। ... मगरसे बनवाकर मँगा लो।...याद रक्खो कि सोनेसे काम ... चलेगा।" इस तरह नैपोलियन किसी छोटी बातको भी न छोड़ता था, ... सब आदमियोंको काममें लगाये रहता था। जब कभी कामकी जिया- ... हो जाती थी तब वह रातके समय बहुत देर तक काम करता रहता था।

वेलिंगटन भी नैपोलियनके समान कार्यकुशल थे और यह कहनेमें कुछ ... न होगी कि इसी कार्यकुशलताके कारण वे किसी युद्धमें कभी न ... । वे भारतवर्षमें भी कई वर्ष तक रहे थे। उस समय मराठाओं और ... में युद्ध हो रहा था। इस युद्धमें वेलिंगटनने असाईकी लड़ाई जीती ... इस देशमें बहुत कुछ ख्याति पाकर वे इंगलेण्ड चले गये और यूरोपमें ... उन्होंने अनेक अवसरोंपर विजय प्राप्त की। उन्हें अपनी ख्यातिका कभी ... न हुआ। युद्धोंमें उन्होंने कष्ट भी बहुत उठाये, परन्तु वे अपने कर्त- ... व्यसे कभी पीछे न हटे। अँगरेजोंके यशको उन्होंने खूब फैलाया।

... महाराष्ट्रकेसरी शिवाजी भी कार्यकुशलता और चतुराईमें बहुत बढ़े चढ़े ... और इसी कारण उनको इतनी सफलता प्राप्त हुई। औरंगजेबका भेजा ... सरदार अफजल खाँ शिवाजीके सामने ठहर न सका, क्योंकि शिवाजी ... चतुरतासे अचानक ही उसके पास पहुँच गये। जब उसने शिवाजीके

कम होते हैं, तो यह मानना पड़ेगा कि यह प्रतिदिनकी ईमानदारी चरित्रके लिए बड़े गौरवकी बात है। व्यापारियोंको एक दूसरेका विश्वास रहता है, क्योंकि वे आपसमें माल उधार देते रहते हैं। लेन-देनमें यह बात कुछ ऐसी साधारण हो गई है कि हमको बिलकु नहीं मालूम होता। एक विद्वान्ने खूब कहा है कि " मनुष्य एक दू जो भक्ति रखते हैं उसका यह सर्वोत्तम उदाहरण है कि सौदागर दूरके मुनीमोंपर—जो शायद उनसे आधी दुनियाकी दूरी पर हैं— विश्वास रखते हैं और बहुधा उन लोगोंको, जिनको उन्होंने शायद देखा, सिर्फ उनकी ईमानदारीके भरोसे पर प्रचुर धन भेज देते हैं

यद्यपि साधारणतया व्यापारमें ईमानदारीका बर्ताव होता है, तं मानी और धोखेबाजीके सैकड़ों काम देखनेमें आते हैं। बहुतसे अच्छी चीजोंमें निकम्मी चीजोंकी मिलावट कर देते हैं, जैसे घीमें दूधमें पानी; ठेकेदार बेगार टाल देते हैं, जैसे जुलाहे खालिस ऊन ऊनी-सूती कपड़े भेज देते हैं, कारीगर फौलादके बजाय ढले। औजार, बिना छिद्रकी सुइयाँ और उस्तरे जो केवल देखनेहीमें इत्यादि अनेक निकम्मी चीजें दे देते हैं। परन्तु ऐसी बातोंको समझना चाहिए, क्योंकि ऐसा वे लोग करते हैं जिनके विचार नी मनुष्य धनी हो सकते हैं; परन्तु सदाचारी नहीं हो सकते औ चित्तको शान्ति ही मिल सकती है जिसके बिना सारी दौलत है। बिशप लेटिमरसे एक दूकानदारने एक चाकूके दो आने ले असलमें एक आनेका भी न था। इस विषयमें उसने अपने एक कि " उस धूर्तने मुझको नहीं किन्तु अपने ही अंतःकरणको धोखा

संभव है कि जो आदमी पक्का ईमानदार है वह उतनी जल्दी हो जितनी जल्दी बेईमान आदमी; परन्तु जो सफलता धोखे या बिना प्राप्त होती है वही सच्ची सफलता है। चाहे मनुष्य कुछ असफल ही रहे, परन्तु उसको ईमानदार रहना चाहिए। चाहे ग रहे परन्तु चरित्रकी रक्षा करनी चाहिए; क्योंकि चरित्र स्वयं धन अच्छे उद्देशवाला मनुष्य धीरताके साथ दृढ़ बना रहे, तो उसक भी अवश्य होगी और उसको इसका सर्वोत्तम फल मिले बिना न

कम होते हैं, तो यह मानना पड़ेगा कि यह प्रतिदिनकी
चरित्रके लिए बड़े गौरवकी बात है। व्यापारियोंको एक दूसरेका ...
विश्वास रहता है, क्योंकि वे आपसमें माल उधार देते रहते हैं। व्यापारके
लेन-देनमें यह बात कुछ ऐसी साधारण हो गई है कि इसको बिलकुल कोई
नहीं मालूम होता। एक विद्वान्ने खूब कहा है कि "मनुष्य एक दूसरेके पर
जो भक्ति रखते हैं उसका यह सर्वोत्तम उदाहरण है कि सौदागर अपने दूर
दूरके मुनीमोंपर—जो शायद उनसे आधी दुनियाकी दूरी पर हैं—ऐसा वि
विश्वास रखते हैं और बहुधा इन लोगोंको, जिनको उन्होंने शायद कभी नहीं
देखा, सिर्फ उनकी ईमानदारीके भरोसे पर प्रचुर धन भेज देते हैं।
यद्यपि साधारणतया व्यापारमें ईमानदारीका बर्ताव होता है, तो भी बे
मानी और धोखेबाजीके सैकड़ों काम देखनेमें आते हैं। बहुतसे व्यापारी

नेके लिए काफी रुपया तो कमाते हैं, परन्तु वे उसमेंसे कुछ बचाते नहीं
सका नतीजा यह होता है कि अगर उनके ऊपर किसी तरहकी मुसीबत
जाती है तो फिर उनका काम एक दिन भी नहीं चलता। समाजके
शराबी और दुःखी होनेका यह एक बहुत बड़ा कारण है। एक बार मज-
ने लार्ड आनरजलसे अपने ऊपर लगे हुए अनुचित टैक्सकी शिकायत की।
ने उत्तर दिया—"विश्वास रक्खो कि सरकार तुमपर उतना टेक्स नहीं
ती जितना तुम स्वयं अपने ऊपर केवल शराबके खर्चसे लगा लेते हो!"
देशके मजदूर अपना रुपया इस तरह नष्ट कर देते हैं उस देशकी दशा
शोचनीय है। ऐसी बातोंके सुधारकी सबसे जियादा जरूरत है। आज-
के देशभक्त पृथक् पृथक् मनुष्यकी मितव्ययिता और दूरदर्शिता पर बहुत
ध्यान देते हैं, लेकिन याद रक्खो कि उद्योग-धंधा करनेवाले मनुष्योंकी
की स्वतंत्रता इन्हीं गुणोंपर निर्भर है। सेमुअल डयूका कथन है कि
दूरदर्शिता, मितव्ययता, और उत्तम प्रबंध ये ऐसी चीजें हैं जो मुसीबतके
काम आती हैं। इन चीजोंसे घरमें कुछ जगह नहीं घिरती, परन्तु इनसे
सी ऐसी खराबियाँ दूर हो जाती हैं जो आज तक किसी सरकारी कानू-
सी पूरी तरह दूर नहीं हुईं।" सुकरातने कहा है कि "जो मनुष्य
की उन्नति करना चाहता है उसे पहले अपनी उन्नति करनी चाहिए।"
यों कहिए कि अगर हरएक आदमी, अपना अपना सुधार कर ले तो सारी
का सुधार आसानीसे हो जाय।

ह समाज जिसके मनुष्य अपनी सारी कमाईको उड़ा देते हैं हमेशा
रहेगा। ऐसे मनुष्य अवश्यमेव बलहीन और निराश्रय रहेंगे, सबसे
हुए रहेंगे और समय उनको जिस तरह चाहेगा नाच नचायेगा। जब
काम सम्मान न रहेगा तब दूसरे भी उनका आदर न करेंगे। व्यापा-
ी संकटोंमें ऐसे मनुष्योंका अवश्य सत्यानाश हो जायगा। रुपयेकी
छोटी बचत भी घरके इन्तजाम करनेकी ताकत देती है। इस ताक-
रहनेसे वे हरएक मनुष्यका सहारा ढूँढेंगे और अगर उनके होश-हवास
होंगे तो वे अपनी स्त्रियों और बालबच्चोंके भविष्यका खयाल करते
गी और काँपते। कायडेनने एक बार मजदूरोंसे कहा था कि "संसा-
लोगोंमें सदा दो वर्ग रहे हैं—एक तो वे लोग जिन्होंने बचत की है और

नी है और यह काम औरोंको गिराकर उनके बराबर कर देनेसे नहीं न्तु उन्हींको धर्म, विवेक और सदाचारकी ऊँची और उन्नत श्रेणी तक उठ से हो सकता है। मानटेनने एक बार कहा था कि "नीतिशास्त्रके नियम सी साधारण मनुष्यके जीवनपर उतने ही लागू हैं जितने किसी महाप्रतापी नुष्यके जीवन पर। प्रत्येक मनुष्यमें मनुष्यत्व या मानवी वृत्ति संपूर्णरूपसे जूद रहती है। उसे अज्ञात अवस्थामेंसे व्यक्त करके बाहर लाना और उके आनन्दका अनुभव करना यह स्वयं उसीके हाथकी बात है।"

विचार करनेपर मालूम होगा कि जिन बातोंके लिए हमको धन इकट्ठा ना पड़ता है वे मुख्य करके तीन हैं—बेकारी, बीमारी और मौत। संभव कि पहली दो बातें कभी न हों; परंतु तीसरी बात अनिवार्य है। बुद्धिमान् हमीका कर्तव्य है कि वह इस तरह रहे और ऐसा प्रबंध करे कि केवल को ही नहीं किन्तु उन लोगोंको भी—जिनका उसे पालन पोषण करना ता है—किसी मुसीबतके आ जानेपर जहाँ तक हो सके कम कष्ट उठाना । इसलिए ईमानदारीके साथ रुपया कमाना और उसको किफायतके साथ करना सबसे जरूरी है। उचित रीतिसे रुपया कमानेके लिए धैर्यपूर्वक श्रम करने, अखंड उद्योग करने और प्रलोभनोंसे मुँह मोड़नेकी जरूरत ऐसा करनेसे हमारी आशायें अवश्य फलवती होती हैं। रुपयेको उचित ने खर्च करनेके लिए विवेक, दूरदर्शिता और स्वार्थनिरोधकी जरूरत ये गुण सदाचारके सच्चे आधार हैं। रुपयेसे बहुतसी ऐसी चीजें खरीदी सकती हैं जो असलमें किसी मतलबकी नहीं होतीं, परन्तु उससे ऐसी भी खरीदी जा सकती हैं जो बड़े कामकी होती हैं। इस रुपयेसे केवल , कपड़ा और आरामका सामान ही नहीं, किन्तु आत्मसम्मान और ता भी मिल सकती है। इस लिए बचाया हुआ रुपया आपत्तिके समय रता है; मनुष्य उस रुपयेके बलपर दृढ़ रह सकता है और आशा ए खुशीके साथ अच्छे दिनोंकी बाट देख सकता है।

न्तु जो मनुष्य हमेशा कंगाल बना रहता है उसकी दशा गुलामोंसे कुछ मिलती जुलती है। उसको अपने ऊपर कुछ अधिकार नहीं रहता—धीन हो जाता है और उसे दूसरोंकी बात माननी पड़ती है। उसे खुशामद करनी पड़ती है। वह लज्जाके मारे किसीसे बराबरीका

ल्मी है कि आदमीको अपनी आमदनीमें निर्वाह करनेका प्रयत्न करना चाहि
न्तु उन्हींतकको ईमानदारीकी जड़ समझना चाहिए। जो मनुष्य ईमानदार
से हो सकदनीमें अपना निर्वाह करनेका प्रयत्न न करेगा, उसको जरूर वे
सी न साथ किसी दूसरेकी आमदनीसे गुजर करनी पड़ेगी। जो मनु
पने खर्चकी परवा नहीं करते और दूसरोंके सुखका खयाल न करके अप
विषयवासनाओंकी पूर्तिमें लगे रहते हैं, वे बहुधा उस समय रुपयेके स
दोगको समझते हैं जब उनका सर्वनाश हो चुकता है। ऐसे खर्चीले आद
दार स्वभावके होकर भी अंतमें निंद्य काम करनेको मजबूर हो जाते हैं।
नने धन और समय दोनोंको नष्ट करते हैं, भविष्य कालपर भरोसा कर
ते हैं और भावी आमदनीकी आशा बाँधते हैं। इस लिए उन्हें अपने पी
का बोझा घसीटना पड़ता है और दूसरोंके अहसान उठाने पड़ते हैं जिसर
के स्वतंत्रतापूर्वक काम करनेमें बड़ी बाधा आती है।

लार्ड बेकनका मत था कि "जब किफायत करनेकी जरूरत पड़े तो छोट
ी रकमोंकी आमदनीकी अपेक्षा छोटी छोटी रकमोंकी बचतका जियाद
ल रखना चाहिए।" जो रुपया बहुतसे आदमी फिजूल खर्च कर देते
बुरे बुरे कामोंमें लगा देते हैं वही रुपया प्रायः जीवनकी स्वतंत्रता और
सिद्धी जड़ हो सकता है। जो लोग इस तरह रुपया लुटा देते हैं वे अपने
े बड़े शत्रु हैं। हम उनको यह कहते हुए देखते हैं कि संसारमें बड़ा
ाय होता है; परन्तु जो मनुष्य आप ही अपना मित्र नहीं है वह कैसे
ा कर सकता है कि दूसरे उसके मित्र होंगे? साधारण स्थितिके नियम-
मनुष्योंके पास दूसरोंकी सहायताके लिए हमेशा कुछ न कुछ बच रहता
रन्तु खर्चीले और लापरवाह आदमियोंको, जो अपनी सब आमदनी खर्च
डालते हैं, दूसरोंकी मदद करनेका मौका कभी नहीं मिलता। किफायतसे
मतलब नहीं है कि तुम फटेहालों रहो। रहनेमें और व्यवहारमें जो लोग
ी विचारोंसे काम लेते हैं वे प्रायः अदूरदर्शी होते हैं और असफल
हैं।

गरेजीमें एक कहावत है कि "खाली थैला सीधा खड़ा नहीं रह सकता;"
तरह कर्जदार आदमी भी ईमानदार नहीं रह सकता। कर्जदार आदमीके
सत्यवादी होना भी कठिन है। इसी लिए कहा करते हैं कि झूठ कर्जकी

तीयों हमारे मुल्की कट्टर दुश्मन हैं; उनमें स्वाधीनताका निश्चय करके ना
जाता है। उसके कारण कुछ अच्छे काम तो हो ही नहीं सकते और कुछ
रनेमें बड़ी कठिनाई होती है। मितव्ययता शान्ति और परोपकार दोनों
है। जो आदमी स्वयं सहायता चाहता है, वह दूसरोंको क्या सहायत
? दूसरोंको देनेके पहले हमारे पास काफी सामान होना चाहिए। "

हरएक मनुष्यका आवश्यक कर्तव्य है कि वह अपने कामकाजकी देखरेख
ते और अपनी आमदनी और खर्चका हिसाब रक्खे। इस तरह साधारण
गणितका थोड़ासा प्रयोग बहुत बहुमूल्य सिद्ध होगा। बुद्धिमानी इसी
में है कि मनुष्य अपने खर्चको अपनी आमदनीके बराबर नहीं किन्तु उससे
रक्खे। परन्तु यह, खर्चका एक ऐसा सच्चा क्रम बनानेसे ही हो सकता
जिसमें खर्च आमदनीके भीतर ही रहे। जान लाक उपर्युक्त उपाय पर
और देता था। वह कहा करता था कि " मनुष्यको अपने रोजमर्राके
का हिसाब बराबर अपनी आँखोंके सामने रखना चाहिए, इससे बढ़कर
ी बात उसके खर्चको आमदनीके भीतर रखनेवाली नहीं है।" जस्टिस
देव गोविन्द रानडे अपने घरका सब हिसाब किताब स्वयं रखते थे।
ने अपने यहाँके खर्चका क्रम बाँध रक्खा था। वे अपनी पत्नीको भोजन
के लिए सौ रुपया दे कर कहते थे कि " इसमें महीने भरका सब खर्च
ना।" उनकी पत्नी उस रुपयेका सब खर्च लिखती पढ़ती थी। रानडे
रातको दिन भरके खर्चकी रोकड़ मिलाकर सोते थे। इसी तरह ड्यूक
वेलिंगटन भी अपनी आमदनी और खर्चका ब्योरेवार ठीक ठीक
ब रखते थे।

जनरल जर्विसने कर्ज न लेनेका ऐसा दृढ़ संकल्प कर लिया था कि एक
उनको छः वर्ष तक पेट भरकर खाना न मिला, परन्तु वे ईमानदार बने
और उन्होंने कर्ज न लिया। ह्यूमने अंगरेजी राजसभामें अपने देशवा-
के संबंधमें जो कुछ कहा था वह भारतवासियोंके विषयमें भी सर्वथा
है। उन्होंने कहा था कि " इस देशके (इंग्लैंड के) लोगोंके खर्च
बढ़ गये हैं। मध्यश्रेणीके मनुष्य बिलकुल अपनी आमदनीके बराबर
करना चाहते हैं। उनका रहन सहन ऐसे ऊँचे दर्जेका हो गया है कि
समाजको बड़ी हानि पहुँचती है। हम अपने बच्चोंको जेन्टिलमैन

...क अपने जीवनमें आगे बढ़ता है तब उसको अपने दोनों और ...भानेवालोंकी एक एक लम्बी कतार मिलती है और उनके लोभमें फँस ...नेसे उसकी न्यूनाधिक अवनति अवश्य होती है। लुभानेवालोंका साथ कर... युवकके स्वाभाविक गुणोंका कुछ हिस्सा गुप्त रीतिसे निकल जाता है। ...से बचनेका यही उपाय है कि वह वीरतासे 'नहीं' कह दे और उनके ...नुसार चले। किसी प्रलोभनमें एक बार फँस जानेसे फिर उस प्रलोभनमें ...प्रतिरोध करनेकी ताकत कमजोर हो जाती है। मगर किसी प्रलोभनका ...ताके साथ सामना करनेसे सदाके लिए एक तरहकी शक्ति आ जाती है ... कई बार ऐसा ही किया जाय तो वैसी ही आदत पड़ जाती है। छोटी ...में जो अच्छी आदतें पड़ जाती हैं उन्हींसे हमारे चरित्रकी रक्षा होती है। ...ू मिलरने एक बार ऐसा दृढ़ संकल्प किया कि वे एक प्रलोभनसे खूब ...च गये। जब ह्यू मिलर मजदूरी करते थे तब उनके मित्र मिलकर कभी ... शराबका जलसा किया करते थे। एक दिन उन्होंने ह्यू मिलरको भी दो ...स शराब पिला दी। जब मिलरने घर पहुँचकर पढ़नेके लिए किताब ...ी अक्षर उनकी आँखोंके सामने नाचने लगे और वे कुछ भी न पढ़ सके। ...रने अपना उस वक्तका हाल यों लिखा है:-" उस समय मुझे अपनी ...बड़ी नीच मालूम हुई। मैं अपने ही कुकर्मसे बुद्धिकी ऊँची श्रेणीपरसे ...पर मैं रहा करता था, नीचे गिर गया। यद्यपि वह दृढ़ इरादा करनेके ...बहुत अच्छी में थी, तो भी मैंने पक्का इरादा कर लिया कि मैं शराबकी ... मानसिक सुखका कभी त्याग न करूँगा और परमात्माकी मद... मैं अपने इरादेमें अटल बना रहा।" ऐसे ही इरादे मनुष्यके जीवनमें ... हैं और उसके चरित्रको आगेके लिए पक्का करते हैं। जिस ...ह्यू मिलर बच गये प्रत्येक नवयुवक और बड़े आदमीको उससे ...बचते रहना चाहिए। शराब पीना बहुत बुरा है। इससे तन्दुरुस्तीको ...भारी नुकसान पहुँचता है और फिजूलखर्ची भी बहुत होती है। ... ... करते थे कि " सबसे बड़ा पाप जो मनुष्यके गौरवको ...कर देता है शराब पीना है।" यही नहीं बल्कि शराब पीना किफायत... ...सफाई, तन्दुरुस्ती और ईमानदारीमें भी बाधा डालता है। किसी ...छोड़नेके लिए यह भी जरूरी है कि हम अपने धार्मिक आदर्शोंको

ऊँचा करें, अपने आचार विचारकी उन्नति करें और अपने नियमोंको सुधारें। ऐसा करनेके लिए हमको अपने स्वभावको पहिचानना चाहिए और अपने कामोंकी जाँच करनी चाहिए। हमको हरएक बातका एक नियम बना लेना चाहिए और फिर यह देखना चाहिए कि हमारे विचार और काम उसके अनुसार होते हैं या नहीं।

धन कमानेके गुप्त रहस्यपर बहुतसी सर्वप्रिय पुस्तकें लिखी गई हैं, परन्तु याद रक्खो कि धन कमानेका कोई गुप्त रहस्य नहीं है। मेहनत ही एक चीज है जिससे धन पैदा होता है। इस बातमें हजारों वर्षका अनुभव कूट कूट कर भरा है और सब देशोंके निवासी इस बातको मानते हैं।

जिस मनुष्यमें काम करनेकी साधारण योग्यता है वह भी मेहनत और किफायतशारीसे पहलेकी अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। यही बात मजदूरोंके विषयमें भी कही जा सकती है। एक पैसा बहुत छोटी ऐसी चीज है, परन्तु हजारों गृहस्थियोंका सुख पैसोंको ठीक तरह पर खर्च करने और जमा करने पर निर्भर है। अगर हम अपने पसीनेसे कमाये हुए पैसोंको खाने पीनेमें या इधर उधर नष्ट कर दें, तो हमारा जीवन पशुओंके जीवनके समान हो जायगा। परन्तु अगर हम इन्हीं पैसोंको अपने बाल-बच्चोंके निर्वाह और शिक्षाके लिए बचाते रहें, तो हमको इसका बदला यह मिलेगा कि हमारी शक्ति और सुख बढ़ जायगा, भविष्यका डर भी कम हो जायगा और यदि हमारे भाव ऊँचे हों, तो हम अपनी ही नहीं किन्तु दूसरोंकी भी सहायता कर सकेंगे। किसी मामूली मजदूरके लिए भी यह बात असंभव नहीं। टामस राइटने जो मैनचेस्टरमें एक साधारण मजदूर था, सैकड़ों अपराधियोंको सुधार दिया। टामस राइटने देखा कि जो अपराधी कैदखानेसे छूट आते हैं उनके लिए यह बड़ा कठिन होता है कि वे ईमानदारीके साथ किसी तरहकी मेहनत करके अपना निर्वाह करें—उनमें ईमानदारीकी आदतें नहीं पड़तीं, किन्तु वे वैसे ही धूर्त बने रहते हैं। इस बातका सुधार करना टामस राइटके जीवनका उद्देश हो गया। यद्यपि वह सवेरे छः बजेसे शामके छः बजेतक कारखानेमें काम करता था, तो भी उसे कुछ वक्तके लिए—रातको, इतवारकी छुट्टीमें—कुछ फुरसत मिल जाती थी और इस फुरसतके वक्तमें वह अपराधियोंकी सेवामें लगा देता था। उस जमानेमें अपराधियोंकी दुर्द-

कोई ध्यान न देता था। किसी अच्छे काममें हररोज कुछ मिनिट खर्च करनेसे ही बहुत कुछ हो सकता है। चाहे इस बात पर कोई यकीन न करे पर यह सच है कि टामस राइटने अपने उद्देश पर कायम रहकर दश वर्षमें कितने धूर्तोंको, जो चोरी, ठगी इत्यादि करके अपना निर्वाह करते थे, सुधार दिया। उसने बहुतसे लड़कोंकी आदतें सुधारकर उनको उनके मातापिताके पास भेज दिया; बहुतसे लड़के लड़कियोंको जो अपने घरोंसे भाग गये थे उनके घरोंपर पहुँचा दिया और बहुतसे अपराधियोंको ऐसा सुधारा कि वे बदमाशी छोड़कर ईमानदारी और मेहनतके साथ कोई धंधा करने लग गये। यह न समझो कि यह काम सहज था। इसके लिए रुपया, समय, उत्साह, ईमानदारी और इन सबके उपरान्त सच्चरित्रताकी जरूरत पड़ी होगी। क्योंकि जिस मनुष्यका चरित्र अच्छा होता है उसका दूसरे विश्वास करने लगते हैं। टामस राइट यह काम भी करता रहा, अपने कुटुम्बका सुखपूर्वक निर्वाह भी करता रहा और बड़ी सावधानी और किफायतके साथ अपने बुढ़ापेके लिए धन भी करता रहा। उसको हफ्तेवार मजदूरी मिलती थी। वह हर हफ्तेमें अपनी आमदानीको बड़ी होशियारीसे कई हिस्सोंमें बांट देता था—इतना कपड़ेके जरूरी सामानके लिए, इतना मकानके किरायेके लिए, इतना बच्चोंकी शिक्षाके लिए और इतना दीन दुखियोंके लिए। वह इन सब मदोंका बराबर खयाल रखता था और कभी गड़बड़ी न होने देता था।

जमीन जोतना, कपड़े बुनना, औजार बनाना, दूकानदारी करना इत्यादि किसी भी धंधेके करनेमें अपमान नहीं है बल्कि इज्जत है। फुलरने कहा था कि "जो ईमानदारीसे जीविका पैदा करते हैं उनको क्यों लज्जित होना चाहिए? लज्जित तो उनको होना चाहिए जो ईमानदारीसे जीविका पैदा नहीं करते।" जिन मनुष्योंने किसी छोटे पेशेसे अपनी उन्नति की है उनको लज्जा न आनी चाहिए, बल्कि उनको तो इस बातका अभिमान होना चाहिए कि हमने कैसी कैसी कठिनाइयोंको झेलकर अपनी उन्नति की है। निसमीज़के गिरजाका बिशप फ्लेशियर अपने युवाकालमें मोम-बत्ती बनानेका पेशा किया करता था। एक बार जब कौंसिलके एक डाक्टरने उसे पहलेके पेशेकी याद दिलाकर उसपर ताना कसा, तब फ्लेशियरने

जवाब दिया कि "अगर मेरे समान तुम भी मोमबत्ती बनानेवाले तुम आज तक उसी पेशेको करते रहते; तुमसे अपनी तरक्की न हो

यह बात प्रायः सर्वत्र ही देखनेमें आती है कि बहुतसे लोग लिए कमाते हैं कि उनके पास दौलत जमा हो जाय—इसमें बड़ कोई दूसरा उद्देश नहीं होता। ऐसा बहुत कम होता है कि कोई मनसे रुपया जमा करनेमें लग जाय और सफल न हो। इसमें बुद्धिका काम है। अपनी आमदनीसे कम खर्च करो, एक एक रु चले जाओ, किसी न किसी तरह बचत करते जाओ, बस कुछ स योंका ढेर लग जायगा। ईरानका धनी आस्टर ओल्ड शुरूमें गर था। वह एक शराबखानेमें रोज शराब पीनेको जाता था और वहाँ बोतलोंके काग उसे मिलते थे उन सबको जेबमें रखकर घर ले आठ वर्षमें उसके पास इतने काग हो गये कि वे सौ रुपयेमें वि रुपयेसे उसके धनकी जड़ जम गई। उसने हुंडियोंकी दलालीमें कमाया और अपने मरनेके बाद वह लगभग बीस लाख रुपया छो

दूसरोंके पालनेके लिए, अपने सुखके लिए और बुढ़ापेमें स्वर्न लिए रुपया जमा करना बहुत अच्छी बात है, परन्तु केवल धनके धन जमा करना ओछे विचारवाले और कंजूस आदमियोंका काम तरहकी बेकायदा बचत करनेकी आदतसे बुद्धिमान् आदमीको बड़ी नीसे बचना चाहिए। नहीं तो इस तरहकी किफायतशारी बुढ़ापे लालचमें बदल जायगी और जो काम पहले कर्तव्य समझकर किया वही एक तरहकी बुरी आदत बन जायगा। खुद रुपयेमें नहीं कि लोभमें सब तरहकी खराबियाँ पैदा होती हैं। रुपयेका लोभ हमारे संकीर्ण कर देता है और उसमें उदारताका प्रवेश नहीं होने देता।

धन इकट्ठा हो जानेसे संसारमें जो सफलता होती है वह सचमुच प्रकाशमान है और सब लोग इस संसारी सफलताको स्वभावतः करते हैं; परन्तु चुस्त चालाक आदमी—जो रुपया पैदा करनेके मौकों ताका करते हैं—संसारमें चाहे सफलता पैदा कर लें और कर ही तथापि यह बिलकुल संभव है कि उनका चरित्र किंचित् भी ऊँच हो और उनमें जरा भी सत्यनिष्ठता न आई हो। जिस आदमीकी

…सके सिवाय और किसी अच्छी बातका खयाल नहीं है वह चाहे अमीर हो
…र, परन्तु यह फिर भी संभव है कि उसका चरित्र दो कौड़ीका ही बना
…हे। धनसे चरित्रकी उन्नति नहीं हो जाती; बल्कि जिस तरह जुगनूकी
…के कारण जुगनू की भद्दी सूरत भी दिखलाई दे जाती है उसी तरह
…की चमकसे उस धनके स्वामीकी चरित्रहीनतापर सबका ध्यान जाता है।
…र लोग कहने लगते हैं कि यह इतना बड़ा आदमी होकर भी इतना
…राचारी है।

बहुतसे लोग धनके लोभपर अपने चरित्रको न्यौछावर कर देते हैं। वे उन
…रोंके समान हैं जिनको आफ्रिकानिवासी बड़ी विचित्र रीतिसे पकड़ते हैं।
…लोग एक तंग मुँहवाले बरतनको किसी पेड़में कसकर बाँध देते हैं और
…समें चावल रख देते हैं। रातको बंदर वहाँ आता है, उस बरतनमें हाथ
…लता है और अपनी मुट्ठी चावलोंसे भर लेता है; परन्तु वह मुट्ठी बड़ी
…होनेके कारण बरतनके तंग मुँहमेंसे बाहर नहीं निकलती। बंदरमें इतनी
…समझ नहीं कि मुट्ठी खोलकर अपना हाथ निकाल ले। बस इसी तरह सवेरे
…तक वह वहीं फँसा रहता है और पकड़ लिया जाता है। इच्छित पदार्थको
…हाथमें रखते हुए भी वह अत्यन्त मूर्ख मालूम होता है। इस संसारके बहु-
…तसे मनुष्योंका भी यही हाल है।

…प्रायः लोग रुपयेमें इतनी शक्ति समझ बैठे हैं जितनी कि उसमें असलमें
…नहीं है। संसारके सबसे बड़े काम धनी मनुष्योंके द्वारा अथवा चंदा इकट्ठा
…करनेसे नहीं हुए, किन्तु उन्हें प्रायः ऐसे मनुष्योंने किये हैं जिनके पास थोड़ा
…पैसा था। आपसे भी ज़ियादा दुनियामें ईसाई धर्मका प्रचार बहुत ही
…गरीब आदमियोंने किया है। बड़े बड़े विचारवान् अनुसंधानकर्ता, आविष्का-
…रक और शिल्पकार मनुष्य, बहुत थोड़े रुपयेवाले थे; बल्कि उनमेंसे तो बहुतसे
…साधुओंके समान कंगाल थे। आगे भी ऐसाही होता रहेगा, अर्थात् धनहीनोंके
…हाथ ही महत्त्वके काम होंगे। बहुत करके धन काम करनेमें उत्तेजना नहीं
…देता किन्तु रुकावट पैदा करता है। वह युवक जिसको अपने बापदादाओंका
…धन मिल जाता है सुखसे जीवन बिताना चाहता है और वह ऐसे ही जीवन
…को पसंद कर लेता है। उसे काम करनेकी ज़रूरत ही नहीं जान पड़ती।
…उसके कोई काम उठेता ही नहीं रहता जिसके लिए वह कोई उद्योग करे

और इस लिए उसे वक्त काटना भी दूभर हो जाता है। उस
आत्माकी उन्नति बिलकुल नहीं होती और वह समाजके लिए
नहीं होता। उसका धंधा यही है कि वह समयको व्यर्थ नष्ट कि

यदि धनाढ्य मनुष्यमें उचित उत्साह पैदा हो जाय, तो व
निकम्मा समझकर दूर कर देगा और अगर वह समझ जाय
जायदादके स्वामीकी जिम्मेदारी कितनी बड़ी है, तो उसे नि
भी जियादा काम करनेका शौक हो जायगा। परन्तु ऐसे लोग
दिखलाई देते हैं। शायद सबसे अच्छे वे मनुष्य हैं जो न तो अ
न गरीब। औसत दरजेके आदमी बड़े सुखी रहते हैं।

यह अच्छा है कि तुममें ऐसी योग्यता हो जाय जिससे दू
आदर करने लगें। लेकिन अगर तुम केवल चिकने चुपड़े बनकर—
कपड़े पहन कर—अपना आदर चाहो, तो यह बहुत बुरा है।
अमीर आदमीसे भला मानस गरीब आदमी कहीं जियादा अच्छा
रके योग्य है। सीधा सादा गरीब आदमी उस बदमाशसे अच्छा
बनठनके रहता हो और गाड़ी घोड़ा रखता हो। हमको इस बा
न करनी चाहिए कि संसार हमारा कितना आदर करता है। हम
बहुत अच्छा है कि हम अपने जानकी बढ़ावें और अपने जिवा
जीवनके उद्देशको लाभदायक बनावें। हमारी समझमें जीवनका
उद्देश यह है कि हम सदाचारी बनें और अपने शरीरकी, अंतःकरण
बकी और आत्माकी यथाशक्ति उन्नति करें। यह तो हमारा
चाहिए और बाकी सब बातोंको इसके प्राप्त करनेका केवल साधन
चाहिए। इसलिए सबसे अधिक सफल जीवन यह नहीं है जिस
सबसे जियादा सुख, धन, अधिकार, अथवा ख्याति मिले; कि
जिसमें हम सबसे जियादा मनुष्यत्व प्राप्त कर सकें, सबसे अधिक
कर सकें और अपने कर्तव्यका पालन कर सकें। यह ठीक है कि
तरहकी शक्ति है, परन्तु बुद्धिमत्ता, परोपकार करनेका भाव और
भी शक्तियाँ हैं और धनकी शक्तिसे कहीं जियादा श्रेष्ठ हैं।

धनाढ्य हो जानेसे कुछ मनुष्य निःसंदेह समाजमें मंगल कर
, ... में आदर पानेके लिए उनमें मानसिक योग्यता और

जीवनकी व्यावहारिक सफलताके लिए जितनी हम समझे हुए हैं उस
जियादा तन्दुरुस्तीकी जरूरत है। भारतवर्षमें एक अँगरेज़ने अपने एक मित्र
इंग्लेण्ड पत्र भेजा और उसमें लिखा कि " मैं भारतवर्षमें सुखसे "
क्योंकि मेरी पाचनशक्ति अच्छी है।" किसी व्यवसायमें निरंतर काम क
नेकी शक्ति बहुत कुछ इसी पर निर्भर है। इसलिए तन्दुरुस्तीका खयाल र
बहुत जरूरी है। मानसिक श्रममें भी इसकी जरूरत पड़ती है। विद्यार्थि
जो असंतोष, असौख्य, अनुद्योग और चिन्ता देख पड़ती है और वे जो उ
नसे घृणा करने लगते हैं, सो सब कसरत न करनेका फल है।

सर आइज़क न्यूटनका जीवन इस बातका उदाहरण है कि उन्
शुरूसे ही औज़ारोंसे काम लेकर कैसा लाभ उठाया था। वे पढ़नेमें तो सु
थे, परन्तु आरी, हतौड़ा और कुल्हाड़ी चलानेमें बड़ी मेहनत करते थे।
अपने रहनेके कमरेमें भी खटपट किया करते थे, और हवासे चलनेवा
चाकियों, गाड़ियों और तरह तरहकी कलोंके नमूने बनानेमें सदा ही ल
रहते थे। जब वे बड़े हुए तब उनको अपने मित्रोंके लिए छोटी छोटी मे
और आलमारियाँ बनानेमें बड़ा आनंद आता था। स्मीटन, वाट औ
स्टीफिन्सन भी बचपनमें औज़ारोंसे इसी तरह काम किया करते थे। य
वे लड़कपनमें ही इतनी आत्मोन्नति न कर लेते, तो बड़े होनेपर शायद
इतना काम कर सकते, जितना कि उन्होंने कर दिखाया। जिन आविष्कार
और यंत्रकारोंका वर्णन हम पहले कर आये हैं उनकी प्रारंभिक शिक्षा भ
ऐसी ही हुई थी। लड़कपनमें उन्होंने अपने हाथोंसे खूब काम लिया था
इससे उन्होंने अपनी उपाय सोचनेकी शक्तिको और बुद्धिमानीको काम
लाना सीख लिया था। जिन मजदूरोंने हाथ-पैरकी मेहनत करते करते इत
उन्नति कर ली है कि अब उन्हें केवल मानसिक परिश्रम ही करना पड़ता है
उन्होंने भी मानसिक परिश्रम करनेमें अपनी प्रारम्भिक शिक्षासे बड़ा ला
उठाया है। एक ऐसे ही मनुष्यका कथन है कि " मुझे सफलतापूर्वक अभ्यास
करनेके लिए सख्त मेहनत जरूरी मालूम हुई, इसलिए मैंने कई बार सु
पढ़ाना छोड़कर, अपनी तन्दुरुस्ती सुधारनेके लिए और मस्तककी शक्ति ब
नेके लिए अपनी पुरानी भट्टीपर लुहारका काम किया।"

(ल)डकोंको, यदि औजारोंसे काम करना सिखलाया जाय तो उनको साधा-रणतः औजारोंकी जानकारी हो जानेके सिवाय और भी कई फायदे होंगे। वे हाथोंसे काम लेना सीखेंगे, उनको स्वास्थ्यदायक काम करनेसे प्रेम होगा, स्थूल पदार्थोंपर अपनी शक्ति आजमानेकी आदत पड़ जायगी, यंत्र-कला-कुछ व्यावहारिक ज्ञान हो जायगा, उनमें उपकार करनेकी योग्यता आ जायगी और उनके निरंतर शारीरिक श्रम करनेका अभ्यास हो जायगा। धनी मनुष्योंसे मजदूर लोग इस बातमें अच्छे हैं कि उनको बचपनसे ही कोई न कोई काम ऐसा करना पड़ता है जिसमें औजारोंका प्रयोग आवश्यक है। इस तरह वे हस्तकौशल सीखते हैं और उनको अपनी शारीरिक शक्तियोंसे काम लेना आ जाता है। मजदूरोंके काममें जो खास नुक्स है वह यह नहीं है कि वे शारीरिक श्रम करते हैं किन्तु यह है, कि वे केवल इसी काममें लगे रहते हैं और बहुधा अपनी आत्मिक तथा मानसिक शक्तियोंकी अवहेलना करते हैं। एक ओर तो धनाढ्य मनुष्योंका यह हाल है कि वे मेहनतको नीच समझकर उससे घृणा करते हैं और उस लिए वे शारीरिक काम-काज करना नहीं सीख पाते, और दूसरी ओर गरीब आदमियोंको अपने उद्योग-धंधेसे अवकाश नहीं मिलता, अतएव वे बहुत करके बिलकुल अशिक्षित रह जाते हैं। आवश्यकता है कि शारीरिक श्रम और मानसिक शिक्षाको मिलाकर ये दोनों त्रुटियाँ दूर कर दी जायँ। बहुतसे देशोंमें इस तरहकी शिक्षाका प्रचार होने लगा है।

जो मनुष्य बड़े बड़े पेशोंमें लगे हुए हैं उनको भी सफलता पानेके लिए शारीरिक शक्तिकी जरूरत कुछ कम नहीं है। एक प्रसिद्ध लेखकने यहाँ तक कहा है कि "बड़े आदमियोंके गौरवका संबंध शरीरके साथ उतना ही है जितना बुद्धिके साथ। किसी सफल वकील या राजनीतिज्ञके लिए स्वास्थ्यदायक अन्तड़ियोंकी उतनी ही जरूरत है जितनी तीव्र बुद्धिकी।" मस्तकके व्यापा-रका आधार जिस शक्ति पर है उसको पूरे तौरपर कायम रखनेके लिये यह जरूरी है कि खून फेफड़ोंमें होकर साँसके द्वारा साफ होता रहे। वकीलको भीड़से भरी हुई अदालतोंमें गरमी सहन करनेसे ही सफलता प्राप्त होती है। राजनीतिज्ञको भी राज-सभामें बहुतसे आदमियोंके बीचमें देर तक विवाद करनेमें जो थकावट होती है उसको सहन करना पड़ता है। इस लिए वकीलों

सकती। अगर तुम्हारी शक्तियाँ उच्च श्रेणीकी हैं, तो परिश्रमसे उनकी उन्नति होगी और अगर तुम्हारी शक्तियाँ औसत दरजेकी हैं तो परिश्रमसे उनकी कमी पूरी होगी।" परिश्रमके सदुपयोगसे सब कुछ मिल सकता है, परन्तु उसके बिना कुछ नहीं मिल सकता। अध्ययनकी शक्तिपर सर फोवैल बक्सटनका भी ऐसा ही विश्वास था। वे नम्रतापूर्वक कहा करते थे कि "मैं औरोंके बराबर काम कर सकता हूं अगर मैं उनसे दूना परिश्रम करूँ और दूना समय खर्च करूँ"। उनका विश्वास था कि चाहे साधन साधारण हों, परन्तु उद्योग असाधारण होना चाहिए और यदि यह हुआ तो दस बेड़ा पार समझिए।

जिन लोगोंको हम प्रतिभाशाली कहते हैं वे सब कठिन परिश्रम करनेवाले और दृढ़ निश्चयी होते हैं। मनुष्यके कामोंसे ही उसकी प्रतिभाका पता लगता है। प्रशंसनीय कामोंके लिए परिश्रम और समयकी जरूरत है—केवल इरादा करनेसे या चाहनेसे कुछ नहीं हो सकता। किसी बड़े कामके करनेके लिए पहलेसे बहुत बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। मेहनत करते करते आसानी भी आ जाती है। कोई काम ऐसा नहीं है जो इस वक्त आसान मालूम होता हो लेकिन पहले मुश्किल न रहा हो, यहाँ तक कि चलनेके विषयमें भी यही बात कही जा सकती है। किसी सुवक्ताको देखिए। उसकी चमकती हुई आँखें सुननेवालोंपर तुरन्त ही अपना प्रभाव डालती है। उसके होठोंसे उत्तम विचारोंकी नदी बहती है। वे विचार आशातीत होनेके कारण लोगोंको चकित कर देते हैं और इनमें कुछ ऐसी बुद्धिमत्ता और सचाई होती है कि सुननेवालोंके भी विचार ऊँचे हो जाते हैं। इतनी योग्यता धैर्यपूर्वक बार बार दुहरानेसे और अनेक बार निराश होनेसे ही आती है।

अध्ययनमें दो बातोंका खास तौरपर खयाल रखना चाहिए—एक तो जो कुछ सीखा जाय वह शुद्ध हो और दूसरे उसको पूरे तौरपर सीखा जाय—कोई विषय अधूरा न छोड़ा जाय। फ्रांसिस हार्नरने जब अपने मस्तकके सुधारनेके लिए नियम लिखे थे तब इस बातपर बड़ा जोर दिया था कि किसी विषयपर पूरा अधिकार पानेके लिए अखंड उद्योग करनेका अभ्यास डालना चाहिए। इसी लिए वे थोड़ी किताबें पढ़ते थे और नियमपूर्वक पढ़नेपर बड़ा ध्यान रखते थे। ज्ञानका मूल्य उसकी मात्रा पर नहीं किन्तु उसके सदुपयोग

पूरा अधिकार जमा लें, तो उससे जब चाहें तभी आसानीसे काम ले सकते हैं। इस लिए सिर्फ़ यह काफ़ी नहीं है कि हमारे पास पुस्तकें रक्खी हों या हम यह जानते हों कि अमुक अमुक बातें अमुक अमुक पुस्तकोंमें मिलेंगी। जीवनके व्यवहारके लिए हमारी बुद्धिमें ही ऐसी कार्यकुशलता होनी चाहिए कि हम उससे जब चाहें काम ले सकें। यह काफ़ी नहीं है कि हमारे घरपर तो रुपयोंका ढेर लगा हो और जेबमें एक पैसा भी न हो। हमको चलते फिरते हरवक्त अपने पास ज्ञानरूपी सिक्का रखना चाहिए, नहीं तो मौका पड़ने पर हमको दुखी होना पड़ेगा।

व्यापारकी तरह आत्मोद्धारमें या अपनी उन्नति करनेमें भी निर्णयशक्ति दृढनिश्चय और तत्परताकी ज़रूरत है। इन गुणोंकी वृद्धि तभी हो सकती है जब नवयुवकोंमें स्वावलम्बनशील होनेकी आदत डाल दी जाय और उनको शुरू शुरूमें जहाँ तक हो सके स्वयं काम करनेमें स्वतंत्र कर दिया जाय। बहुत ज़ियादा उपदेश करनेसे तथा रोकटोक करनेसे स्वावलम्बनकी आदतें नहीं पड़ने पातीं। अपने ऊपर विश्वास न होनेसे हमारी उन्नतिमें बहुत बाधा आ जाती है। अपने चलेगाते हुए घोड़ेको रोक लेना ही जीवनकी आधी असफलताओंका कारण है। डाक्टर जानसन कहा करते थे कि "मेरी सफलताका यही कारण है कि मुझे अपनी शक्तियोंपर भरोसा है।" जिस मनुष्यको अपनी शक्तियोंपर भरोसा नहीं होता उसमें कार्यकुशलता भी नहीं होती और इससे उसकी उन्नतिमें बहुत बाधा पहुँचती है। जो मनुष्य बहुत कम काम कर पाते हैं समझो कि वे कोशिश भी बहुत कम करते हैं।

बहुतसे मनुष्य अपना सुधार करनेकी इच्छा तो करते हैं परन्तु मेहनतसे जो उसके लिए बहुत ज़रूरी है—जी चुराते हैं। डाक्टर जानसन कहा करते थे कि "आज कलके लोगोंमें यह एक तरहका मानसिक रोग है कि वे अभ्यास करते करते उकता जाते हैं।" यह बात इस ज़मानेमें भी पाई जाती है। आजकल बहुत लोगोंको पढ़नेकी इच्छा रहती है; परन्तु वे मेहनतसे जी चुराते हैं और ऐसी तरकीबें ढूँढ़ा करते हैं जिनसे मेहनत कम करनी पड़े। वे चाहते हैं कि हमको विज्ञान सीखनेका कोई सरल 'गुर' बतला दिया जाय अथवा दो एक पुस्तकें पढ़-पढ़ाकर ही हम संस्कृत सीख जावें। वे उन अँग्रेज़ोंके समान हैं जिनने एक अध्यापक अपने पढ़ानेके लिए इस शर्तपर

रक्खा था कि वह उसको क्रिया और कृदन्त याद करनेका कष्ट न दे। आजकल भारतवर्षमें ऐसी पुस्तकें बहुत प्रकाशित हो रही हैं जिनका मन्तव्य 'बिना उस्तादके अँगरेजी सिखाना' है और हम देखते हैं कि युवक बड़े चावसे उनको मोल लेकर पढ़ते हैं। दो एक पुस्तकें देख-भालकर ही हम विज्ञानमें 'टूँ टाँ' करने लगते हैं। थोड़ेसे व्याख्यान सुनकर और कुछ प्रयोग (Experiments) देखकर हम रसायन सीख लेते हैं और जब हम हँसानेवाली गैस (लाफिंग गैस) सूँघ लेते हैं, हरे रंगके पानीको लाल रंगका होता हुआ देख लेते हैं और फासफरस (Phosphorus) को आक्सजन (Oxygen) में जलता हुआ देख लेते हैं तब समझ लेते हैं कि रसायनशास्त्री हो गये। ऐसा ज्ञान चाहे सर्वथा मूर्ख रहनेसे अच्छा हो, परन्तु वह किसी काममें नहीं आसकता। इस तरह हम बहुधा समझ लेते हैं कि हम शिक्षा पाते हैं, परन्तु असलमें हम तमाशा देखकर केवल खुश हो लेते हैं।

नवयुवक अध्ययन और परिश्रमके बिना ही ज्ञान प्राप्त करनेका सुगम मार्ग ढूँढ़ते हैं। यह शिक्षा नहीं है। ऐसा करनेसे मस्तकके लिए कुछ काम तो निकल आता है, परन्तु वास्तवमें इससे कुछ काम नहीं निकलता। इससे कुछ देरके लिए जोश पैदा हो जाता है और मस्तकमें एक तरहकी तेजी आ जाती है; परन्तु चूँकि हमारा कोई निश्चित उद्देश नहीं रहता और सिवा चित्त प्रसन्न करनेके और कोई बड़ा मतलब भी नहीं होता, इस लिए हमें कोई वास्तविक लाभ नहीं होता। ऐसे ज्ञानका केवल चलताऊ प्रभाव पड़ता है—सिर्फ एक तरहका जोश मालूम होता है, इससे जियादा नहीं। इस तरह बहुतसे मनुष्योंके सर्वोत्तम मानसिक गुण गहरी नींदमें सोया करते हैं क्योंकि खूब उद्योग करनेसे और स्वतंत्रतापूर्वक काम करनेसे ही वे जागृत होते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि इन गुणोंके दर्शन उस समय तक नहीं होते जब तक कोई आकस्मिक मुसीबत या कष्ट न आ जाय। ऐसी दशामें मुसीबत या कष्ट आशीर्वादके तुल्य होता है; क्योंकि उससे बहुधा उत्साहकी जागृति होती है।

जो युवक ज्ञान प्राप्त करनेमें विनोद ढूँढ़ा करते हैं उनसे कठिन अभ्यास और परिश्रम नहीं हो सकता। वे खेलते-कूदते ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं और ज्ञान प्राप्त करनेको खेल समझ बैठते हैं। इस तरह मनकी उचाट हानेके

ः जशुरु है। जिससे कुछ समयमें मस्तक और चरित्र दोनोंमें ब
आ जाती है। जिस तरह हुक्का पीनेसे दिमाग कमजोर हो जाता
र इस तरहकी किताबें पढ़नेसे भी मस्तकमें कमजोरी आ ज
कहते हैं कि ऐसा करनेसे मस्तककी मींद दूर हो जाती है; प
बात यह है कि इस कुटेवसे सबसे जियादा आलस्य और कमजो
ो है।

ुटेव बढ़ती जाती है और इससे कई तरहकी हानियाँ होती
ोटी हानि जो इससे होती है वह अल्पज्ञता है और यहींसे बड़ी हा
ै कि स्थिर होकर मेहनत करनेसे घृणा हो जाती है और मनका उत्स
हो जाता है। यदि हम वास्तवमें बुद्धिमान् होना चाहते हैं, तो हम
ञोंकी तरह निरंतर उद्योग करना चाहिए; क्योंकि जितने मूल्यव
वे सब केवल परिश्रमसे मिलते हैं और भविष्यमें भी सदैव
ी। काम करनेमें हमारा कोई उद्देश जरूर होना चाहिए और हम
की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। हर प्रकारकी सर्वोत्तम उ
ी होती है; परन्तु सच्चे दिलसे और उत्साहके साथ काम करनेवाले
य मिलता है। यदि मनुष्यके दैनिक जीवनमें परिश्रमकी आदत
तो वह धीरे धीरे स्वार्थको छोड़कर बड़ी बड़ी और अधिक उपयो
भी अपनी शक्तियोंका प्रयोग करेगा। हमको परिश्रम सदैव क
ाहिए, क्योंकि आत्मोद्धार या आत्मोन्नतिके कामका अंत नहीं
कवि मेका कथन है कि "काममें लगे रहनेसे मनुष्य सुखी रह
बिशप कम्बरलैंड कहा करते थे कि "मोरचा लगकर नष्ट होने
म कर नष्ट हो जाना अच्छा है।"

ी शक्तियोंका सदुपयोग करनेसे ही हम आदरके अधिकारी बनते
ी एक शक्तिसे अच्छी तरह काम लेता है उसका उतना ही आ
ाहिए जितना उस मनुष्यका होता है जिसके पास दस शक्ति
है। जिस तरह अपने पूर्वजोंकी दौलत या जातेमें अपनी योग्यता
ेक्षा नहीं रहती, उसी तरह उत्तम मानसिक शक्तियोंका अधिका
ी अपनी योग्यताकी कुछ अपेक्षा नहीं रहती। निज योग्यताका
हम कामोंसे मिलेगा कि उन शक्तियोंसे कैसा काम लिया जाता

और उस दौलतका कैसा प्रयोग किया जाता है ? यद्यपि ... उद्देश्यको ध्यानमें न रखकर भी हम अपने मस्तकमें बहुतसा ... सकते हैं; परन्तु ज्ञानके साथ भलमनसाहत और बुद्धिमानी भी ... और साथ ही साथ सच्चरित्रता भी होनी चाहिए। नहीं तो वह ज्ञान ... है। एक विद्वान् तो कोरी मानसिक शिक्षाको हानिकारक बतलाया करता था ! वह इस बात पर जोर दिया करता था कि ज्ञानकी जड़ोंको सुव्यवस्थित ... मिट्टीमें जमना चाहिए और उसीमेंसे अपना भोजन खींचना चाहिए। ... है कि मनुष्य ज्ञान प्राप्त करनेसे अधम पापोंसे बच सकता है; परन्तु वह स्वार्थपरतासे नहीं बच सकता। स्वार्थपरतासे उसी वक्त छुटकारा मिल सकता है जब मनुष्य उत्तम नियम बना ले, उनके अनुसार चले और अच्छी आदतें डाल ले। यही कारण है कि नित्य ही हमारे देखनेमें ऐसे बहुत मनुष्य आते हैं जिनका ज्ञान तो विशाल होता है, परन्तु चरित्र सर्वथा भ्रष्ट होता है; उनमें स्कूली विद्या होनेपर भी व्यावहारिक बुद्धि बहुत कम होती है। ऐसे ज्ञानी मनुष्य अपने सच्चरित्रसे दूसरोंके लिए अनुकरणीय तो क्या होंगे, उल्टे उनकी दुर्दशा देखकर उन जैसे चरित्रसे सावधान रहनेके लिए लोग उनको पटतर देने लगते हैं ! आज कल जहाँ तहाँ यही सुन पड़ता है कि "ज्ञान बल है" परन्तु पागलपन, अत्याचार और तृष्णा भी तो बल हैं ! यदि शिक्षा बुद्धिमानीके साथ न दी जाय, तो ऐसे ज्ञानसे दुष्ट मनुष्य और भी भयंकर ...

अपना सुधार, सुविधायें और कठिनाईयाँ।

अपने पास पुस्तकें इत्यादि ज्ञानके साधनोंका मौजूद होना और बुद्धिका होना ये दो बातें अलग अलग हैं। किताबें पढ़ लेनेसे ही बुद्धिकी प्राप्ति नहीं होती; क्योंकि पुस्तकोंमें हम दूसरोंके विचारोंको पढ़ते हैं पर हमारा मस्तक स्वयं कुछ काम नहीं करता। एक बात और भी है। हम पुस्तकें क्या पढ़ते हैं मानों एक तरहकी मानसिक मदिरा पीते हैं, जो थोड़ी देरके लिए हमको मदमत्त बना देती है, परन्तु हमारे मस्तककी उन्नतिमें अथवा चरित्रगठनमें कुछ भी सहायता नहीं देती। इस तरह बहुतसे मनुष्य यह समझते हैं कि हम पुस्तकें पढ़कर अपने मस्तककी उन्नति करते हैं, परन्तु असलमें वे अपने समयको वृथा खोया करते हैं जिससे केवल यही लाभ मालूम होता है कि वे बुरे कामोंसे बहुत कुछ बचे रहते हैं।

यह भी याद रखना चाहिए कि पुस्तकोंद्वारा प्राप्त किया हुआ अनुभव यद्यपि मूल्यवान् होता है तो भी उसकी गिनती विद्वत्ताहीमें हो सकती है; परन्तु जो अनुभव हम अपने जीवनमें स्वयं प्राप्त करते हैं उसकी गिनती बुद्धिमें है; और दूसरे प्रकारके अनुभवकी छोटीसी मात्रा भी पहले प्रकारके बड़े बड़े ढेरसे अधिक मूल्यवान् है।

उत्तम पुस्तकोंका पढ़ना यद्यपि बड़ा लाभदायक और शिक्षाप्रद है तो भी मस्तककी उन्नति करनेका यह केवल एक उपाय है और चरित्रगठन पर व्याव-हारिक अनुभव और उत्तम उदाहरणकी अपेक्षा इसका प्रभाव भी बहुत कम पड़ता है। संसारमें अनेक बुद्धिमान्, वीर और धर्मनिष्ठ महात्मा उस समय हो चुके हैं जब सर्व साधारणमें पुस्तकोंके पढ़नेका इतना प्रचार न था। यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि सुधारका मुख्य उद्देश यह नहीं है कि हमारा मस्तक केवल दूसरोंके विचारोंसे भर जाय, किन्तु यह है कि हमारी बुद्धि-मत्ता बढ़े और जिस प्रकारके जीवनमें हम प्रवेश करें उसमें अधिक उपयोगी और निपुण कार्यकर्ता सिद्ध हों। ऐसे बहुतसे उत्साही और उपयोगी कार्य-कर्ता हो गये हैं जिन्होंने बहुत कम पुस्तकें पढ़ी थीं। रेल्के अंजनके आवि-ष्कारक स्टीफिन्सन और यंत्रकार ब्रिंडलेने युवा अवस्था तक पढ़ना लिखना बिलकुल न सीखा था, परन्तु फिर भी उन्होंने बड़े बड़े काम किये। जान हंटरने पढ़ना लिखना बीस वर्षकी उम्र तक न सीखा था, परन्तु वे मेज कुर्सी बनानेमें अच्छेसे अच्छे कारीगरोंको मात कर देते थे। स्वामी विवे-

कानन्दके गुरु महात्मा रामकृष्ण परमहंस बहुत ही कम पढ़े लिखे थे; परन्तु उनके अनुभव ज्ञानकी इतनी प्रसिद्धि थी कि सैकड़ों विद्वान् उनके पास उपदेश सुननेको आया करते थे। महाराज शिवाजीने कितनी पुस्तकें पढ़ी थीं? महाराणा रणजीतसिंह पढ़ना लिखना कब जानते थे? सम्राट् अकबर भी बहुत ही कम पढ़े थे।

अतएव केवल बहुतसी पुस्तकें पढ़ लेने और याद कर लेनेमें कुछ महत्त्व नहीं है; महत्त्व तो पुस्तक पढ़नेके उद्देश्यमें है जिस उद्देश्यसे कि उस ज्ञानका उपयोग किया जाता है। ज्ञान प्राप्त करनेका यह उद्देश्य होना चाहिए कि हमारी बुद्धि परिपक्व हो और हमारे चरित्रकी उन्नति हो; हम अधिक उन्नत, सुखी और उपयोगी बनें; और जीवनके हरएक बड़े कार्यको सिद्ध करनेमें अधिक परोपकारी उत्साही और निपुण हो जायँ। जो मनुष्य सदाचारको भूलकर कोरे पांडित्यकी प्रशंसा किया करते हैं उनका शीघ्र ही पतन होता है। हमको स्वयं अच्छा बनना चाहिए और कुछ करके दिखलाना चाहिए। दूसरेके कामोंको पुस्तकोंमें केवल पढ़कर या मनन कर लेनेसे ही हमें संतोष न कर लेना चाहिए। हमारा सर्वोत्तम ज्ञान जीवनका अंश बन जाना चाहिए और हमारे सर्वोत्तम विचार कार्यरूपमें परिणत होने चाहिए। हम कमसे कम इतना तो कह सकें कि 'मैंने यथाशक्ति अपनी उन्नति कर ली। इससे अधिक और क्या हो सकता है?' क्योंकि यह प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि उसके ऊपर जितनी जिम्मेदारियाँ हैं और उसमें जितनी स्वाभाविक शक्तियाँ हैं उनके अनुसार वह अपनी उन्नति करे।

आत्मशासन और आत्मनिरोधसे ही कार्यकुशलताका आरंभ होता है और इसका आधार आत्मसम्मान है। इससे आशाका विकास होता है और आशा अन्तर शक्तिकी सहेली और सफलताकी माता है। जो मनुष्य दृढ़ आशा करता है उसको चमत्कारोंके दर्शन होते हैं। छोटेसे छोटे मनुष्यके भी ये विचार होने चाहिएँ:—"अपनी कदर करना और अपना सुधार करना, यही मेरे जीवनका सच्चा कर्तव्य है। मैं एक बड़े समाजका अंग और अंश हूँ और मेरे ऊपर बड़ी बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं। इसलिए समाजके प्रति मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपनी शारीरिक, मनःसम्बन्धी अथवा स्वाभाविक शक्तियोंको नष्ट न करूँ। नष्ट करना तो दूर रहा, बल्कि मेरा कर्तव्य है कि मैं

नकी यथाशक्ति उन्नति करूँ। मुझे केवल बुरी आदतोंसे ही न बचना
हिए, किन्तु अपने सद्गुणोंका विकाश करना चाहिए। चूँकि मैं अपना सम्मान
ता हूँ इसलिए मुझे दूसरोंका भी वैसा ही सम्मान करना चाहिए और
ी तरह दूसरोंका भी कर्तव्य है कि वे मेरा सम्मान करें।" इन विचारोंके
सार चलनेसे पारस्परिक सम्मान न्याय और शान्तिका साम्राज्य जड़
ड़ जायगा। सब कायदे कानून इन्हीं तीन बातोंके आधार पर बनाये
 हैं।

आत्मसम्मान मनुष्यके लिए सबसे बढ़िया वस्त्र है और मस्तकमें फूँकनेके
 सर्वोच्च भाव है। जिस मनुष्यमें आत्मसम्मानका उँचा विचार मौजूद
ह न तो विषयवासनाओंमें फँसकर अपने शरीरको अपवित्र करेगा और
लीन विचारोंसे अपने मस्तकको गंदा करेगा। यदि इस विचारके अनु-
 निरन्तर काम किया जाय तो मालूम होगा कि सफाई, संयम, शील,
चार, धर्मपरायणता इत्यादि सद्गुणोंकी जड़ यही विचार है। एक कविका
 है कि "पवित्र और उचित आत्मसम्मानको हर एक अच्छे कामका
 समझना चाहिए।" अपने आपको नीच समझनेसे मनुष्य अपनी और
की निगाहमें गिर जाता है। जैसे हमारे विचार होंगे वैसे ही हमारे काम
। वह मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता जो नीचे देखता है; यदि वह
 चाहता है, तो उसे ऊपर देखना चाहिए। छोटेसे छोटा मनुष्य भी
विचारको धारण करके नीचे नहीं गिर सकता। और तो क्या निर्धन-
 भी आत्मसम्मानके द्वारा उठाया जा सकता है और उन्नत किया जा
 है। अगर कोई गरीब आदमी प्रलोभनोंके बीचमें आकर दृढ़ बना रहे
 छोटे काम करके अपने आपको नीच न बनावे, तो उसका यह काम सच-
ी बहुत प्रशंसनीय है।

 ऐसे लोगोंके बहुतसे उदाहरण दे चुके हैं जो अपने ही आप स्वाल-
 उन्नति करके 'रंकसे राव' बन गये हैं। पर इससे यह न समझ लेना
 कि सब मनुष्य 'राव' हो जायँ। सुधारका या अपनी उन्नतिका मत-
नवान् होना नहीं है। यदि कोई मनुष्य अपना सुधार कर ले तो यह
 नहीं है कि वह धनाढ्य भी हो जाय। यह बात हमेशा रही है कि
अधिकांश मनुष्योंको, चाहे वे कितने ही शिक्षित हों, साधारण उद्योगधंधे

करने पड़ते हैं और समाजमें चाहे कितना ही सुधार हो जाय, परन्तु अधिकांश मनुष्योंको प्रतिदिनके काम-काजोंसे छुटकारा नहीं मिल सकता—वे काम-काज तो उन्हें करने ही पड़ते हैं। उन्हें मेहनत न करना पड़े इस प्रकारकी इच्छा रखना अनुचित है। यदि कोई इस प्रकारकी इच्छा करे भी, तो भी वह सफल नहीं हो सकती।

सब लोग मेहनत-मजदूरीके काम नहीं छोड़ सकते, यह कमी संसारमें हमेशा रहेगी। फिर भी हमारी समझमें यह कमी कई अंशोंमें दूर हो सकती है। अगर हम श्रमजीवियों या मेहनत मजदूरी करनेवालोंके विचार ऊँचे कर दें, तो उनकी दशा सुधर जाय—वे एक तरहके ऊँचे दर्जेके मनुष्य बन जायँ। श्रेष्ठ विचार गरीब और अमीर दोनोंको प्रकाशित कर देते हैं। गरीबसे गरीब आदमीके पास भी, चाहे वह बुरीसे बुरी झोंपड़ीमें रहता हो, वर्तमान और भूतकालके बड़े बड़े विचारवान् मनुष्य पुस्तकोंके रूपमें आकर बैठेंगे। किसी अच्छे उद्देशके लिए अध्ययन करनेकी आदत सर्वोत्तम आनन्द और आत्मोन्नतिका कारण हो सकती है और आचारपर अत्यन्त लाभदायक प्रभाव डाल सकती है। आत्मोद्धारसे भले ही धन न मिले, परन्तु उससे विचार तो सदैव ऊँचे रहेंगे। एक सेठने एक संन्यासीसे घृणाके साथ पूछा कि "तुमने दर्शनशास्त्र पढ़कर क्या पा लिया?" बुद्धिमान संन्यासीने उत्तर दिया कि "और कुछ नहीं तो मुझे अंतःकरणमें सत्संगति मिल गई है।"

बहुतसे मनुष्य आत्मोद्धारके काममें निराश और उत्साहहीन हो जाते हैं, क्योंकि वे संसारमें इतनी जल्दी नहीं फूलते फलते जितना वे अपने आपके योग्य समझते हैं। वे बीज बोकर यह चाहते हैं कि उसका तुरन्त ही वृक्ष बन जाय। वे ज्ञानको शायद बिक्रीकी चीज समझते हैं और इसलिए जब उनकी आशाके अनुसार ज्ञान नहीं बिकता तब उनकी आन ही निकल जाती है। एक बार एक स्कूलमें लड़कोंकी कमी होने लगी। अध्यापकने इसका कारण जानना चाहा। मालूम हुआ कि बहुतसे लोगोंको यह आशा थी कि उनके लड़के शिक्षा पानेसे पहलेसे अधिक धनवान् हो जावेंगे; परन्तु यह जानकर कि शिक्षासे कुछ लाभ न हुआ उन्होंने अपने लड़कोंको स्कूल जानेसे रोक लिया और अब वे उनको शिक्षा देनेका कष्ट नहीं उठाना चाहते।

आत्मोद्धारके विषयमें भी ऐसा ही नीच विचार कुछ लोगोंमें फैला हुआ ।। और समाजमें मानवी जीवनके विषयमें जो किम्वदन्तियाँ न्यूनाधिकरूपमें दा प्रचलित रहती हैं वे इस विचारको और भी प्रबल कर देती हैं। आत्मो-ार एक ऐसी शक्ति है जो चरित्रको ऊँचा करती है और आध्यात्मिक गुणोंको ढ़ाती है; परन्तु अगर हम उसको दूसरोंसे बाजी मारनेका अथवा मनके द्वारा जा लूटनेका साधन समझ लें, तो हम उसके मूल्यको बहुत कम कर देते ं। यदि मनुष्य अपनी उन्नतिके लिए और समाजमें अपनी स्थितिको ऊँचा रनेके लिए परिश्रम करे, तो यह निस्संदेह अत्यन्त श्रेष्ठ है; परन्तु ऐसा करते मय अपने आपको—अपने चरित्रको—बलिदान न कर देना चाहिए। मस्त-को शरीरका गुलाम बना देना बहुत बुरा है। जो मनुष्य सफलता प्राप्त न ोनेपर अपने दुर्भाग्यको रोता है उसका मन बड़ा ही संकीर्ण और निकम्मा है; क्योंकि सफलता कोरे ज्ञानसे नहीं मिलती, किन्तु कामकाजकी बातोंमें परिश्रम करने और उनपर ध्यान देनेकी आदत डालनेसे प्राप्त होती है।

यदि हम शिक्षा पाकर केवल जोश दिलानेवाली और हँसानेवाली पुस्त-कोंको पढ़-पढ़कर मनोविनोद किया करें, तो इससे भी शिक्षाका व्यभिचार होता है। आजकल बहुतसे मनुष्य ऐसा ही करते हैं। हँसी ठट्ठा और जोश दिलानेवाली बातोंके लिए आजकल लोग ऐसे पागलसे हो रहे हैं कि हमारी पुस्तकोंमें ये दोनों बातें खूब घुस पड़ी हैं। आज कलकी पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओंमें सर्वसाधारणकी रुचिके अनुसार खूब चटपटी बातें भरी रहती हैं, जो आनन्ददायक और हास्योत्पादक होती हैं और सब तरहके लौकिक और परमार्थिक नियमोंका उल्लंघन करती हैं। आज कल उपन्यास पढ़नेका शौक बहुत बढ़ता जाता है; परन्तु इस जमानेके अधिकांश उपन्यास ऐसे हैं जो सब लोगोंपर और विशेषकर नवयुवकोंपर बड़ा बुरा असर डालते हैं। वे उनको ख्याली दुनियाकी सैर कराते हैं, उनको आलसी बना देते हैं और उनके चरित्रको भ्रष्टकर देते हैं।

मेहनतके बीचमें आराम करनेके लिए और कठिन कामोंके बोझसे हलका होनेके लिए किसी प्रतिभाशाली लेखककी लिखी हुई कहानी पढ़ना अच्छा है; क्योंकि उससे सच्चा मानसिक आनंद मिलता है। इस प्रकारके साहित्यको सब तरहके मनुष्य, क्या वृद्ध और क्या युवक, सभी बड़े चावसे पढ़ते हैं

और हम इस प्रकारके आनन्दको उचित मात्रासे किसीको वंचित करना भी
नहीं चाहते। परन्तु केवल इसी प्रकारकी पुस्तकोंको पढ़नेसे और मानव
जीवनकी बनावटी बातोंके पढ़नेमें अपने फुरसतके अधिकांश समयको लगा
देनेसे केवल समय ही नष्ट नहीं होता, किन्तु और भी अनेक हानियाँ होती
हैं। जो लोग सदैव उपन्यास पढ़ा करते हैं वे झूठे और बनावटी विचार
दौड़ाया करते हैं, जिससे सच्चे और लाभदायक विचारोंके नष्ट हो जाने अथवा
शिथिल हो जानेका डर है। झूठे किस्सोंके पढ़नेसे जो दयाभाव उत्पन्न होता
है उससे दयामय कामोंके करनेकी शक्ति नहीं आती। ऐसे किस्सोंके पढ़नेसे
हमारे हृदयमें जो कोमलता आजाती है उसके प्राप्त करनेमें हमको न तो कष्ट
उठाना पड़ता है और न स्वार्थत्याग करना पड़ता है; इस लिए जिस हृदयपर
झूठे किस्सोंका प्रभाव पड़ता रहता है उसपर अंतमें सच्ची बातोंका भी कुछ
असर नहीं होता। उसके चरित्रमेंसे गंभीरता धीरे धीरे नष्ट हो जाती है और
उसकी जिन्दादिली गुप्तरूपसे जाती रहती है।

औसत दरजेका विनोद लाभदायक होता है और हम उसे अच्छा समझते
हैं; परन्तु अधिक विनोद स्वभावको बिगाड़ देता है। उससे हमें सावधानीके
साथ बचे रहना चाहिए। कहा जाता है कि "यदि लड़के बिलकुल न खेलें
और सदैव काममें जुटे रहें, तो वे सुस्त हो जाते हैं;" परन्तु यदि लड़के काम
बिलकुल न करें और सदैव खेलते रहें, तो उनकी दशा और भी खराब हो
जाती है। यदि युवकका चित्त विनोदमें ही डूबा रहे, तो उसके लिए इससे
अधिक हानिकारक कुछ नहीं। ऐसा करनेसे उसके मस्तककी सर्वोत्तम शक्तियाँ
निर्बल पड़ जाती हैं, साधारण खुशियोंमें कुछ मजा नहीं आता, उच्च श्रेणीके
आनंद भोगनेकी वाञ्छा जाती रहती है और जब जीवनके काम काज उसके
सामने आते हैं और उसे कर्तव्यका पालन करना पड़ता है तब नतीजा यह
होता है कि उसे इन कामोंसे नफरत हो जाती है। विषयासक्त मनुष्य जीव-
नकी शक्तियोंको नष्ट कर देते हैं और सच्चे सुखके द्वारको बंद कर देते हैं। वे
छोटी उम्रमें ही बलहीन हो जाते हैं, इस लिए उनके चरित्र अथवा बुद्धिकी
उन्नति नहीं हो पाती। जिस बालकमें सादगी न हो, जिस कुमारीमें भोला-
पन न हो, जिस लड़केमें सच बोलनेकी आदत न हो, वे उस मनुष्यसे अधिक
कल्याणकर नहीं मालूम होते जिसने अपने यौवनको विषयभोगमें नष्ट कर

दिया है। जैसे हम किसीके साथ आज बुराई करते हैं तो उसका फल हमको दूसरे दिन भोगना पड़ता है, उसी तरह जो पाप हमने जवानीमें किये हैं उनका दंड हमको उतरती उम्रमें मिलता है। जवानीमें जो बुरे काम बिना सोचे समझे किये जाते हैं वे केवल स्वास्थ्यको ही नष्ट नहीं करते किन्तु पुरुषको भी निकम्मा कर देते हैं। दुराचारी युवकमें धब्बा लग जाता है और यदि वह पवित्र होना भी चाहे तो साधारण प्रयत्नोंसे नहीं हो सकता। यदि इसका कोई इलाज हो सकता है तो वह यही है कि उसको अपने कर्तव्य-पालन पर खूब ध्यान रखना चाहिए और उपयोगी कामोंमें उत्साहपूर्वक लगे रहना चाहिए।

फ्रांस देशके निवासी बैंजामिन कान्स्टेंटकी प्रतिभा बहुत बड़ी चढ़ी थी। उनकी मानसिक शक्तियाँ बड़ी विलक्षण थीं। वे साधारण परिश्रम और आत्मनिरोधसे बड़े बड़े काम कर डालते थे, परन्तु उन्होंने बीस वर्षकी उम्रमें ही अपने शारीरिक बलको नष्ट कर डाला और इसलिए उनका सारा जीवन दुःखमय हो गया। उन्होंने बहुतसे काम करना चाहे, परन्तु वे न कर सके। वे पुस्तकें बड़ी तेजीके साथ लिख सकते थे। उनकी गिनती उस समयके श्रेष्ठ लेखकोंमें थी। उनकी इच्छा ऐसी कई पुस्तकें लिखनेकी थी जिनकी संसारमें हमेशा कदर हो। उनके विचार तो ऐसे ऊँचे थे, परन्तु उनका चाल-चलन बड़ा ही नीच था। यद्यपि उन्होंने कई श्रेष्ठ पुस्तकें लिखीं, परन्तु उनमें उनके जीवनकी नीचता न छिप सकी। जब उनका मस्तक एक धार्मिक ग्रंथ तैयार करनेमें लगा था तब वे जुआ भी खेलते रहते थे। जिस समयमें वे अपनी एक और पुस्तक लिख रहे थे, उस समय उन्होंने एक ऐसा झगड़ा मोल ले लिया था जिससे उनकी बड़ी बदनामी हुई। उनमें इतनी मानसिक शक्तियाँ थीं, फिर भी वे शक्तिहीन थे। क्योंकि वे चरित्रवाले कोसों दूर भागते थे। उन्होंने एक बार कहा था कि "ऊँह ! प्रतिष्ठा और बड़प्पन किस चिड़ियाका नाम है ? ज्यों ज्यों मेरी उम्र बढ़ती जाती है त्यों त्यों मुझे साफ साफ मालूम होता जाता है कि उनमें कुछ नहीं है।" उनमें दृढ़ संकल्प न था—वे केवल इच्छा ही करना जानते थे। वे छोटी उम्रमें ही अपने जीवनकी शक्तियोंका नाश कर चुके थे, इसलिए उनके सब काम अधूरे रह गये। वे स्वीकार करते थे कि "मैं जीवनके नियमोंका

पालन नहीं करता और मेरा चित्त सदैव डावाँडोल रहता है।" इस प्र
उनमें विलक्षण शक्तियाँ थीं, तो भी वे न कर सके। वे बहुत वर्षोंतक दु
रहे और अंतमें कुढ़-कुढ़कर मर गये।

आगस्टिन थीअरीका जीवन कान्सटेंटके जीवनसे बिलकुल विप
था। उनका समस्त जीवन आग्रह, परिश्रम, आत्मोद्धार और विद्योपार्जन
विचित्र उदाहरण है। वे काम करते करते अंधे हो गये और निर्बल पड़ ग
परन्तु उन्होंने सत्यप्रियताको हाथसे न जाने दिया। जब वे ऐसे कमजोर
गये कि उनको बच्चेके समान एक दाया अपनी गोदमें बिठाकर एक कम
दूसरे कमरेमें ले जाती थी, तब भी उनके उत्साहने जवाब न दिया। ज
वे अंधे और बेबस थे, तो भी उन्होंने साहित्यसेवाका अन्त करते समय
उत्तम शब्दोंका प्रयोग किया था:-"यदि मेरे समान और लोगोंका भी
ख्याल है कि विद्या देशकी उन्नतिका एक बड़ा कारण है, तो मैंने अपने देश
उस सैनिकके समान सेवा की है जो युद्धक्षेत्रमें देशके लिए अपनी जान दे
है। मेरे परिश्रमका फल चाहे जो हो, परन्तु मुझे आशा है कि मेरा उद
रण अमर रहेगा। इस उदाहरणको देखकर लोग आत्मिक निर्बलतासा साम
करेंगे। आत्मिकनिर्बलताकी बुरी बीमारी आजकल बहुत फैली हुई है। म
ष्योंमें ऐसी आत्मिक निर्बलता समा गई है कि वे किसी बात पर वि
नहीं करते—वे यह नहीं जानते कि हमको क्या करना है। वे ऐसी चीज
ढूँढ़ा करते हैं जिस पर वे विश्वास ला सकें और जिसकी भक्ति कर सकें;प
वह चीज उनको मिलती नहीं। ऐसे मनुष्योंका जीवन मेरे उदाहरणसे दे
कर सुधर जायगा। लोग क्यों कहते हैं कि संसारमें इतना काम नहीं है
वह सब मनुष्योंके मस्तकके लिए काफी हो! क्या शान्तिपूर्वक सावधा
अध्ययन करनेका काम मौजूद नहीं है और क्या इस कामको सब लोग
कर सकते? इस काममें लगे रहनेसे मुसीबतके दिन ऐसे गुजर जाते हैं
हमको उनका भार नहीं मालूम होता। हरएक मनुष्य जैसे चाहे वैसे ही
भोग सकता है। हरएक मनुष्य अपने जीवनको अच्छे कामोंमें लगा स
है। मैंने ऐसा ही किया है और यदि मुझे दोबारा जीवन प्रारंभ करना
तो मैं फिर ऐसा ही करूँगा; मैं वैसे ही काम करूँगा जिनसे व
मैंने इतनी उन्नति कर ली है। मैं अंधा हूँ और ऐसे दुखों हूँ कि ज

ऐसा पुरस्कार कभी नहीं हो सकता। इस हालतमें मैं एक ऐसी बात
है कि इसपर किसीको संदेह न होगा। संसारमें एक ऐसी चीज़ भी
इन्द्रियोंके भोगविलाससे अच्छी है, धनसे अच्छी है बल्कि तन्दुरुस्ती
अच्छी है—वह चीज़ विद्योपार्जन है।"

जो बात मनुष्यको निपुण बनाती है वह आराम नहीं है किन्तु
है—आसानी नहीं है किन्तु कठिनाई है। कदाचित् जीवनकी कोई स्थिति
नहीं है जिसमें निश्चित सफलता प्राप्त करनेके लिए कठिनाइयाँ न झेलनी
जिस तरह भूलें होनेसे हमको सर्वोत्तम अनुभव प्राप्त होता है, उसी
कठिनाइयोंसे भी हमको सर्वोत्तम शिक्षा मिलती है। चार्ल्स जेम्स फ
कहा करते थे कि "जो मनुष्य आसानीके साथ कामयाब हो गये हैं, मुझे
इतनी आशा नहीं है जितनी उन मनुष्योंसे है जो असफल हो गये हों,
उन्होंने असफल होनेपर भी परिश्रम करना न छोड़ा हो। यदि तुम
कहो कि अमुक मनुष्यने अपना प्रथम व्याख्यान देकर बड़ा नाम पैदा
तो यह अच्छी बात है। वह मनुष्य चाहे अधिक उन्नति करता रहे
अपनी प्रथम सफलता पर ही संतोष कर ले, यह उसकी मर्ज़ी है;
मुझको एक ऐसा युवक दिखलाओ जिसको पहली बार सफलता न हु
परन्तु वह फिर भी परिश्रम करता रहा हो। ऐसे मनुष्यके विषयमें
विश्वास है कि वह ऐसे अधिकांश मनुष्योंसे अधिक सफलता पा सकेगा
प्रथम चेष्टामें ही सफल हो गये हैं।"

हमको सफलताकी अपेक्षा असफलतासे कहीं ज़ियादा शिक्षा मिलत
जब एक चीज़से काम नहीं चलता तब हम बहुधा यह जान जाते हैं कि
चीज़से काम निकल जायगा। शायद जिसने कभी भूल नहीं की उसने
अनुसंधान भी नहीं किया। प्रायः सभी आविष्कारकोंको सफलता प्राप्त
पहले असफलतायें हुई हैं। डाक्टर जान हंटर कहा करते थे कि "
शल्यके काममें उस समय तक उन्नति न होगी जब तक डाक्टर लोग
असफलताओं और सफलताओंको प्रकाशित न करेंगे।" यन्त्रकार या
करते थे कि "यंत्रविद्याके लिए असफलताओंके इतिहासकी सबसे
आवश्यकता है। हमको ऐसी पुस्तकोंकी बहुत ज़रूरत है जिनमें यह
हो कि अमुक इंजीनियरको उसके प्रयासमें जो सफलता न हुई वह

... जाती है और यह क्रम जीवनपर्यंत जारी रहता है। कठिनाई- के साथ युद्ध करना उसी समय समाप्त होता है जब जीवन और उस- का अंत हो जाता है। उत्साहहीन विचारोंको लेकर आजतक किसी मनु- ने कठिनाईका सामना न किया है और न करेगा। जब कोई विद्यार्थी डॉ- क्टर...के पास जाकर यह शिकायत करता था कि मुझको गणितकी ...मिक बातें याद नहीं होतीं, तब वे कहते थे—"भाई, काम किये जाओ। ...ही समयमें तुमको अपनी सफलता पर विश्वास होने लगेगा और तुम्हारी ... बढ़ जायगी।"

...गानेवाले अथवा नाचनेवाले बड़े चतुर समझे जाते हैं उन्होंने धैर्यपूर्वक ...र सीखने और अनेक बार असफल होनेके बाद ही चतुराई प्राप्त की है। ...र जब फेरिसिमीके मधुर स्वरकी प्रशंसा की गई, तब उसने कहा कि ...नहीं मालूम कि इस कलाके सीखनेमें कितना परिश्रम किया है और कितनी ...इयाँ झेली हैं।" एक बार जब सर जौशुआ रेनाल्ड्ससे पूछा गया ...आपको इस चित्रके बनानेमें कितना समय लगा," तब उन्होंने उत्तर दिया ...रा समस्त जीवन।" अमेरिकाके प्रसिद्ध वक्ता हेनरीक्लेने नवयुवकोंको ...देते समय अपनी सफलताका रहस्य इस प्रकार वर्णन किया था:- ...अपने जीवनमें खास कर एक बातसे सफलता प्राप्त हुई है—वह यह ...जब मेरी उम्र २७ वर्षकी थी तबसे मैं इतिहासके तथा दूसरे विषयोंके ...ग्रन्थोंको बाँचनेमें लग गया और उनकी उक्तियाँ कण्ठ करके जहाँ तहाँ ...लगा। यह काम मैंने बरसोंतक जारी रक्खा और इस तरह मैं अन- ...व्याख्यान देनेकी आदत डालने लगा। बिना तैयार किये हुए—बिना ...मैं कभी खेतोंमें जाकर व्याख्यान देता था और कभी जंगलोंमें। ...मैं दूरके खलियानोंमें निकल जाता था और वहाँ व्याख्यान देने लगता ...हाँ पर मेरे व्याख्यानोंको सुननेवाले केवल घोड़े और बैल रहते थे! ...स्में इस तरह अभ्यास करनेसे ही मुझे प्रारम्भिक और बड़ी बड़ी ...यें मिलीं, जिनसे मेरी उन्नति होती गई और मेरा शेष जीवन ...था।"

...नुष्य आत्मोद्धारको अपना कर्तव्य समझ लेते हैं उनके काममें ...भारी गरीबी भी बाधा नहीं डाल सकती। अध्यापक मरेने अक्षर

उनके साथ युद्ध किया जाता है। अगर हम किसी कामको करना चाहते हैं तो इसके लिए सबसे जरूरी बात यह है कि हमारे दिलमें यह विश्वास हो कि हम उस कामको कर सकते हैं और उसे करके छोड़ेंगे। यदि कठिनाइयों पर विजय पानेका दृढ़ संकल्प कर लिया जाय, तो फिर कठिनाइयाँ खड़ी नहीं रहतीं—स्वयं ही भाग जाती हैं।

चेष्टा करनेसे ही मनुष्य बहुत कुछ काम कर सकता है। जब तक कोशिश न करेंगे तबतक कैसे मालूम होगा कि हम किसी कामको कर सकते हैं या नहीं? ऐसे मनुष्य बहुत कम हैं जो बिना मजबूरीके ही अपनी ताकतके माफिक कोशिश करते हों। निराश युवक ठंडी साँस लेकर कहता है, "यदि मैं इस कामको कर सकूँ—"? परन्तु यदि यह केवल इच्छा ही करता रहेगा तो उससे कुछ न होगा। इच्छामें संकल्प और चेष्टारूपी पङ्ख लगाने चाहिएँ, और एक बार उत्साहपूर्वक चेष्टा करना हजार बार इच्छा करनेके बराबर है। 'यदि'-रूपी काँटे ही—जो निर्बलता और निराशासे उत्पन्न होते हैं—संभावनारूपी मैदानको चारों तरफसे घेर लेते हैं और कामके करनेमें बल्कि चेष्टा करनेमें भी बाधक होते हैं। एक विद्वान्‌का कहना है कि "कठिनाई ऐसी चीज है जिस पर अवश्य ही विजय प्राप्त करनी चाहिए।" कठिनाईसे तुरन्त ही भिड़ जाओ; अभ्यास करनेसे सुगमता आ जायगी और बार बार चेष्टा करनेसे बल और साहस बढ़ जायगा। इस प्रकार हमारा अपने मस्तक और चरित्रपर अच्छा अधिकार हो जायगा और उनके द्वारा हम ऐसी सफाई, उत्साह और स्वतंत्रताके साथ काम कर सकेंगे कि जिन मनुष्योंने ऐसा अनुभव प्राप्त नहीं किया वे देखकर दंग रह जायँगे।

हर एक बातके सीखनेमें हम एक कठिनाई पर विजय पाते हैं और एक कठिनाई पर विजय पालेनेसे अन्य कठिनाइयों पर विजय पानेमें सहायता मिलती है। बहुतसी बातें—जैसे किसी मृत (अप्रचलित) भाषा अथवा रेखा गणितका सीखना—ऊपरी नजरसे देखनेमें अधिक लाभदायक नहीं मालूम होतीं, परन्तु वे वास्तवमें बड़ी मूल्यवान् होती हैं। उनका मूल्य इस बातमें नहीं है कि उनसे ज्ञान मिलता है किन्तु इस बातमें है कि उनसे हमारी समुन्नति होती है। ऐसे विषयोंके अध्ययनसे चेष्टा करनेकी आदत पड़ती है और उद्योगशक्तिकी वृद्धि होती है। इसतरह एक बातकी दूसरी

दा हो जाती है और यह क्रम जीवनपर्यंत जारी रहता है। कठिनाई-
ाथ युद्ध करना उसी समय समाप्त होता है जब जीवन और उस-
ंत हो जाता है। उत्साहहीन विचारोंको लेकर आजतक किसी मनु-
ठिनाईका सामना न किया है और न करेगा। जब कोई विद्यार्थी डी
यटके पास जाकर यह शिकायत करता था कि मुझको गणितकी
क बातें याद नहीं होतीं, तब वे कहते थे–" भाई, काम किये जाओ।
समयमें तुमको अपनी सफलता पर विश्वास होने लगेगा और तुम्हारी
ट जायगी।"

ानेवाले अथवा नाचनेवाले बड़े चतुर समझे जाते हैं उन्होंने धैर्यपूर्वक
सीखने और अनेक बार असफल होनेके बाद ही चतुराई प्राप्त की है।
जब कैरिसिमीके मधुर स्वरकी प्रशंसा की गई, तब उसने कहा कि
हीं मालूम कि इस कलाके सीखनेमें कितना परिश्रम किया है और कितनी
याँ झेली हैं।" एक बार जब सर जौशुआ रेनाल्ड्ससे पूछा गया
को इस चित्रके बनानेमें कितना समय लगा," तब उन्होंने उत्तर दिया
समस्त जीवन।" अमेरिकाके प्रसिद्ध वक्ता हेनरीक्लेने नवयुवकोंको
ते समय अपनी सफलताका रहस्य इस प्रकार वर्णन किया था:–
ने जीवनमें खास कर एक बातसे सफलता प्राप्त हुई है—वह यह
। मेरी उम्र २७ वर्षकी थी तबसे मैं इतिहासके तथा दूसरे विषयोंके
ोंको बाँचनेमें लग गया और उनकी उक्तियाँ कण्ठ करके जहाँ तहाँ
ा। यह काम मैंने बरसोंतक जारी रक्खा और इस तरह मैं अन-
ख्यान देनेकी आदत डालने लगा। बिना तैयार किये हुए—बिना
। कभी खेतोंमें जाकर व्याख्यान देता था और कभी जंगलोंमें।
ुरके खलियानोंमें निकल जाता था और वहाँ व्याख्यान देने लगता
पर मेरे व्याख्यानोंको सुननेवाले केवल घोड़े और बैल रहते थे।
। इस तरह अभ्यास करनेसे ही मुझे प्रारम्भिक और बड़ी बड़ी
मिलीं, जिनसे मेरी उन्नति होती गई और मेरा शेष जीवन
।"

ज्य आमोदारको अपना कर्तव्य समझ लेते हैं उनके काममें
ी गरीबी भी बाधा नहीं डाल सकती। अध्यापक मरेने अक्षर

लिखना जली हुई लकड़ियोंसे सीखा था ! उनके पिता अत्यन्त दरिद्र थे
उनके लिए लिखने पढ़नेका सामान न खरीद सकते थे । अध्यापक मो
अपनी युवा अवस्थामें बड़े दरिद्र थे । एक बार उनको एक पुस्तककी आ
पड़ी । उनके पास इतना रुपया न था कि वे उसको मोल ले सकते ।
उन्होंने वह पुस्तक किसीसे माँग ली और उसको अपने हाथसे नकल
डाला । बहुतसे निर्धन विद्यार्थियोंको अपने निर्वाहके लिए प्रतिदिन
श्रम करना पड़ता था और इस परिश्रमके बीचमें कभी कभी इधर उ
ज्ञानकी एकाध बात उनके हाथ लग जाती थी । वे इसी तरह क
परिश्रम करते रहे और फिर उन्हें सफलताकी आशा हुई । एक प्र
लेखक और प्रकाशकने युवकोंको उत्साहित करनेके लिए एक व्या
दिया था जिसमें उन्होंने अपनी पहली गरीबीका हाल इस तरह बयान
था:-" तुम्हारे सामने एक स्वशिक्षित मनुष्य खड़ा है । शुरूमें मैंने
लेण्डकी एक छोटीसी देहाती पाठशालामें थोड़ीसी शिक्षा पाई । इसके
मैं एडिनबर्ग नगरमें पहुँच गया । वहाँ मैं अपने निर्वाहके लिए दिनभर
नत करता था और रातको अपनी मानसिक शक्तियोंकी उन्नति किया क
था । सबेरे ७-८ बजेसे रातके ९-१० बजे तक मैं एक पुस्तक बेचने
यहाँ नौकरी करता था । इसके बाद मैं सोनेके वक्तमेंसे कुछ वक्त बा
पढ़ा करता था । मैं उपन्यास न पढ़ता था बल्कि विज्ञान और अन्य उप
विषयोंका अध्ययन किया करता था । मैं फ्रेंच भाषा भी सीखता था । मैं
जमानेको अब बड़े आनन्दके साथ याद करता हूँ । मुझे इस बातका खे
कि मैं इस समय वैसा ही अनुभव प्राप्त नहीं कर सकता हूँ; क्योंकि
आज महलमें सुखपूर्वक बैठे हुए उतना आनन्द नहीं मालूम होता, जि
उस समय मालूम होता था जब मैं एडिनबर्ग नगरमें एक कोठरीमें
करता था और मेरे गाँठमें एक दमड़ी भी न रहती थी ।"

महापुरुष महेन्द्र स्वामी महादेवभट्ट नामक भिक्षुकके पुत्र थे । मा
भट्ट अपने पुत्रके बचपनमें ही मर गये । अनाथ महेन्द्रका संसारमें कहीं
ठिकाना न रहा । वे बहुत दिनोंतक बनारस इत्यादि नगरोंमें मारे मारे फि
फिरे । परन्तु उन्हें विद्यासे प्रेम था । ऐसी दरिद्र अवस्थामें भी उन्होंने इ
विद्योपार्जन किया कि वे वेदोंको खूब अच्छी तरह समझने लगे । उन्हों

होनेके साथ वे धर्मात्मा भी थे। वे साधु हो गये और शाहू महाराजाने उनको अपना धर्मगुरु माना। धीरे धीरे अनेक मनुष्य उनके शिष्य हो गये। डाक्टर विश्रामजी घोलेके पिता एक पल्टनमें साधारण नौकर थे। वे विश्रामजी बाल्यावस्थामें ही परलोक सिधार गये। विश्रामके मामाने विश्रामजीको कुछ पढ़ाया और फिर उनको ५) रु० मासिक पर नौकर करा दिया। वे विश्राम अपने उद्योगसे उन्नति करते करते पूनाके सिविल सर्जन हो गये। सन् १८९७ ईसवीमें उनको राय बहादुरकी पदवी मिली। उस समय लार्ड एल्गिन यहाँके वाइसराय थे। उन्होंने विश्रामजीको अपना आनरेरी सिविल सर्जन नियत किया। नारायण मेघाजी लोखंडे भी परम दरिद्र थे। वे बाल्यावस्थामें ही अनाथ हो गये। बड़ी मुश्किलसे उन्होंने मराठी और अँगरेजी पढ़ी और रेलवेमें लोको-सुपरिंटेण्डेन्टके यहाँ नौकर हो गये। उनको अध्ययनसे बड़ा प्रेम था। धीरे धीरे उन्होंने इतनी योग्यता प्राप्त कर ली कि वे 'दीनबन्धु' पत्रमें लेख देने लगे और कुछ समयके बाद वे ही दीनबन्धुके सम्पादक हो गये। देश-सुधारकी ओर वे बड़ा ध्यान देते थे। मिलों और कारखानोंके मजदूरोंकी दशा देखकर उनको बड़ा तरस आता था। उन्होंने इस विषयमें बड़ा आन्दोलन किया। इन मजदूरोंको भी छुट्टियाँ मिला करें। उनको इस काममें सफलता भी बहुत हुई। सरकारने सन् १८९० ईसवी में उनको 'जे. पी.' की उपाधिसे विभूषित किया और पाँच वर्ष बाद उनको 'रायबहादुर' की पदवी प्रदान की। सर टी. मुत्तुस्वामी ऐयर भी बड़े निर्धन थे। उनके बाल्यकालमें ही उनके पिताका देहान्त हो गया था। उनकी माताने घरका असबाब बेचकर उनका पालन पोषण किया; पर वे भी कुछ समय बाद परलोक सिधार गईं। मुत्तुस्वामीने अपने पिताके जीवनकालमें बहुत थोड़ा लिखना पढ़ना सीखा था पर उनमें उद्योग और उत्साह विशेष था। इन गुणोंको देखकर एक तहसीलदारने उनको कुछ सहायता दी। उसे पाकर वे विद्योपार्जनमें अतिशय परिश्रम करने लगे। उन्होंने बी. ए. पास कर लिया और फिर नौकरी कर ली। धीरे धीरे उन्होंने ऐसी उन्नति की कि वे हाईकोर्टके जज हो गये और दिल्लीके दरबारमें सरकारने उनको सी. आई. ई. की उपाधिसे विभूषित कर दिया।

पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे लिए एक बहुमूल्य उदाहरण छोड़ गये हैं। उनके माता पिता बहुत गरीब थे। पिता केवल दस रुपया मासिक

वेतन पाते थे और माता चर्खा कातकर निर्वाह करती थी, अतएव ईश्वरचन्द्रको अपनी आजीविका और विद्योपार्जनके लिए बड़ाभारी परिश्रम करना पड़ता था। वे रात दिनमें केवल दो घंटे सोते थे! उनके पिताको रातके समय घरपर बारह बजे तक काम करना पड़ता था। ईश्वरचन्द्र इधर रातके दस बजे सो जाते थे और अपने पितासे यह कह देते थे कि "जब आप बारह बजे अपना काम समाप्त करके सोया करें तब मुझे जगा दिया करें।" तदनुसार उनके पिता बारह बजे जगा देते थे और तब वे सबेरे तक पढ़ा करते थे। ईश्वरचन्द्र और उनके पिता कलकत्तेमें रहते थे; परंतु ईश्वरचन्द्रकी माता अपने घर पर एक गाँवमें रहती थी—इस डरसे कि शहरमें रहनेसे खर्च बहुत पड़ेगा। ईश्वरचन्द्र कलकत्तेमें रहकर पढ़ते थे। वे अपने लिए और अपने पिताके लिए भोजन बनाते थे, यहाँ तक कि बरतन भी उन्हींको माँजने पड़ते थे। वे बाजारका भी सब काम काज करते थे। कठिन परिश्रम करनेसे वे कईवार बीमार भी हो गये और इसी परिश्रमसे उनको कईवार छात्रवृत्तियाँ और पुरस्कार भी मिले। कुछ वर्षमें ईश्वरचन्द्रने इतनी संस्कृत पढ़ ली कि वे अपने समयके बड़ेभारी पंडित हो गये। उन्होंने संस्कृतमें कविताएँ लिखीं और बंगभाषामें अनेक पुस्तकें रचीं। पहले पहल वे पचास रुपया मासिक पर फोर्टविलियम कालिजके प्रधान पंडित नियुक्त हुए। फिर उन्होंने धीरे धीरे इतनी उन्नति कर ली कि वे तीन सौ रुपया मासिक वेतन पर संस्कृत कालिजके प्रिंसिपल हो गये और इसके साथ ही साथ उनको दो सौ रुपया मासिक संस्कृत पाठशालाओंके निरीक्षणके मिलने लगे। अपनी पुस्तकोंकी बिक्रीसे भी उनको बहुत आमदनी होती थी; परन्तु वे यह सब धन गरीबोंकी सहायता करनेमें ही लगा देते थे। सच है—

"आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव*।"

औरोंकी सहायताके लिए वे कभी कभी ऋण तक ले लेते थे। उन्होंने गुप्त दान देकर अनेक दीन दुखियोंकी सहायता की। अपने सहपाठियोंको वे बहुधा कपड़े बनवा देते थे और पुस्तकें मोल ले देते थे। बंगालके सुप्रसिद्ध माइकल मधुसूदन दत्त इंग्लेण्डमें एक बार बड़े कष्टमें पड़ गये। अपने

* बादलोंके समान सज्जनोंका लेना दूसरोंको देनेके ही लिए होता है।

…धालोंसे उन्होंने सहायताके लिए पत्र लिखे, परन्तु उनको निराश होना …। ऐसे संकटमें ईश्वरचन्द्रने दस हजार रुपये भेजकर उनकी बड़ी भारी …क्षा की! ईश्वरचन्द्रने अनेक ग्रामोंमें स्वयं अपने खर्चसे बहुतसी बालक …न्या-पाठशालायें बनवाईं। वे अकालके दिनोंमें ग्रामोंमें जा-जाकर …को भोजन और वस्त्र बाँटा करते थे। जो मनुष्य लज्जाके मारे भोजन …लेते थे उनके घर वे गुप्त रीतिसे रुपया भिजवा देते थे। एक दिन उनसे …सज्जनने पूछा कि "महाशय गुप्तदानका क्या प्रयोजन है?" उन्होंने …दिया कि "लेनेवालेको सबके सामने लेनेमें लज्जा मालूम होती है, …लिए दान गुप्तरूपसे ही देना चाहिए। जो प्रकाश रूपसे दान देते हैं वे …अपनी प्रतिष्ठाके अर्थ देते हैं। नाम व सम्मानका मैं भूखा नहीं हूं।" …ने विधवाओंकी दशा सुधारनेकी भी अनेक चेष्टायें कीं। उनकी गिनती बड़े …माज-सुधारकोंमें है। सरकारने उनके कामोंसे प्रसन्न होकर उनको सी. …ई. की पदवी प्रदान की। ईश्वरचन्द्रका जीवन-उद्देश ही दीनोंको सहा-…पहुँचाना और समाजका सुधार करना था। वे केवल विद्यासागर ही …किन्तु दयासागर भी थे। वे दीन दुखियोंकी मददके लिए सदैव तैयार …। यहाँ पर उनकी दयालुताके दो एक उदाहरण दिये जाते हैं:—

…वान नगरमें एक बार एक गरीब लड़केने ईश्वरचन्द्रसे एक एक पैसा … ईश्वरचन्द्रने कहा कि "यदि मैं चार पैसे दूं, तो तू क्या करेगा?" …उत्तर दिया कि "भोजनके लिए दो पैसेका आटा मोल ले जाऊँगा …पैसे अपनी माताको दे दूँगा।" ईश्वरचन्द्रने फिर कहा कि "यदि …चार आने दूं, तो क्या करेगा?" लड़का समझा कि ईश्वर हँसी कर … इस लिए वह वहाँसे जाने लगा। परन्तु ईश्वरचन्द्रने उसका हाथ …लिया और फिर वही बात पूछी। लड़केने कहा कि "खानेके लिए …के चावल मोल लूँगा और बाकी दो आनेके आम मोल लेकर बेचूँगा। …नेसे मुझे दो एक आने और मिल जायेंगे।" यह सुनकर ईश्वर-…स लड़केको एक रुपया दे दिया। लड़का रुपया लेकर चल दिया। …बाद ईश्वरचन्द्र फिर बर्द्धवानको गये। वहाँ एक दिन वे बाजारमें …रहे थे कि एक आदमी उनके पास आया और हाथ जोड़कर … "हे दयासागर! मेरी दूकानपर चलिए और उसको पवित्र कीजिए।

डायरेक्टर उस स्कूलका निरीक्षण करने आये। उन्होंने अध्यापकसे
"इस दरजेमें सबसे अच्छा लड़का कौन है?" अध्यापकने रामचन्द्र
इशारा किया। डायरेक्टरने रामचन्द्रको कुछ रुपये दिये। रामचन्द्र
पढ़ा कर जैसे तैसे मट्रीक्यूलेशन पास किया। इस परीक्षामें
बंर प्रथम आया। इसके आगे वे न पढ़ सकते थे; परन्तु उस समय
ऐक्स्पेक्टर, डाक्टर भांडारकर थे। वे रामचन्द्रके ऊपर बड़ी कृपा रख
उन्होंने रामचन्द्रको कालिजमें पढ़नेके लिए २०) मासिक छात्रवृ
स्वीकार कर लिया। तब वे कालिजमें पढ़ने लगे, परन्तु २०) रु०
रका निर्वाह और पढ़ाईका खर्च दोनों बातें कैसे हो सकती थीं?
उन्होंने कालिजमें पढ़ना छोड़ दिया और स्कूलमें नौकरी कर ली। फिर
कलक्टर साहबके दफ्तरमें नौकरी कर ली। वहाँ वे कई वर्षोंतक का
रहे। इससे उनका निर्वाह होता रहा; परन्तु उम्र ज़ियादा हो जानेपर भी
स्वाध्यायको न छोड़ा। वहींसे उन्होंने लोअर स्टेण्डर्ड हायर स्टेण्डर्ड
पास परीक्षायें दीं और उनमें उत्तीर्ण हुए। फिर वे डिप्टी कलक्टर हो
जब महाराज गायकवाड़ने उनकी योग्यताकी प्रशंसा सुनी तब
रामचन्द्रको अपने यहाँ ४५०) रु० मासिक वेतन पर सूबेदार नियत
बुला लिया। कुछ दिनोंतक वे बड़ोदेके नायब दीवान भी रहे। अंत
१८८० ईसवीमें महाराज गायकवाड़ उनको चीफ आफिसर बनाकर
साथ इंग्लैण्ड ले गये। उनकी विद्वत्ता और योग्यताके कारण महाराज
कवाड़ उनका बड़ा सन्मान करते थे।

श्यामाचरण सरकारका जीवन आत्मोद्धारका बहुत उत्तम उदाहर
श्यामाचरणने एक सम्पत्तिशाली घरानेमें जन्म लिया था। उनके पित
इन्द्रावतीके दीवान थे। इस लिए अपने पिताके जीवनकालमें श्यामाच
सब प्रकारका सुख मिला। उनके पिता बड़े दानी थे। इसलिए वे
कमाईका अधिकांश भाग दान देनेमें खर्च कर दिया करते थे। ध
करना तो वे जानते ही न थे। जब श्यामाचरण पाँच वर्षके हुए तब
पिताका देहान्त हो गया। श्यामाचरणकी माताने अपनी जायदाद बेच
और उससे जो कुछ रुपया मिला उसीसे अपना और श्यामाचरणका
करने लगीं। परन्तु दुर्भाग्यवश कुछ दिनों बाद उस धनको चोर चुरा

हरा लिया। घरके काम-काजके बटवारेमें श्यामाचरणको पानी भरनेका काम
ौंपा गया। कुछ दिनोंमें श्यामाचरणको बाबू रामतनुके प्रयत्नसे कुछ अँग-
ज़ोंको देशी भाषा सिखानेका काम मिल गया। इससे वे लगभग तीस
पया मासिक कमाने लगे। साथ ही साथ वे कुछ समय बचा कर अँगरेजी
ीखने लगे। क्योंकि उनको ज्ञान प्राप्त करनेकी बड़ी प्रबल इच्छा थी।
ँगरेजी सीखनेमें उनको अपने पड़ौसी रामगोपाल घोषसे बहुत सहायता
मिलती थी। इस प्रकार कुछ अँगरेजी सीख कर श्यामाचरणने हिन्दू कालि-
में भरती होना चाहा। परन्तु उस समय उनकी अवस्था २१ वर्षकी थी।
सलिए वे उमर अधिक होनेके कारण कालिजमें भरती न हो सके। परन्तु
समे वे निराश न हुए और सेन्ट जेवियर कालेजमें भरती हो गये। उनको
ँगरेजोंके पढ़ानेसे जो तीस रुपया मासिक मिलता था उसमेंसे वे आठ रुपया
ासिक कालिजकी फीस दे देते थे। उन्होंने कालिजमें अँगरेजीके सिवाय
क, लैटिन और फ्रेञ्च भाषाएँ भी सीखीं।

इसी समय श्यामाचरणको कलकत्ता मदरसामें पहले तो पचीस रुपया
: फिर चालीस रुपया मासिककी जगह मिल गई। इन दिनों श्यामाचर-
ो घोर परिश्रम करना पड़ता था। वे सवेरे ६ बजेसे १० बजे तक मदरसेमें
री करते थे। फिर शामके ४ बजे तक सेंट जेवियर कालिजमें स्वयं पढ़ते
ौर रातको ९ बजे तक अँगरेजोंको देशी भाषा पढ़ाते थे। बीचमें केवल
ार बड़ी कठिनाईसे भोजन कर पाते थे। दिनमें अवकाश न मिलनेके
ा वे रातको ९ बजेके बाद अपने हाथोंसे भोजन बनाते थे और उसीमेंसे
खाना बचाकर सवेरेके लिए रख छोड़ते थे। इस प्रकार घोर परिश्रम
करते उनको पाँच वर्ष हो गये। तत्पश्चात् उनको संस्कृत कालिजमें सत्तर
ा मासिककी एक जगह मिल गई। यहाँ पर उनको जयनारायण तर्का-
, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, प्रेमचंद्र तर्कवागीश इत्यादि विद्वानोंके संस-
अवसर मिला। इनके पास श्यामाचरण संस्कृतमें दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र
देका अध्ययन करने लगे। फ़ारसी, अरबी और उर्दू तो वे पहले ही सीख
े। इस प्रकार उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी कई भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया।
कृत कालिजमें रहकर श्यामाचरणने बड़ी ख्याति पाई और उनको
विभागके एक अफ़सरकी सिफ़ारिशसे सदर अदालतमें जज साहबकी

न हुआ कि मधुस्वामीने जो कुछ कहा था बिल्कुल सच था । ओवासि-
राव यह जान कर मधुस्वामी पर बहुत स्नेह करने लगे । मधुस्वामी
ै नौकरीसे अवकाश पाने पर एक पाठशालामें चले जाया करते थे ।
ही दिनोंमें मधुस्वामीको अंगरेजी वर्णमालाका ज्ञान हो गया ।
धुस्वामीकी इस विद्याभिरुचिको देखकर ओवासियरने उन्हें नौकरीसे
कर एक स्कूलमें भरती करा दिया । स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर-
बाद मधुस्वामी मद्रासके एक कालिजमें भेज दिये गये । वहाँ पर मधु-
ीने बड़ा नाम पाया । वहाँके अध्यापक मधुस्वामीको उद्योगशीलता
विलक्षण बुद्धिको देखकर मुग्ध हो गये । एक निबंध लिखनेके लिए मधु-
ीको ५००) का पुरस्कार मिला । तत्पश्चात् वे ६०) मासिक पर अध्या-
नियुक्त हो गये । कुछ दिनों बाद उनको तंजोरकी कलक्टरीमें एक जगह
गई । फिर वे १५०) मासिक पर स्कूलोंके डिपुटी-इन्स्पेक्टर हो गये ।
पद पर रहकर उन्होंने शिक्षाविभागको खूब उन्नति दी और बड़ा
पाया । उन्हीं दिनोंमें मद्रास प्रान्तकी सरकारने वकालतकी परीक्षा कायम
। वकालतमें अधिक आमदनीकी संभावना देखकर मधुस्वामी कानूनका
न करने लगे । वे कानूनकी परीक्षामें पास हो गये और उन्हें मुन्सि-
ा पद मिल गया । तंजोरके जज उनके न्यायचातुर्यको देख कर
प्रसन्न हुए कि उन्होंने मुक्तकंठसे मधुस्वामीकी प्रशंसा की । कुछ
के बादही मद्रास सरकारने मधुस्वामीको डिपुटी कलक्टरके पद पर
क्त कर दिया । इस बीचमें मधुस्वामीने जर्मन-भाषा भी सीख ली ।
वर्षके बाद मधुस्वामीको मद्रासके स्मालकाजकोर्टके जजका पद मिल
। और तत्पश्चात् वे सी. आई. ई. की उपाधिसे विभूषित किये गये ।
ारने फिर उनकी कार्यकुशलता और योग्यताको देख कर उन्हें हाई-
का जज नियुक्त कर दिया । मधुस्वामीकी इतनी बड़ी उन्नतिका कारण यही
कि वे छोटेसे छोटे कामोंको भी जी लगा कर करते थे और अटूट परिश्रम
ेसे कभी मुँह न मोड़ते थे ।

बंगसाहित्यके ख्यातनामा लेखक अक्षयकुमार दत्तने धैर्यपूर्वक अविश्रान्त
श्रम करके साहित्य-सेवामें बहुत नाम पाया है । १८ वर्षकी अवस्था तक
क्षयकुमारने बहुत थोड़ी शिक्षा प्राप्त की । उस समय दफ्तरोंमें फारसीका ही

का विचित्र उदाहरण है। वह पहले फ्रांसमें रहता था परन्तु एक राज-
मामलेमें अपने देशसे निकाल दिया गया, इस कारण लंडनमें आकर
लगा। वह पहले संगतराशीका काम करता था। लंडनमें कुछ समय
ी उसे काम मिला, परन्तु फिर यह धंधा सुस्त पड़ गया। उ
र जाता रहा और उसको गरीबीकी भयंकर सूरत दिखाई देने ल
कटमें वह अपने एक मित्रके पास गया जो उसीके समान देशसे नि
गया था, परन्तु लंडनमें फ्रेंच भाषा पढ़ानेका काम करके अच्छी क
ता था। संगतराशने अपने मित्रसे पूछा कि "मैं अपने निर्वाहके
धा करूँ?" मित्रने उत्तर दिया, "अध्यापक हो जाओ!" संगत
हा, "अध्यापक हो जाऊँ? मैं? तो केवल मजदूर हूँ और प्रान्त
बोलता हूँ। तुम मेरी हँसी करते हो।" उसके मित्रने कहा
हँसी नहीं करता, किन्तु सच कहता हूँ, और मैं तुमको
देता हूँ कि तुम अध्यापक बन जाओ। तुम मेरे शिष्य हो जाओ, मैं तु
काम सिखला दूँगा।" संगतराशने उत्तर दिया, "नहीं, नहीं! यह अ
। मेरी उम्र बहुत जियादा है, इस लिए मैं कुछ नहीं पढ़ सकता–
विद्वान् बननेकी योग्यता नहीं है। मैं अध्यापक नहीं हो सकता।
चल दिया और संगतराशीका काम ढूँढ़ने लगा। वह लंडनक
अन्य प्रान्तोंमें गया और कई सौ मील घूमा, परन्तु उसका सा
निष्फल गया; उसको कहीं काम न मिला। निदान घूम फिर कर व
लौट आया और अपने मित्रसे कहने लगा कि "मैंने सर्वत्र का
न्तु कहीं न मिला। अब मैं अध्यापक होनेकी ही कोशिश करूँगा।"
वह विद्याध्ययन करनेमें लग गया और चूँकि उसकी उद्योग शक्ति
ी, समझ प्रखर थी और बुद्धि तीव्र थी, इस लिए उसने व्याकरणके
वाक्यरचनाके नियम और फ्रेंच भाषाके शब्दोंका शुद्ध उच्चारण
सीख लिया। जब उसके मित्रने, जो उसका शिक्षक था, देखा कि
दूसरोंके पढ़ानेकी अच्छी योग्यता हो गई है तब उसने एक अध्याप-
हके लिए, जो उस समय खाली हो गयी थी, उससे एक अर्जी
ी और वह जगह उसको मिल गई। इस तरह वह संगतराश
ध्यापक हो गया! जिस विद्यालयमें उसको जगह मिली वह लंड-

वे एक बढ़ईके यहाँ काम सीखने लगे और युवा-काल तक यही काम करते रहे। जब उन्हें कामसे अवकाश मिलता था तब वे कुछ न कुछ पढ़ा करते थे। उनके पास कई अँगरेजीकी किताबें थी जिनमें लैटिन भाषाके कुछ वाक्य लिखे थे। इनको इन वाक्योंके अर्थ जाननेकी उत्कंठा हुई। बँसे उन्होंने लैटिन भाषाका एक व्याकरण मोल ले लिया और लैटिन सीखना शुरू कर दिया। वे सवेरे जल्दी उठते थे और रातको देर तक काम किया करते थे। उन्होंने बढ़ईका काम सीख लेनेके पहले ही लैटिन भाषा सीख ली। एक बार ग्रीक भाषाकी एक पुस्तक उनके हाथ पड़ गई। बस उन्हें तुरन्त ही ग्रीक भाषा सीखनेका शौक हो गया। अब उन्होंने लैटिनकी कुछ पुस्तकें बेच दीं और ग्रीक भाषाका एक व्याकरण और एक कोष मोल ले लिया। उन्हें विद्याध्ययनसे बड़ा प्रेम था। इस लिए उन्होंने ग्रीक भाषा भी शीघ्र ही सीख ली। उन्हें न कोई पढ़ाने-वाला था और न उन्हें नामवरी या इनाम पानेकी आशा थी! वे केवल अपने शौकको पूरा करनेके लिए पढ़ा करते थे। उन्होंने और भी कई भाषाओंका सीखना शुरू किया; परन्तु अधिक अध्ययन करनेसे उनके स्वास्थ्यको हानि पहुँचने लगी और रातको देर तक पढ़ते रहनेसे उनकी आँखोंमें रोग हो गया। यह देखकर कुछ समयके लिए उन्होंने किताबें उठाकर रख दीं। इस बीचमें वे बढ़ईका काम बराबर करते रहे। इस धंधेमें उन्होंने कुछ तरक्की भी की और अब उनके पास कुछ धन जुड़ गया तब उन्होंने अपना विवाह भी कर लिया। उस समय उनकी उम्र २५ वर्षकी थी। उनको अब अपने कुटुम्बके पालनकी ओर ध्यान देना पड़ा, इस लिए उन्होंने साहित्यसंबंधी आनन्दको छोड़ दिया और अपनी सब पुस्तकें बेच दीं। निर्वाहके लिए वे बढ़ईका काम करते रहे। वे आजन्म यही काम करते रहते; परन्तु एक बार उनके घरमें आग लगी और उनके सब औजार जल गये। यही औजार उनके जीवनके मूलाधार थे। इस लिए उनको दारिद्र्यने फिर घेर लिया। वे इतने गरीब थे कि अब नये औजार न खरीद सकते थे! इस लिए उन्होंने लड़कोंको पढ़ाना शुरू किया, क्योंकि इस काममें सबसे कम पूँजीकी जरूरत है। यद्यपि वे कई भाषायें सीख चुके थे, तो भी उनका सामान्य बातोंका ज्ञान ऐसा दोषयुक्त था कि वे शुरू शुरूमें लड़कोंको न पढ़ा सकते थे। परन्तु वे अपनी धुनके पक्के थे, इस लिए उन्होंने फिर परिश्रम शुरू किया और इतना हिसाब

राबर्ट हालने अपने बुढ़ापेमें इटालियन भाषा सीखी थी। हम सैकड़ों मनुष्योंके नाम लिख सकते हैं जिन्होंने जियादा उम्र हो जानेपर एक नया मार्ग ग्रहण किया और सर्वथा नई विद्यायें सीख लीं। तुच्छ और आलसी आदमीके सिवाय और कोई यह न कहेगा कि " मेरी उम्र इतनी जियादा हो गई है कि मैं अब कुछ नहीं सीख सकता। "

यहाँ पर हम पहले कही हुई एक बातको फिर दुहराते हैं। वह यह कि प्रतिभाशाली मनुष्य संसारमें इतनी हलचल नहीं मचाते और न इतने अग्रसर होते हैं। जितने वे लोग जो दृढनिश्चयी होते हैं और बिना थके अटूट परिश्रम करते हैं। यद्यपि हम मानते हैं कि अनेक प्रतिभाशाली मनुष्योंने छोटी उम्रमें ही प्रौढ़ता प्राप्त कर ली है, तो भी यह बात सच है कि अकालप्रौढ़ता यह सूचित नहीं करती कि वे बड़े होकर कितनी उन्नति करेंगे। छोटी उम्रकी प्रौढ़ता कभी कभी तो मानसिक बलकी सूचक नहीं होती, किन्तु रोगकी सूचक होती है। उन बच्चोंका क्या हुआ जो छुटपनमें बड़े तेज थे? अव्वल रहनेवाले और इनाम पानेवाले लड़के कहाँ हैं? उनके जीवनोंको देखो तो तुमको मालूम होगा कि बहुधा वे लड़के जो स्कूलमें उनके नीचे रहते थे, अब उनके आगे बढ़े हुए हैं। चतुर लड़कोंको पुरस्कार मिलते हैं परन्तु ये पुरस्कार उनके लिए हमेशा लाभदायक नहीं होते। पुरस्कार चेष्टा, परिश्रम और आज्ञापालनके लिए देना चाहिए। जिस लड़केकी शक्तियाँ औरोंकी अपेक्षा हीन हों, परन्तु वह फिर भी यथाशक्ति परिश्रम करता हो, उसको सबसे अधिक उत्साहित करना चाहिए।

ऐसे अनेक मनुष्य प्रसिद्ध हो चुके हैं जो अपने बचपनमें महामूढ़ और गिने जाते थे। उनके विषयमें एक मनोहर अध्याय लिखा जा सकता है, परन्तु यहाँपर स्थानाभावके कारण सिर्फ थोड़ेसे उदाहरण दिये जाते हैं। प्रसिद्ध चित्रकार पाइट्रो डी कोरटोना बाल्यावस्थामें ऐसी स्थूल बुद्धिका था कि लोग उसे 'गधेका सिर' कहा करते थे। न्यूटन जब स्कूलमें पढ़ता था तब उसका नम्बर अपने दरजेमें सबसे नीचे रहता था। ऐडम क्लार्क जब छोटा था तब उसके पिता उसको 'शोचनीय मूढ़' कहा करते थे। प्रसिद्ध नाट्यकार शेरीडन जब छोटा था तब ऐसा मूर्ख था कि उसकी माने उसको एक अध्यापकके सुपुर्द करके कहा था—" यह ऐसा मूढ़ है

क इसका सुधार हो ही नहीं सकता।" प्रसिद्ध लेखक वाल्टर स्
चपनमें महामूढ़ था उसके अध्यापकने उसके विषयमें यह कहा
यह तो मूढ़ है और जन्म भर मूढ़ रहेगा।" चैटरटनकी माता
रू शुरूमें यही कहा करती थी कि "यह ऐसा सिड़ी है कि किसी
यका न निकलेगा।" ऐल्फाइरी कालिज छोड़ने पर भी ऐसा ही
ना रहा जैसा वह भरती होनेके समय था। परन्तु कालिज छोड़नेके
सने बहुत विद्या सीख ली और वह एक सुप्रसिद्ध विद्वान् गिना जाने
र्ड क्लाइव जिसने भारतवर्षमें अँगरेजी राज्यकी नींव डाली थी एक
ड़का था। उसके कुटुम्बवालोंने उससे अपना पीछा छुड़ानेके लिए
रतवर्ष भेज दिया था। नैपोलियन और वैलिंगटन दोनों ही लड़क
दबुद्धिके थे। उन्होंने स्कूलमें कभी ख्याति न पाई। डाक्टर कैलमर्स
क्टर कुक जब स्कूलमें पढ़ते थे तब बहुत ही मूढ़ और उपद्रवी
स्टरने इन दोनोंको यह कह कर निकाल दिया था कि "ये मूढ़ कभी
धर सकते।" मनुष्यजातिका परमहितैषी जान हव्वर्ड सात वर्ष
ूलमें पढ़ता रहा, परन्तु तब तक उसके लिए काला अक्षर भैंस
र ही रहा।

डाक्टर आरनल्डने जो कुछ लड़कोंके विषयमें कहा है वह मनुष्
षयमें भी बिलकुल सत्य है—" हम दो लड़कोंमें जो भेद देखते हैं उस
ा कारण है? उसका मुख्य कारण यही है कि उनमें उत्साहकी
यादती है। स्वाभाविक योग्यताकी कमी जियादतीसे उतना फरक
ता, जितना उत्साहकी कमी जियादतीसे पड़ जाता है। जिस लड़
ूट परिश्रम करनेकी शक्ति है उसमें उत्साहका संचार भी शीघ्र ही
ता है। जिस मूढ़ लड़केमें आग्रह और उद्योग है वह उस चतुर लड़
गे बढ़ जाता है जिसमें ये गुण नहीं होते। धीरे धीरे परन्तु निश्चित
म करनेसे सफलता अवश्य होती है। कुछ लड़कोंकी हालत बड़े होने
लकुल उल्टी हो जाती है। इसका कारण धैर्यपूर्वक परिश्रमकी कमी
यादती है। हमको यह देखकर आश्चर्य होता है कि कुछ लड़के बड़े च
ते हैं; परन्तु बड़े होनेपर वे बिलकुल साधारण समझे जाते हैं; और
ड़के ऐसे भी देखनेमें आते हैं जो बड़े गुरव होते हैं, उनसे किसी हार

ज्ञा नहीं की जा सकती और उनकी शक्तियाँ बड़ी मंद होती हैं, परन्तु धुन
धकर निरन्तर काम करते करते वे बड़े होनेपर समाजके नेता बन जाते हैं।
स पुस्तकके मूल लेखक डाक्टर सेमुएल स्माइल्स जब स्कूलमें पढ़ते थे
ब उनके दरजेमें एक महामूढ़ लड़का भी पढ़ता था। सब मास्टरोंने बारी
रीसे उसको शिक्षा देनेमें अपनी चतुराई दिखाई; परन्तु किसीको सफलता
हुई। वह पीटा गया, उसको मूर्खोंकी टोपी (Fool's Cap) पहनाई
ई, वह फुसलाया गया और समझाया गया, परन्तु उसके एक भी बात न
ई। कभी कभी तमाशा देखनेके लिए वह दरजेके सब लड़कोंके ऊपर
म नम्बरपर खड़ा कर दिया जाता था। फिर उससे और दरजेके दूसरे
ड़कोंसे सबक सुना जाता था और प्रश्न किये जाते थे; परन्तु वह कुछ भी
तर न दे सकता था; और यह देखकर बड़ी हँसी आती थी कि वह नम्बर
रसे उतरते अंतिम नम्बरपर शीघ्र ही पहुँच जाता था! उसके विषयमें
स्टरोंने यह कह दिया था कि इस मूढ़का इलाज दुनियाके परदे पर नहीं
परन्तु मंद होनेपर भी इस मूढ़में काम करनेका कुछ उत्साह था, जो
ही उम्रके साथ साथ बढ़ता चला गया। जब उसने बड़े होने पर जीवनके
कामें हाथ डाला तब वह अपने बहुतसे स्कूली साथियोंसे बढ़कर निकला
उनमेंसे अधिकांशको वह अपनेसे बहुत पीछे छोड़ गया। डाक्टर स्माइ-
ो उसके विषयमें जब अन्तिम बार खबर मिली तब वह उस नगरका,
सका जन्म-स्थान था, प्रधान मैजिस्ट्रेट था!

म ऐसे अनेक मनुष्योंके उदाहरण दे चुके हैं जिन्होंने विद्याभ्यास एवं
य सेवा करके अपनी उन्नति की है। अब हम व्यापारी वर्गमें से भी ऐसे
नुष्योंके उदाहरण देते हैं जिन्होंने स्वावलम्बन द्वारा अपनी उन्नति की
मदुलाल सरकार बाल्यकालमें परम निर्धन थे। जो कुछ इधर उधरसे
आता था उसीसे अपनी उदरपूर्ति कर लेते थे। ऐसी अवस्थाके कारण
बहुत ही थोड़ा लिखना-पढ़ना सीखा। वे ऐसे गरीब थे कि कागजके
केलेके पत्तों पर लिखा करते थे। कुछ बड़े होने पर उनको कलकत्तेमें
पया माहिककी नौकरी मिल गई। इस छोटीसी नौकरी पर रह कर भी
ळकका काम बड़ी सावधानी और ईमानदारीके साथ करते थे। उनको
मालिकका रुपया वसूल करनेके लिए कलकत्तेसे डॉयमंडहारबर पैदल जाना

पड़ता था। गर्मी, धूप, जाड़ा, मेंह उनको सब कुछ रास्तेमें सहन करना पड़ता था। उन दिनों कलकत्तेसे बाँकीपुर जाना भी बड़ा जोखिमका काम था, क्योंकि मार्गमें लुटेरोंका भय सदा लगा रहता था। एक बार कलकत्ते लौटते समय रामदुलालको मार्गमें रात हो गई। मालिकका रुपया उनके पास था। इस भयसे कहीं उस रुपयेको कोई लूट न लेवे आस पास गांवोंमें किसीके घर नहीं ठहरे। वरन् एक पेड़के नीचे गरीब मुसाफिरकी तरह पड़ रहे। उन्होंने कष्ट उठा कर सारी रात उसी पेड़के नीचे काट दी। मालिकके धनकी रक्षा करना वे अपना परम धर्म समझते थे। उनको अपने मालिकके कामके लिए जहाज पर भी जाना पड़ता था। वहाँ वे दो बार पानीमें डूबनेसे बचे। यही कर्त्तव्य परायणता और ईमानदारी रामदुलालकी भारी उन्नतिका मुख्य कारण हुई। एक घटना ऐसी हुई कि जिसके कारण रामदुलालके सारे दरिद्रका अंत हो गया। एक बार मालिकने रामदुलालको चौदह सौ रुपयां दे कर जहाज खरीदनेके लिए टाला भेजा। टालामें जलमग्न जहाजोंका नीलाम हुआ करता था। रामदुलालने अपने मालिकके यहाँ रह व्यापार संबंधी ज्ञान खूब प्राप्त कर लिया था। जलमें डूबे जहाजोंके मूल्यका अनुमान करनेमें वे बड़े सिद्धहस्त हो गये थे। जब रामदुलाल टाला पहुँचे उस समय नीलाम हो चुका था। अतएव उन्हें निराश होना पड़ा। परन्तु वहाँ पर उन्हें मालूम हुआ कि उसी दिन एक दूसरे जलमग्न जहाजका नीलाम होने वाला था। इस जहाजका बहुत कुछ हाल उन्हें पहलेसे ही मालूम था। जब नीलाम हुआ तो उस जहाजके दाम बहुत कम लगे। रामदुलाल ताड़ गये कि जहाजकी मालियत बहुत जियादाकी थी। इस लिए उन्होंने अपने मालिकसे बिना पूछे ही अपनी जोखिम पर उस जहाजको खरीद लिया। खरीदनेके बाद एक अँगरेज व्यापारी वहाँ आ पहुँचा। उसने रामदुलालसे उस जहाजको खरीदना चाहा। रामदुलालने एक लाख रुपया नफा लेकर उस जहाजको उस अँगरेजके हाथ बेच डाला। रामदुलालके मालिकको इस खरीदारीकी कुछ भी खबर न थी। परन्तु रामदुलालने लौट कर बिक्रीका सारा रुपया लाकर मालिकके सामने रख दिया और जहाज खरीदनेका सारा हाल कह सुनाया। रामदुलालके स्वामी बड़े बुद्धिमान थे और मनुष्यकी कदर करना जानते थे। इसलिए उन्होंने नफाका एक लाख रुपया स्वयं न लेकर रामदुलालको ही दे

ा। यदि रामदुलाल चाहते तो नफाका सारा रुपया चुपचाप अपने पास
रख लेते और अपने मालिकको उसकी खबर भी न देते। परन्तु उन्होंने ऐसा
किया। यह ईमानदारीका कैसा उज्ज्वल उदाहरण है! रामदुलालने मालि-
से एक लाख रुपया पाकर स्वयं व्यापार करना शुरू कर दिया। फिर क्या
, कुछ ही वर्षोंमें वे मालामाल हो गये। वे कई देशोंसे व्यापार करने लगे।
के मालसे लदे हुए जहाज दुनियाके प्रायः सभी समुद्रों पर तैरते थे।
ने धनाढ्य हो कर भी उन्होंने परिश्रम और सत्यनिष्ठाको एक दिनके लिए
न छोड़ा।

सर जमसेदजी जीजीभाईने बाल्यकालमें परम निर्धन हो कर भी व्यापारमें
श्चर्यजनक उन्नति की और बड़ा नाम पाया। उनके माता-पिता उनकी
ल्यावस्थामें ही चल बसे। वे अपने जीवनकालमें जमसेदजीका विवाह एक
पारीकी लड़कीके साथ कर गये थे। माता-पिताके मरने पर जमसेदजी
कुल निराश्रय हो गये। अतएव वे अपने श्वसुरके यहाँ जाकर रहने लगे।
पर उनको खाना-कपड़ा मिलता था और कुछ रुपये खर्चको मिलते थे।
के यहाँ रहकर उन्होंने व्यापार संबंधी बहुतसी बातें सीख लीं और बड़ी
व्ययतके साथ रह कर अपने जेब खर्चमेंसे १२०) बचा लिये। सोलह
ी उम्रमें वे एक पारसी व्यापारीके यहाँ गुमास्ता हो गये। उसी समय
मालिकके काम पर चीन जाना पड़ा। चीन जाते समय वे अपना सर्वस्व
) भी लेते गये। चीन देशमें रह कर उन्होंने अपने मालिकका काम
रिश्रम और सावधानीके साथ किया। वे समयका सदुपयोग करना खूब
थे। मालिकके कामसे जब उनको अवकाश मिलता था तब वे उस
व्यापार संबंधी अनेक बातोंको ध्यान लगा कर देखा और सीखा करते
थोड़े ही समयमें उन्होंने यह पता लगा लिया कि भारतवर्षमें पैदा होने-
किन किन मालकी खपत चीनमें होती है और ऐसे मालके व्यापारमें
नेकी संभावना है। धीरे धीरे उन्होंने चीनके बाजारकी स्थितिका
भी प्राप्त कर लिया। बम्बईमें अपने श्वसुरकी दुकान पर रह कर
जो व्यापार संबंधी ज्ञान प्राप्त किया था वह अब बहुत बढ़ गया।
मनमें अपनी पूँजीसे विदेशोंके साथ व्यापार करनेकी बड़ी प्रबल इच्छा
गई। परन्तु उनके पास इतने बड़े कामके लिए पूँजी कहाँ थी? जब

यौंकी ऐसी एक प्रकारका शोक भी हो सकती है। क्योंकि जो क
याद कर लेता है वह बहुधा उतना ही जल्द भूल जाता है; और
यह भी है कि उसको भारंड उद्योग और आग्रहके गुणोंकी उन्नति
अन्तर नहीं पड़ती, परन्तु मंदमति युवक इन गुणोंको काममें लाने
एक हो जाता है। ये गुण हरतरहकी अच्छी आदत डालनेके लिए
श्यक हैं। डेर्यौने कहा था कि "मैं जैसा हूँ वैसा मैंने अपने आप
बनाया है।" यही बात हरएक मनुष्यके विषयमें सच है। मनु
अपनेको जैसा चाहे वैसा ही बना सकता है।

इसका मतलब यह है कि जब हम स्कूल या कालिजमें पढ़ते हैं तब हम
पना सुधार मास्टरोंद्वारा उतना नहीं हो सकता जितना हम बड़े होने
ना करके स्वयं कर सकते हैं। इस लिए मातापिताको इस बातकी
नी चाहिए कि उनके बचोंकी शक्तियोंकी उन्नति उचित समयसे
नष्ट हो जाय। उनको चाहिए कि वे संतोषपूर्वक बाट देखते रहें;
पाय और शान्त दिमाग़को अपना काम करने दें और देर उनके
ये हैं। उनको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि युवक किसी
इरा शारीरिक व्यायाम करता रहे, जिससे वह खूब तन्दुरुस्त हो जा
को चाहिए कि वे युवकको आत्मोद्धारके मार्ग पर लगा दें और
द्योग और आग्रहकी आदतोंकी सावधानीके साथ वृद्धि करें। इसका
यह होगा कि अगर उसमें कुछ भी स्वाभाविक शक्ति है, तो वह
बड़ा होता जायगा त्यों त्यों ज़ियादा मज़बूतीके साथ और
सी तरह अपना सुधार करता चला जायगा।

कनेसे उतना असर नहीं होता जितना प्रत्यक्ष देख लेनेसे होता है। बच-
पनमें यह बात विशेष कर देखनेमें आती है। क्योंकि उस जमानेमें ज्ञानके
पानेका प्रधान द्वार आँख होती है। बच्चे जैसा दूसरोंको करते देखते हैं वैसा
ही स्वतः करने लगते हैं—वे विना जाने बूझे ही अनुकरण करने लगते हैं।
जिस तरह एक प्रकारके छोटे कीड़े जिस रंगकी पत्तियाँ खाते हैं उसी रंगके
हो जाते हैं, उसी तरह बच्चे अपने आसपासवाले आदमियोंके समान हो
जाते हैं। इस लिए बच्चोंको जो शिक्षा घरोंमें मिलती है वह बड़े महत्वकी
है। स्कूलोंकी शिक्षा चाहे कितनी ही उत्तम हो, परन्तु जो उदाहरण
हम अपने घरोंमें बच्चोंके सामने रखते हैं उनका प्रभाव उनके चरित्रगठनपर
पड़ता है। समाज घरमें बनता है—घर ही जातीय चरित्रका केन्द्र है।
में जैसी बातें हम सीखते हैं वैसी ही हमारी जीवनकी आदतें, नियम और
हो जाते हैं। घरोंमें ही जातिकी उत्पत्ति होती है। राष्ट्रीय भावोंका
भी घरोंमें जमता है और घरोंमें ही हम परोपकार सीखते हैं। एक
का कथन है कि " जो मनुष्य अपने घरवालोंसे प्रेम करता है वह अपने
से प्रेम करना भी सीख जाता है। " छोटेसे घरमेंसे हम प्रेमको बढ़ाते
सारे संसारमें फैला सकते हैं और संसारके सब जीवोंपर दयाभाव प्रेम-
रख सकते हैं; क्योंकि यद्यपि परोपकार घरमें शुरू होता है, परन्तु
उसका अंत नहीं हो जाता।

आचरणके संबंधमें किसी छोटी बातका उदाहरण भी कुछ कम महत्वकी
नहीं है; क्योंकि वह दूसरे मनुष्योंके जीवनोंमें भी निरंतर प्रवेश करता
है और उनके स्वभावोंको भला या बुरा बनानेमें योग देता है। इसी
के अनुसार माता-पिताकी आदतें उनके बच्चोंमें भी आ जाती हैं। बच्चे
माता-पिताके प्रेम, शासन, परिश्रम और आत्मनिरोधके कामोंको रोज
रहते हैं। इन कामोंका असर बच्चोंके जीवनमें उस समय भी पाया
है जब उनको सुनी हुई बातोंको भूले हुए बहुत काल हो चुकता है।
तक कहा जाय, कभी कभी तो माता-पिताका कोई मामूली काम या
भी बच्चोंके चरित्र पर ऐसी छाप मारता है कि वह कभी नहीं मिटती।
माता-पिताके विचार अच्छे हों, तो इसका परिणाम यह होता है कि
बच्चे कुकर्मों और कुविचारोंसे बचे रहते हैं। इस तरहसे जराजरा सी

होता है। यह दूसरी बात है कि हम उस असरको देख न सकें
बुरे काम या बुरे शब्दोंका प्रभाव भी अवश्य पड़ता है। कोई
मनुष्य भी यह नहीं कह सकता कि मेरा उदाहरण दूसरोंपर प्र
प्रभाव न डालेगा। मनुष्योंका प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता। वा
त रहता है और हमारे बीचमें फैलता रहता है।

असलमें इस लोकमें भी मानवी जीवनमें अमरत्वका अंश है। कोई
लोकमें अकेला नहीं है। वह एक ऐसी व्यवस्थाका अंश है, जिसमें
दूसरेके अधीन हैं। वह अपने कर्मोंसे मानवी कल्याणको सदैव
। देता है या घटा देता है और जिस तरह वर्तमान कालकी जड़ भू
जम जाती है और हमारे पूर्वजोंके जीवन और उदाहरण हमारे ज
बहुत कुछ प्रभाव डालते हैं, उसी तरह हम अपने रोजमर्राके
वेष्य कालकी स्थिति और रूपको बनाया करते हैं। मनुष्य एक पे
जिसके बननेमें और पकनेमें पिछली तमाम शताब्दियोंकी उन्नति
। और हम लोग, जो इस जमानेमें रहते हैं अपने कामों और उ
र आकर्षणशील प्रवाहको जारी रखते हैं जो अत्यन्त प्राचीन भूतकाल
। दूरवर्ती भविष्य कालके साथ जकड़ देगा। किसी मनुष्यके कर्म स
हीं होते। चाहे उसका शरीर मिट्टी और हवामें मिल जाय, पर
र्मोंका बुरा या भला परिणाम अवश्य होता रहेगा और आगाम
र उनका प्रभाव सदैव पड़ता रहेगा। यह बात बड़ी महत्वपूर्ण औ
; क्योंकि इसीके कारण मनुष्यको अपनी जिम्मेदारियोंका खयाल
और कुकर्मोंका भय रहता है। हरएक मनुष्यका कर्तव्य है कि
जीवनको ऐसा बनावे कि उसका प्रभाव उसकी संतान पर अच्छा

हरएक काम जो हम करते या देखते हैं और हरएक शब्द जो
या सुनते हैं उसमें कुछ ऐसी शक्ति होती है कि वह केवल हमारे
भावी जीवनमें परिवर्तन नहीं करती, किन्तु संपूर्ण समाज पर अप
डालती है। बात यह है कि हम इस शक्तिको अपने बच्चों मित्रों औ
पर तरह तरहसे प्रभाव डालते हुए बहुधा देख नहीं पाते;
शक्ति मौजूद जरूर रहती है और सदैव अपना काम किया करती
कारण है कि हमको दूसरोंके सम्मुख अच्छा उदाहरण रखना

अच्छे उदाहरणसे दूसरोंको शिक्षा मिलती है और गरीबसे गरं
छोटेसे छोटा आदमी भी ऐसी शिक्षा दूसरोंको दे सकता है
मनुष्य ऐसा नहीं है जो इस साधारण किन्तु अमूल्य शिक्षाके लिए
ऋणी न हो। इस प्रकार दरिद्रसे दरिद्र मनुष्य भी उपकारी बन स
क्योंकि प्रकाशवान् वस्तु घाटीमें रक्खे जानेसे भी वैसा ही प्रकार
जैसा पर्वतपर रक्खे जानेसे। मनुष्य चाहे झोपड़ियोंमें रहे चाहे महल
गाँवोंमें रहे चाहे बड़े नगरोंकी तंग गलियोंमें, और उसकी हा
कितनी ही खराब क्यों न मालूम हो परन्तु वह दूसरोंके लिए
सकता है। जैसे कोई लखपती आदमी जी लगाकर किसी अच्
लिए काम कर सकता है उसी तरह एक गरीब किसान भी, जो
जमीन जोत बोकर अपना निर्वाह करता है, काम कर सकता है।
बहुत मामूली शिल्पशाला भी एक ओर परिश्रम, विज्ञान और स
शिक्षा दे सकती है और दूसरी ओर आलस्य मूर्खता और दुराचार भी
सकती है। मनुष्य इन दोनों तरहकी शिक्षाओंमेंसे कौनसी शि
करेगा, यह उसी पर निर्भर है और इस बात पर भी निर्भर है कि
अवसरोंसे किस प्रकार लाभ उठाता है जो उसको अपने कल्याण कर
मिलते हैं।

अपने बच्चोंके लिए और संसारके लिए उत्तम जीवन और सच
उदाहरण छोड़ मरना कोई छोटी चीज नहीं है। इससे धर्मपरायणता
त्तम शिक्षा मिलती है और पापका अत्यन्त कठोर तिरस्कार होता
त्तम सम्पत्तिका आधार भी इसीपर है। वह धन्य है कि जो यह कह
कि "मुझे इस बातका बड़ा संतोष है कि मुझे अपने माता-पिता
कारण कभी लज्जित न होना पड़ा और मेरे चरित्रपर मेरे माता पिता
शोक करनेका अवसर न मिला।"

इतना ही काफी नहीं है कि हम दूसरोंसे सिर्फ यह कह दिय
"ऐसा करो।" नहीं, हमको वह काम स्वयं करके दिखलाना
मिसेज चिसहोमने अपनी सफलताका जो गुप्त रहस्य बतला
सबोंके विषयमें ठीक है। उन्होंने कहा था कि "अगर हम चा
...

जेसे कुछ नहीं होता।" जो वक्ता केवल बोलना जानता है वह किस मका ? यदि मिसेस विसहोम व्याख्यान देनेपर ही संतोष कर लेतीं, तो कुछ काम न कर पातीं; परन्तु जब लोगोंने देखा कि वे क्या कर रही हैं र उन्होंने कितना काम कर लिया है, तब वे उनकी बातें मानने लगे और की सहायता भी करने लगे। अतः अत्यन्त उपकारी कार्यकर्ता वह नहीं जो सुवक्ता हो अथवा जिसके विचार ऊँचे हों, किन्तु वह है जो अत्यन्त काम करता हो।

जो मनुष्य सच्चे दिलसे काम करते हैं और कर्मवीर हैं वे गरीब होनेपर अच्छे कामोंमें बहुत योग दे सकते हैं। यदि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर -शिक्षाके लिए और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र हिन्दी भाषाके प्रचारके ए केवल बातचीत ही करते रहते तो वे कुछ न कर पाते; परन्तु उन्होंने म किया और वे स्वयं काम करने लग गये। काम करनेके सिवाय उन्हें र कुछ धुन न थी। उनके उदाहरणोंका समाज पर बहुत असर हुआ।

सदाचारकी शिक्षा बहुत कुछ आदर्श मनुष्योंपर ही निर्भर है। हमारे पर पड़ोसियोंके चरित्र, शिष्टाचार, स्वभाव और विचारोंका बहुत प्रभाव ता है। उत्तम नियमोंसे लाभ होता है, परन्तु उत्तम आदर्श मनुष्योंसे त जियादा लाभ होता है। क्योंकि आदर्श मनुष्योंसे हम कार्यरूपमें क्षा पाते हैं—उनमें हम बुद्धिको काम करते हुए देखते हैं। उत्तम उप-शके साथ बुरे उदाहरणका होना ऐसा है जैसे एक हाथसे मकान बनाना र दूसरेसे गिराते जाना। अतएव मित्रोंको बड़ी सावधानीके साथ चुनना चाहिए। खासकर युवावस्थामें तो इस बातका बहुत खयाल रखना चाहिए। युवकोंमें एक ऐसी आकर्षण-शक्ति होती है जो उनको एक दूसरेके समान बनाती रहती है। मिस्टर ऐजवर्थको पक्का विश्वास था कि सहानुभवके कारण युवक बिना इच्छा किये हुए ही अपने साथियोंके स्वभावका अनुकरण किया करते हैं। वे कहा करते थे कि "युवकोंको यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रक्खें।" उनका सिद्धान्त था कि "या तो सर्वो-त्तम करो, नहीं तो संगति ही न करो।" लॉर्ड कालिंगवुडने अपने एक युवको लिखा था कि "इस बातको गिरहमें बाँध लो कि बुरे आदमियोंका साथ करनेसे अकेले रहना बहुत अच्छा है। ऐसे मनुष्योंका साथ करो जो

तुम्हारे समान हों या तुमसे अच्छे हों; क्योंकि यह नियम है कि मनु
साथी जैसे होते हैं वैसा ही वह स्वयं हो जाता है।" चित्रकार सर पे
टर्लीका यह नियम था कि वे जहाँतक हो सकता था किसी खराब तस
को न देखते थे। उनका इस प्रकारका विश्वास था कि उन्होंने अगर
किसी खराब तसवीरको देखा तभी उनकी पेन्सिलमें उसका असर आ
और वे स्वयं अच्छी तसवीर न बना सकें। इसी तरहसे जो मनुष्य अच्छे
आदमियोंको देखता रहेगा और उनका साथ किया करेगा, वह धीरे
अवश्य उन्हींके समान हो जायगा।

अतएव युवकोंको भले मानसोंकी संगति करनी चाहिए और अपनेसे
अधिक ऊँचे आदर्शोंपर पहुँचनेकी चेष्टा करनी चाहिए। फ्रान्सिस हार्न
महानुभाव और बुद्धिमान् मनुष्योंके समागमसे जो लाभ हुआ उसके
धमें उन्होंने कहा था कि "मैं निधड़क कह सकता हूँ कि मैंने जि
पुस्तकें पढ़ी हैं उनसे मेरी मानसिक उन्नति उतनी नहीं हुई है जितनी
महात्माओंके द्वारा हुई है।"

सत्संगतिसे कल्याण हुए बिना कभी नहीं रहता। जिस तरह र
चलनेवालोंके कपड़ोंमें रास्तेके पुष्पोंकी सुगंध आ जाती है उसी तरह
संगति करनेसे हम महात्माओंका आशीर्वाद पाते हैं। [illegible]
वर्मा रायबहादुरको जो लोग जानते थे उन्होंने कहा है कि वे अपने मि
वालोंपर बड़ा लाभदायक प्रभाव डालते थे। यही बात प्रायः बड़ोंके
विषयमें भी कही जाती है। बहुतोंने उनसे मिलकर पहले पहल अपनी
करना सीखा—उन लोगोंने समझा कि हम क्या हैं और हमको क्या
चाहिए। मिस्टर हेयने उनके संबंधमें कहा है कि "उन महापुरुषके
समागम होनेसे यह असंभव था कि मनुष्यमें प्रेरणा न आ जाय और
अपने साधारण हौसलेको छोड़कर बड़े बड़े उद्देश्योंके क्षेत्रमें न पहुँच ज
हैं जब कभी उनके पास जाता था तभी इस बातको अनुभव करता था
महात्माओंका प्रभाव कैसा, ही पड़ता है। उनकी संगतिसे दूसरे कि
स्वभाव ऊँचे हो जाते हैं। वे जैसा अनुभव करते हैं वैसा ही हम भी अनु
करने लगते हैं और हमारे विचार उन्हींके विचारोंके समान हो जाते
... करने लगते हैं।

इसी नियमके अनुसार शिल्पकार भी अपनेसे अधिक चतुर शिल्पकारको देख कर उत्साहित होते हैं। हिनडेल्ह बाजा बजानेमें बड़ा चतुर था। हाइडनकी प्रतिभाको पहले पहल उसीने उत्तेजित किया था। जब हाइडनने हिनडेल्को बाजा बजाते हुए देखा तब उसे तुरन्त ही नये राग रागनियाँ निकालनेका शौक पैदा हो गया। हाइड्नने लिखा है कि "यदि यह घटना न हुई होती, तो मैं अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'क्रिएशन' भी कदापि न लिख सकता।" उसने हैनडेल्के संबंधमें कहा था कि "वह जब चाहे तभी अपने बाजेमें बिजलीकासा असर पैदा कर सकता है। उसका एक सुर भी ऐसा नहीं है जो जोश पैदा न करे।"

वीरोंका उदाहरण कायरोंको उत्साहित करता है; क्योंकि उनकी मौजूदगी रगोंमें जोश पैदा कर देती है। इसीके कारण साधारण मनुष्य भी वीरोंके आधिपत्यमें रहकर वीरताके आश्चर्यजनक कामकर डालते हैं। वीरोंके नामोंका स्मरण मात्र ही तुरहीके शब्दके समान मनुष्योंके खूनमें जोश पैदा कर देता है। वीरवर ज़िसकाने अपनी खाल बोहीमियावालोंको इसलिए दे दी था कि उनकी वीरताको उत्तेजित करनेके लिए वह खाल ढोलके काममें लाई जाय। जब इपिरसका राजकुमार सिकंदरबेग मरा तब तुर्कोंने उसकी हड्डियोंको इस लिए ले लेना चाहा कि वे उसकी हड्डियोंका एक एक टुकड़ा अपने गलेमें लटका लें। तुर्कोंको विश्वास था कि ऐसा करनेसे वे उस वीरताका कुछ अंश प्राप्त कर लेंगे जो सिकंदर बेगने अपने जीवनमें प्रकट की और उन्होंने युद्धमें देखी थी।

जीवनचरितोंका पढ़ना खासकर इस लिए उपयोगी है कि उनमें सच्चरित्रताके बहुत उत्तम उदाहरण होते हैं। जब हम अपने महान् पूर्वजोंका हाल पढ़ते हैं तब हमारे ऊपर उनका ऐसा प्रभाव पड़ता है कि मानों वे अब भी जीवित हैं। उनके किये हुए काम नष्ट नहीं हो सकते। वे हमारे ऊपर बड़ा प्रभाव डालते हैं। उनके कामोंका कुछ ऐसा प्रभाव बाकी रहता है कि हमको यही मालूम होता है कि हमारे पूर्वज अब भी हमारे साथ उठते बैठते हैं। ऐसे उदाहरण हमारे लिए कल्याणकारी हैं। हम उन उदाहरणोंका अध्ययन कर सकते हैं, उनकी प्रशंसा कर सकते हैं और उनका अनुकरण कर सकते हैं। वास्तवमें जिस मनुष्यका जीवनचरित श्रेष्ठ होता है वह संसारके

तुम्हारे समान हों या तुमसे अच्छे हों; क्योंकि यह नियम है कि मनुष्य
साथी जैसे होते हैं वैसा ही वह स्वयं हो जाता है।" चित्रकार सर पी
लैलीका यह नियम था कि वे जहाँतक हो सकता था किसी खराब तस्वी
को न देखते थे। उनका इस प्रकारका विश्वास था कि उन्होंने जब क
किसी खराब तसवीरको देखा तभी उनकी पैन्सिलमें उसका असर आ
और वे स्वयं अच्छी तस्वीर न बना सके। इसी तरहसे जो मनुष्य ख़राब
आदमियोंको देखता रहेगा और उनका साथ किया करेगा, वह धीरे धी
अवश्य उन्हींके समान हो जायगा।

अतएव युवकोंको भले मानसोंकी संगति करनी चाहिए और अपने आप
अधिक ऊँचे आदर्शोंपर पहुँचनेकी चेष्टा करनी चाहिए। फ्रान्सिस हार्नर
महानुभाव और बुद्धिमान् मनुष्योंके समागमसे जो लाभ हुआ उसके सं
धमें उन्होंने कहा था कि "मैं निधड़क कह सकता हूँ कि मैंने जितनी
पुस्तकें पढ़ी हैं उनसे मेरी मानसिक उन्नति उतनी नहीं हुई है जितनी इ
महात्माओंके द्वारा हुई है।"

सत्संगतिसे कल्याण हुए बिना कभी नहीं रहता। जिस तरह रास्ता
चलनेवालोंके कपड़ोंमें रास्तेके फूलोंकी सुगंध आ जाती है उसी तरह सत्सं
गति करनेसे हम महात्माओंका आशीर्वाद पाते हैं। मुन्शी गंगाप्रसाद
वर्मा रायबहादुरको जो लोग जानते थे उन्होंने कहा है कि वे अपने मिलने-
वालोंपर बड़ा लाभदायक प्रभाव डालते थे। यही बात जान स्टर्लिंगके
विषयमें भी कही जाती है। बहुतोंने उनसे मिलकर पहले पहल अच्छे
करना सीखा—उन लोगोंने समझा कि हम क्या हैं और हमको क्या होना
चाहिए। मिस्टर ट्रेंचने उनके संबंधमें कहा है कि "इस महात्माके साथ
समागम होनेसे यह असंभव था कि मनुष्यमें श्रेष्ठता न आ जाय और वह
अपने साधारण उद्देशोंको छोड़कर बड़े बड़े उद्देशोंके फेरमें न पड़ जाय।
मैं जब कभी उनके पास जाता था तभी इस बातको अनुभव करता था।"
महात्माओंका प्रभाव ऐसा ही पड़ता है। उनकी संगतिसे हमारे विचार
स्वतः ऊँचे हो जाते हैं। वे जैसा अनुभव करते हैं वैसा ही हम भी अनुभव
करने लगते हैं और हमारे विचार उन्हींके विचारोंके समान हो जाते हैं।
मनुष्योंके परस्पर एक दूसरेपर ऐसा ही प्रभाव डालते रहते हैं।

इसी नियमके अनुसार शिल्पकार भी अपनेसे अधिक चतुर शिल्पकारको देख कर उत्साहित होते हैं। हैनडेल बाजा बजानेमें बड़ा चतुर था। हाइडनकी प्रतिभाको पहले पहल उसीने उत्तेजित किया था। जब हाइडनने हैनडेलको बाजा बजाते हुए देखा तब उसे तुरन्त ही नये राग रागनियाँ निकालनेका शौक पैदा हो गया। हाइड्नने लिखा है कि "यदि यह घटना न हुई होती, तो मैं अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'क्रिएशन' भी कदापि न लिख सकता।" उसने हैनडेलके संबंधमें कहा था कि "वह जब चाहे तभी अपने बाजेमें बिजलीकासा असर पैदा कर सकता है। उसका एक सुर भी ऐसा नहीं है जो जोश पैदा न करे।"

वीरोंका उदाहरण कायरोंको उत्साहित करता है; क्योंकि उनकी मौजूदगी रगोंमें जोश पैदा कर देती है। इसीके कारण साधारण मनुष्य भी वीरोंके आधिपत्यमें रहकर वीरताके आश्चर्यजनक कामकर डालते हैं। वीरोंके कामोंका स्मरण मात्र ही तुरहीके शब्दके समान मनुष्योंके खूनमें जोश पैदा कर देता है। बीस्कर जिसका अपनी खाल बोहीमिआवालोंको इसलिए दे मरा था कि उनकी वीरताको उत्तेजित करनेके लिए वह खाल ढोलके काममें लाई जाय। जब इपिरसका राजकुमार सिकंदरबेग मरा तब तुर्कोंने उसकी हड्डियोंको इस लिए ले लेना चाहा कि वे उसकी हड्डियोंका एक एक टुकड़ा अपने गलेमें लटका लें। तुर्कोंको विश्वास था कि ऐसा करनेसे वे उस वीरताका कुछ अंश प्राप्त कर लेंगे जो सिकंदर बेगने अपने जीवनमें प्रकट की थी और उन्होंने युद्धमें देखी थी।

जीवनचरितोंका पढ़ना खासकर इस लिए उपयोगी है कि उनमें सच्चरित्रताके बहुत उत्तम उदाहरण होते हैं। जब हम अपने महान् पूर्वजोंका हाल पढ़ते हैं तब हमारे ऊपर उनका ऐसा प्रभाव पड़ता है कि मानों वे अब भी जीवित हैं। उनके किये हुए काम नष्ट नहीं हो सकते। वे हमारे ऊपर बड़ा प्रभाव डालते हैं। उनके कामोंका कुछ ऐसा प्रभाव बाकी रहता है कि हमको यही मालूम होता है कि हमारे पूर्वज अब भी हमारे साथ उठते बैठते हैं। उनके उदाहरण हमारे लिए कल्याणकारी हैं। हम उन उदाहरणोंका अध्ययन कर सकते हैं, उनकी प्रशंसा कर सकते हैं और उनका अनुकरण कर सकते हैं। वास्तवमें जिस मनुष्यका जीवनचरित श्रेष्ठ होता है वह संततिके

उसको तुरन्त ही अनुभव होता था कि यहाँपर कोई बड़ा काम बहुत साथ हो रहा है। उस मंडलीके हरएक शिष्यको अनुभव होता था कि मेरे ल यहाँपर काम मौजूद है और उस कामको करना मेरा कर्तव्य है; मेरा सुख उसीपर निर्भर है। इस तरह वहाँ प्रत्येक युवकमें काम करनेका उत्साह पैद हो जाता था। उसको यह जानकर बड़ी खुशी होती थी कि मैं भी कुछ का करके दूसरोंका उपकार कर सकता हूँ और इसलिए मेरा जीवन आनन्दम हो सकता है। उसको अपने शिक्षक (डाक्टर आर्नल्ड)से प्रेम हो जात था और वह उनका आदर करता था, क्योंकि डाक्टर आर्नल्ड उसको जीव नकी कदर करना और आत्म-सम्मान करना सिखलाते थे और यह बतला थे कि संसारमें रहकर उसको क्या काम करना चाहिए और उसके जीवनक क्या उद्देश होना चाहिए। आर्नल्डके विचारोंमें संकीर्णता न थी। उन विचार बड़े उदार और सच्चे थे। वे हरतरहके कामकी कदर करना जानते थे और किसी भी कामको बुरा न समझते थे। वे समाजके लिए और पृथ पृथक् मनुष्यके लिए हरएक कामकी उपयोगिताको खूब समझते थे आर्नल्डने जनसेवाके लिए बहुतसे मनुष्योंको तैयार किया था। उनमें एक महाशय भारतवर्षमें भी आये थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें अपने पूज्य शिक्षकके विषयमें यह लिखा था:—"उन्होंने मेरे ऊपर जो प्रभाव डाला है उसके बड़े स्थायी और महत्वपूर्ण परिणाम हुए हैं। उस प्रभावको मैं भार तवर्षमें भी अनुभव करता हूँ; इससे अधिक और क्या लिखूँ!"

जो मनुष्य सच्चे दिलसे और उत्साहके साथ परिश्रम करता है वह अपने पड़ोसियों और अधीनोंपर बड़ा अच्छा प्रभाव डालता है और बहुत कुछ स्वदेशसेवा कर सकता है। इस बातका उदाहरण सर जान सिंक्लेरके जीव नसे बढ़कर शायद ही कहीं मिल सके। सर जान सिंक्लेरके विषयमें एक महाशयने कहा है कि "उनके बराबर बिना थके हुए परिश्रम करने वाला मनुष्य समस्त यूरोपमें कोई न था।" सर जान सिंक्लेर एक ज़मींदार थे। उनकी ज़मींदारी स्काटलेण्डके एक ऐसे जिलेमें थी जिसमें सभ्यताकी हवा भी न पहुँची थी। वह जिला समुद्रके किनारे था और उसमें जंगल पदार्थोंकी भरमार थी। जब सर जान सिंक्लेर सोलह वर्षके हुए तब पिताका देहान्त हो गया; इस लिए उनको छोटी उमरसे ही अपनी

मीलोंका प्रबंध करना पड़ा। जब वे अठारह वर्षके हुए तब उन्होंने अपनी मीरासीकी उन्नति करने पर कमर कसी और अंतमें वह इस सीमापर पहुँच ई कि सारे स्काटलेण्डका सुधार उसीके प्रभावसे हो गया। उस समय खेतोंकी बहुत ही बुरी दशा थी। न खेतोंके चारों तरफ मेंड़ बनाई जाती है और न सिंचाईका ही कुछ ठीक प्रबंध था। छोटे छोटे किसान ऐसे दरिद्र कि वे एक घोड़ा भी बड़ी कठिनाईसे रख सकते थे। मेहनतका काम ज्यादातर स्त्रियाँ करती थीं और वे ही बोझा ढोनेका काम करती थीं। यदि किसी किसानका घोड़ा मर जाता था अथवा खो जाता था, तो वह प्रायः किसी स्त्रीसे विवाह कर लेता था; क्योंकि स्त्री सस्ती पड़ती थी और घोड़ेका काम देती थी। उस जिलेमें न तो सड़कें थीं और न पुल; नदियाँ पार करनेके लिए चरवाहोंको अपने पशुओं सहित नदियोंमें तैरना पड़ता था। उस जिलेमें आने जानेके लिए जो खास रास्ता था वह एक ऊँचे पहाड़ पर होकर था। यह रास्ता पहाड़ पर खड़ा चला गया था। इसलिए चढ़नेमें बहुत मेहनत पड़ती थी और नीचे समुद्र लहरें मारता था। यद्यपि अभी सर जान सिंक्लेरने युवावस्थामें ही कदम रक्खा था, तो भी उन्होंने पहाड़ पर एक नई सड़क बनानेका संकल्प कर लिया। कुछ जमींदारोंका ख्याल था कि यह काम नहीं हो सकता और इस लिए वे लोग इस कामसे नफरत करते थे; परन्तु सर जानने स्वयं उस सड़कके लिए पहाड़ पर चिह्न बनाये और उन्होंने एक दिन सवेरे लगभग १२०० मजदूर इकट्ठे करके उनको ही एक साथ काम पर लगा दिया। वे मजदूरोंके कामकी देख-भाल स्वयं करने लगे और उनको अपनी मौजूदगी और अपनी मेहनतसे उत्साहित करने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि रात होनेसे पहले ही पहले वह रास्ता, जो बड़ा भयानक समझा जाता था और छः मील लम्बा था, गाड़ियोंके आने जानेके लायक हो गया—मानों यह सब काम देखते ही देखते जादूसे हो गया। इस काममें सर जानने विचित्र उत्साह दिखलाया और मजदूरोंसे बड़ी उत्तम रीतिसे काम लिया। अतएव इस उदाहरणका आसपासके रहनेवालोंपर अत्यन्त लाभदायक प्रभाव पड़े बिना न रहा। इसके बाद सर जानने और भी कोई सड़कें बनवाईं, मिलें स्थापित किये, पुल बनवाये और पड़ती जमीनमें खेती करना शुरू कर दिया। उन्होंने खेती करनेके नये नये और उत्तम

कर बड़े खुश हुए कि सर जान जनसेवाके लिए धैर्यपूर्वक कितना उद्योग हैं। उन्होंने सर जानको बुलाकर कहा कि "आप जो बात चाहें उसीमें पकी सहायता करनेको तैयार हूँ।" यदि और कोई होता तो इस वह अपनी उन्नति या अपने लाभकी इच्छा प्रगट करता; परन्तु सर जानने स्वभावके अनुसार उत्तर दिया कि "मैं अपने लिए कोई अनुग्रह नहीं ा। मुझे तो सबसे ज़ियादा खुशी इस बातमें है कि आप एक कृषि- जातीय परिषद् स्थापित करनेमें मुझे सहायता दें।" पिटने इस ने बाती कह दी कि ऐसा परिषद् कभी स्थापित नहीं हो सकता; परन्तु उनने कठिन परिश्रम करके जनसाधारणका ध्यान इस ओर आकर्षित और राजसभाके अधिकांश सदस्योंको अपने पक्षमें कर लिया। अन्तमें न इस परिषद्के स्थापित करनेमें सफल हुए और वे स्वयं उसके सभा- नियत किये गये। इस परिषद्से कितना लाभ हुआ इसके लिखनेकी ज़रूरत नहीं है, परन्तु उससे कृषिसंबंधी ऐसा जोश फैला कि करोड़ों ज़मीन जो पहले बंजर पड़ी थी उपजाऊ बना ली गई।

आन जिस कामको हाथमें लेते थे उसमें स्वयं उत्साह दिखाते थे बेकार मनुष्योंमें जागृति पैदा होती थी, आलसी मनुष्योंमें जोश ोता था और आशायुक्त मनुष्योंमें उत्साह पैदा होता था। वे और साथ शुरू भी काम किया करते थे। एक बार जब यह खबर लगी सवाले इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेवाले हैं तब सर जानने मिस्टर कहा कि "मैं अपने ज़िलेमेंसे एक अच्छी सेना तैयार करूँगा है कि आप उसे अवश्य स्वीकार करेंगे।" इसके बाद सर जानने आदमियोंकी एक पलटन तयार की। थोड़े ही समयमें इस पलटनमें सैनिक हो गये और यह स्वयं-सेवकोंकी अति उत्तम सेना समझी गी। इस पलटनके सैनिकोंमें सर जानके ही समान देशभक्तिका भाव था। सर जानने कई तरहके काम अपने हाथमें ले रक्खे थे, परन्तु ... उनको पुस्तकें लिखनेका समय मिल जाता था। इन पुस्तकोंसे उन्होंने बड़ा यश लाभ किया। उन्होंने जिस विषयपर पुस्तक लिखी वह उस विषयकी सर्वोत्तम पुस्तक समझी जाने लगी। उनकी एक पुस्तक ११ ज़िल्दोंमें समाप्त हुई। इस पुस्तकमें स्काटलैण्डके निवासियोंकी जन-संख्या और पेशे

इत्यादिका संपूर्ण विवरण दिया हुआ है। इस पुस्तकके लिखनेमें सर जा लगभग आठ वर्षतक कठिन परिश्रम करना पड़ा और उसके संबंधमें हजार चिट्ठियाँ लिखनी पड़ीं। उन्होंने यह पुस्तक केवल देश-सेवाके लिखी। इस पुस्तकके लिखनेसे उनकी नामवरी तो अवश्य हुई, परन्तु सिवाय उनको और कोई निजी लाभ न हुआ। पुस्तककी बिक्रीसे जो दनी हुई वह सब उन्होंने धर्मप्रचारके लिए एक सभाको दे दी। इस कके प्रकाशनसे सर्वसाधारणको बहुत लाभ हुआ; क्योंकि उसकी सहाय स्काटलैण्डमें कृषि-शिक्षा इत्यादिके संबंधमें अनेक सुधार किये गये।

सर जानने एकबार एक संकटके समयमें व्यापारियोंकी बड़ी सहायता जिससे उनकी कार्यकुशलता और उत्साहका अच्छा परिचय मिलता है। १७८३ ईसवीमें युद्धके कारण व्यापारका काम ऐसा बंद हुआ कि सौदागरोंके दिवाले निकल गये और मैनचैस्टर और ग्लासगोकी बहुत सी बड़ी कोठियों (माल्गोदामों) का काम चौपट होने लगा। इसका क यह न था कि उनके पास माल न हो, किन्तु युद्धके कारण व्यापारके सब बंद हो रहे थे। ऐसी हालतमें मजदूरोंके ऊपर बड़ी भारी विपत्तिका अनिवार्य था। सर जानने राज-सभामें प्रस्ताव किया कि पचास लाख (साढ़े सात करोड़ रुपये) के नोट तुरन्त ही ऐसे सौदागरोंको उधार दे जायँ जो जमानत दे सकते हैं। यह प्रस्ताव पास हो गया और यह भी स्वीकार कर ली गई कि सर जान और कुछ सौदागर इस कामको हाथमें ले लें। उस दिन इस प्रस्तावके पास होते होते रात हो गई और दिन सर जानने यह समझ कर कि सरकारी कामोंमें देर लगा करती है नगरके सेठोंसे सवा दस लाख रुपया अपनी जमानत पर कर्ज लेकर दिन डाकको उन सौदागरोंके पास भेज दिया जिनको सहायता की जल्दी जरूरत थी। पिटको इस बातकी क्या खबर थी? उन्होंने दूसरे राजसभामें सर जानसे मिलकर बड़ा खेद प्रगट किया और कहा कि "रुपये जितनी जल्दी जरूरत है उतनी जल्दी इकट्ठा नहीं हो सकता और अभी दिनों तक ठहरना पड़ेगा।" सर जानने खुशीके साथ जवाब दिया कि "ह तो यहाँसे आज ही डाकको रवाना कर दिया गया!" इस बातको सुन पिट ऐसे चौंके कि मानों सर जानने उनके छुरी भोंक दी हो। सर जान म

तक इसी तरह प्रसन्नता और उत्साहके साथ उपयोगी काम करते रहे और अपने कुटुम्ब और देशके लिए बहुत अच्छा उदाहरण छोड़ गये। दूसरोंके लिए भलाई करनेसे उनका भी कल्याण हुआ। यद्यपि उनको धन नहीं मिला; क्योंकि वे ऐसे उदारचित्त थे कि उन्होंने अपनी निजी सम्पत्तिमेंसे भी देश-हितके लिए बहुत सा रुपया खर्च कर डाला था। किन्तु उनको सुख, आत्म-सन्तोष और शान्ति मिली जो धनसे भी बढ़कर होती है। वे बड़े स्वदेशभक्त थे और उनमें काम करनेकी विचित्र शक्तियाँ थीं। यद्यपि वे देशसेवामें लगे रहते थे तो भी उन्होंने अपने कुटुम्बकी ओरसे अपनी आँख न फेरी। उन्होंने अपने पुत्र और पुत्रियोंको खूब शिक्षा दी जिससे उन्होंने भी बहुत परोपकार किया और बड़ा नाम कमाया।

बारहवाँ अध्याय।

सदाचार और सुजनता।

विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।
परलोके धनं धर्म्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्[1]॥—सुभाषितावलिः।

हरएक बात—जैसे हमारी रक्षा, जातिकी प्रतिष्ठा, प्रत्येक मनुष्यका गौरव एक एक मनुष्यके चरित्र प्रभाव पर अवलम्बित है।...जो मनुष्य किसी अच्छे पद पर पहुँचकर यह भूल जाता है कि मैं सज्जन हूँ वह देशको बड़ी हानि पहुँचाता है। निर्दोष जीवनवाले दश मनुष्य देशको जितना लाभ पहुँचा सकते हैं वह अकेला उस लाभसे अधिक हानि पहुँचाता है।—लार्ड स्टेन्ले।

चरित्र मनुष्यका सर्वस्व है। मनुष्यके अधिकारमें जितनी चीजें हैं उनमें सबसे बढ़कर चरित्र है। सदाचार एक तरहका पद है। सदाचारी मनुष्यके लोग शुभचिन्तक होते हैं। मनुष्यकी दशा चाहे कैसी भी हो, परन्तु सदाचार उस दशाको गौरववान् बना देता है। सदाचारमें धनसे भी

[1] विद्या परदेशमें धन है, बुद्धि आपत्तिमें धन है, धर्म परलोकका धन है, पर चरित्र सब जगह धनका काम देता है।

सुन कर सिकन्दरने पोरसको क्षमा कर दिया और उसका सारा जीता हुआ राज्य फेर दिया। आपत्तिके समयमें सत्यशील मनुष्यका चरित्र अत्यन्त तेजके साथ प्रकाशित होता है और जब कोई भी चीज काम नहीं आती तब वह अपनी सत्यपरता और साहसके बलपर खड़ा रहता है।

लार्ड इर्सकिनके विचार बड़े ही स्वतंत्र थे। वे जिन चरित्रके नियमोंके अनुसार चलते थे वे ऐसे अच्छे हैं कि उनको हर एक युवकको अपने हृदय पर अंकित कर लेना चाहिए। वे कहा करते थे कि "मुझे बचपनमें [illegible] पहले पहल यही सीखा था कि मैं अपने भले बुरे समझानेवाले अंतःकरणकी आज्ञाके अनुसार कर्तव्यपालन करूं और अपने कामोंके फलको परमात्मा पर छोड़ दूं। मैं इस उपदेशको जीवनपर्यंत याद रक्खूंगा और सदैव इसीके अनुसार चलूँगा। मैंने अब तक इसी उपदेशके अनुसार काम किया है। मुझे कभी यह शिकायत करनेका मौका नहीं मिला कि इस उपदेशके अनुसार चलनेसे मुझे कोई लौकिक हानि हुई है; बल्कि इस उपदेशके अनुसार चलनेसे मुझे उन्नति और धनकी प्राप्ति हुई है और मैं अपने बच्चोंको भी इसी मार्गपर चलनेकी शिक्षा दूंगा।"

जीवनका एक सबसे बड़ा उद्देश यह है कि मनुष्य अपने चरित्रको अच्छा बनावे। इस उद्देशकी प्राप्तिके लिए प्रयत्न करनेसे ही मनुष्यमें उत्साह पैदा हो जायगा और मनुष्यत्वकी महत्ताको वह ज्यों ज्यों समझता जायगा त्यों त्यों उसका उत्साह सजीव और दृढ़ होता जायगा। जीवनका उद्देश ऊँचा होना चाहिए, चाहे हम वहाँ तक पहुँच न सकें। मिस्टर डिजरायलीके [illegible] है कि "जो युवक ऊपरकी तरफ न देखेगा वह नीचे देखने लगेगा। और जो आत्मा ऊँचे विचारोंमें आनन्द नहीं पाता वह नीचे विचारोंमें मग्न हुए बिना नहीं रह सकता।" अर्थात् जो मनुष्य ऊँचा उद्देश नहीं रखता वह अवश्य [illegible] नीचा हो जाता है। जार्ज हर्बर्टने कैसी बुद्धिमानीकी बात कही है— "तुम ठीक तरह व्यवहार करो और अपने उद्देश ऊँचे रक्खो। ऐसा करोगे [illegible] नम्र, निःस्वार्थ और उदार [illegible] हो जाओगे। [illegible] जो मनुष्य आसमानको लक्ष्य करके निशाना मारता है [illegible] वह उस मनुष्यसे बहुत ऊँचा जाता है जो वृक्षको निशाना बना कर [illegible]।" [illegible] मनुष्यके जीवनका उद्देश ऊँचा होता है वह इस अनुमानसे [illegible]

जिसका कोई उद्देश ही नहीं है। जो कोई सर्वोत्तम फल पानेकी चेष्टा करता है वह पहलेकी अपेक्षा बहुत जियादा उन्नति कर लेता है। यह संभव है कि हम जितनी सफलता प्राप्त करना चाहते हों उतनी न पासकें, परन्तु फिर भी उन्नति करनेके लिए जो चेष्टा की जाती है वह सदैवके लिए लाभदायक हुए बिना नहीं रहती।

कुछ मनुष्य खोटे सिक्केके समान ऊपरी दृष्टिसे देखनेमें तो सदाचारी मालूम होते हैं परन्तु वे असलमें नहीं होते। असली चीजको पहचानना कठिन नहीं। कुछ लोग सदाचारकी आड़में धन प्राप्त करनेके लिए भोले मनुष्योंको धोखा दिया करते हैं। कर्नल चार्टेरिसने एक मनुष्यसे जो ईमानदारीके लिए प्रसिद्ध था, एक बार कहा था कि "यदि तुम मुझे अपने नामका प्रयोग कर लेने दो, तो मैं इसके बदले तुम्हें एक हजार मुहरें दे सकता हूं।" ईमानदार मनुष्यने पूछा, "यह क्यों?" उसने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं तुम्हारे नामसे दस हजार मुहरें पैदा कर सकता हूं।"

सदाचारका मूलाधार इसी बात पर है कि मनुष्य जो बात कहे अथवा जो काम करे उसमें ईमानदारीका बर्ताव करे। सत्यपोषण सदाचारका प्रधान अंग है। सर राबर्ट पीलकी मृत्युके बाद वैलिंगटनने एकबार राजसभामें सर राबर्टके चरित्रकी इस प्रकार प्रशंसा की थी:—" आप सबोंको सर राबर्ट पीलकी सच्चरित्रताका अनुभव हुआ होगा। जनसाधारणसे संबंध रखनेवाले कामोंमें मेरा और उनका बहुत दिनों तक साथ रहा था। हमारे सम्राट् हम दोनोंसे एक साथ सम्मति लिया करते थे। मुझे सर राबर्टके मित्र होनेका सौभाग्य बहुत दिनों तक रहा है। जब तक मेरी उनसे जान पहिचान रही तब तक मुझे कोई मनुष्य ऐसा न मिला जिसमें समाजसेवा करनेकी उनसे अधिक प्रबल इच्छा हो। जब तक मेरा संबंध उनके साथ रहा तब तक मैंने उनकी एक बात भी ऐसी न देखी जिसमें उन्होंने सत्य पर अनन्त प्रेम न दिखाया हो; और मुझको अपने समस्त जीवनमें कभी यह संदेह न हुई कि उन्होंने कोई ऐसी बात कही हो जिसके सच होनेपर उन्हें विश्वास न हो।" निस्संदेह, इसी उदारता और सत्यशीलताके कारण सर राबर्टका दूसरोंपर बड़ा प्रभाव पड़ता था।

स्वर्गीय मुंशी गंगाप्रसाद वर्माके विषयमें भी यही बात कही थी। उनकी मृत्युपर शोक करनेके लिए प्रयागमें एक सभा हुई थी। संयुक्तप्रान्तके शिक्षाविभागके डायरेक्टर माननीय मिस्टर सी. एफ. डे फोसने कहा था कि "मुन्शी गंगाप्रसाद वर्माकी सफलताका गुप्त रहस्य था? वह कौनसी बात थी जिससे उन्होंने सरकारी और जनसाधारणके कामोंमें सफलता प्राप्त की थी? इसका उत्तर यह है कि वे अपने चारि बल और प्रभावसे, अपनी पक्की ईमानदारीसे और सार्वजनिक हितके कामोंमें योग देनेसे सबोंके विश्वासपात्र बन गये थे। मेरा खयाल है कि तक किसीको यह कहनेका साहस नहीं हुआ कि सार्वजनिक कामों स्वलाभकी नीच इच्छासे योग देते हों। हरएक काममें जो वे करते चाहे वह ठीक हो या गलत—उनकी सचाईपर किसीको संदेह न होता वे जो कुछ कहते या करते थे उसको सच जानकर कहते या करते थे।"

सच्चरित्र बननेके लिए यह जरूरी है कि हम जो काम करें और जो कहें उसमें सचाई हो। मनुष्यको वास्तवमें भी वैसा ही होना चाहिए वह दूसरोंको मालूम होता है। उसका चरित्र ऊपर और भीतर एक होना चाहिए। उसके पास दूसरोंके दिखानेके लिए बाह्य आडम्बर न चाहिए। अमेरिकाके एक सज्जनने ग्रेनविल शार्पको लिखा कि "मैंने सद्गुणोंके कारण अपने पुत्रका नाम तुम्हारे ही नामपर रक्खा है।" शार्पने दिया कि "मैं जोर देकर तुमसे अनुरोध करता हूं कि जिस कुटुम्बका तुमने अपने पुत्रको दिया है उस कुटुम्बकी यह प्यारी उक्ति भी उसको देना कि तुमको वास्तवमें भी वैसे ही होनेकी सदा कोशिश क चाहिए जैसा तुम दूसरोंके सामने अपने आपको प्रकट करना चा हो। मेरे पिता मुझसे कहा करते थे कि तुम्हारे पितामहने इस उक्तिका सावधानी और नम्रताके साथ पालन किया था। इसीके कारण वे ऐसे और ईमानदार हो गये कि ये गुण उनके चरित्रके प्रधान अंग बन गये वे जिस तरह अपने साथ उसी तरह दूसरोंके साथ भी हमेशा ईमा रीका वर्ताव करते थे।" जो अपनी कदर करता है और दूसरोंकी कदर जानता है वही मनुष्य इस उक्तिके अनुसार चल सकता है। ऐसा मनुष्य काम करेगा वह ईमानदारीके साथ और उत्तम भावोंसे करेगा। वह

ोल न करेगा, किन्तु अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठता पर अभिमा
रेगा। जो मनुष्य कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं उनका आदर सत्क
हीं होता और उनकी बात भी नहीं मानी जाती। उनके मुँहसे निकली हु
च्ची बात भी कमजोर मालूम होती है।

सदाचारी मनुष्य अकेलेमें भी और दूसरेके सामने भी ईमानदारीके सा
ाम करता है। एक बार एक लड़का अपने पड़ौसीके घर गया। जब वह व
हुँचा तो उसने देखा कि उस घरमें कोई नहीं है। एक तरफ एक डलिए
बोंसे भरी हुई रक्खी थी, परन्तु उसने उन सेवोंमें हाथ भी न लगाया
ब पड़ौसी आया तो उसने पूछा, "तुमने सेव क्यों न चुराये? यहाँ को
खनेवाला तो था नहीं!" लड़केने उत्तर दिया कि "देखनेवाला था क
हीं? मैं स्वयं ही तो देखनेवाला था और मैं अपने आपको कोई बेईम
ीका काम करते हुए नहीं देखना चाहता।" यह एक साधारण उदाहर
, परन्तु यह दिखलानेके लिए काफी है कि वह लड़का विवेकबुद्धिके अ
ार चलता था। विवेकबुद्धिने उस लड़केके चरित्र पर अधिकार जमा लि
ा और वह उस पर शासन करती थी। वह बुद्धि प्रति दिन और प्रति घं
चरित्रको सुधारती रहती है। उसमें एक ऐसी शक्ति होती है जो क्षणक्षणप
अपना प्रभाव डालती रहती है। विवेकबुद्धिके शक्तिशाली प्रभावके बिन
चरित्रकी रक्षा नहीं हो सकती। इसके बिना मनुष्य प्रलोभनोंमें फँसता जात
है और उसका चरित्र धीरे धीरे निकम्मा होता जाता है। प्रलोभनोंमें फँसने
अथवा कोई नीचता या बेईमानीका काम करनेसे—चाहे वह काम कितन
ही छोटा हो—मनुष्यकी अधोगति होती जाती है। ऐसे काममें चाहे सफ
लता हो या न हो, चाहे वह काम छिपा रहे या दूसरों पर प्रगट हो जा
परन्तु यह बात जरूर है कि उस कामका करनेवाला पहला सा नहीं रहता
एक दूसरा ही मनुष्य हो जाता है। उसके दिलमें अशान्ति पैदा हो जात
है। वह आत्मधिक्कारका शिकार बन जाता है, या यों कहिए कि उसक
अंतःकरण उसको फटकारा करता है।

यहाँ पर यह जान लेनेका मौका है कि अच्छी आदतें डालनेसे चरि
कितना पुष्ट होता है। कहा जाता है कि आदमी आदतोंकी गठरी है। मनु
अच्छी आदतें वही असर रखती हैं, जो उसकी प्रकृति। किसी कामको ब

बार करनेसे या किसी बातको बार बार सोचनेसे कुछ ऐसी शक्ति आ
है। एक विद्वान्का मत है कि "मनुष्यमें जो कुछ है वह आदत है,
तक कि सदाचार भी आदत है।" बटलरने कहा है कि "मनुष्यके
यह बहुत जरूरी है कि वह अपने आपको वशमें रक्खे और प्रलोभनों
ताके साथ सामना करे। ऐसा करनेसे सदाचारकी आदत पड़ जाती है,
तक कि अंतमें उसके लिए कुकर्म करनेकी अपेक्षा सच्चरित्र बनना
सुगम हो जाता है। शरीरसंबंधी आदतें बाहरी कामोंसे बनती हैं।
तरह मानसिक आदतें दो तरहसे बनती हैं; एक तो हमारी आन्तरिक इ
भली या बुरी जैसी हों उन्हींके अनुसार चलनेसे और दूसरे आज्ञा-पा
सत्यशीलता, न्यायपरायणता और दयालुताके नियमोंके अनुसार इच्छा
नेसे।" आदत डालनेसे हरएक काम सुगम हो जाता है और कठिना
हट जाती हैं। यदि आप संयमके आदी हो जायँ, तो आपको असंयमसे
हो जायगी। यदि आप विवेक और विचारपूर्वक काम करनेकी आदत
लें, तो आप दुराचारके पास न फटकेंगे। इस लिए हमको इस विषयमें
सावधान रहना चाहिए कि हमारे ऊपर कोई बुरी आदत हमला न
पावे; क्योंकि चरित्र उस जगह पर हमेशा निर्बल हो जाता है जहाँ पर
एक बार क्षीण हो चुका है; और यदि हम किसी नियमको फिरसे स्था
करें, तो वह बहुत दिनोंमें उतना दृढ़ हो पाता है, जितना वह नियम
कभी तोड़ा नहीं गया। एक दूसरे विद्वान्ने खूब कहा है कि "आदतें मो
योंकी मालाके समान हैं। यदि गिरहको खोल दिया जाय, तो उसमेंके
मोती बिखर जायँ।" अच्छी आदतोंकी मालाका भी यही हाल है।

किसी कामकी आदत पड़ जानी चाहिए, फिर तो वह काम अपने
हुआ करता है—हमको प्रयत्न नहीं करना पड़ता। आदतमें कितनी श
हो जाती है, यह हमको उसी वक्त मालूम होता है जब हम उस आद
विरुद्ध कोई काम करना चाहते हैं। जो काम बार बार किया जाता है
शीघ्र ही सुगमताके साथ होने लगता है और उस काममें हमारा अन
कम लगता है। पहले पहल आदतमें मकड़ीके जालेसे अधिक शक्ति
मालूम होगी, परन्तु जहाँ आदत पक्की हो जाएगी हमको इस तरह
देती है जैसे कोई लोहेकी जंजीर जकड़ती हो। जीवनकी छोटी छोटी

[illegible]त अलग महत्त्वहीन मालूम होती हैं—वे मेहकी बूँदोंके समान तुच्छ [illegible]त पड़ती हैं; परन्तु वे ही बूँदें मिलकर नदी बन जाती है।
आत्मसम्मान, स्वावलम्बन, उद्योग, परिश्रम, सत्यपरता—ये सब गुण [illegible]त डालनेसे आते हैं; उन पर केवल विश्वास करनेसे अर्थात् उनको अच्छा [illegible]झनेसे कुछ नहीं हो सकता। सदाचार या नीतिके नियम क्या हैं? हमने [illegible]तोंके जो नाम रख लिये हैं वे ही नियम हैं; क्योंकि नियम शब्द (नाम) [illegible]ौर आदतें चीजें हैं जो अपनी अच्छाई अथवा बुराईके अनुसार उपकारी [illegible]वा हानिकारक होती हैं। ज्यों ज्यों हम बड़े होते जाते हैं त्यों त्यों हमारे [illegible]त्र उद्योग और विचारोंका कुछ भाग आदतमें दाखिल होता जाता है। [illegible]कार्मोंकी हमको आदत पड़ जाती है वे काम हमको करने ही पड़ते हैं; [illegible]हम उन्हीं जंजीरोंसे बँध जाते हैं जिनको हम स्वयं अपने चारों तरफ [illegible]ते रहते हैं।
[illegible]छोटे बच्चोंमें अच्छी आदतें डालना बहुत जरूरी है। इस विषयमें जितना [illegible]जाय उतना थोड़ा है। उनमें अच्छी आदतें अत्यन्त सुगमतासे पड़ जाती [illegible]र एक बार पड़ जानेपर जीवनपर्यंत बनी रहती हैं। वृक्षकी छाल पर [illegible]हुए अक्षरोंके समान वे उसके साथ बढ़ती और चौड़ी होती जाती हैं। [illegible]ो जिस मार्गपर, चलनेकी शिक्षा दी जायगी वह वृद्ध होनेपर भी उस [illegible]को न छोड़ेगा। आदिके भीतर ही अंत छिपा रहता है। जब मनुष्य [illegible]के मार्गपर पहले पहल चलता है तभी मालूम हो जाता है कि वह [illegible] जायगा और कहाँ पहुँचेगा। लार्ड कालिङ्गवुडने अपने एक नौजवान [illegible]े कहा था कि "मेरी बात याद रखना। तुम्हारी उम्र २५ वर्षकी हो [illegible] पहले ही तुमको अपना चरित्र निश्चित कर लेना चाहिए। उससे तुमको [illegible]मर काम पड़ेगा।" उसके साथ ज्यों ज्यों आदतें पक्की होती जाती हैं और [illegible]गठन होता जाता है, त्यों त्यों किसी नये मार्गको ग्रहण करना अधिक [illegible] होता जाता है, इस लिए किसी सीखी हुई बातको भुलाना नई बात [illegible]ेने प्रायः कठिन होता है। इसी कारण ग्रीस देशके एक चतुर बाँसुरी [illegible] सिखानेवालेका यह नियम था कि वह उन लोगोंसे दूनी फीस लेता [illegible] किसी अयोग्य अध्यापककी शिक्षा पाये हुए होते थे। किसी पुरानी [illegible]को जड़से निकाल देनेमें जितना दुःख और कठिनाई होती है उतनी

दाँतके उत्पादनेमें भी नहीं होती। यदि तुम ऐसे मनुष्योंको सुधारना चाह जिनको आलस्य, फिजूलखर्ची या शराब पीनेकी आदत पड़ गई हो, तो तुम बहुत ही कम सफलता होगी। क्योंकि उन मनुष्योंकी आदतें ऐसी पक्की जाती हैं कि वे निकल नहीं सकतीं। इस लिए मिस्टर लिञ्जने खूब कहा कि " सर्वश्रेष्ठ आदत यह है कि अच्छी आदतें सीखनेमें सावधान रहने आदत डाली जाय। "

और तो क्या आनंदित रहनेकी भी आदत डाली जा सकती है। कुछ मनुष्योंकी ऐसी आदत होती है कि वे हर एक बात या चीज़की खूबियोंको देख हैं, परन्तु कुछ मनुष्य उनकी बुराइयों पर ही निगाह डालते हैं और उनको बुरी समझ कर अपने मनमें दुःखी होते हैं। डाक्टर जानसन कहा करते कि हर बातकी खूबियोंको देखनेकी आदत मनुष्यके लिए ऐसी अच्छी है कि उसके सामने हजार रुपया सालानाकी आमदनी भी कोई चीज नहीं। हममें ऐसी शक्ति मौजूद है कि हम अपने विचारोंको उन बातोंपर लगावें जो हमको आनन्द और उत्साह प्रदान कर सकती हैं। ऐसा करनेसे हम अपने विचारोंको आनन्ददायक बना सकते हैं। जिस तरह और बातोंकी आदत डाली जा सकती है उसी तरह इस बातकी भी आदत डाली जा सकती है। क्योंकि ऐसी आनन्ददायक आदत डालना और उनको अच्छे स्वभावका और प्रसन्न चित्त बनाना बहुत अच्छा है; बल्कि बहुतसे मनुष्योंके लिए तो ऐसी शिक्षाका मिलना ज्ञान और हुनरकी शिक्षासे भी बढ़कर है।

जिस तरह सूर्यका प्रकाश छोटे छोटे छेदोंमेंसे भी दिखाई दे जाता है, उसी तरह छोटी छोटी बातें भी मनुष्यके चरित्रको प्रगट कर देती हैं। असलमें छोटे छोटे कामोंको अच्छी तरह और ईमानदारीके साथ करनेसे ही चरित्र बनता है। हमारा नित्य प्रतिका जीवन पत्थरकी खानके समान है। उसमेंसे हम आदतरूपी पत्थरोंको निकालते हैं और उनको काट छाँटकर अपने चरित्रकी इमारत खड़ी करते हैं। किसी मनुष्यकी सच्चरित्रताकी परीक्षा यह जाननेसे हो सकती है कि वह दूसरोंके साथ कैसा बर्ताव करता है। बड़ों, छोटों और बराबरवालोंके साथ अच्छा व्यवहार करनेसे चित्त हमेशा प्रसन्न रहता है। ऐसा व्यवहार दूसरोंको भी प्रसन्न कर देता है; क्योंकि यह इस बातका सूचक है कि हम उनका आदर करते हैं। ऐसे व्यवहारसे हमको दूसरोंकी अपेक्षा दसगुनी

नम्रता होती है। जिस तरह हम अपने आपको और बहुत सी बातोंकी शिक्षा
दे हैं, उसी तरह सदाचारकी भी शिक्षा दे सकते हैं। चाहे मनुष्यके पल्ले एक
ा भी न हो, तो भी वह दूसरोंके साथ नम्रता और दयालुताका बर्ताव कर
कता है। जिस तरह सूर्यका प्रकाश दुनियाकी चीजोंपर गुप्तरूपसे अपना
व डालता है, उसी तरह सज्जन मनुष्य भी अपना प्रभाव समाजपर गुप्त-
से डालता है। जोर या शोरकी अपेक्षा सुजनता अधिक बलवती और
यवती होती है। पेड़का अंकुर कितना छोटा होता है; परन्तु वह जमीनको
ड़कर निकल आता है और सिर्फ बढ़-बढ़कर मिट्टीके ढलोंको अलग हटा
। है। इसी तरह सज्जन मनुष्य निरंतर सुजनताका बर्ताव करके ही धीरे
सफलता प्राप्त कर लेता है।

हमारा आचरण हमारे जीवनपर बहुत बड़ा प्रभाव डालता है। हमारा
रण जैसा होता है वैसा ही हमारा जीवन बन जाता है। कानूनोंकी
ति आचरणके कारण ही होती है। मनुष्योंके आचरणको शुद्ध बनानेके
कानून बनाये जाते हैं। इसी लिए आचरण कानूनसे कहीं जियादा मह-
ी चीज है। कायदे कानूनोंसे तो हमको यत्र तत्र ही काम पड़ता है,
आचरण हमारे साथ सर्वत्र रहते हैं; वे समाजमें हवाकी तरह फैले
हैं। शिष्टाचार सद्व्यवहारको कहते हैं। विनयशीलता और प्रेमपूर्ण
-चाल शिष्टाचारके प्रधान अंग हैं। मनुष्य आपसमें जो हितकर और
व्यवहार करते हैं उसमें परोपकारिताकी मात्रा अवश्य होनी चाहिए।
मानटेगने कहा था "नम्रता स्वयं तो बिना मूल्य आती है, परन्तु
हर एक चीज खरीदी जा सकती है।" सबसे सस्ती चीज प्रेमपूर्ण
ाल है; क्योंकि किसीके साथ प्रेमल बर्ताव करनेमें सबसे कम कष्ट
पड़ता है और सबसे कम स्वार्थ-त्यागकी जरूरत पड़ती है। घर्लेने
नी ऐलिजबैथसे कहा था कि "यदि आप सद्व्यवहारसे लोगोंके
र काबू कर लें तो वे लोग अपने दिल और अपने धन दोनोंको आपके
ा कर देंगे।" यदि हम किसी तरहकी बनावट या चालाकीको कामर्में
ें किन्तु अपने स्वभावके अनुसार नम्रतापूर्वक काम करते रहें, तो इससे
केक आनन्द और सुखपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा। नम्रताके और
बोलचालके छोटे छोटे काम मनुष्यके जीवनमें छोटे छोटे परिवर्तन कर

देते हैं। ये काम अलग अलग देखनेमें चाहे महत्वहीन माल जब बारबार किये जाते हैं और बहुतसे हो जाते हैं तब बहुत ...... हो जाते हैं। जिस तरह हर रोज थोड़ा थोड़ा समय निकालनेसे अंतमें बहुत समय बच रहता है या एक एक पैसा हररोज जमा करनेसे धन इकट्ठा हो जाता है, उसी तरह इन कामोंके अंतमें बड़े महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं।

शिष्टाचार कार्यका आभूषण है। हरएक बात या काम कहने या करनेका एक ढंग होता है जिससे उस बात या कामका मूल्य और भी बढ़ जाता है। यदि कोई काम ईर्षाके कारण अथवा अपना बड़प्पन प्रकट करनेके लिए किया जाय, तो उसकी गिनती अनुग्रहमें नहीं हो सकती। कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो अपने रूखेपन पर अभिमान करते हैं। ऐसे मनुष्योंमें चाहे सच्चरित्रता और योग्यता हो, परन्तु उनके व्यवहारको कोई अच्छा न कहेगा। जो मनुष्य दूसरोंका बारबार अपमान करता हो और जली-कटी बातें कहता हो उसको कौन पसंद करेगा? कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं जिन्हें दूसरोंके साथ प्रेमपूर्ण मिष्ट भाषण करनेमें अपने बड़प्पनका बड़ा खयाल रहता है और छोटेसे छोटे मौकेपर भी अपना बड़प्पन जताये बिना नहीं रहते। वे दूसरोंके लिए जब कोई छोटा सा भी काम करते हैं, तब इस ढंगसे करते हैं और इस तरह बातें करते हैं कि मानो वे दूसरोंपर बड़ा भारी अहसान कर रहे हैं। ऐसे मनुष्योंको भी कोई पसंद नहीं करता।

जिन मनुष्योंको अपने व्यापारके संबंधमें दूसरोंसे काम पड़ता रहता है उनको शिष्टाचारकी बड़ी जरूरत है, परन्तु अतिके शिष्टाचारसे कोरी दिखावट और मूर्खता टपकती है। जो मनुष्य किसी ऊँचे पदपर हो अथवा बहुत प्रसिद्ध हो उसमें सुशीलता और सुजनता जरूर होनी चाहिए। इन गुणोंके बिना उसकी सफलता नहीं हो सकती; क्योंकि ऐसा बहुधा देखा गया है कि इन गुणोंके न होनेसे परिश्रम, ईमानदारी और सच्चरित्रताका बहुतसा असर जाता रहता है। यह जरूर है कि कुछ मनुष्य ऐसे उदारचित्त होते हैं कि वे आचार-विचारके दोषोंपर ध्यान न देकर केवल बड़े बड़े गुणोंपर ही दृष्टिपात करते हैं; परन्तु सारी दुनिया तो ऐसी नहीं है! जनसाधारण हमारे बाहरी आचारविचार देखकर ही हमारे संबंधमें अपनी राय कायम करते हैं।

हमको दूसरोंके विचारोंका लिहाज करना चाहिए। यह भी सची
का एक चिह्न है। जिन मनुष्योंको कोरी शेखी मारनेकी आदत होती
क्षपाती हो जाते हैं और अपनी हरएक बात पर घमंड करने लगते हैं
सरोंकी बातोंकी कुछ भी कदर नहीं करते। हमको यह मान लेना
क मनुष्योंमें मतभेद होता ही है। इस लिए हमको दूसरोंकी बातें
लताके साथ सुननी चाहिएँ और उन पर दयाभाव रखना चाहिए। वि
ौर विचारोंमें मतभेद होने पर भी मनुष्य शान्तिपूर्वक रह सकते हैं।
होना चाहिए कि वे एक दूसरेसे लड़ बैठें अथवा सख्तसुस्त कहने
भी कभी ऐसा होता है कि कटु शब्द बोलनेसे दूसरे मनुष्यके हृदयपर
ोट लगती है। मसल मशहूर है कि 'बोली ठोलीका घाव तीरके
ी जियादा देरमें पुरता है।'

प्रेमपूर्ण अन्तःकरण और दयाभावसे जो विवेकबुद्धि उत्पन्न होती है
सी विशेष श्रेणीके मनुष्योंमें ही नहीं पाई जाती,–मजदूर, रईस
धु सभी उसको धारण कर सकते हैं। यह जरूरी नहीं है कि
लचालके रूखे, कड़ुवे और अविवेकी हों। वे भी विवेकी बन सकते
सरे देशवालोंकी नम्रता शिष्टाचार और विवेकशीलताको देखकर हमको
शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि ये गुण हममें भी आ सकते हैं। यदि हम
ष्पति कर लें और दूसरे देशवालोंके साथ मिलते जुलते रहें, तो वे
ममें निस्संदेह आ सकते हैं और इसके साथ ही हमारे अन्य उत्तम
णोंको भी किसी तरहकी हानि नहीं पहुँच सकती। अमीरसे अमीर
ीसे लेकर गरीबसे गरीब आदमी तक, और बड़ेसे बड़े आदमीसे
ोटेसे छोटे आदमी तक, सभी मनुष्य उदारहृदयके हो सकते हैं।
नुष्यका हृदय उदार न हो उसे सज्जन न कहना चाहिए। आजतक
जन ऐसा नहीं हुआ जिसका हृदय उदार न रहा हो। मिर्जई पहनने
किसानमें और रेशमी कोट पहननेवाले सेटमें, दोनोंमें उदारता हो सकती
पड़ोंसे या बाहरी दिखावटसे मनुष्यकी उदारताका कुछ संबंध नहीं है।
ो सकता है कि किसी मनुष्यके कपड़ेलत्ते और दूसरी बाहरी बातें
ादी हों, परन्तु उसका हृदय उदार हो। जो लोग उस मनुष्यके
णोंको नहीं पहचानते वे शायद उसकी सादगी और भोलेपनको बुरा स
रन्तु बुद्धिमान् मनुष्य उसके चरित्रको पहचानेंगे और उसकी कदर करें

अपने मुसीबतका हाल सुनाया और सर्टीफिकेट सामने रख दिया। विलि
यमने कहा कि "एक दफे तुमने हमारे विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी।
सौदागरका दिल धड़कने लगा और वह सोचने लगा कि अब मेरा सर्टीफि
केट आगमें झोंक दिया जायगा; परन्तु विलियमने ऐसा न किया उसने उ
सर्टीफिकेट पर अपने कारखानेकी तरफसे अपने दस्तखत कर दिये औ
सर्टीफिकेटको सौदागरके हाथमें देकर कहा कि "हमारा यह कायदा है कि ह
किसी ईमानदार सौदागरके सर्टीफिकेट पर हस्ताक्षर करनेसे इनकार न
करते और हमने आज तक तुम्हारी ईमानदारीके विरुद्ध कोई बात नहीं सु
है।" उस सौदागरकी आँखोंमेंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। विलियम
कहा कि "तुमको मालूम होगा उस समय मैंने कहा था कि तुम पुस्त
लिखनेपर पश्चात्ताप करोगे। आखिर वही बात हुई। परन्तु मैंने जो कुछ क
था वह इस मतलबसे नहीं कहा था कि मैं तुमको धमकी देना चाहता थ
किन्तु मेरा मतलब यह था कि किसी दिन तुम हम लोगोंको ठीक जानो
और तुमने हमको जो दुःख दिया है उसपर पछतावा करोगे।" सौदाग
कहा कि "मैं सचमुच पछता रहा हूँ।" विलियमने फिर कहा कि "अच्छ
तो तुम हम लोगोंको अब पहिचान गये कि हम कैसे आदमी हैं। लेकिन य
तो कहो कि अब तुम्हारी क्या हालत है—अब तुम्हारा क्या करनेका इरा
है?" सौदागरने उत्तर दिया कि "सर्टीफिकेट मिल जानेपर मेरे मित्र मेरी
सहायता करेंगे।" विलियमने पूछा, "लेकिन आज कल तुम्हारी क्य
हालत है।" उसने उत्तर दिया कि "महाजनोंके कर्ज चुकानेके लिए मैं
अपना सर्वस्व दे चुका हूँ और अब मैं अपने कुटुम्बके निर्वाहके लिए क
कौड़ी भी नहीं खर्च सकता हूँ। यदि मैं अपना सब कर्ज न चुका
तो मुझे सरकारसे पुनः व्यापारके लिए सर्टीफिकेट भी न मिल सकता।"
विलियमने कहा कि भाईसाहब मैं यह नहीं देख सकता कि तुम्हारी स्त्री
और बच्चे इस तरह दुःख भोगें। इसे कामके लिए तुम्हारी यह दस पौं
(देढ़ सौ रुपये) का नोट ले जाओ। हैं! हैं! तुम रोते क्यों हो? सब
कुछ ठीक ठाक हो जायगा। उदासियोंमें हताशी न होने दो। व्यापारमें कुछ
काम करनेमें लग जाओगे, तो तुम्हारी गिनती फिर बड़े बड़े सौदागरोंमें हो
जायेगी।" इस सौदागरका दिल भर आया। उसने विलियमको धन्यवाद

ना चाहा, परन्तु उससे बोला न गया और वह अपने हाथोंसे अपने मुँहको ढाँपकर बच्चेकी तरह सिसकता हुआ कमरेके बाहर चला गया।

जो गुण विलियम ग्रांट और उनके भाईमें थे उन्हीं गुणोंसे सेठ राणूराजी भी अलंकृत हैं। ग्रांट भाइयोंके समान शुरूमें वे भी बड़े निर्धन थे और उन्होंने भी उसी तरह धीरे धीरे मेहनत और ईमानदारीके मार्गपर चल कर अपनी उन्नति की है। राणूरावजीका जन्म पूना जिलेके एक ग्राममें सन् १८४६ के सदीमें हुआ था। वे जातिके माली हैं। उनके पिता ऐसे दरिद्र थे कि रात दिन मेहनत करनेपर भी अपने कुटुम्बका निर्वाह न कर सकते थे। उन्होंने अपने पुत्र राणूरावजीको एक राजके साथ गारा उठानेके काम पर लगा दिया था। राणूरावजी कुछ समय तक यही काम करते रहे; परन्तु उनको मजदूरी बहुत थोड़ी मिलती थी। जब वे १०-११ वर्षके हुए, तब उनकी माताका देहान्त हो गया। इस घटनाने उनको और भी दुखी कर दिया। घरका काम काज करनेको भी कोई न रहा। जब राणूरावजी और उनके पिता सब तरहसे तंग आगये तब वे नौकरीकी तलाशमें पूना चल दिये। पूनामें उन दोनोंको एक बागमें नौकरी मिल गई; परन्तु इस नौकरीमें उनको केवल दो चार रुपया मासिक वेतन मिलता था जिससे उनकी गुजर बड़ी कठिनतासे होती थी। कुछ समय बाद राणूरावजी बम्बईमें 'टाइम्स आफ इंडिया' छापेखानेमें टाइप घिसनेके काम पर नौकर हो गये और उन्हें ३) मासिक वेतन मिलने लगा। इस छापेखानेमें उनको आगामी उन्नतिकी कुछ आशा न दिखाई दी, इस लिए उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और उतने ही वेतनपर 'ऐज्युकेशन सोसायटी प्रेस' में नौकरी कर ली। यहाँ उनका वेतन धीरे धीरे १०) मासिक हो गया। उनकी मेहनत और ईमानदारीसे प्रेसके सुपरिण्टेण्डेंट टामस ग्रेहम उनसे बड़े खुश रहते थे। इसके बाद राणूरावजीने ओरिएंटल प्रेसमें नौकरी कर ली। इसी प्रेसमें जावजी दादाजी भी नौकर थे। दोनोंने मिलकर एक मकान किराये पर लिया और कुछ निजी काम शुरू कर दिया। पहले वे पुराने टाइप खरीदने बेचने लगे और फिर उन्होंने बिक्रीके लिए नये टाइप भी मँगा लिये। इस काममें उन्हें ऐसी सफलता हुई कि उन्होंने नौकरी छोड़ दी। जावजीने टाइप ढालनेका निजी कारखाना खोल दिया और राणूरावजी उनके सहायक बन गये। जब सेठ जावजीने 'निर्णयसागर प्रेस'

बातें वैलिंगटनको मालूम थीं, परन्तु वे अभी किसी और पर प्रकट न [illegible] गई थीं। इस भेदको जाननेके लिए निजामका मंत्री वैलिंगटनको १५ ला[ख] रुपयेसे भी जियादा देने लगा। वैलिंगटन पहले कई सेकंड तक उस मंत्री[के] मुँहकी ओर चुपचाप देखते रहे और फिर यों बोले, "अच्छा, तो तुम [इस] भेदको छिपा सकते हो? किसीसे कहोगे तो नहीं?" मंत्रीने जवाब दि[या] कि "मैं इस भेदको बेशक छिपा सकता हूँ।" तब वैलिंगटनने हँस[कर] कहा कि "बस ऐसा ही मुझे समझो। जिस तरह तुम अपने भेदको छि[पा] सकते हो उस तरह मैं भी अपना भेद छिपा सकता हूँ।" यह कह[कर] वैलिंगटनने मंत्रीको झुककर प्रणाम किया और बेचारा मंत्री लज्जाके मा[रे] वहाँसे तुरन्त ही चल दिया।

वैलिंगटनके मातेदार मारक्विस आफ वैलेज़ली भी ऐसे ही उदारचरि[त] थे। एक बार ईस्ट इंडिया कम्पनीने वैलेज़्लीको मैसूरकी विजयके उपलक्ष[में] १५ लाख रुपया भेंट स्वरूप देना चाहा, परन्तु वैलेज़लीने साफ इनकार [कर] दिया। वैलेज़्लीने कहा था कि "इस बातकी ज़रूरत नहीं है कि इस सम[य] मैं यह बतलाऊँ कि मेरा चरित्र कितना स्वतंत्र है और मैं किस प्रकार [से] उसकी महत्ता कितनी बड़ी है। इन दो बड़ी बड़ी बातोंके उपरान्त कई [बातें] और भी हैं जिनके कारण मैं इस भेंटको अस्वीकार करता हूँ। मैं इस भेंट[को] अच्छा नहीं समझता। मैं अपनी सेनाके सिवाय और किसीकी चीज़की पर[वाह] नहीं करता। मेरी सेनाके इन वीर सैनिकोंके हिस्सेमें यदि कुछ क[मी] की जायगी तो अवश्य ही मुझे बड़ा दुःख होगा।" वैलेज़लीने भेंटको अस्वी[-] कार करनेका जो इरादा कर लिया था उसे कोई भी न बदल सका।

धन और पदका सच्ची सुजनताके साथ कोई ज़रूरी संबंध नहीं है। नि[र्धन] मनुष्य भी सच्चा सज्जन हो सकता है—उसके आचारमें और [illegible] कामोंमें सुजनता आ सकती है। वह ईमानदार, सच्चा, [illegible], नम्र, [illegible] [illegible], अपनी कदर करनेवाला और आत्मावलम्बी हो सकता है—[illegible] [illegible] सच्चा सज्जन बनना करते हैं। जिस मनुष्यके पास धन न हो [illegible] उसके पास अच्छे [illegible] यह उस मनुष्यसे लाख दरजे अच्छा है जिसके [illegible] [illegible] परन्तु उसके भाव निकृष्ट हों। [illegible] मनुष्यके पास धन [illegible] [illegible] सब कुछ है और दूसरेके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है

मनुष्य सब तरहकी आशा कर सकता है और उसको किसी बातका
ाँ होता; परन्तु दूसरेको किसी लाभकी आशा नहीं होती और डर डर
लगा रहता है। जिन मनुष्योंके भाव हीन हैं असलमें वे ही मनुष्य
। जिसने सब कुछ खो दिया हो; परन्तु साहस, प्रसन्नता, आशा,
यणता और आत्म-सम्मानको हाथसे न जाने दिया हो, वह फिर भी
है। क्योंकि ऐसे मनुष्यका सारा संसार विश्वास करता है और उसके
न ऊँचे होते हैं कि उसको छोटी छोटी चिन्तायें कष्ट नहीं दे सकतीं।
बात पर अभिमान कर सकता है कि मैं वास्तवमें सज्जन हूँ।
त निर्धन मनुष्योंमें भी वीर और सज्जन पुरुष पाये जाते हैं। हम इस
एक उदाहरण देते हैं। यह उदाहरण पुराना है, परन्तु है बहुत
एक बार इटली देशकी एक नदीमें बाढ़ आई उस नदीका सारा पुल
, सिर्फ बीचका कुछ अंश बच रहा जिस पर एक घर बना हुआ था।
आदमी खिड़कियोंमेंसे बाहर झाँक झाँककर आसपासवालोंको सहा-
लए पुकारने लगे; क्योंकि पुलका यह अंश, जो अब तक बचा हुआ
होको था। नदीके किनारेपर दर्शकोंकी भीड़ लगी हुई थी। उस
एक धनाढ्य मनुष्य बोला कि " अगर कोई उस घरके आदमि-
ा दे, तो मैं उसको सौ मुहरें दूँगा।" यह सुनकर एक गरीब युवा
ाव लेकर नदीमें चला गया और उस घरके आदमियोंको नावमें
किनारेपर ले आया। इस तरह जब उन लोगोंकी जानें बच गईं तब
किसानसे कहा कि " यह लो सौ मुहरें।" परन्तु किसानने उत्तर
" यह इनाम लेकर मैं अपने मनुष्यत्वको नहीं बेचूँगा। ये रुपया
रोंको दे दो; क्योंकि इनको रुपयेकी जरूरत है।" यद्यपि वह एक
ान ही था, तो भी उसमें सच्ची सज्जनता मौजूद थी।
ना (काठियावाड़) के एक छोटेसे जैन बोर्डिंग होमके मैनेजर कुँवर-
ाम इससे कुछ कम प्रशंसनीय नहीं है। सन् १९११ ईस्वीमें
में बड़ी भारी वृष्टि हुई और नदीमें अकस्मात् बाढ़ आ गई।
य था; सब लोग निद्रादेवीकी गोदमें शयन कर रहे थे। मकान
और सोतेहुए आदमी बहने लगे। इस अवसर पर लगभग एक
ष्य और अगणित पशु कालके ग्रास बन गये। कुँवरजी बोर्डिंग

हौसमें अपने कुटम्बसहित रहते थे। अब प्रश्न यह था कि वे इस अवसर पहले अपने घरवालोंकी रक्षा करें अथवा बोर्डिंग हौसके विद्यार्थियोंके ब नेकी चेष्टा करें। उन्होंने अपना धर्म यही समझा कि पहले विद्यार्थियों बचाया जाय। कुँवरजीने एक और मनुष्यकी सहायतासे बड़ी कठिनाईसे विद्यार्थियोंको वृक्षपर चढ़कर उनके प्राण बचाये। इतनेहीमें शेष १० विद्य और कुँवरजीका सारा कुटुम्ब जलमें बह गया!

आस्ट्रियाके स्वर्गीय सम्राट् फ्रांसिसकी सुजनताका परिचय इस कथ मिलता है। आस्ट्रियाकी राजधानीमें एक बार हैजा खूब जोरसे फैला। उ दिनोंमें एक दफे सम्राट् अपने एक कर्मचारीके साथ सड़कोंपर चक्कर लगा थे। उन्होंने देखा कि एक आदमी एक लाशको ठेले पर रखकर घसीटे लि जा रहा है। उस लाशके साथ कोई भी शोकाश्रु बहानेवाला न था। विचित्र दृश्यको देखकर सम्राट्का ध्यान उस ओर गया और उन्होंने लाशके संबंधमें पूछताछ की। जवाब मिला कि "यह लाश एक गरीब मांझी है जो हैजेमें मर गया है। हैजेके डरके मारे उसके किसी नातेदार यह साहस न हुआ कि वह उस लाशके साथ कब्र तक जावे।" फ्रांसिस कहा कि "अच्छा तो मैं इस लाशके साथ जाऊँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ मेरे देशका कोई भी मनुष्य मरनेपर इस अन्तिम सत्कारसे वंचित न रह जाय।' यह कहकर सम्राट् उस लाशके साथ कब्रिस्तान तक गये, जो वह बहुत दूर पर था। वहाँ पहुँचकर वे नंगे सिर खड़े रहे और उन्होंने मृतक सब क्रियाकर्म आदरपूर्वक अपने सामने करवाया।"

सब बातोंसे बढ़कर यह बात है कि सज्जन मनुष्य सच्चा होता है। सत्यको जीवनका सर्वस्व समझता है। एक विद्वान्का कथन है कि स बननेमें सत्यपोषणसे सफलता होती है। जो सज्जन होता है वह सच्चा भी होता है। ड्यूक आफ वैलिंगटनने एक बार कहा था कि अँगरेजी अ सरोंको अपनी सचाईका बड़ा अभिमान रहता है।

सच्ची वीरता और सुजनताका साथ है। जो वीर होता है वह उदार औ क्षमावान् भी होता है। वह कभी भी निठुरता और निर्दयताका बर्ताव न करता। एक युद्धमें फ्रान्सके एक वीरने सर पेल्टन हार्वेको मारनेके लि ... . उठाई, परन्तु यह देखकर कि हार्वेके एक ही हाथ था उस वी

अपनी तलवार नीची कर ली और वह उसको बिना मारे ही चला गया। भीष्म पितामहका शरीर जब पाण्डवोंके बाणोंके मारे जर्जरित हो गया तब वे रण-क्षेत्रमें थक कर गिर गये और कुछ देर बाद उनका प्राणान्त हो गया। जब भीष्म घायल पड़े थे तब सब लोग उनको देखनेके लिए आये। पाण्डव भी उनके आसपास खड़े हो गये। जो पाण्डव अभी भीष्मके ऊपर बाणपर बाण छोड़ रहे थे वे ही पाण्डव अब अपने अस्त्रशस्त्र फेंककर उनकी सेवा करने लगे। उस समय पाण्डवोंने भीष्मके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा वे महाभारतसे पहले किया करते थे। वे वीर थे, अस्त्ररहित शत्रुपर हाथ चलाना जानते ही न थे।

हम लोगोंके मुँहसे बहुधा यह सुना करते हैं कि वीरताका जमाना चला गया, परन्तु फिर भी इस जमानेमें वीरता और सुजनताके ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि इतिहासमें उनसे बढ़िया उदाहरण शायद ही मिल सकें। सन् १८६२ ईसवीमें फरवरीकी २७ तारीखको बार्किन्हैड नामक जहाज आफ्रिकाके किनारे किनारे आ रहा था। रातके दो बजे वह जहाज अकस्मात् एक चट्टानसे टकरा गया। उस समय जहाजके सब यात्री सो रहे थे। जहाजमें ४०२ पुरुष और १६६ स्त्रियाँ और बच्चे थे। टक्कर लगते ही जहाजका पेंदा फट गया और उसमें पानी भरने लगा। यह देख कप्तानने तुरन्त ही स्त्रियों और बच्चोंके बचानेका हुक्म दिया। जहाजके ऊपरसे नावें उतारी गईं और उनमें स्त्रियों और बच्चोंको बिठला दिया गया। जब नावें चलने लगीं तब जहाजके कप्तानने बिना सोचे समझे कहा कि "अब जो पुरुष तैरकर नावों तक आ सकते हों, कूद कर चले आवें और नावोंमें बैठ जावें।" परन्तु एक फौजी कप्तानने कहा, "नहीं! नहीं! ऐसा करनेसे नावोंमें बोझ बढ़ जायगा और नावें स्त्रियों और बच्चों-सहित डूब जायँगी।"

यह सुनकर जहाजके सब पुरुष ज्योंके त्यों खड़े रह गये—उनमेंसे एक भी न हिला। सब पुरुष जहाजपर ही रह गये। अब कोई नाव न बची थी, इसलिए उनके बचनेकी भी कोई आशा न थी। परन्तु किसी पुरुषका मन विचलित न हुआ; कोई पुरुष उस आपत्ति-कालमें कर्तव्य पालनसे न हटा। बादमें एक पुरुषने, जो समुद्रमें तैर कर बच आया था, यह सब हाल बयान किया। उसने कहा कि "हममेंसे किसीने भी जहाजके डूबनेतक जरा भी

कुड़कुड़ाहट न की। जहाज डूब गया और उसके साथ वे वीर पुरुष भ
गये। उन सज्जनों और वीरोंकी जय हो। ऐसे पुरुषोंके उदाहरण कभी
नहीं सकते हैं। जिस तरह उनकी स्मृति अमर है उसी तरह उनके
हरण भी अमर हैं।

सन् १९१२ ईसवीमें अटलान्टिक महासागरमें टाइटैनिक नामक
भी इसी तरह डूबा था। इस दुर्घटनाका हाल हम लोगोंने समाचार
पढ़ा था और उसकी सुध हम अभी तक नहीं भूले हैं। इस अवसर
अनेक वीरोंने अपनी वीरताका परिचय दिया था। टाइटैनिक ऐसा म
बनाया गया था कि लोगोंको आशा थी कि इस जहाजको कोई चीज
न पहुँचा सकेगी परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है।
टैनिक समुद्रमें तैरती हुई एक हिम-शिलासे टक्कर खा गया और उसमें
हो गया। नावें इतनी न थीं कि सब लोग उनमें बैठकर अपने प्राण
सकते। कायर मनुष्योंके साथ उस जहाजमें अनेक वीर पुरुष भी थे।
इके सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'रिव्यू आफ रिव्यूज़' के संपादक स्टेड
महानुभाव भी उस जहाजमें सफर कर रहे थे। जब जहाजमें टक्कर
और उसमें पानी भरने लगा तब कप्तानने हुक्म दिया कि "पहले
और बच्चोंको नावोंमें बिठलाकर बचाया जाय।" कप्तानकी आज्ञा पाते
पुरुष पीछे हट गये और स्त्रियाँ और बच्चे नावोंमें बैठकर चल दिये।
वीरोंने उस समय दूसरोंके प्राण बचाये और वे स्वयं जलमें डूब गये।

> "आये नहीं आठ सौ जन भी नौकायें भर गईं तमाम,
> सोलह सौ यात्री निर्भय हो मर कर अमर कर गये नाम।
> वह मरना भी दर्शनीय है, है सजीवताका वह चित्र,
> उस स्वर्गीय भावको भाषा प्रकट करेगी कैसे मित्र!
> वह देखो अरबपती धनपती तथा स्टेडसे नैतिक वीर,
> एक एक सामान्य मनुजकी रक्षा कर तज रहे शरीर!"

सज्जन मनुष्यको पहचाननेके लिए कई तरहसे परीक्षा की जा सकती
... ऐसी है जिसमें कभी धोखा नहीं होता—वह अपने
पर किस प्रकार शासन करता है? वह स्त्रियों और बच्चोंके साथ

व्यवहार करता है ? पदाधिकारी अपने अधीनोंके साथ, स्वामी अपने नौकरोंके साथ, गुरु अपने शिष्योंके साथ और प्रत्येक मनुष्य अपनेसे निर्बल मनुष्योंके साथ कैसा व्यवहार करता है ? ये लोग अपनी शक्तिका प्रयोग करनेमें कितनी सावधानता, क्षमा और कृपालुताको काममें लाते हैं, यह जाननेसे सुजनताकी उत्तम परीक्षा हो सकती है। लामोर्ट्टी एक बार एक भीड़में होकर जा रहा था। उसका पैर अकस्मात् एक युवकके पैरपर पड़ गया। युवकने पलटकर लामोर्टीके मुँह पर एक थप्पड़ मारा। लामोर्टीने कहा कि " महाशय, आप यह जान कर कि मैं अंधा हूँ अपने कियेपर अवश्य पछतावा करेंगे। " जो मनुष्य ऐसे लोगोंको तंग करता है जो उसका मुकाबला नहीं कर सकते हुए हैं, सज्जन नहीं है। जो दुर्बलोंपर अत्याचार करता है वह कायर है, वीर नहीं है। जिस मनुष्यके विचार अच्छे हैं उसमें बलवान् होनेपर और भी नम्रता आ जाती है। वह अपने बलका प्रयोग अत्यन्त सावधानीसे करता है; क्योंकि वह जानता है कि राक्षसके समान बली होना अच्छा है, परन्तु राक्षसकी तरह उस बलका प्रयोग करना अत्याचार है।

नम्रता भी सज्जनताकी एक अच्छी कसौटी है। अपनेसे छोटों और बराबरवालोंके आदर करनेका गुण सच्चे सज्जनके स्वभावमें कूट कूट कर भरा रहता है। वह स्वयं कष्ट उठा लेता है, परन्तु दूसरोंका मन दुखाकर पापका भागी नहीं बनना चाहता। वह उन मनुष्योंके दोषों, असफलताओं और अपराधोंको क्षमा कर देता है जिनको जीवनमें उसके बराबर सुविधायें नहीं मिली हैं। वह अपने पशुओंपर भी दयाभाव रखता है। वह अपने धन, बल अथवा शक्तियोंपर घमंड नहीं करता। वह यह नहीं चाहता कि दूसरे उसके विचारोंको जबरदस्ती ग्रहण कर लें, किन्तु जब मौका आता है तब वह स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारोंको प्रगट कर देता है। वह जब किसी पर कृपा करता है तब अपना अहसान जताना नहीं चाहता।

लार्ड चैथैमने कहा था कि " सज्जन मनुष्यमें आत्मत्यागका गुण होता है। वह रोजमर्राकी छोटी छोटी बातोंमें भी अपने आप कष्ट भोगकर दूसरोंको सुख पहुँचानेका प्रयत्न करता है। वीर सर राल्फ एबरक्रोम्बीके उत्तम चरित्रमें यही गुण था। एक बार वे एक युद्धमें ऐसे घायल हो गये कि उनके लोग एक डोलीमें बिठालकर जहाजमें ले गये। उस समय उनको आराम

१३ अन्नपूर्णाका मन्दिर। अतिशय हृदयभेदी, करुणरसपूर्ण ... शिक्षाप्रद उपन्यास। मूल्य बारह आने।

१४ स्वावलम्बन। सेमुएल स्माइल्सके 'हेल्फ-हेल्प' नामक ग्रन्थके आधारसे लिखित। मूल्य डेढ़ रुपया।

१५ उपवास चिकित्सा। उपवाससे अर्धोपवाससे और अल्प भोजनसे तमाम रोगोंको नष्ट करनेका उपाय। मूल्य बारह आने।

१६ सूमके घर धूम। सभ्य हास्यपूर्ण प्रहसन। मूल्य तीन आने।

१७ दुर्गादास। प्रसिद्ध स्वामि-भक्त वीर दुर्गादासके ऐतिहासिक चरित्रको लेकर इस नाटककी रचना की गई है। यह बंगालके सर्वश्रेष्ठ नाटक लेखक स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल रायके नाटकका अनुवाद है। मूल्य एक रुपया।

१८ बंकिम-निबन्धावली। स्वर्गीय बंकिमबाबूके चुने हुए विविध निबंधोंका अनुवाद। मूल्य चौदह आने।

१९ छत्रसाल। बुंदेलखण्ड-केसरी महाराज छत्रसालके ऐतिहासिक चरित्रके आधारपर लिखा हुआ देश-भक्तिपूर्ण उपन्यास। मूल्य डेढ़ रुपया।

२० प्रायश्चित्त। नोबेल प्राइज-प्राप्त, बेलजिएमके सर्व-श्रेष्ठ कवि मेटरलिंकके एक भावपूर्ण नाटकका हिंदी अनुवाद। मूल्य चार आने।

२१ अब्राहमलिंकन। गुलामोंको स्वाधीनता दिलानेवाले अमेरिकाके प्रसिद्ध सभापतिका जीवनचरित। मूल्य दश आने।

२२ मेवाड़-पतन। ऐतिहासिक नाटक। मूल लेखक स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय। मूल्य बारह आने।

२३ शाहजहाँ। स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल रायके सर्वश्रेष्ठ नाटकका अनुवाद। यह भी ऐतिहासिक है। मूल्य चौदह आने।

२४ मानवजीवन। अंग्रेजी, गुजराती, बंगला और मराठीकी कई उत्त... ... आधारसे लिखा हुआ उत्कृष्ट ग्रंथ। मूल्य ११=)

२८ हृदयकी परख। स्वतंत्र और भावपूर्ण सचित्र उपन्यास। मूल्य
ह आने।

२९ नवनिधि। प्रसिद्ध गल्प लेखक श्रीयुत प्रेमचन्दजीकी एकसे एक बढ़
सुंदर और भावपूर्ण नव गल्पोंका संग्रह। मूल्य चौदह आने।

३० नूरजहाँ। स्व० द्विजेंद्रलाल रायके ऐतिहासिक नाटकका अनुवाद
र एक रुपया।

३१ आयर्लैण्डका इतिहास। राष्ट्रीय ग्रन्थ। मूल्य १॥।=)

३२ शिक्षा। डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुरके शिक्षा सम्बंधी निबंधोंका सुरप
वाद। मूल्य नव आने।

३३ भीष्म। स्वर्गीय द्विजेंद्रबाबूके पौराणिक नाटकका अनुवाद। मूल्य १=

३४ काबूर। इटलीके स्वतंत्र सुव्यवस्थित राष्ट्र बनानेवाले प्रसिद्ध राज
तेज और देशभक्तका जीवनचरित। मूल्य एक रुपया।

३५ चन्द्रगुप्त। स्वर्गीय द्विजेंद्रबाबूके हिंदू राजत्वकालीन अपूर्व ऐतिहासि
क। मूल्य एक रुपया।

३६ सीता। स्व० द्विजेंद्रबाबूका पौराणिक नाटक। मूल्य नव आने।

३७ छायादर्शन। मरनेके बाद जीवकी क्या अवस्था होती है। इत्या
ऊँपर प्रकाश डालनेवाला अपूर्व ग्रन्थ। मूल्य सवा रुपया।

हमारी अन्यान्य पुस्तकें।

१ व्यापारशिक्षा। व्यापार सम्बंधी प्रारंभिक पुस्तक। मूल्य नव आने

२ युवाओंको उपदेश। विलियम कावेटके "एडवाइस टू यंग मेन"
धारसे लिखित। चरित्र-गठन करनेवाला ग्रंथ। मूल्य नव आने।

३ कनकरेखा। प्रसिद्ध गल्पलेखक केशवचन्द्र गुप्त एम. ए., बी. एल
बङ्गला गल्पोंका अनुवाद। मूल्य बारह आने।

४ शान्तिवैभव। 'मैजेस्टी आफ कामनेस' का अनुवाद। मूल्य पाँच आने

५ सन्दनके पत्र। विलायतसे एक देशभक्त भारतवासीकी भेजी हुई देश
भिपूर्ण चिट्ठियोंका संग्रह। मूल्य तीन आने।

६ अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा। मूल्य ढाई आने।

७ पिताके उपदेश। एक सुशिक्षित पिताके अपने विद्यार्थी पुत्रके ना
जे हुए पत्रोंका संग्रह। मूल्य दो आने।

८ सन्तान कल्पद्रुम। इसमें वीर, विद्वान् और सद्गुणी संतान उत्प
रनेके विषयमें वैज्ञानिक पद्धतिसे विचार किया गया है। मूल्य बारह आने।

९ कोलम्बस। नई दुनियाँ या अमेरिकाका पता लगानेवाले उद्योगी और साहसी नाविकका जीवनचरित। मूल्य बारह आने।

१० ठोक पीटकर वैदराज। प्रसिद्ध नाटक-लेखक मौलियरके फ्रेंच सनका सुन्दर हिंदी रूपांतर। मूल्य पाँच आने।

११ बूढ़ेका ब्याह। खड़ी बोलीका सचित्र काव्य। मू० छह आने।

१२ दियातले अँधेरा। स्त्रीशिक्षासम्बंधी दिलचस्प कहानी। मूल्य आना।

१३ भाग्यचक्र। एक हृदयद्रावक शिक्षाप्रद गल्प। मूल्य एक आना।

१४ विद्यार्थीके जीवनका उद्देश्य। मूल्य एक आना।

१५ सदाचारी बालक। एक शिक्षाप्रद कहानी। मूल्य दो आने।

१६ बच्चोंके सुधारनेके उपाय। प्रत्येक माता पिताके पढ़ने योग्य मूल्य आठ आने।

१७ गिरना, उठना और अपने पैरों खड़े होना। अर्थात् उद्योग और स्वावलम्बन। मूल्य १=)

१८ योग-चिकित्सा योगकी सीधीसादी क्रियाओंसे रोगोंके दूर करने उपाय। मूल्य दो आने।

१९ दुग्ध-चिकित्सा। केवल दूध पिलाकर समस्त रोगोंको दूर करने सरल उपाय। मूल्य दो आने।

२० श्रमण-नारद। बौद्ध युगकी एक बहुतही शिक्षाप्रद कहानी। मूल्य दो आने।

२१ देवदूत। जन्मभूमिका स्वर्गसे भी बढ़कर अनुभव करनेवाला अभिनव काव्य। नई कल्पना। लेखक पं० रामचरित उपाध्याय। मू० ।=)